॥ श्रीः ॥

अमरकोशः ।

श्रीमदमरसिंहविरचितः ।

मुरादाबादवास्तव्यश्रीयुतगौडवंशावतंसभोलानाथा-
त्मजपण्डितरामस्वरूपकृतभाषाटीकया
शब्दानुक्रमणिकया च समेतः ।

सोऽयं

खेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना
मुम्बय्यां

(खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन)

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्)-यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

पौष संवत् १९७०, शके १८३५.

श्रीः ।

अमरकोशस्य अकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिका ।

१—(प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्चाभ्युत्थानं तु गौरवम् ।)

इत्यनुक्रमणिका।

श्रीः ।

अथाऽमरकोशः

भाषाटीका समेतः ।

प्रथम काण्ड १.

अथ स्वर्गवर्गः १.

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ॥ सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च॥१॥

यस्य भासा जगद्भाति सदैव सचराचरम् । तं नौमि परमात्मानं भक्तानामभयङ्करम् ॥ १ ॥ जटाटवीगलद्गङ्गचन्द्रचूडामणिं शिवम् । स्मृत्वामरकृतेः कुर्वे भाषा व्याख्यासुधानुगाम् ॥ २ ॥

अन्वयः—हे अनघाः ! भवद्भिः, सः, अक्षयः, धीरः, श्रिये, च, अमृताय, च, सेव्यताम् ; ज्ञानदयासिन्धोः, आगाधस्य, अस्य, ई, अस्ति, गुणाः, च, सन्ति ॥१॥

अर्थ—हे सज्जनो ! तुम उस अविनाशी ज्ञानदाता गुरुकी भोग और मोक्षकी प्राप्ति होनेके अर्थ सेवा करो कि, शास्त्र करिके सपन्न और दयाकरिके पूर्ण तथा विषयोंसे विरक्त ऐसे इन गुरुके पास अखण्डलक्ष्मी और सत्य, शौच, दया, क्षमा आदिक गुण हैं ॥ १ ॥

ग्रन्थमें वक्तव्य विषय दिखलातेहैं:—

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ॥ सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—मया, अन्यतन्त्राणि, समाहृत्य, संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः, वर्गैः युक्त, नामलिंगानुशासनं, सम्पूर्णम् उच्यते॥२॥

अर्थ—मैं व्याडि आदिकोके नामलिङ्गानुशासन अथवा सिद्धांतोंका सग्रह करके शब्दोके क्रमानुसार कथन करनेसे सुशोभित ऐसे थोडे २ शब्दोंके वर्गोंसे अर्थात् पृथक् २ प्रकरणोंसे युक्त ऐसा शब्द और उनके लिंगोंका स्पष्ट रीतिसे बोध करनेवाला कोश परिपूर्ण रीतिसे कहताहूं ॥ २ ॥

---

१ धियं राति ददाति । 'रा दाने' अस्मात्क्विप् । धीरा ज्ञानप्रदो गुरुरित्यर्थः । भाषा—ज्ञानके देनेवाले गुरुको धीरा कहते हैं ।

इस ग्रंथमें लिङ्गादिव्यवस्था किस प्रकारसे की है वह कहतेहैं:-

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् । स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः-अत्र, प्रायशः, रूपभेदेन, स्त्रीपुंनपुंसक, ज्ञेयम्; च, कुत्रचित्, साहचर्यात्, स्त्रीपुंनपुंसकं, ज्ञेयम्; क्वचित्, तद्विशेषविधेः, स्त्रीपुंनपुंसकं, ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

अर्थ-इस ग्रथमें बहुत करके ङीप्, आप्, विसर्ग और अनुस्वार इनसे स्त्रीलिंग पुलिंग, और नपुसकलिंग जानना. जैसे 'पद्मालया' और 'पद्मा' यहां 'आप्' होनेसे 'पद्मालया' और 'पद्मा' यह स्त्रीलिङ्गहैं. 'पिनाकोऽजगवम् धनुः' यहां 'पिनाकः' यहांपर विसर्ग है इससे 'पिनाक' शब्द पुंलिग है 'अजगवम्' यहांपर अनुस्वार होनेसे 'अजगव' शब्द नपुसकहै कहींपर विशेपणमें स्थित अथवा सर्वनामवाचक शब्दमे स्थित रूपके भेदसे लिगोंमे भेद होताहै. जैसा-'तत्परोहनुः' यहांपर 'तत्परः' इस विशेषणका पुलिग रूप होनेसे उसका विशेष्य जो 'हनु' शब्द है उसका भी पुंलिगहीमें रूप चलताहै, तथा 'कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान्' यहां 'सा' यह जो सर्वनामसंज्ञकशब्द है वह 'कुतू' शब्दका विशेपण है इस्से 'सा' इसका स्त्रीलिंग होनेसे, उसका विशेष्य जो 'कुतू' शब्द है उसकाभी स्त्रीलिग है. और निश्चित है लिग जिसका ऐसा शब्द समीप उच्चारण करनेसे उसका जो लिंग है वही लिंग उस समीप पढेहुए अनिश्चितलिगवाले शब्दका जानना. जैसे-'अश्वयुगश्विनी' 'भानुः करः' 'वियद्विष्णुपदम्' यहांपर 'अश्वयुज्' 'भानु' और 'वियद्' इन अनिश्चित लिंगवाले शब्दोंके समीप निश्चित लिगवाले 'अश्विनी' 'कर' और 'विष्णुपद' ये शब्द होनेसे उनके जो लिग हैं वेही लिग उन अनिश्चित लिगवाले शब्दोंके जानने. अर्थात् 'अश्वयुज्' शब्दका स्त्रीलिग, 'भानु' शब्दका पुंलिग, और 'वियद्' शब्दका नपुसकलिग है इस प्रकारसे जानने. और कहीं कहींपर उन स्त्री, पुम्, नपुंसक इनके विशेषरीतिसे कथन करनेसे स्त्रीलिग, पुलिंग, और नपुंसक लिग जानना. जैसे 'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्' 'रोचिः शोचिरुभे क्लीबे' यहांपर 'भेरी' शब्दके समीप 'स्त्री' ऐसा विशेषरीतिसे कथन किया है इसवास्ते 'भेरी' यह शब्द स्त्रीलिंग है. और 'दुन्दुभि' शब्दके समीप 'पुमान्' यह

कथन करनेसे 'दुन्दुभि' शब्द पुलिंगहै. और 'रोचिम्' 'शोचिस्'शब्दोंके.समीप 'उभे क्लीबे' अर्थात् दोनों भी नपुंसक यह विशेष कथन करनेसे, 'रोचिस्' और 'शोचिस्' ये शब्द नपुसकलिंग है इस प्रकारसे सर्वत्र जनना ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ॥ कृतोऽत्र भिन्नलिंगानामनुक्तानां : क्रमादृते ॥ ४ ॥

अन्वयः—अत्र, अनुक्तानां, भिन्नलिंगानां, भेदाख्यानाय, द्वन्द्वः, न, कृतः; एकशेषः, न, कृतः; क्रमात्, ऋते, संकरः, न, कृतः ॥ ४ ॥

अर्थ—इस कोशमें अपने अपने पर्यायोमें नहीं पढेहुए भिन्न भिन्न लिंगवाले शब्दोंका लिंगभेद कहनेके अर्थ द्वन्द्व और एकशेप नहीं कियाहै जैसे—'देवता' शब्द स्त्रीलिंग है 'दैवत' शब्द नपुंसकलिंग है और 'अमर' शब्द पुँल्लिग है इन भिन्नभिन्न लिंगवाले 'देवता' दैवत' और 'अमर' शब्दोका लिंगभेद कहनेके अर्थ 'देवतादैवतामराः' ऐसा द्वन्द्वसमास नहीं किया है. द्वन्द्वसमास किया जाय तौ 'अमर' शब्दका पुंलिंगही 'देवता' और 'दैवत' इनका होजायगा. कारण द्वन्द्वसमासमे और तत्पुरुषमें परपदकाही लिंग होताहै. वह यहांपर परपदलिंग जो 'अमर' शब्दका पुंलिंगहै सो 'देवता' और 'दैवत' शब्दका नहीं होनेके वास्ते द्वंद्वसमास नहीं किया ऐसा सर्वत्र जानना. वैसेही 'ख, नमःश्रावणो नभाः' यहांपर, अश्रावणौ तु नभसी' ऐसा 'नभसी' इस प्रकारका एकशेषभी नहीं किया. यदि 'नभाश्च नभश्च नभसी' ऐसा एकशेष करनेसे 'नभसी' यह नपुसक लिंग शेष रहेगा. फिर आकाशवाचक 'नभस्' शब्द नपुसकलिंग होगा परन्तु श्रावणवाचक नभस्' शब्द पुंलिग है ऐसा नहीं जानाजायगा, इस वास्ते 'खं नभः' और 'श्रावणो नभाः' ऐसा पृथक् २ 'नभस्' शब्द कहाहै लिंगभेद समझने के लिये एकशेप 'नभसी' ऐसा नहीं किया, परन्तु समान लिंगोका तौ द्वन्द्वसमास कियाही है. जैसे—'स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः' 'पादा रश्म्यङ्घ्रितुर्यांशाः' यहांपर एक लिंगकेही सब शब्दहैं इस वास्ते उनका द्वन्द्वसमास किया है. और जिन शब्दोंके पर्याय शब्द और लिंग स्वतंत्रतासे अन्य स्थलोंमे कहेहैं, उससे अन्यत्र जो उन भिन्नलिंग शब्दोका किसी अर्थान्तरके अर्थ कथन करनेके लिये द्वन्द्वसमास

किया है. जैसे—'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः' मातापितरौ पितरौ यहापर 'अप्सरस्' शब्द अपने पर्यायोंमे 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः' यहां स्त्रीलिंग है ऐसा कहा है. उसी 'अप्सरस्' शब्दको देवयोनिमे परिगणनरूप अर्थके लिये विद्याधर आदिक गणोंमें पठित किया है और 'विद्याधर' 'अप्सरस्' 'यक्ष' 'रक्षस्' 'गन्धर्व' 'किन्नर' इन सब शब्दोंका द्वन्द्वसमास किया है; अब यहांपर यद्यपि सर्व शब्दोंका द्वन्द्वसमास होनेसे 'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः' ऐसा पुल्लिंग रूप बना है तौ भी 'अप्सरस्' शब्दका अन्यत्र 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः' यहांपर कथन करनेके अनुसार स्त्रीलिंगही है ऐसा समझना. और 'मातापितरौ पितरौ' यहांपर 'पितरौ' इसमें 'मातृ' और 'पितृ' ऐसे दोनों शब्दोंका एकवद्भाव किया गया है इसमे 'मातृ' और 'पितृ' इनमेंसे 'पितृ' इसका शेष रहा है, इनसे 'पितृ' इस शब्दको 'मातृ' 'पितृ' इन दोनोंका वाचकत्व होनेसेभी उसके अन्तर्गत यद्यपि 'मातृ' यह शब्द है तथापि वह 'मातृ' शब्द 'जनयित्री प्रसूर्माता' इस स्थलमें पर्यायशब्दोंके साथ स्त्रीलिंग पठित है इस वास्ते उस 'पितरौ' इसके अन्तर्गत 'मातृ' शब्दका स्त्रीलिंगही है ऐसा जानना। और इसकोशमें उन भिन्न भिन्न लिंगवाले शब्दोंका क्रम छोडके भिन्न२ लिंगवाले शब्दोंमें संकर कहिये मिश्रण नहीं किया है. जैसे—'स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः' यहांपर 'स्तवः' ऐसा पुंलिंग कहा फिर 'स्तोत्र' यह नपुंसक लिंग कहा फिर 'स्तुतिः' 'नुतिः' ये स्त्रीलिंग शब्द कहेहैं. 'स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिः' ऐसा लिंगोका मिश्रणरूप संकर नहीं किया है. ऐसाही 'जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः' यहांपर 'जनुर्जननजन्मानि' ये नपुंसक शब्द कहे फिर 'जनिः' 'उत्पत्तिः' ये स्त्रीलिंग शब्द कहे. फिर 'उद्भवः' यह पुलिंग शब्द कहा इस प्रकारसे सर्वत्र लिंगविषयमें जानना ४॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ॥ निषिद्धलिंगं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

अन्वयः—त्रिलिङ्ग्याम्, त्रिषु, इति, पदम्, ज्ञेयम्; मिथुने, तु, द्वयोः, इति, पदम्, ज्ञेयम्; निषिद्धलिंगम्, शेषार्थम्,

ज्ञेयम्, त्वन्ताथादि, पूर्वभाक्, न, इति ज्ञेयम् ॥ ५ ॥

अर्थ—इस ग्रंथमें जहांपर कोई शब्द तीनों लिंगोंमें चलताहो वहां 'त्रिषु' ऐसा पद कथन किया है सो जानना जैसे—'त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः' यहांपर 'स्फुलिङ्ग'-शब्द तीनों लिङ्गोंमें चलता है इसवास्ते उस 'स्फुलिङ्ग' शब्दके समीप 'त्रिषु' यह पद कथन किया है. और जहांपर स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग इन दोनो लिंगोंमें कोई शब्द चलताहो तौ वहां 'द्वयोः' ऐसा पद कथन किया है सो जानना. जैसे-'द्वयोर्ज्वालकीलौ' यहांपर 'ज्वाल' और 'कील' ये दोनों शब्द पुलिंग और स्त्रीलिंगहैं इसवास्ते 'द्वयोः' ऐसा कथन किया है 'द्वयोः' यह केवल द्वि—शब्दका उपलक्षण है. अर्थात् किसीभी तरहसे द्वि—शब्दका जहांपर प्रयोग होगा वहां स्त्रीलिंग और पुलिंग जानना. जैसे-'द्विहीनं प्रसवे सर्वम्'और 'द्वयहीने कुकुन्दरे' इत्यादिक स्थलमें द्वि-शब्दसे स्त्रीलिंग और पुलिंग ऐसा अर्थ करनेसे प्रसव—वाचक जितने शब्दहैं वे सर्व स्त्रीलिंग और पुंलिगसे रहित हैं अर्थात् नपुंसकलिंग है और कुकुन्दर—शब्द द्वय—कहिये स्त्रीलिङ्ग और पुलिंग इनसे रहित है अर्थात् नपुंसकलिंग है ऐसा जानना. तथा जिस शब्दका जो लिंग निषिद्ध किया हो उसके अतिरिक्त वाकी रहा लिंग उस शब्दका जानना. जैसे—'वज्रमस्त्री' यहांपर 'वज्र' यह शब्द 'अस्त्री' कहिये स्त्रीलिंग नहीं है ऐसा इस 'वज्र'शब्दको स्त्रीलिंगत्वका निषेध होनेपर वाकी रहे पुलिङ्ग और नपुंसकलिंग इस 'वज्र' शब्दके हे ऐसा जानना और जहां जिस शब्दके पीछे 'तु' यह शब्द होवे तहां उस तु—शब्दके प्रथम जो शब्द होवे उसका-पर्यायवाचक शब्द केवल उस तु—शब्दके पीछे पढा हुआही शब्द होता है उसे पहला शब्द उस 'तु' के पहले पठित किये शब्दका पर्यायवाचकशब्द नहीं होता है, जैसे—'नगरी त्वमरावती' यहांपर 'तु' यह जो शब्द पठन किया है इसके पूर्व पठित जो 'नगरी' शब्द है उसका पर्यायअर्थबोधक शब्द 'अमरावती' यह है इस तु—शब्दके कथन करनेसे 'नगरी' इसका संबंध 'अमरावती' इसमें होताहै. उस 'नगरी' शब्दके प्रथम पठित 'इन्द्राणी'शब्दमे नहीं होताहै. यह 'तु'अन्तमें जिसके है ऐसे नामपदकी व्यवस्था कही. अब इसीही प्रकारसे 'तु' जिसके अन्तमें

है ऐसा लिंगवाचक पद सर्वनामसंज्ञक पद और अव्ययसंज्ञक पद इन पदों-काभी संबंध उस तु-शब्दके पीछे पढे हुए शब्दमें ही होता है. जैसे-'पुंसित्वन्तर्धिः' यहां 'पुंसि' इस लिंगवाचक पदका 'अन्तर्धिः' इस पदमें संबंध हुआ. और 'तस्य तु प्रिया' यहां 'तस्य' इस सर्व-नामसंज्ञक पदका तु-शब्दके पीछे पठित प्रिया-शब्दमें संबंध हुआ. और 'वा तु पुंसि' यहांपर 'वा' इस अव्ययसंज्ञक पदका तु-शब्दके पीछे पठित 'पुंसि' इसमें संबंध हुआ. इस प्रकारसे सर्वत्र तु-शब्दके विषयमें जानना. और इस कोशमें जहांपर जिन शब्दोंके प्रथम 'अथ' यह शब्द होवे. वहां उस अथ-शब्दके पीछे पठित नामपद, लिंगपद, सर्वनामपद, और अव्ययपद इनका संबंध उस अथ-के प्रथम पठित शब्दोंमे नहीं होता है तो उन अथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोंका सम्बन्ध अथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोंमेंही होता है. जैसे-'जवोऽथ शीघ्र त्वरितम्' यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका सम्बन्ध उस अथ-के प्रथम पठित जव-शब्दमें नहीं होताहै किंतु अथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका संबंध उस अथ-शब्दके पीछे पठित 'त्वरितम्' 'लघु' 'क्षिप्रम्' 'अरम्' 'द्रुतम्' इन शब्दोंमें होता है. ऐसेही-'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये' यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित 'त्रिषु' इस लिंगवाचक पदका द्रव्यवाचक, पाप, पुण्य, सुख आदिक पदोंमें संबंध होता है. उस अथ-के प्रथम पठित 'शस्तं' इसमें संबंध नहीं होताहै. अब जहां अथ-शब्दके बदलेमे कहीं कहीं अथो-शब्द कहा होय वहांभी इसीही प्रकार की व्यवस्था जाननी जैसे-'अनुक्रोशोऽप्यथो हसः' यहांपर अथो-इस शब्दके पीछे पठित 'हस' इस नामपदका संबंध उसके पीछे पठित 'हास' 'हास्य' इन शब्दोंमे होता है. उस अथो-शब्दके प्रथम पठित अनुक्रोश-शब्दमें नहीं होता है, इस प्रकारसे व्यवस्था इस कोशमें करीहै. सो जिज्ञासुजनोंने जाननी ॥ ५ ॥

इति परिभाषा।

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः। सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

स्वर्गके नाम ९ ॥ स्वर् १ स्वर्ग २ नाक ३ त्रिदिव ४ त्रिदशालय ५ सुरलोक ६ द्यो ७ दिव् ८ त्रिविष्टप ९॥६॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधा सुराः ॥ सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥ आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ॥ आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ॥ वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

देवताओंके नाम २६ ॥ अमर १ निर्जर २ देव ३ त्रिदश ४ विबुध ५ सुर ६ सुपर्वन् ७ सुमनस् ८ त्रिदिवेश ९ दिवौकस् १० ॥ ७ ॥ आदितेय ११ दिविषद् १२ लेख १३ अदितिनन्दन १४ आदित्य १५ ऋभु १६ अस्वप्न १७ अमर्त्य १८ अमृतान्धस् १९ ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुख २० क्रतुभुज् २१ गीर्वाण २२ दानवारि २३ वृन्दारक २४ दैवत २५ देवता २६ ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः ॥ महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

गणदेवताओंके नाम ९ ॥ आदित्य (बारह) १ विश्व (तेरह) २ वसु (आठ) ३ तुषित (छत्तीस) ४ आभास्वर (चौसठ) ५ अनिल (उनञ्चास) ६ महाराजिक (दोसौ बीस) ७ साध्य (बारह) ८ रुद्र (ग्यारह) ९ ॥ १० ॥

विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिंनराः ॥ पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥

देवताओंकी जातिके भेद १० ॥ विद्याधर १ अप्सरस् २ यक्ष ३ रक्षस् ४ गधर्व ५ किन्नर ६ पिशाच ७ गुह्यक ८ सिद्ध ९ भूत १० ॥ ११ ॥

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ॥ शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

दैत्योंके नाम १० ॥ असुर १ दैत्य २ दैतेय ३ दनुज ४ इन्द्रारि ५ दानव ६ शुक्रशिष्य ७ दितिसुत ८ पूर्वदेव ९ सुरद्विष् १० ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्म्मराजस्तथागतः ॥ समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥ षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ॥ मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः—

बुद्धके नाम १८ ॥ सर्वज्ञ १ सुगत २ बुद्ध ३ धर्मराज ४ तथागत ५ समन्तभद्र ६ भगवत् ७ मारजित् ८ लोकजित् ९ जिन १० ॥ १३ ॥ षडभिज्ञ ११ दशबल १२ अद्वयवादिन् १३ विनायक १४ मुनीन्द्र १५ श्रीघन १६ शास्तृ १७ मुनि १८ ॥

—शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥ स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ॥ गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः॥ १५ ॥

शाक्यसिंहके नाम ७ ॥ शाक्यमुनि १ ॥१४॥ शाक्यसिंह २ सर्वार्थसिद्ध ३ शौद्धोदनि ४ गौतम ५ अर्कबन्धु ६ मायादेवीसुत ७ ॥ १५ ॥

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ॥ हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥ धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः ॥ स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड्विधिः ॥ १७ ॥

ब्रह्माजीके नाम २० ॥ ब्रह्मन् १ आत्मभू २ सुरज्येष्ठ ३ परमेष्ठिन् ४ पितामह ५ हिरण्यगर्भ ६ लोकेश ७ स्वयम्भू ८ चतुरानन ९ ॥ १६ ॥ धातृ १० अब्जयोनि ११ द्रुहिण १२ विरिञ्चि १३ कमलासन १४ स्रष्टृ १५ प्रजापति १६ वेधस् १७ विधातृ १८ विश्वसृज् १९ विधि २० ॥ १७ ॥

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ॥ दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥ दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ॥ पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः॥१९॥ उपेन्द्रइन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ॥पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥ देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ॥ वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥ विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ॥

विष्णुभगवान्‌के नाम३९ ॥ विष्णु१ नारायण २ कृष्ण ३वैकुण्ठ ४ विष्टरश्रवस् ५ दामोदर ६ हृषीकेश ७ केशव८ माधव ९ स्वभू १० ॥१८॥दैत्यारि ११

पुण्डरीकाक्ष १२ गोविन्द १३ गरुडध्वज १४ पीतांबर १५ अच्युत १६ शार्ङ्गिन् १७ विष्वक्सेन १८ जनार्दन १९॥ १९॥ उपेन्द्र २० इन्द्रावरज २१ चक्रपाणि २२ चतुर्भुज २३ पद्मनाभ २४ मधुरिपु २५ वासुदेव २६ त्रिविक्रम २७ ॥ २० ॥ देवकीनन्दन २८ शौरि २९ श्रीपति ३० पुरुषोत्तम ३१ वनमालिन् ३२ बलिध्वंसिन् ३३ कंसाराति ३४ अधोक्षज ३५ ॥२१॥ विश्वंभर ३६ कैटभजित् ३७ विधु ३८ श्रीवत्सलाञ्छन ३९ ॥

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥

वसुदेवजीके नाम २ ॥ वसुदेव १ आनकदुन्दुभि २ ॥ २२ ॥

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ॥ रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥ नीलांबरो रौहिणेयस्तालांको मुसली हली ॥ संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

बलदेवजीके नाम १७॥ बलभद्र १ प्रलम्बघ्न २ बलदेव ३ अच्युताग्रज ४ रेवतीरमण ५ राम ६ कामपाल ७ हलायुध ८ ॥ २३ ॥ नीलांबर ९ रौहिणेय १० तालांक ११ मुसलिन् १२ हलिन् १३ संकर्षण १४ सीरपाणि १५ कालिन्दीभेदन १६ बल १७ ॥ २४ ॥

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ॥ कन्दर्पो दर्पकोऽनंगः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥ शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ॥ पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः २६॥ ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः—

कामदेवके नाम २१ ॥ मदन १ मन्मथ २ मार ३ प्रद्युम्न ४ मीनकेतन ५ कन्दर्प ६ दर्पक ७ अनंग ८ काम ९ पञ्चशर १० स्मर ११ ॥ २५ ॥ शम्बरारि १२ मनसिज १३ कुसुमेषु १४ अनन्यज १५ पुष्पधन्वन् १६ रतिपति १७ मकरध्वज १८ आत्मभू १९ ॥ २६ ॥ ब्रह्मसू २० ऋष्यकेतु २१

—स्यादनिरुद्ध उषापतिः ॥

अनिरुद्धके नाम २ ॥ अनिरुद्ध १ उषापति २ ॥

लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥

लक्ष्मीजीके नाम ६ ॥ लक्ष्मी १ पद्मालया २ पद्मा ३ कमला ४ श्री ५ हरिप्रिया ६ ॥ २७ ॥

शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्य-

विष्णुभगवान्‌के शंखका नाम १ ॥ पाञ्चजन्य १ ॥

-श्चक्रं सुदर्शनम् ॥

विष्णुभगवान्‌के चक्रका नाम १ ॥ सुदर्शन १ ॥

कौमोदकी गदा-

विष्णु भगवान् की गदा का नाम १ ॥ कौमोदकी १ ॥

-खड्गो नन्दकः-

विष्णुके खड्गका नाम १॥ नन्दक १॥

-कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥

विष्णुकी मणिका नाम १॥ कौस्तुभ १ ॥ २८ ॥

गरुत्मान्गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ॥ नागान्तको विष्णुरथःसुपर्णःपन्नगाशनः ॥ २९ ॥

गरुडजीके नाम ९ ॥ गरुत्मत् १ गरुड २ तार्क्ष्य ३ वैनतेय ४ खगेश्वर ५ नागान्तक ६ विष्णुरथ ७ सुपर्ण ८ पन्नगाशन ९ ॥ २९ ॥

शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ॥ ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥ भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ॥ मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः॥ ३१ ॥ उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ॥ वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः॥ ३२॥ कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ॥ हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥ गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ॥ व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ३४॥

शिवजीके नाम ४८ ॥ शम्भु १ ईश २ पशुपति ३ शिव ४ शूलिन् ५ महेश्वर ६ ईश्वर ७ शर्व ८ ईशान ९ शंकर १० चन्द्रशेखर ११ ॥ ३० ॥ भूतेश १२ खण्डपरशु १३ गिरीश १४ गिरिश १५ मृड १६ मृत्युञ्जय १७ कृत्तिवासस् १८ पिनाकिन् १९ प्रमथाधिप २० ॥ ३१ ॥ उग्र २१ कपर्दिन् २२ श्रीकण्ठ २३ शितिकण्ठ २४ कपालभृत् २५ वामदेव २६ महादेव २७ विरूपाक्ष २८ त्रिलोचन २९॥ ३२ ॥ कृशानुरेतस् ३० सर्वज्ञ ३१ धूर्जटि ३२ नीललोहित ३३ हर ३४ स्मरहर ३५ भर्ग ३६ त्र्यम्बक ३७ त्रिपुरान्तक ३८ ॥ ३३ ॥ गंगाधर ३९

अन्धकरिपु ४० क्रतुध्वंसिन् ४१ वृषध्वज ४२ व्योमकेश ४३ भव ४४ भीम ४५ स्थाणु ४६ रुद्र ४७ उमापति ४८ ॥ ३४ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः—

शिवजीकी जटाजूटका नाम १ ॥ कपर्द १ ॥

—पिनाकोऽजगवं धनुः ॥

शिवजीके धनुषके नाम २॥ पिनाक १ अजगव २ ॥

प्रमथाः स्युः पारिषदा—

शिवजीके पार्षदोंके नाम २॥ प्रमथ १ पारिषद २ ॥

ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः॥३५॥

"ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥ वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः ॥"

ब्राह्मी आदि शक्तियोंके नाम ७ ॥ ब्राह्मी १ माहेश्वरी २ कौमारी ३ वैष्णवी ४ वाराही ५ इन्द्राणी ६ चामुण्डा ७ ॥ ३५॥

विभूतिर्भूतिरैश्वर्य—

ऐश्वर्यके नाम ३॥ विभूति १ भूति २ ऐश्वर्य ३ ॥

—मणिमादिकमष्टधा ॥

"अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ॥ प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः॥"

ऐश्वर्यके भेद ८॥ अणिमन् १ महिमन् २ गरिमन् ३ लघिमन् ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८॥

उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥ ३६ ॥ शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ॥ अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका ॥३७॥

"आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ॥ "

पार्वतीके नाम २१ ॥ उमा १ कात्यायनी २ गौरी ३ काली ४ हैमवती ५ ईश्वरी ६ ॥ ३६ ॥ शिवा ७ भवानी ८ रुद्राणी ९ शर्वाणी १० सर्वमङ्गला ११ अपर्णा १२ पार्वती १३ दुर्गा १४ मृडानी १५ चण्डिका १६ अम्बिका १७ ॥ ३७ ॥ आर्या १८ दाक्षायणी १९ गिरिजा २० मेनकात्मजा २१ ॥

विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ॥ अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥

गणेशके नाम ८ ॥ विनायक १ विघ्नराज २ द्वैमातुर ३ गणाधिप ४ एकदन्त ५ हेरम्ब ६ लम्बोदर ७ गजानन ८॥ ३८॥

कार्त्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ॥ पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥ बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ॥ षाण्मातुरः शक्तिधरःकुमारःक्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

स्वामिकार्त्तिकेयके नाम १७ ॥ कार्त्तिकेय १ महासेन २ शरजन्मन् ३ षडानन ४ पार्वतीनन्दन ५ स्कन्द ६ सेनानी ७ अग्निभू ८ गुह ९ ॥ ३९॥ बाहुलेय १० तारकजित् ११ विशाख १२ शिखिवाहन १३ षाण्मातुर १४ शक्तिधर १५ कुमार १६ क्रौञ्चदारण १७ ॥ ४० ॥

इन्द्रो मरुत्वान् मघवा बिडौजाः पाकशासनः ॥ वृद्धश्रवाः शुनासीरः पुरुहूतःपुरंदरः ४१ जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ॥ सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा॥४२॥ वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ॥ जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः ४३ संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ॥ आखण्डलः सहस्राक्षः ऋभुक्षा–

इन्द्रके नाम ३५ ॥ इन्द्र १ मरुत्वत् २ मघवन् ३ बिडौजस् ४ पाकशासन ५ वृद्धश्रवस् ६ शुनासीर ७ पुरुहूत ८ पुरन्दर ९ ॥ ४१ ॥ जिष्णु १० लेखर्षभ ११ शक्र १२ शतमन्यु १३ दिवस्पति १४ सुत्रामन् १५ गोत्रभिद् १६ वज्रिन् १७ वासव १८ वृत्रहन् १९ वृषन् २० ॥ ४२ ॥ वास्तोष्पति २१ सुरपति २२ बलाराति २३ शचीपति २४ जम्भभेदिन् २५ हरिहय २६ स्वाराज् २७ नमुचिसूदन २८ ॥ ४३॥ संक्रन्दन २९ दुश्च्यवन ३० तुरासाह् ३१ मेघवाहन ३२ आखण्डल ३३ सहस्राक्ष ३४ ऋभुक्षिन् ३५ ॥

–स्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥
पुलोमजा शचीन्द्राणी–

इन्द्राणीके नाम ३ ॥ ४४ ॥ पुलोमजा १ शची २ इन्द्राणी ३ ॥

–नगरी त्वमरावती ॥

इन्द्रपुरीका नाम १ ॥ अमरावती १॥

हय उच्चैःश्रवाः–

इन्द्रके घोडेका नाम १ ॥ उच्चैःश्रवस् १॥

–सूतो मातलि–

इन्द्रके सारथीका नाम १ ॥ मातलि १॥

–नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥

इन्द्रके बगीचेका नाम १॥ नन्दन १ ॥ ४५ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तो-

इन्द्रके धवरहरेका नाम १॥ वैजयन्त १॥

-जयन्तः पाकशासनिः ॥

इन्द्रके पुत्रके नाम २ ॥ जयन्त १ पाकशासनि २ ॥

ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥

इन्द्रके हाथीके नाम ४ ॥ ऐरावत १ अभ्रमातग २ ऐरावण ३ अभ्रमुवल्लभ ४ ॥ ४६ ॥

ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ॥ शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः॥४७॥

वज्रके नाम १० ह्रादिनी १ वज्र २ कुलिश ३ भिदुर ४ पवि ५ शतकोटि ६ स्वरु ७ शम्ब ८ दम्भोलि ९ अशनि १० ॥ ४७ ॥

व्योमयानं विमानोऽस्त्री-

विमानके नाम २ ॥ व्योमयान १ विमान २ ॥

-नारदाद्याः सुरर्षयः ॥

सुरर्पियोके नाम १ नारद १ आदि॥

स्यात्सुधर्मा देवसभा-

देवसमाके नाम २ ॥ सुधर्मा १ देवसभा २ ॥

-पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥

अमृतके नाम ३ ॥ पीयूप १ अमृत २ सुधा ३ ॥ ४८ ॥

मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ॥

स्वर्गगगाके नाम ४ ॥ मन्दाकिनी १ वियद्गगा २ स्वर्णदी ३ सुरदीर्घिका ४॥

मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥

सुमेरुपर्वतके नाम ५ ॥ मेरु १ सुमेरु २ हेमाद्रि ३ रत्नसानु ४ सुरालय ५॥ ४९

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥

देववृक्षोंके नाम ५ ॥ मन्दार १ पारिजातक २ सन्तान ३ कल्पवृक्ष ४ हरिचन्दन ५ ॥ ५० ॥

सनत्कुमारो वैधात्र-

सनत्कुमारके नाम २ ॥ सनत्कुमार १ वैधात्र २ ॥

-स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ॥ नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५१ ॥

अश्विनीकुमारके नाम ६ ॥ स्वर्वैद्य १ अश्विनीसुत २ नासत्य ३ अश्विन ४ दस्र ५ आश्विनेय ६ ॥ ५१ ॥

स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ॥

अप्सराओंके नाम २॥ अप्सरस् १ स्वर्वेश्या २ ॥ वे उर्वशी आदिक अप्सरायें हैं ॥

हाहाहूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५२ ॥

गन्धर्वोंके नाम २ ॥ हाहा १ हूहू २ आदि देवोंके गवैये हैं ॥ ५२॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः॥कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥ बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ॥ आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥ लोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ॥ हिरण्यरेताहुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥ सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ॥ शुचिरप्पित्त-

अग्निके नाम ३४ ॥ अग्नि १ वैश्वानर २ वह्नि ३ वीतिहोत्र ४ धनञ्जय ५ कृपीटयोनि ६ ज्वलन ७ जातवेदस् ८ तनूनपात् ९ ॥ ५३ ॥ बर्हिस् १० शुष्मन् ११ कृष्णवर्त्मन् १२ शोचिष्केश १३ उषर्बुध १४ आश्रयाश १५ बृहद्भानु १६ कृशानु १७ पावक १८ अनल १९ ॥ ५४ ॥ रो (लो) हिताश्व २० वायुसख २१ शिखावत् २२ आशुशुक्षणि २३ हिरण्यरेतस् २४ हुतभुज् २५ दहन २६ हव्यवाहन २७ ॥ ५५ ॥ सप्तार्चिस् २८ दमुनस् २९ शुक्र ३० चित्रभानु ३१ विभावसु ३२ शुचि ३३ अप्पित्त ३४॥

—और्वस्तु वाडवो वडवानलः ५६

वडवानलके नाम ३ ॥ और्व १ वाडव २ वडवानल ३ ॥ ५६ ॥

वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ॥

अग्निकी ज्वालाके नाम ५ ॥ ज्वाल १ कील २ अर्चिस् ३ हेति ४ शिखा ५ ॥

त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः—

चिनगारीके नाम २ ॥ स्फुलिंग १ अग्निकण २ ॥

—संतापः संज्वरः समौ ॥५७ ॥

संतापके नाम २ ॥ सन्ताप १ सञ्ज्वर २ ॥ ५७ ॥

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् ॥ कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ॥ ५८ ॥ कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ॥

यमराजके नाम १४ ॥ धर्मराज १ पितृपति २ समवर्तिन् ३ परेतराज् ४ कृतान्त ५ यमुनाभ्रातृ ६ शमन७यम-राज् ८ यम ९॥५८॥काल १० दण्ड-धर ११ श्राद्धदेव १२ वैवस्वत १३ अन्तक १४ ॥

राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्र-व्यादोऽस्रप आशरः ॥ ५९ ॥ रात्रिंचरो रात्रिचरः कर्बुरो नि-कषात्मजः ॥ यातुधानः पुण्य-जनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥

राक्षसोंके नाम१५राक्षस१ कौणप २ क्रव्याद् ३ क्रव्याद४अस्रप५आशर ६॥५९॥रात्रिञ्चर ७ रात्रिचर ८ कर्बुर ९ निकषात्मज १० यातुधान११पुण्य-जन १२ नैर्ऋत १३ यातु १४ रक्षस् १५॥ ६० ॥

प्रचेता वरुणः पाशी यादसां पतिरप्पतिः ॥

वरुणके नाम ५॥प्रचेतस्१वरुण २ पाशिन् ३ यादसाम्पति ४ अप्पति५॥

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा -सदा गतिः ॥ ६१ ॥ पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ॥ समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणस-मीरणाः ॥ ६२ ॥ नभस्वद्वात-पवनपवमानप्रभञ्जनाः ॥

वायुके नाम २०॥श्वसन १स्पर्शन २वायु३मातरिश्वन्४सदागति५॥६१॥ पृषदश्व६गन्धवह ७गन्धवाह ८ अनिल ९ आशुग १० समीर ११ मारुत१२ मरुत् १३ जगत्प्राण१४समीरण १५॥ ॥६२॥ नभस्वत् १६ वात १७ पवन १८ पवमान १९ प्रभञ्जन २० ॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ ६३ ॥

शरीरस्था इमे—

हृदयके वायुका नाम १॥प्राण१ ॥ गुदाके वायुका नाम १ ॥ अपान १ ॥ नाभिके वायुका नाम १ ॥ समान१ ॥ कण्ठके वायुका नाम१ ॥ उदान १ ॥ सब शरीरमे फिरनेवाले वायुका नाम १ ॥ व्यान १ ॥ ३३ ॥

रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥ जवो—

वेगके नाम ५ ॥ रहस्१तरस्२ रय ३ स्यद ४ जव ५ ॥

—ऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्र-मरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥ सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ॥

शीघ्रताके नाम ११. ॥ शीघ्र १ त्वरित २ लघु ३ क्षिप्र ४ अर ५ द्रुत ६ ॥ ६४ ॥ सत्वर ७ चपल ८ तूर्ण ९ अविलंबित १० आशु ११

सततानारताश्रान्तसंततविरतानिशम् ॥ ६५ ॥ नित्यानवरताजस्रमप्य-

निरन्तरके नाम ९ ॥ सतत १ अनारत २ अश्रान्त ३ सन्तत ४ अविरत ५ अनिश ६ ॥ ६५ ॥ नित्य ७ अनवरत ८ अजस्र ९ ॥

-थातिशयो भरः ॥

अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥ तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ॥

वारम्वारके नाम १४ ॥ अतिशय १ भर २ अतिवेल ३ भृश ४ अत्यर्थ ५ अतिमात्र ६ उद्गाढ ७ निर्भर ८ ॥ ६६ ॥ तीव्र ९ एकान्त १० नितान्त ११ गाढं १२ बाढ १३ दृढ १४ ॥

क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥

अद्रव्यवाची शीघ्रआदि शब्द नपुंसक लिंगमें होते हैं और द्रव्यवाची तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ६७ ॥

कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः ॥ मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥ किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥ यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥

कुबेरके नाम १७ ॥ कुबेर १ त्र्यंबकसख २ यक्षराज् ३ गुह्यकेश्वर ४ मनुष्यधर्मन् ५ धनद ६ राजराज ७ धनाधिप ८ ॥ ६८ ॥ किन्नरेश ९ वैश्रवण १० पौलस्त्य ११ नरवाहन १२ यक्ष १३ एकपिंग १४ ऐलविल १५ श्रीद १६ पुण्यजनेश्वर १७ ॥ ६९ ॥

अस्योद्यानं चैत्ररथम्-

कुबेरके बगीचेका नाम १ ॥ चैत्ररथ १ ॥

-पुत्रस्तु नलकूबरः ॥

कुबेरके पुत्रका नाम १ ॥ नलकूबर १

कैलासः स्थान-

कुबेरके स्थानका नाम १ ॥ कैलास १ ॥

-मलका पू-

कुबेरकी पुरीका नाम १ ॥ अलका १ ॥

-र्विमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥

कुबेरके विमानका नाम १ ॥ पुष्पक १ ॥ ७० ॥

स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ॥

किन्नरोंके नाम ४ ॥ किन्नर १ किम्पुरुष २ तुरंगवदन ३ मयु ४ ॥

निधिर्ना शेवधि-

खजानेके नाम २ ॥ निधि १ शेवधि २ ॥

-र्भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ७१

खजानेके भेद ॥ पद्म शङ्ख- इत्यादि ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः २.

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ॥ नभोन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥ वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ॥ विहायसोपि नाकोपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

आकाशके नाम १९ ॥ द्यो १ दिव् २ अभ्र ३ व्योमन् ४ पुष्कर ५ अम्बर ६ नभस् ७ अन्तरिक्ष ८ गगन ९ अनंत १० सुरवर्त्मन् ११ ख १२ ॥ १ ॥ वियत् १३ विष्णुपद १४ आकाश १५ विहायस् १६ विहायस १७ नाक १८ द्युस् १९ ॥ २ ॥

इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

अथ दिग्वर्गः ३.

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ॥

दिशाओंके नाम ५ ॥ दिश् १ ककुभ् २ काष्ठा ३ आशा ४ हरित् ५ ॥

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥ उत्तरा दिगुदीची स्याद्-

पूर्व दिशाका नाम १ ॥ प्राची १ ॥ दक्षिण दिशाका नाम १ ॥ अवाची १ ॥ पश्चिमदिशाका नाम १ ॥ प्रतीची १ ॥ १ ॥ उत्तरदिशाका नाम १ ॥ उदीची १ ॥

-दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ॥

दिशोत्पन्नवस्तुका नाम १ ॥ दिश्य १ ॥

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥ कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ॥

पूर्व दिशाके स्वामीका नाम ॥ इन्द्र १ ॥ अग्निकोणके स्वामीका नाम ॥ वह्नि १ ॥ दक्षिणदिशाके स्वामीका नाम ॥ यमराज १ ॥ नैर्ऋत्य कोणके स्वामीका

---

१ पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ। मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥ इति शब्दार्णवः ॥ भाषा-पद्म १ महापद्म २ शङ्ख ३ मकर ४ कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ खर्व ९ यह नौ खजानेके भेद हैं।

नाम ॥ नैर्ऋत १ ॥ पश्चिमदिशाके स्वामीका नाम वरुण ॥ १ ॥ वायुकोणके स्वामीका नाम ॥ पवन १॥२॥ उत्तर दिशाके स्वामीका नाम ॥ कुबेर ॥ १ ॥ ईशान कोणके स्वामीका नाम ईश ॥ १ ॥

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥ पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥

पूर्व दिशाके हस्तीका नाम ॥ ऐरावत १ ॥ अग्निकोणके हस्तीका नाम ॥ पुण्डरीक २ ॥ दक्षिण दिशाके हस्तीका नाम ॥ वामन ३॥ नैर्ऋत कोणके हस्तीका नाम ॥ कुमुद ४ ॥ पश्चिम दिशाके हस्तीका नाम ॥ अञ्जन ५ ॥ ३ ॥ वायुकोणके हस्तीका नाम ॥ पुष्पदन्त ६ ॥ उत्तरदिशाके हस्तीका नाम ॥ सार्वभौम ७ ॥ ईशानकोणके हस्तीका नाम ॥ सुप्रतीक ८ ॥

करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥

ऊपर लिखेहुये ऐरावत आदि आठ हस्तियोंकी हथिनियोंके क्रमसे नाम ॥ अभ्रमु १ कपिला २ पिंगला ३ अनुपमा ४ ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी ५ शुभ्रदन्ती ६ अगना ७ अञ्जनावती ८ ॥

क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥

अग्निआदि कोणके नाम २ ॥ अपदिश १ विदिश् २ ॥ ५ ॥

अभ्यन्तरं त्वन्तरालं-

बीचभागके नाम २ ॥ अभ्यंतर १ अन्तराल २ ॥

-चक्रवालं तु मण्डलम् ॥

गोलाकार समूहके नाम २ ॥ चक्रवाल १ मण्डल २ ॥

अभ्रंमेघोवारिवाहःस्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥ धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ॥ घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः॥७॥

बादलके नाम १५ ॥ अभ्र १ मेघ २ वारिवाह ३ स्तनयित्नु ४ बलाहक ५ ॥ ६॥ धाराधर ६ जलधर ७ तडित्वत् ८ वारिद ९ अम्बुभृत् १० घन ११ जीमूत १२ मुदिर १३ जलमुच् १४ धूमयोनि १५ ॥ ७ ॥

कादम्बिनी मेघमाला-

मेघपंक्तिके नाम २॥ कादम्बिनी १॥ मेघमाला २ ॥

-त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ॥

मेघोत्पन्नवस्तुका नाम १ ॥ अभ्रिय

स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषो रसितादि च ॥ ८ ॥

गर्जनेके नाम ४ ॥ स्तनित १ गर्जित २ मेघनिर्घोष ३ रसित ४ ॥ ८ ॥

शम्पाशतह्रदाह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ॥ तडित्सौदामनीविद्युच्चञ्चलाचपला अपि ॥ ९ ॥

बिजुलीके नाम १० ॥ शम्पा १ शतह्रदा २ ह्रादिनी ३ ऐरावती ४ क्षणप्रभा ५ तडित् ६ सौदामनी ७ विद्युत् ८ चञ्चला ९ चपला १०॥९॥

स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो—

वज्रके शब्दके नाम २ ॥ स्फूर्जथु १ वज्रनिर्घोष ॥ २ ॥

—मेघज्योतिरिरंमदः ॥

वज्रके अग्निके नाम ॥ मेघज्योतिस् इरम्मद २ ॥

इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजु रोहितम् ॥ १० ॥

इन्द्रधनुषके नाम ३ ॥ इन्द्रायुध १ शक्रधनुस् २ रोहित ३ ॥ सरल इंद्रधनुषका नाम रोहित है ॥ १० ॥

वृष्टिर्वर्षं—

वर्षाके नाम २ ॥ वृष्टि १ वर्ष २॥

—तद्विघातेवग्राहावग्रहौ समौ ॥

झूराके नाम २॥अवग्राह१अवग्रह२॥

धारासंपात आसारः—

निरन्तरमेघधाराके नाम २ ॥ धारासम्पात १ आसार ॥ २ ॥

—शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ११ ॥

वायुसे उडाये हुए जलकणों (फुहारो) का नाम १॥ शीकर१॥११॥

वर्षोपलस्तु करका—

आकाशसे गिरेहुए पत्थरोंके नाम २ ॥ वर्षोपल १ करका २ ॥

—मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ॥

मेघसे आच्छादित हुआ दिनरात्रिका नाम १ ॥ दुर्दिन ॥ १ ॥

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥ अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ॥

झंपनाके नाम ८ ॥ अन्तर्धा १ व्यवधा २ अन्तर्धि ३ अपवारण ४ ॥ १२ ॥ अपिधान ५ तिरोधान ६ पिधान ७ आच्छादन ८ ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥ विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ॥ अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगांकः कलानिधिः ॥ १४ ॥

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ॥

चन्द्रमाके नाम २० ॥ हिमांशु १ चन्द्रमस् २ चन्द्र ३ इन्दु ४ कुमुदबान्धव ५ ॥ १३ ॥ विधु ६ सुधांशु ७ शुभ्रांशु ८ ओषधीश ९ निशापति १० अब्ज ११ जैवातृक १२ सोम १३ ग्लौ १४ मृगाङ्क १५ कलानिधि १६ ॥ १४ ॥ द्विजराज १७ शशधर १८ नक्षत्रेश १९ क्षपाकर २० ॥

कला तु षोडशो भागो-

चन्द्रमाके $\frac{1}{16}$ वें भागका नाम १ ॥ कला १ ॥

-बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु १५॥

चन्द्रमण्डलके नाम २ ॥ बिम्ब १ मण्डल २ ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धो-

खण्डके नाम ४ ॥ भित्त १ शकल २ खण्ड ३ अर्द्ध ४ (पुंलिंग) ॥

-ऽर्धं समेंऽशके ॥

सम भागका नाम १ ॥ अर्द्ध १ (नपुंसकलिंग) ॥

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना-

चांदनीके नाम ३ ॥ चन्द्रिका १ कौमुदी २ ज्योत्स्ना ३ ॥

-प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

निर्मलताके नाम २ ॥ प्रसाद १ प्रसन्नता २ ॥ १६ ॥

कलंकांकौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ॥

चिह्नके नाम ६ ॥ कलंक १ अंक २ लाञ्छन ३ चिह्न ४ लक्ष्मन् ५ लक्षण ६ ॥

सुषमा परमा शोभा-

अतिशोभाका नाम १ ॥ सुषमा १ ॥

-शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥

शोभाके नाम ४ ॥ शोभा १ कान्ति २ द्युति ३ छवि ४ ॥ १७ ॥

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ॥ प्रालेयं मिहिका चा-

पालेके नाम ७ ॥ अवश्याय १ नीहार २ तुषार ३ तुहिन ४ हिम ५ प्रालेय ६ मिहिका ७ ॥

-ऽथ हिमानी हिमसंहतिः १८ ॥

पालेके समूहके नाम २ ॥ हिमानी १ हिमसंहति २ ॥ १८ ॥

शीतं गुणे-

शीतलताका नाम १ ॥ शीत १ ॥

-तद्वदर्थाः सुषिमः शिशिरो जडः ॥ तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिंगकाः ॥ १९ ॥

शीतलवस्तुके नाम ७ ॥ सुषीम १ शिशिर २ जड ३ तुषार ४ शीतल ५ शीत ६ हिम ७ ॥ १९ ॥

ध्रुव औत्तानपादिः स्या-

ध्रुवजीके नाम २ ॥ ध्रुव १ औत्तान पादि २ ॥

-दगस्त्यः कुम्भसम्भवः ॥ मैत्रावरुणि-

अगस्त्यके नाम ३ ॥ अगस्त्य १ कुम्भ-सम्भव २ मैत्रावरुणि ३ ॥

रस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी२०

अगस्त्यकी स्त्रीका नाम १ ॥ लोपा मुद्रा १ ॥ २० ॥

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ॥

नक्षत्रोंके नाम ६ ॥ नक्षत्र १ ऋक्ष २ भ ३ तारा ४ तारका ५ उडु ६ ॥

दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा-

अश्विनी आदि २८ नक्षत्रोका नाम १ ॥ दाक्षायणी १ ॥

-अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥

अश्विनीनक्षत्रके नाम २ ॥ अश्वयुज् १ अश्विनी २ ॥ २१ ॥

राधा विशाखा-

विशाखानक्षत्रके नाम २ ॥ राधा १ विशाखा २ ॥

-पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ-

पुष्यनक्षत्रके नाम ३ ॥ पुष्य १ सिध्य २ तिष्य ३ ॥

-श्रविष्ठया ॥ समा धनिष्ठा-

धनिष्ठानक्षत्रके नाम ॥ २ श्रविष्ठा १ धनिष्ठा २ ॥

-स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥

पूर्वभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा नक्षत्रोंके नाम २ ॥ प्रोष्ठपदा १ भाद्रपदा २ ॥ २२ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवा-ग्रहायणी ॥

मृगशिरनक्षत्रके नाम ३॥ मृगशीर्ष १ मृगशिरस् २ आग्रहायणी ३ ॥

इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥

मृगशिरके मस्तकपर रहनेवाले नक्षत्रों-का नाम १ ॥ इल्वल १ ॥ २३ ॥

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पति-र्धिषणो गुरुः ॥ जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥२४॥

बृहस्पतिके नाम ९ ॥ बृहस्पति १ सुराचार्य २ गीष्पति ३ धिषण ४ गुरु ५ जीव ६ आंगिरस ७ वाचस्पति ८ चित्रशिखण्डिज ९ ॥ २४ ॥

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ॥

शुक्रके नाम ६॥ शुक्र १ दैत्यगुरु२ काव्य ३ उशनस् ४ भार्गव ५ कवि६॥

अंगारकः कुजो भौमो लोहितांगो महीसुतः ॥ २५ ॥

मगलके नाम ५ ॥ अंगारक १ कुज २ भौम ३ लोहितांग ४ महीसुत ५ ॥ २५ ॥

रौहिणेयो बुधः सौम्यः-

बुधके नाम ३ ॥ रौहिणेय १ बुध २ सौम्य ३ ॥

-समौ सौरिशनैश्चरौ ॥

शनिके नाम २॥ सौरि१ शनैश्चर२॥

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥

राहुके नाम ५ ॥ तमस् १ राहु २ स्वर्भान ३ सैंहिकेय ४ विधुन्तुद ५॥२६॥

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ॥

मरीचि अत्रि आदि सप्तर्षियोंके नाम चित्रशिखण्डिन्[1] ॥ १ ॥

राशीनामुदयो लग्नं-

राशियोंके उदयका नाम१॥लग्न१॥

-ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

राशियोंके नाम । मेष १ वृष २ आदि ॥ ११ ॥

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ॥ भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥ भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः॥ विकर्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥ द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ॥ विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥ भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ॥

सूर्यके नाम ३७ ॥ सूर १ सूर्य २ अर्य्यमन् ३ आदित्य ४ द्वादशात्मन् ५ दिवाकर ६ भास्कर ७ अहस्कर ८ ब्रध्न ९ प्रभाकर १० विभाकर

---

[1] मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः ॥ १ ॥ भाषा—मरीचि १ अंगिरस २ अत्रि ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ ७ यह सप्तर्षि चित्रशिखण्डि कहलाते है

११ ॥ २८ ॥ भास्वत् १२ विवस्वत् १३ सप्ताश्व १४ हरिदश्व १५ उष्णरश्मि १६ विकर्त्तन १७ अर्क १८ मार्तण्ड १९ मिहिर २० अरुण २१ पूषन् २२ ॥ २९ ॥ द्युमणि २३ तरणि २४ मित्र २५ चित्रभानु २६ विरोचन २७ विभावसु २८ ग्रहपति २९ त्विषाम्पति ३० अहर्पति ३१ ॥ ॥ ३० ॥ भानु ३२ हंस ३३ सहस्रांशु ३४ तपन ३५ सवितृ ३६ रवि ३७

माठरः पिंगलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः ॥ ३१ ॥

सूर्यपार्श्ववर्तीतीनोंके एक एक नाम॥ माठर १ पिंगल २ दण्ड ३ ॥ ३१ ।

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ॥

सूर्यके सारथिके नाम ५ ॥ सूरसूत १ अरुण २ अनूरु ३ काश्यपि ४ गरुडाग्रज ५ ॥

परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

सूर्यके मण्डलके अर्थात् जो कभी२ उनके चारोओर घेरासा बन जाता है उसके नाम ४ ॥ परिवेष १ परिधि २ उपसूर्यक ३ मण्डल ४ ॥ ३२ ॥

किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ॥ भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

सूर्यकिरणके नाम ११ ॥ किरण १ उस्र २ मयूख ३ अंशु ४ गभस्ति ५ घृणि ६ रश्मि ७ भानु ८ कर ९ मरीचि १० दीधिति ११ ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः ॥ रोचिः शोचिरुभे क्लीबे—

दीप्तिके नाम ११ ॥ प्रभा १ रुच् २ रुचि ३ त्विष् ४ भा ५ भास् ६ छवि ७ द्युति ८ दीप्ति ९ रोचिस् १० शोचिस् ११ ॥

—प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥

धूपके नाम ३ ॥ प्रकाश १ द्योत २ आतप ३ ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ॥

थोडे गरमके नाम ४ ॥ कोष्ण १ कवोष्ण २ मन्दोष्ण ३ कदुष्ण ४ ॥

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्व—

बहुत गरमके नाम ३ ॥ तिग्म १ तीक्ष्ण २ खर ३ ॥

—न्मृगतृष्णा मरीचिका ३५ ॥

मृगतृष्णाके नाम १ ॥ मृगतृष्णा १ मरीचिका २ ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः ४.

कालोदिष्टोप्यनेहापि समयो–

समयके नाम १ ॥ काल १ दिष्ट २ अनेहस् ३ समय ४ ॥

–प्यथ पक्षतिः ॥

प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे–

प्रतिपदाके नाम २ ॥ पक्षति १ प्रतिपत् २ ॥

–तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥

प्रतिपदादिका नाम १ ॥ तिथि १ ॥ १ ॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ॥

दिनके नाम ५ ॥ घस्र १ दिन २ अहन् ३ दिवस ४ वासर ५ ॥

प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषः प्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥

प्रभातं च–

प्रातःकालके नाम ६ ॥ प्रत्यूष १ अहर्मुख २ कल्य ३ उषस् ४ प्रत्युषस् ५ ॥ २ ॥ प्रभात ॥ ६ ॥

–दिनान्ते तु सायंसंध्या पितृप्रसूः ॥

सायंकालके नाम ४ ॥ दिनान्त १ सायम् २ सन्ध्या ३ पितृप्रसू ॥ ४ ॥

प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्य–

प्रातःकालका नाम १ ॥ प्राह्ण १ ॥ मध्याह्नकालका नाम १ ॥ मध्याह्न १ ॥ मध्याह्नोत्तर कालोंका नाम १ ॥ अपराह्ण १ ॥ इन तीनों कालोंका इकट्ठा नाम ॥ त्रिसंध्य १ ॥

–मथ शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

रात्रिके नाम १२ ॥ शर्वरी १ ॥ ३ ॥ निशा २ निशीथिनी ३ रात्रि ४ त्रियामा ५ क्षणदा ६ क्षपा ७ विभावरी ८ तमस्विनी ९ रजनी १० यामिनी ११ तमी १२ ॥ ४ ॥

तमिस्रा तामसी रात्रि–

अन्धियारी रात्रिका नाम १ तमिस्रा १ ॥

–र्ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ॥

उजयाली रात्रिका नाम १ ॥ ज्यौत्स्नी १ ॥

आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥

वर्तमान और आगन्तुकदिनोंके मध्यकी रात्रिका नाम १ पक्षिणी १ ॥ ५ ॥

गणरात्रं निशा बह्वयः–

बहुतरात्रियोंका नाम १ गणरात्र ॥

–प्रदोषो रजनीमुखम् ॥

रात्रिके प्रथमभागके नाम २ ॥ प्रदोष १ रजनीमुख २ ॥

अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ-

आधीरात्रिके नाम २ ॥ अर्धरात्र १ निशीथ २ ॥

-द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

प्रहरके नाम२॥याम१ प्रहर २॥६॥

स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ॥

प्रतिपदा१और पञ्चदशी १५।३० के मध्यके कालका नाम१ ॥पर्वसन्धि१॥

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे-

अमावास्या और पूर्णिमाका नाम १ ॥ पक्षान्त १ ॥

-पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥७॥

पूर्णिमाके नाम २ ॥ पौर्णमासी १ पूर्णिमा २ ॥ ७ ॥

कलाहीने सानुमतिः-

जिस पूर्णमासीमें प्रतिपदाके योगसे चन्द्रमाकी कला हीन हो उसका नाम १ ॥ अनुमति १ ॥

-पूर्णे राका निशाकरे ॥

जिसमें पूर्ण चन्द्रमा हो उस पूर्णिमाका नाम १ ॥ राका १ ॥

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥

अमावास्याके नाम ४ ॥ अमावास्या १ अमावस्या २ दर्श ३ सूर्येन्दुसगम ४ ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली-

जिसमें चतुर्दशीके योगसे चन्द्रमाका दर्शन होय उस अमावास्याका नाम १॥ सिनीवाली १ ॥

-सा नष्टेन्दुकला कुहूः ॥

जिसमें बिलकुल चन्द्रदर्शन न होय उस अमावास्याका नाम १॥ कुहू १॥

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥

सोपप्लवोपरक्तौ द्वा-

चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहणके नाम ४ ॥ उपराग १ ग्रह २ ॥ ९ ॥ सोपप्लव ३ उपरक्त ४ ॥

-वग्न्युत्पात उपाहितः ॥

धूम्रकेतुके नाम २ ॥ अग्न्युत्पात १ उपाहित २ ॥

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

सूर्य और चन्द्र दोनोका इकट्ठा नाम १ ॥ पुष्पवन्त १ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा—

पलकमारनेका नाम निमेष ॥ अठारह निमेषोंका नाम १॥ काष्ठा १॥

-त्रिंशत्तु ताः कला ॥

तीस काष्ठाओंका नाम १ ॥ कला १॥

तास्तु त्रिंशत्क्षण—

तीस कलाओंका नाम १ ॥ क्षण १॥

—स्तेतु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ११॥

बारह क्षणोंका नाम १॥मुहूर्त्त १॥११॥

ते तु त्रिंशदहोरात्रः—

तीस मुहूर्त्तोंका नाम १ ॥ अहोरात्र १॥

पक्षस्ते दशपञ्च च ॥

पन्द्रह दिनरातका नाम १ ॥ पक्ष १॥

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ—

पक्ष दो हैं २ ॥ शुक्ल १ कृष्ण २॥

—मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

दो पक्षोंका नाम १॥मास १॥१२॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतु—

मार्गशीर्षादि दो दो मासोंका नाम १ ॥ ऋतु १ ॥

—स्तैरयनं त्रिभिः ॥

तीन ऋतुओंका नाम १ ॥ अयन १॥

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य

दो अयनोंके २ भेद ॥ उत्तरायण १॥ दक्षिणायन २ ॥

—वत्सरः ॥ १३ ॥

दो अयनोंका नाम १ ॥वत्सर १॥१३॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ॥

जिसमें दिनरात समान होते हैं उस संक्रान्ति (तुला और मेष) के नाम २ ॥ विषुवत् १ विषुव २ ॥

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥

अगहन महीनेके नाम ४ ॥ मार्गशीर्ष १ सहस् २ मार्ग ३ आग्रहायणिक ४ ॥ १४ ॥

पौषे तैषसहस्यौ द्वौ—

पूसमासके नाम ३॥ पौष १ तैष २ सहस्य ३॥

—तपा माघेऽ

माघमासके नाम २॥तपस् १ माघ २॥

—थ फाल्गुने ॥

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः—

फाल्गुनमासके नाम ३ ॥ फाल्गुन १ तपस्य २ फाल्गुनिक ३ ॥

—स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः॥ १५॥

चैत्रमासके नाम ३ ॥ चैत्र १ चैत्रिक २ मधु ३ ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो—

वैशाखमासके नाम ३ ॥ वैशाख १ माधव २ राध ३ ॥

—ज्येष्ठे शुक्र—

ज्येष्ठके नाम २॥ ज्येष्ठ १ शुक्र २॥

—श्शुचिस्त्वयम् ॥

आषाढे—

आषाढमासके नाम २ ॥ शुचि १ आषाढ २ ॥

—श्रावणे तु स्यान्नभाः
श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

श्रावणमासके नाम ३ ॥ श्रावण १ नभस् २ श्रावणिक ३ ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यः प्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ॥

भादों मासके नाम ४ ॥ नभस्य १ प्रौष्टपद २ भाद्र ३ भाद्रपद ४ ॥

स्यादाश्विन इषोप्याश्वयुजोऽपि—

क्वारमासके नाम ३ ॥ आश्विन १ इष २ आश्वयुज ३ ॥

—स्यात्तु कार्त्तिके ॥ १७ ॥
बाहुलोर्जौ कार्त्तिकिको—

कार्तिकमासके नाम ४ ॥ कार्तिक १ ॥ १७ ॥ बाहुल २ ऊर्ज ३ कार्तिकिक ४ ॥

हेमन्तः—

अगहन पूस माससे सिद्ध हुई ऋतुका नाम १ ॥ हेमन्त १ ॥

—शिशिरोऽस्त्रियाम् ॥

माघ फाल्गुनसे सिद्ध हुई ऋतुका नाम १ ॥ शिशिर १ ॥

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभि—

चैत्र वैशाखसे सिद्ध ऋतुके नाम ३॥ वसन्त १ पुष्पसमय २ सुरभि ३ ॥

—ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥
निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ॥

ज्येष्ठ आषाढके समयके नाम ७ ॥ ग्रीष्म १ ऊष्मक २ ॥१८॥ निदाघ ३ उष्णोपगम ४ उष्ण ५ ऊष्मागम ६ तप ७ ॥

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा—

सावन भादोंके ऋतुके नाम २ ॥ प्रावृट् १ वर्षा २ ॥

—अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

क्वार कार्तिकके समयका नाम १ शरद् १ ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ॥

मार्गशीर्ष आदि दो २ महीनोंके ये छः ऋतु होतेहैं ॥

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

वर्षके नाम ६ ॥ संवत्सर १ वत्सर २ अब्द ३ हायन ४ शरद् ५ समा ६ ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो—

मनुष्योंके एकमहीनेका पितरोंका दिनरात्रि होता है ॥

—वर्षेण दैवतः ॥

और एकवर्षका देवताओंका दिनरात्रि होता है ॥

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः—

देवोंके दो हजार युगका ब्रह्माका दिनरात्रि होता है ॥

—कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥२१॥

उन दो युगसहस्रोंको मनुष्योंका कल्प कहतेहैं ब्रह्माका दिन मनुष्योंका स्थितिकाल और ब्रह्माकी रात्रि मनुष्यों-का प्रलयकाल होता है ॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगाना-मेकसप्ततिः ॥

इकहत्तर दिव्यवर्षका नाम १ ॥ मन्वन्तर १ ॥

संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥

प्रलयके नाम ५ ॥ संवर्त १ प्रलय २ कल्प ३ क्षय ४ कल्पान्त ५ ॥२२॥

अस्त्री पंकं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ॥ कलुषं, वृजि-नैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥२३॥

पापके नाम १२ ॥ पंक १ पाप्मन् २ पाप ३ किल्बिष ४ कल्मष ५ कलुष ६ वृजिन ७ एनस् ८ अघ ९ अंहस् १० दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥ २३ ॥

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ॥

धर्मके नाम ५ ॥ धर्म १ पुण्य २ श्रेयस् ३ सुकृत ४ वृष ५ ॥

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षप्रमोदामो-दसंमदाः ॥ २४ ॥ स्यादानन्दथु-रानन्दः शर्मशातसुखानि च ॥

हर्षके नाम १२ ॥ मुद् १ प्रीति २ प्रमद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ आमोद ६ सम्मद ७ ॥ २४ ॥ आनन्दथु ८ आ-नन्द ९ शर्मन् १० शात ११ सुख १२ ॥

श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मंगलं शुभम् ॥ २५ ॥

भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ॥ शस्तं चा—

कल्याणके नाम १२ ॥ श्वःश्रेयस् १ शिव २ भद्र ३ कल्याण ४ मंगल ५ शुभ ६ ॥ २५ ॥ भावुक ७ भविक ८ भव्य ९ कुशल १० क्षेम ११ शस्त १२ ॥

—ऽथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥

पाप और पुण्यशब्द तथा सुखशब्दसे लेकर शस्तशब्द पर्यंत जो शब्दहैं वो यदि द्रव्यवाचक हों तौ तीनों लिंगोमें होतेहैं ॥ २६ ॥

मतल्लिका मचर्चिका प्रका-ण्डमुद्धतल्लजौ ॥ प्रशस्तवाचका-न्यमू—

अच्छेके नाम ५ ॥ मतल्लिका १ मचर्चिका २ प्रकाण्ड ३ उद्ध ४ तल्लज ५ ॥

—न्ययः शुभावहो विधिः॥२७॥

शुभकारक विधिका नाम १ ॥ अय १ ॥ २७ ॥

—दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ॥

भाग्यके नाम ६ ॥ दैव १ दिष्ट२भागधेय ३ भाग्य ४ नियति ५ विधि६ ॥

हेतुर्ना कारणं बीज—

कारणके नाम ३ ॥ हेतु १ कारण २ बीज ३ ॥

—न्निदानं त्वादिकारणम्॥२८॥

आदिकारणका नाम१॥निदान१॥२॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः—

चैतन्यके नाम ३ ॥ क्षेत्रज्ञ १ आत्मन् २ पुरुष ३ ॥

—प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ॥

प्रकृतिके नाम २ ॥ प्रधान १ प्रकृति २ ॥

विशेषः कालिकोऽवस्था—

उमरका नाम १ ॥ अवस्था १ ॥

—गुणाः सत्त्वं रजस्तमः॥२९॥

गुणोंके नाम ३ ॥ सत्त्व १ रजस् २ तमस् ३ ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ॥

जन्मके नाम ६ ॥ जनुस् १ जनन २ जन्मन् ३ जनि ४उत्पत्ति ५उद्भव६॥

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

प्राणीके नाम ६ ॥ प्राणिन् १ चेतन २ जन्मिन् ३ जन्तु ४ जन्यु ५ शरीरिन् ॥ ६ ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्यं—

जातिमात्रके नाम ३ ॥ जाति १ जात २ सामान्य ३ ॥

—व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ॥

व्यक्तिवाचकके नाम २ ॥ व्यक्ति १ पृथगात्मता २ ॥

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वांतं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

मनके नाम ७ ॥ चित्त १ चेतस् २ हृदय ३ स्वान्त ४ हृद् ५ मानस ६ मनस् ७ ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५.

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ॥ प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥

बुद्धिके नाम १४ ॥ बुद्धि १ मनीषा २ धिषणा ३ धी ४ प्रज्ञा ५ शेमुषी ६ मति ७ प्रेक्षा ८ उपलब्धि ९ चित् १० संविद् ११ प्रतिपद् १२ ज्ञप्ति १३ चेतना १४ ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा—

कहीहुई वार्त्ताको धारण रखनेवाली बुद्धिका नाम १ ॥ मेधा १ ॥

—संकल्पः कर्म्म मानसम् ॥

मनकी कामनाका नाम १॥ संकल्प १॥

चित्ताभोगो मनस्कार—

किसी वस्तुमें चित्तके तत्पर हो जानेके नाम २ ॥चित्ताभोग १ मनस्कार२॥

श्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

विचारके नाम ३ ॥ चर्चा १ संख्या २ विचारणा ३ ॥ २ ॥

अध्याहारस्तर्क ऊहो—

अपूर्वविचारके नाम ३ ॥ अध्याहार १ तर्क २ ऊह ३ ॥

—विचिकित्सा तु संशयः ॥ संदेहद्वापरौ चा—

संदेहके नाम ४ ॥ विचिकित्सा १ संशय २ संदेह ३ द्वापर ४ ॥

—ऽथ समौ निर्णयनिश्चयौ॥३॥

निश्चयके नाम २ ॥ निर्णय १ निश्चय २ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता—

परलोकको मिथ्या जाननेके नाम२॥ मिथ्यादृष्टि १ नास्तिकता २ ॥

—व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ॥

परद्रोहके नाम २ ॥ व्यापाद १ द्रोहचिन्तन २ ॥

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ—

निश्चयकरी हुई बातके नाम २ ॥ सिद्धान्त १ राद्धान्त २ ॥

—भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः॥४॥

भ्रमके नाम ३ ॥ भ्रान्ति १ मिथ्यामति २ भ्रम ३ ॥ ४ ॥

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ॥ अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

प्रतिज्ञाके नाम १० ॥ संविद् १ आगू २ प्रतिज्ञान ३ नियम ४ आश्रव ५ संश्रव ६ अंगीकार ७ अभ्युपगम ८ प्रतिश्रव ९ समाधि १० ॥ ५ ॥

मोक्षे धीर्ज्ञान—

मोक्षमें बुद्धिलगानेका नाम १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥

मन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ॥

मोक्षसे अन्यत्र शिल्पविद्या और शास्त्रमें बुद्धिलगानेका नाम १ ॥ विज्ञान १ ॥

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिः-श्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मोक्षोऽपवर्गो-

मोक्षके नाम ८ ॥ मुक्ति १ कैवल्य २ निर्वाण ३ श्रेयस् ४ निश्श्रेयस ५ अमृत ६ ॥ ६ ॥ मोक्ष ७ अपवर्ग८॥

-ऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम्॥

अज्ञानके नाम ३ ॥ अज्ञान १ अविद्या २ अहम्मति ३ ॥

रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च-विषया अमी ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च-

पञ्चविषयोके नाम ५ ॥ रूप १ शब्द २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५॥ ७ ॥

इकट्ठे रूपरसादिके नाम ३ ॥ विषय १ गोचर २ इन्द्रियार्थ ३ ॥

-हृषीकं विषयीन्द्रियम् ॥

इन्द्रियके नाम ३ ॥ हृषीक १ विषयि २ इन्द्रिय ३ ॥

कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि-

कर्मेन्द्रियोंके नाम ॥ गुदा १ आदि ॥

-मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥८॥

ज्ञानेन्द्रियोंके नाम२॥मनस् १ नेत्र २ आदि ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः ॥ तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि-

छः रसोंके नाम ६ ॥ तुवर-कषाय १ मधुर २ लवण ३ कटु ४ तिक्त ५ अम्ल ६ ॥

-तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

कषाय आदि रसवाचक शब्द यदि द्रव्यवाचक होयँ तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जन-मनोहरे ॥

मनुष्योके मनको हरनेवाले घिसनेसे उत्पन्न हुए सुगन्धका नाम१॥परिमल१॥

आमोदः सोऽतिनिर्हारी-

अत्यन्त मनको हरनेवाले सुगधिका नाम १ ॥ आमोद १ ॥

-वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् १०

यहासे लेकर "गुणे शुक्लादयः पुंसि", इससे पहले जो शब्द हैं वह वाच्यलिंग अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं ॥ १० ॥

---

१ पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रिय-संग्रहः । भाषा-पायु १ उपस्थ २ पाणि ३ पाद ४ और वाक् ५ यह पाच कर्मेन्द्रिय हैं ॥

१ मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च त्वचा सह । नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥ भाषा-मन १ कर्ण २ नेत्र ३ जिह्वा ४ त्वचा ५ और नासिका यह ६ ज्ञानेन्द्रिय (धीन्द्रिय) हैं ॥

समाकर्षी तु निर्हारी-

जिसकी गन्ध आवे उसके नाम २ ॥ समाकर्षिन् १ निर्हारिन् २॥

-सुरभिर्घ्राणतर्पणः ॥

इष्टगन्धः सुगन्धिः स्या-

अत्युत्तमगन्धके नाम ४ ॥ सुरभि १ घ्राणतर्पण २ इष्टगन्ध ३ सुगन्धि ४ ॥

-दामोदी मुखवासनः ॥ ११॥

मुखको सुगन्धितकरनेवाले ताम्बूल आदिकी गन्धके नाम २ ॥ आमोदिन् १ मुखवासन २ ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो-

दुर्गन्धके नाम २ ॥ पूतिगन्धि १ दुर्गन्ध २ ॥

-विस्रं स्यादामगन्धि यत् ॥

कच्चे मासादिके गन्धका नाम १॥ विस्र १॥

शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥ अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः॥

उज्ज्वलके नाम १३ ॥ शुक्ल १ शुभ्र २ शुचि ३ श्वेत ४ विशद ५ श्येत ६ पांडर ७ ॥१२॥ अवदात ८ सित ९ गौर १० (व) लक्ष ११ धवल १२ अर्जुन १३ ॥

हरिणः पाण्डुरः पाण्डु-

कुछ पीलापनमिलेहुये सफेदवर्णके नाम ३ ॥ हरिण १ पांडुर २ पांडु ३

-रीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥१३॥

किञ्चित् उज्ज्वलका नाम १ ॥ धूसर १ ॥ १३ ॥

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ॥

काले वर्णके नाम ७ ॥ कृष्ण १ नील २ असित ३ श्याम ४ काल ५ श्यामल ६ मेचक ७ ॥

पीतो गौरो हरिद्राभः-

पीले वर्णके नाम ३ पीत १ गौर २ हरिद्राभ ३ ॥

-पालाशो हरितो हरित् १४॥

हरेवर्णके नाम ३ पालाश १ हरित २ हरित् ३ ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्तः-

लालवर्णके नाम ३ ॥ रोहित १ लोहित २ रक्त ३ ॥

-शोणः कोकनदच्छविः ॥

लाल कमलके समानवर्णके नाम २ ॥ शोण १ कोकनदच्छवि २ ॥

अव्यक्तरागस्त्वरुणः-

थोडे लालका नाम १॥अरुण १ ॥

-श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

मिलेहुए सफेद और लालवर्णका नाम १ ॥ पाटल १ ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो-

मिले हुए काले और पीले रंगके नाम २ ॥ श्याव १ कपिश २ ॥

-धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ॥

मिलेहुए काले और लालवर्णके नाम ३ ॥ धूम्र १ धूमल २ कृष्णलोहित ३ ॥

कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

वानरकेसे रंगके नाम ६ ॥ कडार १ कपिल २ पिङ्ग ३ पिशङ्ग ४ कद्रु ५ पिंगल ६ ॥ १६ ॥

चित्रं किर्मीरकल्माषशवलैताश्च कर्बुरे ॥

चित्रवर्णके नाम ६ ॥ चित्र १ किर्मीर २ कल्माष ३ शबल ४ एत ५ कर्बुर ६ ॥

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिंगास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

गुणवाचक शुक्ल आदि शब्द पुँल्लिंग होते हैं. और द्रव्यवाचकशब्द द्रव्यके अनुसार लिगमें होते हैं ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः ६.

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ॥

सरस्वतीके नाम ७ ॥ ब्राह्मी १ भारती २ भाषा ३ गिर्, गिरा ४ वाच् ५ वाणी ६ सरस्वती ७ ॥

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

बोलनेके नाम ६ ॥ व्याहार १ उक्ति २ लपित ३ भाषित ४ वचन ५ वचस् ॥ ६ ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्या-

अपभ्रष्ट अर्थात् व्याकरणकी रीतिसे अशुद्ध शब्दका नाम १ ॥ अपभ्रंश १ ॥

-च्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ॥

व्याकरणशास्त्रानुसार शुद्धशब्दका नाम १ ॥ शब्द १ ॥

तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

तिङन्तसुबन्तके समूह और कारक युक्त क्रियाका नाम १ ॥ वाक्य १ ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी-

वेदके नाम ४ ॥ श्रुति १ वेद २ आम्नाय ३ त्रयी ४ ॥

-धर्मस्तु तद्विधिः ॥

वेदमें कहीहुई संध्या तर्पण आदि विधिका नाम १ ॥ धर्म १ ॥

स्त्रियामृक्सामयजुषी—

वेदोंके नाम ३॥ ऋच् १ यजुस् २ सामन् ३ ॥

—इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

इन्हीं तीनों वेदोंका इकट्ठा नाम १॥ त्रयी १ ॥ ३ ॥

शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्ग—

वेदके छः अंगोंके नाम६ ॥ शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ ज्योतिष ५ छन्दस् ६ ॥

मोंकारप्रणवौ समौ ॥

ओंकारके नाम २ ॥ ओंकार १ प्रणव २ ॥

इतिहासः पुरावृत्त—

इतिहासके नाम २ ॥ इतिहास १ पुरावृत्त २ ॥

मुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४

उदात्त अनुदात्त स्वरितका नाम १ ॥ स्वर १ ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्क-विद्यार्थशास्त्रयोः ॥

तर्कविद्याका नाम १॥आन्वीक्षिकी१॥ अर्थशास्त्रका नाम १॥ दंडनीति १ ॥

आख्यायिकोपलब्धार्था—

जिसका अर्थ जान लिया हो उस कथाके नाम २ ॥ आख्यायिका १ उपलब्धार्था २ ॥

—पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

पुराणोंके नाम २ ॥ पुराण १ पंचलक्षण २ ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पना कथा—

कल्पना करी हुई कादम्बरी आदि कथाके नाम २ ॥ प्रबन्धकल्पना १ कथा २ ॥

—प्रवह्लिका प्रहेलिका ॥

जिसके सुननेसे मतलब जाना जाय और विचार करनेसे दूसरा मतलब निकले उस (कहानी) के नाम २ ॥ प्रवह्लिका १ प्रहेलिका २ ॥

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता—

धर्म जनानेको रचना कियेहुए श्लोकोंके समूहके नाम १ ॥ स्मृति १ धर्मसंहिता २ ॥

—समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

संग्रहके नाम २॥ समाहृति १ संग्रह २ ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था—

जिसमें कुछ अर्थ पूरा किया जाय उसके नाम२॥समस्या१समासार्था२ ॥

—किंवदन्ती जनश्रुतिः ॥

लोकप्रवाद अर्थात् दुर्यशके नाम२॥ किंवदन्ती १ जनश्रुति २॥

वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्या—

वार्ताके नाम ४॥ वार्त्ता १ प्रवृत्ति २ वृत्तान्त ३ उदन्त ४ ॥

—दथाह्वयः ॥ ७ ॥

आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ॥

नामके नाम ५ ॥ आह्वय१॥ ७॥ आख्या २ अभिधान ३ नामधेय ४ नामन् ५ ॥

हूतिराकारणाह्वानं—

पुकारनेके नाम ३॥हूति १ आकारणा २ आह्वान ३ ॥

—संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥

बहुत जनोंकरके पुकारनेका नाम१॥ संहूति १ ॥ ८ ॥

विवादो व्यवहारः स्या—

विवादके नाम२॥ विवाद १ व्यवहार २ ॥

—दुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ॥

वार्ताका प्रारम्भ करनेके नाम २॥ उपन्यास १ वाङ्मुख २ ॥

उपोद्घात उदाहारः—

जो बात आगे कही जाय उसके उपयोगी बातके नाम २॥उपोद्घात १ उदाहार २ ॥

—शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥

सौगन्ध खानेके नाम २॥ शपन१ शपथ २ ॥ ९ ॥

प्रश्नोनुयोगः पृच्छा च—

प्रश्नके नाम ३ ॥ प्रश्न १ अनुयोग २ पृच्छा ३ ॥

—प्रतिवाक्योत्तर समे ॥

उत्तरके नाम २ ॥ प्रतिवाक्य १ उत्तर २ ॥

मिथ्याभियोगाऽभ्याख्यान—

झूठे दोष लगानेके नाम २॥ मिथ्याभियोग १ अभ्याख्यान २ ॥

—मथ मिथ्याभिशंसनम् ॥१०॥

अभिशापः—

मदिरादिपान आदिका झूँठा दोष लगानेके नाम २ ॥ मिथ्याभिशंसन १ ॥ १० ॥ अभिशाप २ ॥

प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ॥

अनुरागज शब्दका नाम १॥प्रणाद १॥

यशः कीर्तिः समज्ञा च—

कीर्तिके नाम ३ ॥ यशस् १ कीर्ति २ समज्ञा ३ ॥

—स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः॥११॥

स्तुतिके नाम ४॥ स्तव१ स्तोत्र २ स्तुति ३ नुति ४ ॥ ११ ॥

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्त—

दोतीनवार कहनेका नाम१॥आम्रेडित१

—मुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ॥

जोरसे बोलनेके नाम २॥उच्चैर्घुष्ट१ घोषणा २॥

काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥

शोकभयकामादियुक्त वचनका नाम काकु १ ॥ १२ ॥

अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ॥ उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

निन्दाके नाम १० ॥ अवर्ण १ आक्षेप २ निर्वाद ३ परीवाद–परिवाद ४ अपवाद ५ उपक्रोश ६ जुगुप्सा ७ कुत्सा ८ निन्दा ९ गर्हण १०॥१३॥

पारुष्यमतिवादः स्या–

कठोरभाषणके नाम २ ॥ पारुष्य १ अतिवाद २ ॥

–द्भर्त्सनं त्वपकारगीः ॥

ललकारनेका नाम १॥ भर्त्सन १॥

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥

खिजानेका नाम १॥परिभाषण १॥१४॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ॥

पर स्त्री या पुरुषसे मैथुनार्थ वार्त्ता करनेका नाम १॥आक्षारणा-आक्षारण १॥

स्यादाभाषणमालापः–

सम्बोधनपूर्वक वार्त्ता करनेके नाम २ ॥ आभाषण १ आलाप २ ॥

–प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५॥

अनर्थवचनका नाम १॥प्रलाप १॥१५॥

अनुलापो मुहुर्भाषा–

वारंवार भाषणके नाम २॥ अनुलाप १ मुहुर्भाषा ॥ २ ॥

–विलापः परिदेवनम् ॥

रोनेके नाम २॥विलाप १ परिदेवन २॥

विप्रलापो विरोधोक्तिः–

परस्पर विरुद्धभाषणके नाम २ ॥ विप्रलाप १ विरोधोक्ति २ ॥

–संलापो भाषणं मिथः॥१६॥

परस्परयोग्यभाषणका नाम १ ॥ संलाप १ ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचन–

सुन्दर वचनके नाम २॥ सुप्रलाप १ सुवचन २ ॥

मपलापस्तु निह्नवः ॥

मुकरजानेके नाम २ ॥ अपलाप १ निह्नव २ ॥

संदेशवाग्वाचिकं स्या–

संदेशके नाम २ ॥ सन्देशवाच् १ वाचिक २ ॥

–द्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥१७॥

रुशती शब्दसे लेकर सम्यक् शब्द-पर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों लिंगोंमे होतेहै ॥१७॥

रुशती वागकल्याणी–

अमंगलवाक्यका नाम १॥रुशती १॥

–स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ॥

शुभवाणीका नाम १॥ कल्या १॥

अत्यर्थमधुरं सान्त्वं–

अतिमिष्ट वचनका नाम १॥ सान्त्व १॥

–संगतं हृदयंगमम् ॥ १८॥

सम्बद्ध अर्थात् योग्य वचनके नाम २॥संगत १ हृदयगम२ ॥१८॥

निष्ठुरं परुष–

कठोरवचनकेंनाम२॥ निष्ठुर१परुष२

ग्राम्यमश्लीलं–

भाँडआदिके वचनोंके नाम २॥ ग्राम्य १ अश्लील २॥

–सूनृतं प्रिये ॥

सत्ये–

प्रिय और सत्यवचनका नाम १॥ सूनृत १॥

–ऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते १९

पूर्वापर विरुद्ध वचनके नाम३॥संकुल १ क्लिष्ट २ परस्परपराहत ३॥ १९॥

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं–

अधकहे वचनके नाम२॥ लुप्तवर्णपद १ ग्रस्त २॥

–निरस्तं त्वरितोदितम् ॥

जलदी कहे हुए शब्दके नाम २॥ निरस्त १ त्वरितोदित २॥

अम्बूकृतं सनिष्ठीव–

थूकसहित बोलनेके नाम २॥अम्बूकृत १ सनिष्ठीव २॥

–मबद्धं स्यादनर्थकम् ॥२०॥

अर्थन्यूनवचनके नाम २॥ अबद्ध १ अनर्थक २॥ २०॥

अनक्षरमवाच्यं स्या–

अकथनयोग्य निन्दायुक्त वचनके नाम २॥ अनक्षर १ अवाच्य २॥

दाहतं तु मृषार्थकम् ॥

झुठाईका नाम १॥ आहत १॥

" सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं–

हास्यसहितवचनके नाम २॥ सोल्लुण्ठन १ सोत्प्रास २॥

–मणितं रतिकूजितम् "

मैथुनके शब्दके नाम २॥ मणित १ रतिकूजित २॥

अथ म्लिष्टमविस्पष्टं–

अप्रतीकके नाम २॥म्लिष्ट१ अविस्पष्ट २॥

–वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१॥

झूठके नाम २॥वितथ१अनृत २॥२१॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्य–

सत्यके नाम ४ ॥ सत्य १ तथ्य २ ऋत ३ सम्यच् ४ ॥

-गमूनि त्रिषु तद्वति ॥

सत्य आदि शब्द द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होतेहैं ॥

शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्वाननिर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः ॥ आरवारावसंरावविरावा-

शब्दके नाम १७ ॥ शब्द १ निनाद २ निनद ३ ध्वनि ४ ध्वान ५ रव ६ स्वन ७ ॥ २२ ॥ स्वान ८ निर्घोष ९ निर्ह्राद १० नाद ११ निःस्वान १२ निःस्वन १३ आरव १४ आराव १५ संराव १६ विराव १७ ॥

-अथ मर्मरः ॥ २३ ॥ स्वनिते वस्त्रपर्णानां-

वस्त्र और पत्तोंके शब्दका नाम १ ॥ मर्मर १ ॥ २३ ॥

-भूषणानां च शिञ्जितम् ॥

गहनेके खनखनाहटका नाम १ ॥ शिञ्जित १ ॥

निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि ॥ २४ ॥

वीणादि शब्दोंके नाम ५ ॥ निक्वाण १ निक्वण २ क्वाण ३ क्वण ४ क्वणन ५ ॥ २४ ॥

वीणायाः क्वणिते प्रादेः प्रक्वाणप्रक्वणादयः ॥

केवल वीणाके बाजोंके नाम ३ ॥ प्रक्वाण १ प्रक्वण २ उपक्वणन आदि ३ ॥

कोलाहलः कलकल-

कोलाहलके नाम २ ॥ कोलाहल १ कलकल २ ॥

-स्तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥

पक्षियोंके शब्दके नाम २ ॥ वाशित १ रुत २ ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने-

आवाजकी आवाज अर्थात् गूँजनेके नाम २ ॥ प्रतिश्रुत् १ प्रतिध्वान २ ॥

-गीतं गानमिमे समे ॥

गानेके नाम २ ॥ गीत १ गान २ ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७.

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्य-

१ षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम् । अजाविकौ च गान्धारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम् ॥ १ ॥ पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम् । अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः ॥ २ ॥ भाषा-मोर षड्ज शब्दको बोलता है । बैल ऋषभ शब्दको बोलता है । भेड बकरी गान्धार स्वरको बोलते हैं । क्रौञ्च पक्षी मध्यम स्वरको बोलताहै । घोडा धैवत स्वरको बोलताहै । कोकिल वसन्त कालमें पञ्चम स्वरको बोलता है । हस्ती निषाद स्वरको बोलताहै।

मधैवताः ॥ पञ्चमश्चेत्यमी सप्ततन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

वीणासे वा कंठसे उत्पन्न होनेवाले स्वरोके नाम ७ ॥ निपाद १ ऋषभ२ गान्धार ३ षड्ज ४ मध्यम५ धैवत ६ पञ्चम ७ ॥ १ ॥

काकली तु कले सूक्ष्मे-

सूक्ष्मशब्दका नाम १ ॥ काकली १॥

-ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ॥

कलो-

मीठी और अस्फुट आवाजका नाम १ ॥ कल १ ॥

-मन्द्रस्तु गम्भीरे-

गभीर शब्दका नाम १ ॥ मन्द्र १ ॥

-तारोऽत्युच्चै-

अत्युच्च शब्दका नाम १॥ तार १ ॥

-स्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

कल आदि तीन शब्द तीनों लिगोंमें होतेहै ॥ २ ॥

समन्वितलयस्त्वेकतालो-

वाद्यगानादिके एकसंग तालस्वरका नाम १॥ एकताल १ ॥

-वीणा तु वल्लकी ॥

विपञ्ची-

वीणाके नाम ३ ॥ वीणा १ वल्लकी २ विपञ्ची ३ ॥

-सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥

सात तारोंसे बोलनेवाली वीणाका नाम १ ॥ परिवादिनी १ ॥ ३ ॥

ततं वीणादिकं वाद्य-

वीणादिक वाजेका नाम १॥तत१॥

-मानद्धं मुरजादिकम् ॥

मृदगआदि वाजेका नाम१॥आनद्ध१॥

वंशादिकं तु सुषिरं-

वंशीआदिवाजेका नाम १॥सुषिर१॥

-कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥

झांझ मंजीरा आदि वाजेका नाम १ ॥ घन १ ॥ ४ ॥

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् ॥

तत आदि चारो बाजोंका इकट्ठा नाम३॥वाद्य१ वादित्र २ आतोद्य३॥

मृदङ्गा मुरजा-

मृदंगके नाम २॥ मृदंग १मुरज२ ॥

-भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥

मृदगके भेद ३ ॥ अङ्क्य १ आलिङ्ग्य २ ऊर्ध्वक ३ ॥ ५ ॥

स्याद्यशःपटहो ढक्का-

नगाडेके नाम २ ॥ यशःपटह १ ढक्का २ ॥

—भेर्यामानकदुन्दुभी ॥

धौंसानफीरि आदिके नाम ३ ॥

भेरी १ आनक २ दुन्दुभि ३ ॥

आनकः पटहोऽस्त्री स्या—

ढोलके नाम २॥ आनक १ पटह २॥

—त्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥

जिससे वीणादि बजातेहैं उस नक्खी आदिका नाम १ ॥ कोण १ ॥ ६ ॥

वीणादण्डः प्रवालः स्या—

वीणाकी डंडीका नाम १॥ प्रवाल १॥

—त्ककुभस्तु प्रसेवकः ॥

वीणाके नीचे जो गोल गोल चर्म से मढाहुआ होताहै उसके नाम २ ॥ ककुभ १ प्रसेवक २ ॥

कोलम्बकस्तु कायोऽस्या—

वीणाके सर्वांगका नाम १॥ कोलम्बक १॥

उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

वीणामें जहां तार बांधे जातेहै उसके नाम २ ॥ उपनाह १ निबन्धन २॥७॥

वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः ॥ मर्दलः पणवोऽन्ये च

डमुरुका नाम १ ॥ डमरु १॥ वडे डमरुका नाम १॥ मड्डु १ ॥ डिण्डिमका नाम १॥ डिंडिम १ ॥ झांझका नाम १ ॥ झर्झर १ ॥ तथा मर्दल पणव आदि और भी बाजे हैं १ ॥

—नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥

नाचनेवालीके नाम २ ॥ नर्तकी १ लासिका २ ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ॥

धीरे धीरे नाचका नाम १ ॥ तत्त्व १ ॥ शीघ्र नाचका नाम १ ॥ ओघ १ ॥ मध्यम नाचका नाम १॥ घन १॥

तालः कालक्रियामानं—

समय और क्रियाके प्रमाणका नाम १ ॥ ताल १ ॥

—लयः साम्य—

बाजा और नाचका एक संग ताल छूटनेका नाम १ ॥ लय १ ॥

—मथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥

भाषा—इससे आगे कहे ये शब्द स्त्रीलिंग वाची नहीं अर्थात् पुँलिग नपुंसक लिंग वाची होते हैं ॥ ९॥

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ॥

नाचके नाम ६ ॥ तांडव १ नटन २ नाट्य ३ लास्य ४ नृत्य ५ नर्त्तन ६॥

तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

नाच गीत बाजा इन तीनके इकट्ठे नाम२॥ तौर्यत्रिक १ नाट्य २ ॥१०॥

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्त्तकः ॥ स्त्रीवेषधारी पुरुषो–

स्त्रीवेषधारी नाचनेवाले पुरुषकेनाम३॥ भ्रकुंस १ भ्रुकुंस २ भ्रूकुंस ३ ॥

नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ११

केवल नाटकमें नाचने गानेवाली वेश्याका नाम १॥ अज्जुका १॥११॥

भगिनीपतिरावुत्तो–

बहनोईका नाम१ ॥ आवुत्त १ ॥

–भावो विद्वा–

विद्वान्‌का नाम १ ॥ भाव १ ॥

नथावुकः ॥

जनको–

पिताका नाम १ ॥ आवुक १ ॥

युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

युवराजके नाम २ ॥ कुमार१ भर्तृदारक २ ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देव–

राजाके नाम २ ॥भट्टारक१ देव२॥

–स्तत्सुता भर्तृदारिका ॥

राजकन्याका नाम१॥भर्तृदारिका१॥

देवी कृताभिषेकाया–

अभिषेक की हुई रानीका नाम१॥ देवी १ ॥

–मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अन्य राजस्त्रियोंका नाम १ ॥ भट्टिनी १ ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ–

अवध्य वचनका नाम १ ॥ अब्रह्मण्य १ ॥

–राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ॥

राजाके शालेका नाम१॥राष्ट्रिय१ ॥

अम्बा माता–

माताके नाम २ ॥अम्बा१ मातृ२ ॥

–ऽथ बाला स्याद्वासू–

कुमारीके नाम २ ॥ बाला १ वासू२॥

रार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

श्रेष्ठके नाम२॥ आर्य१मारिष२॥१४॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा–

जेठी बहनका नाम१॥अत्तिका१ ॥

–निष्ठानिर्वहणे समे ॥

नाटककी सन्धियोंके नाम२॥ निष्ठा१ निर्वहण २ ॥

हण्डे हञ्जे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

नीचस्त्रीके पुकारनेमे हण्डे १ ॥ चेटीके पुकारनेमे हञ्जे १ ॥ सखीके पुकारनेमें हला १ ॥ १५ ॥

अंगहारोंगविक्षेपो–

लचकनेके नाम २ ॥ अंगहार १ अंगविक्षेप २ ॥

--व्यञ्जकाभिनयौ समौ ॥

भाव बतानेके नाम २ ॥ व्यञ्जक १ अभिनय २ ॥

निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥

भौंह मटकानेका नाम १॥ आंगिक १ ॥ अन्तःकरणके भावका नाम १ ॥ सात्त्विक १ ॥ १६ ॥

शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः॥बीभत्सरौद्रौ च रसाः--

दश रसोंके नाम १० ॥ शृंगार १ वीर २ करुण ३ अद्भुत ४ हास्य ५ भयानक ६ बीभत्स ७ रौद्र ८ (शांति ९ वात्सल्य १०)

--शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः॥ १७॥

शृङ्गारके नाम ३ ॥ शृङ्गार १ शुचि २ उज्ज्वल ३॥ १७ ॥

उत्साहवर्धनो वीरः--

वीररसके नाम २ ॥ उत्साहवर्धन १ वीर २ ॥

--कारुण्यं करुणा घृणा ॥

कृपादयानुकम्पा स्यादनुक्रोशो-

करुणा रसके नाम ७ ॥ कारुण्य १ करुणा २ घृणा ३ कृपा ४ दया ५ अनुकम्पा ६ अनुक्रोश ७ ॥

--ऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥

हासो हास्यं च--.

हास्य२ रसके नाम३॥हस१॥१८॥ हास हास्य ३ ॥

--बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम्॥

बीभत्स रसके नाम २॥ बीभत्स १ विकृत २ ॥

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्र--

अद्भुतरसके नाम ४ ॥ अद्भुत १ आश्चर्य २ विस्मय ३ चित्र ४ ॥

--मप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥

दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ॥ भयंकरं प्रतिभयं--

भयानकरसके नाम ९ ॥ भैरव१ ॥ ॥ १९ ॥ दारुण २ भीषण ३ भीष्म ४ घोर ५ भीम ६ भयानक ७ भयंकर ८ प्रतिभय ९ ॥

रौद्रं तूग्र--

रौद्ररसके नाम २॥ रौद्र १ उग्र २॥

--ममी त्रिषु ॥ २० ॥

चतुर्दश--

अद्भुतादि चौदह शब्द द्रव्यवाचक हों तो विशेष्यनिघ्नलिंग जानना॥२०॥

--दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ॥

भयके नाम ६ ॥ दर १ त्रास २ भीति ३ भी ४ साध्वस ५ भय ६ ॥

विकारो मानसो भावो-

मनके विकारका नाम १॥ भाव१ ॥

-ऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥

भावप्रकाशकका नाम १ ॥ अनुभाव १ ॥ २१ ॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो-

अहकारके नाम १ ॥ गर्व १ अभिमान २ अहकार ३ ॥

-मानश्चित्तसमुन्नतिः ॥

वडप्पनका नाम १ ॥ मान १॥

अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूर्क्षणम् ॥

निरादरके नाम ९॥ अनादर १ परिभव २ परीभाव ३ तिरस्क्रिया ४ ॥ ॥२२ ॥ रीढा ५ अवमानना ६ अवज्ञा ७ अवहेलन ८ असूर्क्षण ९॥

मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा-

लज्जाके नाम ५॥ मन्दाक्ष १ ह्री२ त्रपा ३ व्रीडा ४ लज्जा ५ ॥

-सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

दूसरेसे लजानेके नाम १ ॥ अपत्रपा १ ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितिक्षा-

क्षमाके नाम २॥क्षान्ति १तितिक्षा२॥

-ऽभिध्यातुपरस्यविषयेस्पृहा ॥

परधनलेनेकी इच्छाका नाम १ ॥ अभिध्या १ ॥

अक्षान्तिरीर्ष्या-

ईर्ष्याका नाम २॥अक्षान्ति१ईर्ष्या२॥

-ऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

पराये गुणोका दोष प्रसिद्ध करनेका का नाम १ ॥ असूया १ ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो-

वैरके नाम ३ ॥ वैर १ विरोध २ विद्वेष ३ ॥

मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ॥

शोकके नाम ३ ॥ मन्यु १ शोक २ शुच् ३ ॥

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

पछितानेके नाम ३ ॥ पश्चात्ताप१ अनुताप २ विप्रतीसार ३ ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियौ ॥

क्रोधके नाम ७॥कोप १ क्रोध २ अमर्ष३रोष४प्रतिघा५रुप् ६ क्रुध् ७ ॥

शुचौ तु चरिते शील-

शुद्ध आचरणका नाम१॥शील१॥

-मुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥२६॥

सिरडीपनके नाम २ ॥ उन्माद, १ चित्तविभ्रम २ ॥ २६ ॥

प्रेमा ना प्रियता हार्द प्रेम स्नेहो-

प्रेमके नाम ५ ॥ प्रेमन् १ प्रियता २ हार्द ३ प्रेमन् ४ स्नेह ५ ॥

-ऽथ दोहदम् ॥

इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥

कामोऽभिलाषस्तर्षश्च-

इच्छाके नाम १२ ॥ दोहद१इच्छा २ कांक्षा ३ स्पृहा ४ ईहा ५ तृष् ६ वाञ्छा ७ लिप्सा ८ मनोरथ९॥२७॥ काम १० अभिलाष ११ तर्ष १२ ॥

-सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ॥

बडी इच्छाका नाम१॥ लालसा१॥

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता-

धर्मचिन्ताके नाम २ ॥ उपाधि १ धर्मचिन्ता २ ॥

पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥

मनकी पीडाके नाम २॥ आधि २ मानसीव्यथा २ ॥ २८ ॥

स्याच्चिन्तास्मृतिराध्यान-

स्मरणके नाम ३॥ चिंता१ स्मृति२ आध्यान ३ ॥

-मुत्कण्ठोत्कलिके समे ॥

कामादिसे उत्पन्न स्मृतिके नाम२॥ उत्कण्ठा १ उत्कलिका २ ॥

उत्साहोऽध्यवसायः स्या-

उत्साहके नाम २ ॥ उत्साह १अ-ध्यवसाय २ ॥

-त्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥

असाध्यसाधनमें उत्साहका नाम१॥ वीर्य १ ॥ २९॥

कपटोऽस्त्री व्याजदंभोपधयश्छद्मकैतवे ॥ कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं-

कपटके नाम ९ ॥ कपट १ व्याज २ दम्भ ३ उपधि ४ छद्मन् ५ कैतव ६ कुसृति ७ निकृति ८ शाठ्य ९ ॥

-प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

असावधानताके नाम २ ॥ प्रमाद१ अनवधानता २ ॥ ३० ॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ॥

तमासेके नाम ४ ॥ कौतूहल १ कौतुक २ कुतुक ३ कुतूहल ४ ॥

स्त्रीणां विलासविब्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥ हेलालीले त्यमी हावाः क्रियाः श्रृङ्गारभावजाः ॥

श्रृङ्गार और भावसे उत्पन्नहोनेवाले स्त्रियोके विलासके नाम ६ ॥ विलास १ विब्वोक २ विभ्रम ३ ललित ४ ॥ ३१ ॥ हेला ५ लीला ६ ॥

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा खेला च नर्म च ॥ ३२ ॥

हँसीकरनेके नाम ६ ॥ द्रव १ केलि २ परीहास ३ क्रीडा ४ खेला ५ नर्मन् ६ ॥ ३२ ॥

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च–

बहाना करनेके नाम ३ ॥ व्याज १ अपदेश २ लक्ष्य ३ ॥

–क्रीडा खेला च कूर्दनम् ॥

बालकोंके खेलके नाम ३ ॥ क्रीडा १ खेला २ कूर्दन ३ ॥

घर्मो निदाघः स्वेदः स्या–

गर्मीके नाम ३ ॥ घर्म १ निदाघ २ स्वेद ३ ॥

–त्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

बेहोशीके नाम २ ॥ प्रलय १ नष्टचेष्टता २ ॥ ३३ ॥

अवहित्थाकारगुप्तिः–

शोकमें सूरत छिपानेके नाम २ ॥ अवहित्था १ आकारगुप्ति २ ॥

–समौ संवेगसंभ्रमौ ॥

हर्ष आदिके कारण शीघ्र कार्य करनेके नाम २ ॥ संवेग १ संभ्रम २ ॥

स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः–

किसीको खिजानेके लिये हँसीकरनेका नाम १ ॥ आच्छुरितक १ ॥

–स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥

मुस्कुरानेका नाम १ ॥ स्मित १ ॥ ३४ ॥

मध्यमः स्याद्विहसितं–

मध्यम हास्यका नाम ॥ १ विहसित १ ॥

रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ॥

रोमोंके खडेहोनेके नाम २ ॥ रोमाञ्च १ रोमहर्षण २ ॥

क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं–

रोनेके नाम ३ ॥ क्रन्दित १ रुदित २ क्रुष्ट ३ ॥

–जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥

जम्भाई लेनेके नाम २ ॥ जृम्भ १ जृम्भण २ ॥ ३५ ॥

विप्रलम्भो विसंवादो–

स्वीकार करके कार्यको न करनेके नाम २ ॥ विप्रलम्भ १ विसंवाद २ ॥

–रिङ्गणं स्खलनं समे ॥

धर्मसे चलायमान होनेके अथवा बालकोंके घुटु ओंसे चलनेके नाम२ ॥ रिङ्गण १ स्खलन २ ॥

स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

शयन करनेके नाम ५ ॥ निद्रा १ शयन२स्वाप३स्वप्न४संवेश५॥ ३६ ॥

तन्द्री प्रमीला–

ऊंघनेके नाम२॥तन्द्री १ प्रमीला२॥

भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिःस्त्रियाम् ॥

क्रोधसहित भौंह चढानेके नाम. ३॥ भ्रकुटि १ भ्रुकुटि २ भ्रूकुटि ३ ॥

अदृष्टिः स्यादसौम्येक्षिणे–

क्रूरदृष्टिका नाम १ ॥ अदृष्टि १॥

–संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥ स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चा-

स्वभावके नाम५॥संसिद्धि१प्रकृति२ ॥ ३७ ॥ स्वरूप ३ स्वभाव४ निसर्ग५॥

–ऽथ वेपथुः ॥

–कम्पो–

कांपनेके नाम २॥ वेपथु१ कम्प२॥

–ऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

उत्सवके नाम ५ ॥ क्षण १उद्धर्ष२ मह ३ उद्धव ४ उत्सव ५ ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८.

अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम् ॥ नागलोको–

पातालके नाम ५॥अधोभुवन१ पाताल२बलिसद्मन्३रसातल४नागलोक५॥

–ऽथ कुहरं सुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥ छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ॥

छिद्रके नाम ११ ॥ कुहर १सुषिर२ विवर३ बिल ४॥ १॥ छिद्र५निर्व्यथन ६ रोक७रन्ध्र८श्वभ्र९वपा१०शुषि ११ ॥

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे–

पृथ्वीके गढहेके नाम २ ॥ गर्त १ अवट २ ॥

–सरन्ध्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

छेदयुक्त वस्तुका नाम १ ॥ सुषिर १ ॥ २ ॥

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ॥

अन्धकारके नाम ५ ॥ अंधकार१ ध्वान्त २ तमिस्र ३ तिमिर४तमस्५॥

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं–

अत्यन्त अंधकारका नाम१ ॥अंधतमस १ ॥

–क्षीणेऽवतमसं–

थोडी अन्धियारीका नाम १ ॥ अवतमस १

—तमः ॥ ३ ॥

विष्वक्संतमसं—

सब ओर फैले हुए अंधकारका नाम १ ॥ सन्तमस १ ॥ ३ ॥

—नागाः काद्रवेया—

फन और पूंछवाले मनुष्याकार सर्पोंके नाम २ ॥ नाग १ काद्रवेय२॥

स्तदीश्वरः ॥ शेषोऽनन्तो—

शेषनागके नाम २॥ शेष १अनन्त२॥

—वासुकिस्तु सर्पराजो—

सर्पराजके नाम २ ॥ वासुकि १ सर्पराज २ ॥

ऽथ गोनसे ॥ ४ ॥

तिलित्सः स्या—

गौकी समान नासिकावाले सर्पके नाम २ ॥ गोनस १ ॥ ४ ॥ तिलित्स २ ॥

—दजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ॥

अजगरके नाम ३ ॥ अजगर १ शयु २ वाहस ३ ॥

अलगर्दो जलव्यालः—

पानीके सर्पके नाम २ ॥ अलगर्द १ जलव्याल २ ॥

समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

द्विमुही सर्पके नाम २ ॥ राजिल १ डुण्डुभ २ ॥ ५ ॥

मालुधानो मातुलाहि—

चीतेसर्पके नाम २ ॥ मालुधान १ मातुलाहि २ ॥

र्निर्मुक्तो मुक्तकंचुकः ॥

केंचुलीके छोडेहुए सब सर्पोंके नाम २॥ निर्मुक्त १ मुक्तकंचुक २

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजंगमः ॥ ६ ॥ आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ॥ कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥ दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ॥ उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

सर्पके नाम २५॥ सर्प १ पृदाकु२ भुजग ३ भुजग ४ अहि ५ भुजगम ६ ॥ आशीविष ७ विषधर ८ चक्रिन् ९ व्याल १० सरीसृप ११ कुंडलिन् १२ गूढपाद् १३ चक्षुःश्रवस् १४ काकोदर १५ फणिन् १६ ॥ ७ ॥ दर्वीकर १७ दीर्घपृष्ठ १८ दन्दशूक १९ विलेशय २० उरग २१ पन्नग २२ भोगिन् २३ जिह्मग २४ पवनाशन २५॥८॥

त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि-

सर्पके विष और हड्डी आदिका नाम १ ॥ आहेय १ ॥

स्फटायां तु फणा द्वयोः ॥

सर्पके फनके नाम २ ॥ स्फटा १ फणा २ ॥

समौ कंचुकनिर्मोकौ-

केंचुलीके नाम २ ॥ कंचुक १ निर्मोक २ ॥

क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

विषके नाम ३ ॥ क्ष्वेड १ गरल २ विष ३ ॥ ९ ॥

पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ॥ सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥ दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ॥

विषभेद ९ ॥ काकोल १ कालकूट २ हलाहल ३ सौराष्ट्रिक ४ शौक्लिकेय ५ ब्रह्मपुत्र ६ प्रदीपन ७ ॥ १० ॥ दारद ८ वत्सनाभ ९ ॥

विषवैद्यो जाङ्गुलिको-

सर्पके विषको दूरकरनेकी विद्याजाननेवालेके नाम २ ॥ विषवैद्य १ जांगुलिक ॥ २ ॥

-व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

सर्प पकडनेवालेके नाम २ ॥ व्यालग्राहिन् १ अहितुण्डिक २ ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः ९.

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ॥

नरकके नाम ४ ॥ नारक १ नरक २ निरय ३ दुर्गति ४ ॥

तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥ संहारः कालसूत्रं चेत्याद्याः-

नरकोंकी जातिके भेद ॥ तपन १ अवीचि २ महारौरव ३ रौरव ४ ॥ १ ॥ संहार ५ कालसूत्र ६ आदि ॥

-सत्त्वास्तु नारकाः ॥ प्रेता-

नरकनिवासियोंके नाम २ नारक १ प्रेत २ ॥

-वैतरणी सिंधुः-

प्रेतोंकी नदीका नाम १ ॥ वैतरणी १ ॥

-स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥

नरककी अशोभाका नाम २ ॥ अलक्ष्मी १ निर्ऋति २ ॥ २ ॥

विष्टिराजूः-

नरकमें जबरदस्ती ढकेलनेके नाम २ ॥ त्रिष्टि १ आजू २ ॥

–कारणा तु यातना तीव्रवेदना॥

नरककी पीडाके नाम ३ ॥ कारणा १ यातना २ तीव्रवेदना ३ ॥

पीडाबाधाव्यथादुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥ स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं–

पीडाके नाम ९ ॥ पीडा १ बाधा २ व्यथा ३ दुःख ४ आमनस्य ५ प्रसूतिज ६ ॥ ३ ॥ कष्ट ७ कृच्छ्र ८ आभील ९ ॥

–त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्॥४॥

इन शब्दोंमें जो द्रव्यवाचक हो वह तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १०.

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ॥ उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः॥१॥ रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ॥

समुद्रके नाम १५ ॥ समुद्र १ अब्धि २ अकूपार ३ पारावार४ सरित्पति ५ उदन्वत् ६ उदधि ७ सिन्धु ८ सरस्वत् ९ सागर १० अर्णव ११॥१॥ रत्नाकर १२ जलनिधि १३ यादःपति १४ अपाम्पति १५ ॥

तस्य प्रभेदाः-क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

समुद्रके भेद ७ ॥ क्षीरोद १ लवणोद २ (इक्षुरसोद ३सुरोद४दधिमण्डोद ५ स्वादूद ६ घृतोद ७)॥२॥

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ॥ पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥ कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ॥ अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बु शम्बरम् ॥ ४ ॥ मेघपुष्पं घनरस–

जलके नाम २७ ॥ अप् १ वार २ वारि ३ सलिल ४ कमल ५ जल ६ पयस ७ कीलाल ८ अमृत ९ जीवन १० भुवन ११ वन १२ ॥ ॥३ ॥ कबन्ध १३ उदक १४ पाथस् १५ पुष्कर १६ सर्वतोमुख १७ अम्भस् १८ अर्णस् १९ तोय २० पानीय २१ नीर २२ क्षीर २३ अम्बु २४ शम्बर २५ ॥ ४ ॥ मेघपुष्प २६ घनरस २७ ॥

–स्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ॥

जलविकारके नाम २ ॥ आप्य १ अम्मय २ ॥

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचि-

जलकी तरंगके नाम ४ ॥ भंग १ तरग २ ऊर्मि ३ वीचि ४ ॥

-रथोर्मिषु ॥ ५ ॥

महत्सूल्लोलकल्लोलौ-

बडीतरंगके नाम २ ॥ ५ ॥ उल्लोल १ कल्लोल २ ॥

-स्यादावर्त्तोऽम्भसां भ्रमः ॥

जलके भमरका नाम १ ॥ आवर्त्त १ ॥

पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो-विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥

बिन्दुओंके नाम ४ ॥ पृषत् १ विन्दु २ पृषत् ३ विप्रुष ४ ॥ ६ ॥

चक्राणि पुटभेदाः स्यु-

भमरपडकर जलके नीचेको जानेके नाम २ ॥ चक्र १ पुटभेद २ ॥

-र्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ॥

जलके निकलनेके जालके नाम २ ॥ भ्रम १ जलनिर्गम २ ॥

कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

नदीके किनारेके नाम ५ ॥ कूल १ रोधस् २ तीर ३ प्रतीर ४ तट ५ ॥ ७ ॥

पारावारे परार्वाची तीरे-

उस पारका नाम १ ॥ पार १ ॥ इस पारका नाम १ ॥ अवार १ ॥

-पात्रं तदन्तरम् ॥

नदीके पाटका नाम १ ॥ पात्र १ ॥

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्त-र्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥

बेटके नाम २ ॥ द्वीप १ ॥ अन्तरीप २ ॥ ८ ॥

-तोयोत्थितं तत्पुलिनं-

छडावेका नाम १ ॥ पुलिन १ ॥

-सैकतं सिकतामयम् ॥

वालुकाधिकस्थानके नाम २ ॥ सैकत १ सिकतामय २ ॥

निषद्वरस्तु जम्बालः पंकोऽस्त्री शादकर्दमौ ॥ ९ ॥

बोदा (कींच) के नाम ५ ॥ निषद्वर १ जम्बाल २ पंक ३ शाद ४ कर्दम ५ ॥ ९ ॥

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः-

उफलानेके नाम २ ॥ जलोच्छ्वास १ परीवाह २ ॥

-कूपकास्तु विदारकाः ॥

चूहा (सूखी नदीके गढहे) के नाम २ ॥ कूपक १ विदारक २ ॥

नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये-

नौकासे उतरनेके योग्य जलका नाम १ ॥ नाव्य १ ॥

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥

नावके नाम ३ ॥ नौ १ तरणि २ तरि ३ ॥ १० ॥

उडुपं तु प्लवः कोलः—

घन्नईके नाम ३ उडुप १ प्लव २ कोल ३ ॥

—स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ॥

सोतका नाम १॥ स्रोतस् १ ॥

आतरस्तरपण्यं स्या—

उतराईके नाम २ ॥ आतर १ तरपण्य २ ॥

—द्द्रोणीकाष्ठाम्बुवाहिनी ॥११॥

पत्थर वा काष्ठनिर्मित नौकाके खेडीके नाम २ ॥ द्रोणी १ काष्ठाम्बुवाहिनी २ ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्—

नाव लादनेवाले उद्यमीके नाम२॥ सायात्रिक १ पोतवणिज् २ ॥

—कर्णधारस्तुनाविकः ॥

खेवा लगानेवालेके नाम २॥ कर्णधार १ नाविक २ ॥

नियामकाः पोतवाहाः—

जो नौकाके पीछे खडाहुआ लकडी घुमाया करताहै उसके नाम २ नियामक १ पोतवाह २ ॥

—कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

जिस खूँटेमे नौका बांधी जातीहै उसके नाम २॥कूपक १ गुणवृक्षक २॥१२॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्या—

पाता (नौकाके दोनो पसवाडोंमे बंधेहुए चलानेके काष्ठ) के नाम २॥ नौकादण्ड १ क्षेपणी २ ॥

—दरित्रं केनिपातकः ॥

करिया (नौकाकी पीठमे लगे हुए चलानेके काठ) के नाम २ ॥ अरित्रं १ केनिपातक २ ॥

अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः—

नौका साफ करनेके कुदालके नाम २ ॥ अभ्रि १ काष्टकुद्दाल २ ॥

—सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

जिससे नावका जल उलीचा जाता है उसके नाम २॥ सेकपात्र १ सेचन २ ॥ १३ ॥

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धे—

आधीनावका नाम १ ॥ अर्द्धनाव१॥

—ऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ॥

जो नावलायक जल न हो उसका नाम १ ॥ अतिनु १ ॥

त्रिष्वागाधात्—

अगाध शब्दपर्यंत जितने शब्द हैं वे तीनों लिंगोंमें चलतेहैं ॥

-प्रसन्नोऽच्छः-

निर्मलजलके नाम २ ॥ प्रसन्न १ अच्छ २ ॥

-कलुषोनच्छ आविलः ॥ १४ ॥

मैले जलके नाम ३ ॥ कलुष १ अनच्छ २ आविल ३ ॥ १४ ॥

निम्नं गभीरं गम्भीर-

गहरे जलके नाम ३ ॥ निम्न १ गभीर २ गंभीर ३ ॥

-मुत्तानं तद्विपर्यये ॥

थाहजलका नाम १ ॥ उत्तान १॥

अगाधमतलस्पर्शे-

अथाह जलके नाम २ ॥ अगाध १ अतलस्पर्श २ ॥

-कैवर्ते दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

मल्लाहके नाम ३ ॥ कैवर्त १ दाश २ धीवर ३ ॥ १५ ॥

आनायः पुंसि जालं स्या-

जालके नाम २॥आनाय १ जाल२॥

-च्छणसूत्रं पवित्रकम् ॥

शणसूत्र जालके नाम २ ॥ शण-सूत्र १ पवित्रक २ ॥

मत्स्याधानी कुवेणी स्या-

जिसमें मछली धरीजायँ उसके नाम २ ॥ मत्स्याधानी १ कुवेणी २ ॥

-द्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

मछली पकडनेके कांटेके नाम २ ॥ बडिश १ मत्स्यवेधन २ ॥ १६ ॥

पृथुरोमाझषोमत्स्योमीनोवैसारि-णोऽण्डजः ॥ विसारः शकुलीचा-

मछलीके नाम ८ ॥ पृथुरोमन् १ झष २ मत्स्य ३ मीन ४ वैसारिण ५ अण्डज ६ विसार ७ शकुलिन् ८ ॥

-ऽथ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥

मछलीके बच्चोंके नाम २॥ गडक१ शकुलार्भक २ ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीन-

पन्हा मछलीके नाम २ ॥ सहस्रदंष्ट्र १ पाठीन २ ॥

-उलूपी शिशुकः समौ ॥

सूस मछलीके नाम २ ॥ उलूपिन्१ शिशुक २ ॥

नलमीनश्चिलिचिमः-

चेल्हवा मछलीके नाम २ ॥ नलमीन १ चिलचिम २ ॥

-प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥

सहरी मछलीके नाम २ ॥ प्रोष्ठी १ शफरी २ ॥ १८ ॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोता-धान-

अंडोंसे निकली हुई छोटी मछलीस-मूहका नाम १ ॥ पोताधान १ ॥

—मथो झषाः ॥

रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥ तिमिंगिलादयश्चा—

रोहूमछलीका नाम १॥रोहित १॥ मगरी मछलीका नाम १ ॥ मद्गुर १ ॥ सौरीमछलीका नाम १ ॥ शाल १ ॥ राया मछलीका नाम १॥ राजीव १ ॥ सौरा मछलीका नाम १ ॥ शकुल १ ॥ बडीभारी मछलीका नाम १ ॥ तिमि १ ॥ १९ ॥ तिमिके निगलनेवाली मछलीका नाम १ ॥ तिमिंगिल १ ॥ आदि ॥

—ऽथ यादांसि जलजन्तवः ॥

सर्वजलजन्तुओंके नाम २ ॥ यादस् १ जलजन्तु २ ॥

तद्भेदाः शिशुमारोद्रशंकवो मकरादयः ॥ २०

शिस्नका नाम १ ॥ शिशुमार१॥ ओदका नाम १ ॥ उद्र १ ॥ शफ्रका नाम १ ॥ शंकु १ ॥ मगरका नाम १ ॥ मकर १ आदि ॥ २० ॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः—

केकडाके नाम २ ॥ कुलीर १ कर्कटक २ ॥

—कूर्मे कमठकच्छपौ ॥

कछुहेके नाम ३ ॥ कूर्म १ कमठ २ कच्छप ३ ॥

ग्राहोऽवहारो—

घडियालके नाम २ ॥ ग्राह १ अवहार २ ॥

—नक्रस्तु कुम्भीरो—

नाकेके नाम २ ॥ नक्र १ कुम्भीर२॥

—ऽथ महीलता ॥ २१ ॥

गण्डूपदः किंचुलको—

केचुवाके नाम ३ ॥ महीलता १ ॥२१ ॥ गण्डूपद २ किंचुलक ३ ॥

—निहाका गोधिका समे ॥

गोहके नाम २ ॥ निहाका १ गोधिका २ ॥

रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥

जोकके नाम ३॥ रक्तपा १ जलौका २ जलौकस् ३ ॥ २२ ॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः—

समुद्रकी सीपीके नाम २ ॥ मुक्तास्फोट १ शुक्ति २ ॥

—शंखः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ॥

शंखके नाम २ ॥ शख १ कम्बु२॥

क्षुद्रशंखाः शंखनखाः—

छोटे शंखके नाम २ ॥क्षुद्रशंख १ शंखनख २ ॥

—शम्बूका जलशुक्तयः ॥२३॥

सब सींपीके नाम २ ॥ शम्बूक १ जलशुक्ति २ ॥ २३ ॥

भेके मंडूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः ॥

मेडूकके नाम ६ ॥ मेक १ मण्डूक २ वर्षाभू ३ शालूर ४ प्लव ५ दर्दुर६॥

शिली गण्डूपदी–

काचुईके नाम २ ॥ शिली १ गण्डूपदी २ ॥

–भेकी वर्षाभ्वी–

मेडुकीके नाम २ ॥ भेकी १ वर्षाभ्वी २ ॥

–कमठी डुलिः ॥ २४ ॥

कछुहीके नाम २ ॥ कमठी १ डुली २ ॥ २४ ॥

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी-

शींगीका नाम १ ॥ शृंगी १ ॥

–दुर्नामा दीर्घकोशिका ॥

झिकवाके नाम २ ॥ दुर्नामा १ दीर्घकोशिका २ ॥

जलाशया जलाधारा–

तडागझीलादि सब जलाशयोंके नाम २ ॥ जलाशय१ ॥ जलाधार २ ॥

–तत्रागाधजलो.ह्रदः ॥ २५ ॥

कुण्डका नाम १ ॥ ह्रद १ ॥२५॥

आहावस्तु निपानं स्यादुपकूमजलाशये ॥

कूपके निकटकी चरही (जलके लिये बनाई हुई) के नाम२ ॥ आहाव १ निपान २ ॥

पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥

कुएके नाम ४ ॥ अन्धु १ प्रहि २ कूप ३ उदपान ४ ॥ २६ ॥

नेमिस्त्रिकाऽस्य– ॥

कुएकी पाठिकाका नाम १ ॥ त्रिका १ ॥

–वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ॥

पक्की जगतका नाम१॥ वीनाह१॥

पुष्करिण्यां तु खातं स्या–

चौकोने तालावके नाम २ ॥ पुष्करिणी १ खात २ ॥

–दखातं देवखातकम् ॥ २७॥

नहीं खोदेहुए तालावके नाम २॥ अखात १ देवखातक २ ॥ २७ ॥

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री–

जिस तालाबमें कमल हों उसके नाम २ ॥ पद्माकर १ तडाग २ ॥

–कासारः सरसी सरः ॥

सामान्य तालावके नाम ३ ॥ कासार १ सरसी २ सरस् ३ ॥

वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो–

छोटीतलैयाके नाम ३ ॥ वेशन्त १ पल्वल २ अल्पसरस् ३ ॥

—वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥

वावडीके नाम २ ॥ वापी १ दीर्घिका ॥ २ ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखा—

खाँचा (खाही)के नाम २ ॥ खेय १ परिखा २ ॥

—ऽऽधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम्॥

बांधका नाम १ ॥ आधार १ ॥

स्यादालवालमावालमावापो—

थाल्हाके नाम ३ ॥ आलवाल १ आवाल २ आवाप ३ ॥

—ऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥

तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी ॥ स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा॥३०॥

नदीके नाम १२॥ नदी १ सरित् २ ॥२९॥ तरंगिणी३ शैवलिनी ४तटिनी ५ ह्रादिनी ६ धुनी ७ स्रोतस्वती ८ द्वीपवती ९ स्रवन्ती १० निम्नगा ११ आपगा १२ ॥ ३० ॥

गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा ॥ भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

गंगाजीके नाम ८ ॥ गंगा१ विष्णुपदी २ जह्नुतनया ३ सुरनिम्नगा४ भागीरथी ५ त्रिपथगा ६ त्रिस्रोतस् ७ भीष्मसू ८ ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ॥

यमुनाके नाम ४ ॥ कालिन्दी १ सूर्यतनया २ यमुना ३ शमनस्वसृ ४॥

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

नर्मदाके नाम ४ ॥ रेवा १ नर्मदा २ सोमोद्भवा३ मेकलकन्यका ४॥३२॥

करतोया सदानीरा—

गौरीविवाहमे जो कन्यादानजलसे उत्पन्नहुई उस नदीके नाम२॥ करतोया १ सदानीरा २ ॥

—बाहुदा सैतवाहिनी ॥

सहस्रबाहुकी नदीके नाम २ ॥ बाहुदा १ सैतवाहिनी २ ॥

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्या—

शतलजके नाम२॥शतद्रु१शुतुद्रि२॥

—द्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम्॥३३॥

ब्यासनदीके नाम २ ॥ विपाशा१ विपाश् २ ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्या—

शोणनदके नाम २ ॥ शोण १ हिरण्यवाह २ ॥

—त्कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित्॥

नहरका नाम १॥ कुल्या १ ॥

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा ...... ॥ ३४ ॥ कावेरी-

शरावतीका नाम १ ॥ शरावती १॥ वेत्रवतीका नाम १॥ वेत्रवती १॥ चिनाबका नाम १ ॥ चन्द्रभागा १ ॥ सरस्वतीका नाम१॥सरस्वती १॥३४॥ कावेरीका नाम १ ॥ कावेरी १ ॥

-सरितोऽन्याश्च-

और भी कौशिकी आदि नदियांहैं॥

-संभेदः सिन्धुसंगमः ॥

जहां एक नदी दूसरीसे मिलतीहै उस संगमके नाम २ ॥ संभेद १ सिन्धुसंगम २ ॥

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां-

पनारका नाम १॥प्रणाली १॥

-त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३९ ॥

आगे होनेवाले दोनों शब्द तीनों लिंगोंमें वर्तते हैं ॥ ३९ ॥

देविकायां सरय्वां च भवेदाविकसारवौ ॥

देविका नदीमें जो २ उत्पन्न हों उनका नाम १ ॥ दाविक १॥ सरयूमे जो२ उत्पन्नहों उनकानाम१॥सारव१॥

सौगन्धिकं तु कह्लारं-

कुई(संध्यामें खिलनेवाले श्वेतकमल) के नाम २ ॥ सौगंधिक१ कह्लार २ ॥

-हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥३६॥

लाल कुईके नाम २ ॥ हल्लक १ रक्तसन्ध्यक २ ॥ ३६ ॥

स्यादुत्पलं कुवलय-

कुमुदकमलसाधारणके नाम २ ॥ उत्पल १ कुवलय २ ॥

-मथ नीलाम्बुजन्म च ॥ इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्-

काले कमलके नाम २ ॥ नीलाम्बुजन्मन् १ ॥ इन्दीवर २ ॥

-सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

उज्ज्वल कमलके नाम २ ॥ कुमुद१ कैरव २ ॥ ३७ ॥

शालूकमेषां कन्दः स्या-

कमलोंके कन्दका नाम१॥शालूक१॥

-द्वारिपर्णी तु कुम्भिका ॥

जलकुंभीके नाम २॥ वारिपर्णी १ कुम्भिका २ ॥

जलनीली तु शेवालं शैवलो-

शेवालके नाम ३ ॥ जलनीली १ शेवाल २ शैवल ३ ॥

-ऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिन्यां-

कुमुदिनी वा कुमुदयुक्त देशके नाम २ ॥ कुमुद्वती १॥३८॥ कुमुदिनी २॥

-नलिन्यां तु विसिनीपद्मिनीमुखाः ॥

कमलिनीके नाम ३ ॥ नलिनी १ बिसिनी २ पद्मिनी ३ आदि ॥

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥ पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥ बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ॥

कमलमात्रके नाम १६ ॥ पद्म १ नलिन २ अरविन्द ३ महोत्पल ४ ॥३९॥ सहस्रपत्र ५ कमल ६ शतपत्र ७ कुशेशय ८ पंकरुह ९ तामरस १० सारस ११ सरसीरुह १२ ॥ ४० ॥ बिसप्रसून १३ राजीव १४ पुष्कर १५ अम्भोरुह १६॥

पुण्डरीकं सिताम्भोज-

उज्ज्वलकमलके नाम २ ॥ पुण्डरीक १ सिताम्भोज २ ॥

-मथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पलं कोकनदं-

लालकमलके नाम ३ ॥ रक्तसरोरुह १ ॥४१॥ रक्तोत्पल २ कोकनद ३ ॥

-नालो नाल-

कमलकी डाँडीके नाम २ ॥ नाल (पुंल्लिंग) १ नाल (नपुंसकलिंग) २॥

-मथास्त्रियाम् ॥ मृणालं बिस-

मसीडके नाम २॥ मृणाल १ बिस २॥

-मब्जादिकदम्बे खण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

कमलादिके समूहका नाम १॥ खण्ड १॥ केवलमी नाम १ ॥ खण्ड १ ॥ ४२ ॥

करहाटः शिफाकन्दः-

कमलकी जडके नाम २ ॥ करहाट १ शिफाकन्द २ ॥

-किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ॥

कमलपुष्पके मध्यमें जो झालर होती है उसके नाम २॥ किंजल्क १ केसर २॥

संवर्तिका नवदलं-

कमलके नवे पत्तोंके नाम २ ॥ संवर्तिका १ नवदल २ ॥

-बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

कमलाक्षके नाम २ ॥ बीजकोश १ वराटक २ ॥ ४३ ॥

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादि सनाट्यकम् ॥ पातालभोगिनरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ॥ ४४ ॥ इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ॥ स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशस्य भाषाटीकायां वारिवर्गः ॥ १० ॥

इति प्रथमः काण्डः समाप्तः ।

॥ श्रीः ॥

अथ द्वितीयः काण्डः।

अथ भूमिवर्गः १.

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः ॥ नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः सांगोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस द्वितीय काण्डमें भूमिवर्ग १ पुरवर्ग २ शैलवर्ग ३ वनौषधिवर्ग ४ सिंहादिवर्ग ५ मनुष्यवर्ग ६ ब्रह्मवर्ग ७ क्षत्रियवर्ग ८ वैश्यवर्ग ९ और शूद्रवर्ग १० सांगोपांग कहेंगे ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा ॥ धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥ सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा ॥ गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

पृथ्वीके नाम २७ ॥ भू १ भूमि २ अचला ३ अनन्ता ४ रसा ५ विश्वम्भरा ६ स्थिरा ७ धरा ८ धरित्री ९ धरणि १० क्षोणि ११ ज्या १२ काश्यपी १३ क्षिति १४ ॥ २ ॥ सर्वंसहा १५ वसुमती १६ वसुधा १७ उर्वी १८ वसुन्धरा १९ गोत्रा २० कु २१ पृथिवी २२ पृथ्वी २३ क्ष्मा २४ अवनि २५ मेदिनी २६ मही २७ ॥ ३ ॥

मृन्मृत्तिका–

मिट्टीके नाम २ ॥ मृत् १ मृत्तिका २ ॥

–प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ॥

अच्छी मिट्टीके नाम २ ॥ मृत्सा १ मृत्स्ना २ ॥

उर्वरा सर्वसस्याढ्या–

जिस मिट्टीसे सब अन्न उपजै उसका नाम १ ॥ उर्वरा १ ॥

–स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

खारी मट्टी अर्थात् नोंनीके नाम २ ॥ ऊष १ क्षारमृत्तिका २ ॥ ४ ॥

ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ–

कल्लरभूमिके नाम २ ॥ ऊषवत् १ ऊषर २ ॥

–स्थलं स्थली ॥

स्थलके नाम २॥ स्थल १ स्थली २॥

समानौ मरुधन्वानौ–

निर्जल अर्थात् मरुदेशके नाम २॥ मरु १ धन्वन् २ ॥

—द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥

त्रि—

विनजोते खेतके नाम २॥ खिल १ अप्रहत २ ॥ ५ ॥

—र्व्वयो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ॥

जगत्‌के नाम ५ ॥ जगती १ लोक २ विष्टप ३ भुवन ४ जगत् ५ ॥

लोकोयं भारतं वर्षं—

हिमालयसे दक्षिण, समुद्रसे उत्तरके देशतक अर्थात् हिन्दुस्थानका नाम १ ॥ भारतवर्ष १ ॥

—शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६॥

देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य—

शरावती नदीके ॥६॥ पूर्व दक्षिण देशका नाम १ ॥ प्राच्य १ ॥

—उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ॥

शरावती नदीके पश्चिमोत्तरदेशका नाम १ ॥ उदीच्य १ ॥

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्या—

फारस रूस रूम आदि देशोंके नाम २ ॥ प्रत्यन्त १ म्लेच्छदेश २ ॥

—न्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥७॥

विन्ध्याचलसे उत्तर हिमालयसे दक्षिण कुरुक्षेत्रसे पूर्व प्रयागसे पश्चिम देशके नाम २ ॥ मध्यदेश १ मध्यम २ ॥ ७ ॥

आर्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ॥

बंगालेके समुद्रसे पश्चिम अरबसमुद्रसे पूर्व हिमाचलसे दक्षिण विन्ध्याचलसे उत्तर देशके नाम २ ॥ आर्यावर्त्त १ पुण्यभूमि २ ॥

नीवृज्जनपदो—

राजाओंके वसाये हुए मगध आदि देशोंके नाम २ ॥ नीवृत् १जनपद२॥

—देशविषयौ तूपवर्त्तनम् ॥८॥

देशमात्रके नाम ३ ॥ देश १ विषय २ उपवर्त्तन ३ ॥ ८ ॥

त्रिष्वागोष्ठा—

गोष्ठपर्यंत जे शब्द हैं वे तीनों लिंगोमे होते हैं ॥

—न्नडप्राये नड्वान्नड्वल इत्यपि ॥

नडाधिकदेशके नाम २ ॥ नड्वत्१ नड्वल २ ॥

कुमुद्वान्कुमुदप्राये—

जहां वहुत कुमुद हों उस देशका नाम १ ॥ कुमुद्वत् १ ॥

—वेतस्वान्बहुवेतसे ॥ ९ ॥

जहां बहुत वेत हो उस देशका नाम १ ॥ वेतस्वत् ॥ १ ॥ ९ ॥

शाद्वलः शाद्हरिते–

जहां हरी घास हो उसका नाम १॥ शाद्वल १ ॥

–सजम्बाले तु पंकिलः ॥

जहां बहुत कीच हो उस देशका नाम १ ॥ पंकिल १ ॥

जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

जहां बहुत पानी हो उस देशके नाम ३ ॥ जलप्राय १ अनूप २ कच्छ ३ ॥ १० ॥

स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति ॥

जहां रेता हो उस देशके नाम ४॥ शर्करा १ शर्करिल २ शार्कर ३ शर्करावत् ४ ॥

देश एवादिमा–

ऊपर कहेहुए शर्करा आदि शब्दोंमें पहले शर्करा १ और शर्करिल यह दोनो देशकेही नाम हैं ॥

वेवमुन्नेयाः सिकतावति ११ ॥

इसीप्रकार सिकता १ और सिकतिल यह शब्द भी रेतेयुक्त देशकेही नाम हैं ॥ ११ ॥

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नव्रीहिपालितः ॥ स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

जहां केवल नदीजलसे खेत सींचे जांय वर्षा न होतीहो उस देशका नाम १ ॥ नदीमातृक १ ॥ जहां वर्षाकेही जलसे सींचे जांय उसका नाम १ ॥ देवमातृक १ ॥ १२ ॥

सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्या–

धर्मात्मा राजाके देशका नाम १ ॥ राजन्वत् १ ॥

–त्ततोऽन्यत्र राजवान् ॥

सामान्य राजाके देशका नाम १ ॥ राजवत् १ ॥

गोष्ठं गोस्थानकं–

गोष्ठके नाम २॥ गोष्ठ १ गोस्थान२॥

–तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥१३॥

जहां पूर्वकालमें गायें रही हों उसका नाम १ ॥ गौष्ठीन १ ॥ १३ ॥

पर्यन्तभूः परिसरः–

नदी पर्वतादिके समीपकी भूमिके नाम २ ॥ पर्यन्तभू १ परिसर २ ॥

–सेतुरालौ स्त्रियां–

पुलके नाम २ ॥ सेतु १ आलि२॥

–पुमान् ॥

वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥ १४ ॥

वमईके नाम ३ ॥ वामलूर १ नाकु २ वल्मीक ३ ॥ १४ ॥

अयनं वर्त्ममार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ॥ सरणिः पद्धतिः पद्या वर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

मार्गके नाम १२ ॥ अयन १ वर्त्मन् २ मार्ग ३ अध्वन् ४ पथिन् ५ पदवी ६ सृति ७ सरणि ८ पद्धति ९ पद्या १० वर्त्तनी ११ एकपदी १२॥१५॥

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ॥

अच्छे मार्गके नाम ३॥अतिपथिन् १ सुपथिन् २ सत्पथ ३ ॥

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥

खराब मार्गके नाम ५ ॥ व्यध्व १ दुरध्व २ विपथ ३ कदध्वन् ४ कापथ ५ ॥ १६ ॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये—

जहां मार्ग न हो उसके नाम २ ॥ अपथिन् १ अपथ २ ॥

—शृंगाटकचतुष्पथे ॥

चौहट्टा वा चौकके नाम २ ॥ शृंगाटक १ चतुष्पथ २ ॥

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा—

जहा बडी दूरतक छाया वा मनुष्यादि न हो उस मार्गका नाम १ ॥ प्रान्तर १ ॥

—कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥

चोरकण्टकादियुक्त मार्गका नाम १॥ कान्तार १ ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं—

दो कोशका नाम १॥ गव्यूति १ ॥

—नल्वः किष्कुचतुःशतम् ॥

४०० हाथका नाम १ ॥ नल्व १॥

घण्टापथः संसरणं—

राजमार्ग अर्थात् सडकके नाम २॥ घण्टापथ १ संसरण २ ॥

—तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

ग्रामके निकासका नाम १ ॥ उपनिष्कर १ ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः २.

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ॥ स्थानीयं निगमे—

शहरके नाम ७ ॥ पुर १ पुरी २ नगरी ३ पत्तन ४ पुटभेदन ५ स्थानीय ६ निगम ७ ॥

—ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥

तच्छाखानगरं—

शहरसम्बन्धी छोटे नगरोंका नाम १॥ ॥ १ ॥ शाखानगर १ ॥

—वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ॥

वेश्याके स्थानके नाम २ ॥ वेश १ वेश्याजनसमाश्रय २ ॥

आपणस्तु निषद्यायां—

बजारके नाम २॥आपण१ निषद्या२॥

—विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥

जहाँ बाजार न हो परन्तु वस्तु विकती हों उसके नाम २ ॥ विपणि १ पण्यवीथिका २ ॥ २ ॥

रथ्या प्रतोली विशिखा—

बीचगाँवकी गलीके नाम ३ ॥ रथ्या १ प्रतोली २ विशिखा ३ ॥

—स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ॥

किलेके इधर उधरकी मिट्टीका नाम २॥ चय १ वप्र २ ॥

प्राकारो वरणः सालः—

किलेके नाम ३ ॥ प्राकार १ वरण २ साल ३ ॥

—प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥ ३ ॥

चारों ओर कांटोंकी बाडके नाम १॥ प्राचीन १ ॥ ३ ॥

भित्तिः स्त्री कुड्य—

दीवारके नाम २॥भित्ति१कुड्य२ ॥

—मेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ॥

जिस दीवारमें मजबूतीके वास्ते हड्डी आदि लगाई गई हों उसका नाम १ ॥ एडूक १ ॥

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥ निशान्तपस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ॥ गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥ ५ ॥ वासः कुटी द्वयोः शाला सभा—

गृहके नाम २० ॥ गृह १ गेह२ उदवसित ३ वेश्मन्४ सद्मन्५निकेतन ६॥४॥ निशान्त ७ पस्त्य ८ सदन ९ भवन १० अगार ११ मंदिर १२ गृह (पुं० बहुवचन) १३ निकाय्य १४ निलय १५ आलय १६ ॥ ५ ॥ वास १७ कुटी१८ शाला१९ सभा २० ॥

—संजवनं त्विदम् ॥

चतुःशालं—

जिस गृहमें आमने सामने एकसे चार मकान हों उसके नाम २॥ संजवन १ चतुश्शाल २ ॥

—मुनीनां तु पर्णशालोटजो—

ऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

मुनियोंकी कुटीके नाम २॥ पर्णशाला १ उटज २ ॥ ६ ॥

चैत्यमायतनं तुल्ये—

यज्ञशालाके नाम २ ॥ चैत्य १ आयतन २ ॥

—वाजिशाला तु मन्दुरा ॥

घुड़सालके नाम २ ॥ वाजिशाला १ मन्दुरा २ ॥

आवेशनं शिल्पिशाला-

कारीगरोंके स्थानके नाम२॥ आवेशन १ शिल्पिशाला २ ॥

-प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

पौशाला अर्थात् पानी पिलानेके स्थानके नाम २ ॥ प्रपा १ पानीयशालिका २ ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयः-

विद्यार्थी और संन्यासी आदिके रहनेके स्थानका नाम १ ॥ मठ १ ॥

-गञ्जा तु मदिरागृहम् ॥

जहां मद्य बनाया जाय अथवा जहां मद्य रक्खा जाय उस स्थानके नाम २ ॥ गञ्जा १ मदिरागृह २ ॥

गर्भागारं वासगृह-

गृहके मध्यभागके नाम २ ॥ गर्भागार १ ॥ वासगृह २ ॥

-मरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥

सौवरके (प्रसूतीके) गृहके नाम २ ॥ अरिष्ट १ सूतिकागृह २ ॥ ८ ॥

वातायनं गवाक्षो-

झरोखोंके नाम २ ॥ वातायन १ गवाक्ष २ ॥

ऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ॥

मण्डपके नाम २ ॥ मण्डप १ जनाश्रय २ ॥

हर्म्यादि धनिनां वासः-

धनवानोंके गृहका नाम १ ॥ हर्म्य १ आदि ॥

-प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥

देवता और राजाओंके गृहका नाम १ प्रासाद १ ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदन-

राजाओंके गृहके नाम२॥ सौध १ राजसदन २ ॥

-मुपकार्योपकारिका ।

राजाओंके साधारण गृहोंके नाम २ ॥ उपकार्या १ उपकारिका २ ॥

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्त्तादयोऽपि च ॥ १० ॥ विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ॥

राजगृहोंके भेद जिनमें ४ दरवाजे आदि भेद हैं स्वस्तिक १ सर्वतोभद्र २ नन्द्यावर्त ३॥ १०॥ विच्छन्दक ४ इत्यादि ॥

स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥

शुद्धान्तश्चावरोधश्च-

राजस्त्रियोंके रहनेके स्थानके नाम ४ ॥ अन्तःपुर १ अवरोधन २॥ ११॥ शुद्धान्त ३ अवरोध ४ ॥

—स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ॥
गृहके ऊपरके घरके नाम २ ॥ अट्ट १ क्षौम २ ॥

प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥
दहलीजके नाम ३ ॥ प्रघाण १ प्रघण २ अलिन्द ३ ॥ १२ ॥

गृहावग्रहणी देह—
देहलीके नाम २ ॥ गृहावग्रहणी १ देहली २ ॥

—ल्यङ्गणं चत्वराजिरे ॥
आगनके नाम ३ ॥ अंगण १ चत्वर २ अजिर ३ ॥

अधस्ताद्दारुणि शिला—
दरवाजेके नीचेके काठका नाम १॥ शिला १ ॥

—नासा दारूपरि स्थितम्॥१३॥
दरवाजेके ऊपरके काठका नाम १ ॥ नासा १ ॥ १३ ॥

प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्या—
खिडकीके नाम २ ॥ प्रच्छन्न १ अन्तर्द्वार २ ॥

—त्पक्षद्वारं तु पक्षकम् ॥
बगलके द्वारके नाम २ ॥ पक्षद्वार १ पक्षक २ ॥

वलीकनीध्रे पटलप्रान्ते—
वरौनीके नाम ३ ॥ वलीक १ नीध्र २ पटलप्रान्त ३ ॥

—ऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥
छानिके नाम २ ॥ पटल १ छदि २ ॥ १४ ॥

गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ॥
छज्जेके नाम२॥ गोपानसी१वलभी२॥

कपोतपालिकायां तु विटंकं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥
कबूतरखानेके नाम २ ॥ कपोतपालिका १ विटंक २ ॥ १५ ॥

स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः—
द्वारके नाम ३ ॥ द्वार् १ द्वार २ प्रतीहार ३ ॥

—स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ॥
वेदीके नाम २ ॥ वितर्दि १ वेदिका २॥

तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं—
घरके बाहरके फाटकके नाम २ ॥ तोरण १ बहिर्द्वार २ ॥

—पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥
नगरके बाहरके फाटकके नाम २ ॥ पुरद्वार १ गोपुर २ ॥ १६ ॥

कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्त-स्मिन्—
नगरके द्वारसे उतरनेके लिये उतार चढावकी भूमिका नाम १॥ हस्तिनख १॥

–त्वथ त्रिपु ॥

कपाटमररं तुल्ये–

किवारोंके नाम २॥ कपाट १ अरर२॥

तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥१७॥

किवाड़ोंके डण्डेलेका नाम १ ॥ अर्गल ॥ १ ॥ १७ ॥

आरोहणं स्यात्सोपानं–

मिट्टी पत्थर आदिकी सीढीके नाम २ ॥ आरोहण १ सोपान २ ॥

–निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥

काठकी सीढीके नाम २ ॥ निश्रेणि १ अधिरोहणी २ ॥

संमार्जनी शोधनी स्या–

बुहारी अर्थात् झाड़ूके नाम २ ॥ संमार्जनी १ शोधनी २ ॥

–त्संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥

क्षिते–

करकट वा कूडेके नाम २ ॥ सकर १ अवकर २ ॥ १८ ॥

–मुखं निःसरणं–

निकासके नाम २ ॥ मुख १ निःसरण २ ॥

–संनिवेशो निकर्षणम् ॥

नगर इत्यादिमें स्थानके निमित्त नपीहुई भूमिके नाम २ ॥ सनिवेश १ निकर्षण २ ॥

समौ संवसथग्रामौ–

ग्रामके नाम २ ॥ सवसथ १ ग्राम२॥

वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥१९ ॥

घरकी भूमिका नाम १ ॥ वास्तु १ ॥ १९ ॥

ग्रामान्त उपशल्यं स्या–

ग्रामके समीपका नाम १॥उपशल्य १॥

–त्सीमसीमे स्त्रियामुभे ॥

सीमाके नाम २॥ सीमन् १ सीमा२॥

घोष आभीरपल्ली स्या–

अहीरोंके ग्रामके नाम २ ॥ घोष १ आभीरपल्ली २ ॥

–त्पक्कणः शबरालयः ॥२० ॥

जगलियोंके ग्रामके नाम २ ॥ पक्कण १ शबरालय २ ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३.

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः ॥ अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

पर्वतके नाम १३ ॥ महीध्र १ शिखरिन् २ क्ष्माभृत् ३ अहार्य ४ धर ५ पर्वत ६ अद्रि ७ गोत्र ८ गिरि ९ ग्रावन् १० अचल ११ शैल १२ शिलोच्चय १३ ॥ १ ॥

लोकालोकश्चक्रवाल–

जो पर्वत पृथ्वीको घेरे है उसके नाम २ ॥ लोकालोक १ चक्रवाल २ ॥

–त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ॥

त्रिकूट कि जिसपर लंका वसी है उसके नाम २ ॥ त्रिकूट १ त्रिककुद् २॥

अस्तस्तु चरमक्ष्माभृ–

अस्ताचलके नाम २ ॥ अस्त १ चरमक्ष्माभृत् २ ॥

–दुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

उदयाचलके नाम २ ॥ उदय १ पूर्वपर्वत २ ॥ २ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः ॥ गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३॥

पर्वतोंके भेद ६ ॥ हिमवत् १ निषध २ विन्ध्य ३ माल्यवत् ४ पारियात्रक ५ गन्धमादन ६ तथा हेमकूट आदि अन्यभी पर्वत हैं ॥ ३ ॥

पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ॥

पत्थरके नाम ७ ॥ पाषाण १ प्रस्तर २ ग्रावन् ३ उपल ४ अश्मन् ५ शिला ६ दृषत् ७ ॥

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं–

पहाडकी चोटी वा कगूराके नाम ३ ॥ कूट १ शिखर २ शृङ्ग ३ ॥

–प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

बीहडके नाम ३ ॥ प्रपात १ अतट २ भृगु ३ ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः–

बीच पर्वतका नाम १॥ कटक १ ॥

–स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् ॥

पर्वतके किनारेके नाम ३ ॥ स्नु १ प्रस्थ २ सानु ३ ॥

उत्सः प्रस्रवणं–

जहां पर्वतसे चूकर पानी बटुरता है अर्थात् कुण्डके नाम २ ॥ उत्स १ प्रस्रवण २ ॥

–वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥

झरनोंके नाम ३ ॥ वारिप्रवाह १ निर्झर २ झर ३ ॥ ५ ॥

दरी तु कन्दरो वा स्त्री–

बनाई हुई गुफाके नाम २ ॥ दरी १ कन्दर–कन्दरा २ ॥

–देवखातबिले गुहा ॥

गह्वरं–

अपने आप बनीहुई गुफाके नाम ४॥ देवखात १ बिल २ गुहा ३ गह्वर ४ ॥

–गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥

जो कि पर्वतसे भारी भारी पत्थर गिरते हैं उनका नाम १॥ गण्डशैल १ ॥ ६ ॥

खनिः स्त्रियामाकरः स्या–

खानिके नाम २ ॥ खनि १ आकर २॥

–त्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ॥

पर्वतके धोरेके छोटे पर्वतके नाम २ ॥ पाद १ प्रत्यन्तपर्वत २ ॥

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

पहाडके नीचेकी भूमिका नाम १॥ उपत्यका १॥पहाडकी ऊपरकी भूमिका नाम १ ॥ अधित्यका १ ॥ ७ ॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः ॥

पर्वतसे, उत्पन्न हुए जो मनःशिल-आदि तिनका नाम १॥धातु१ ॥गैरिक (गेरू) तो धातु शब्दसेही विख्यातहै ॥

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

जहां कि बहुत लता तृणादिसे घिरा हो उसके नाम२॥निकुञ्ज१कुञ्ज२॥८॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः ४.

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ॥

वनके नाम ६ ॥ अटवी१अरण्य२ विपिन ३ गहन ४ कानन५वन ६ ॥

महारण्यमरण्यानी—

बडे वनके नाम २ ॥ महारण्य १ अरण्यानी २ ॥

—गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

गृहके समीप बनायेहुए बगीचेके नाम २ ॥ गृहाराम १निष्कुट२ ॥१॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ॥

गृहसमीपके वनके नाम २ ॥ आराम १ उपवन २ ॥

अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

जहां राजाके नौकर चाकर और उनकी वेश्या रहें उस बगीचेका नाम १ ॥ वृक्षवाटिका १ ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ॥

राजाके उस बगीचेका नाम जिसका सब पुरुष भोग करसकै १॥आक्रीड१॥

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥

जहा राजा स्त्रियोंसहित क्रीडा करैं उस बगीचेका नाम १॥ प्रमदवन१॥३॥

वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी—

पंक्तिके नाम ५ ॥ वीथी१आलि२ आवलि ३ पंक्ति ४ श्रेणी ५ ॥

—लेखास्तु राजयः ॥

लकीरके नाम २॥लेखा १राजि२॥

वन्या वनसमूहे स्या—

वनके झुंडके नाम २ ॥ वन्या १ वनसमूह २ ॥

-दंकुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

अंकुरके नाम २ ॥ अंकुर १ अभिनवोद्भिद् २ ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ॥ अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥५॥

वृक्षके नाम १३ ॥ वृक्ष १ महीरुह २ शाखिन् ३ विटपिन् ४ पादप ५ तरु ६ अनोकह ७ कुट ८ शाल ९ पलाशिन् १० द्रु ११ द्रुम १२ अगम १३ ॥ ५ ॥

वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्-

जो वृक्ष फूलकर फलै उसका नाम १ ॥ वानस्पत्य १ ॥

-तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ॥

जो कि फूलने विना फले जैसे गूलर कटहर आदि उनका नाम १॥ वनस्पति १॥ (वृक्षमात्रको भी वनस्पति कहतेहैं)

ओषध्यः फलपाकान्ताः स्यु-

फलकर पकनेपर नष्ट होनेवाले अर्थात् अन्न आदिकानाम १॥ ओषधी १॥

-रवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

फलनेवाले वृक्षके नाम २॥ अवन्ध्य १ फलेग्रहि २ ॥ ६ ॥

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च-

जो नहीं फले उस वृक्षके नाम ३॥ वन्ध्य १ अफल २ अवकेशिन् ३ ॥

-फलवान् फलिनः फली ॥

फलयुक्त वृक्षके नाम ३ ॥ फलवत् १ फलिन २ फलिन् ३ ॥

प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥ फुल्लश्चैते विकसिते-

फूलयुक्त (विकसित) वृक्षके नाम ८ ॥ प्रफुल्ल १ उत्फुल्ल २ सम्फुल्ल ३ व्याकोश ४ विकच ५ स्फुट ६ ॥ ७ ॥ फुल्ल ७ विकसित ८ ॥

-स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ॥

अवंध्यआदि शब्द तीनों लिंगोंमें होतेहैं।

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शंकु-

ठूंठ वृक्षके नाम ३ ॥ स्थाणु १ ध्रुव २ शंकु ३ ॥

-र्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

जिस वृक्षमे छोटी२डालें और जड़ें हों उसका नाम १ ॥ क्षुप १ ॥ ८ ॥

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ-

जिसमें डालियें न हों उस वृक्षके नाम २ ॥ स्तम्ब १ गुल्म २ ॥

-वल्ली तु व्रततिर्लता ॥

बेलके नाम ३ ॥ वल्ली १ व्रतति २ लता ३ ॥

लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥

वडी लंबी वेलके नाम ३ ॥ वीरुत् १ गुल्मिनी २ उलप ३ ॥ ९ ॥

नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ॥

वृक्षादिककी उंचाईके नांम ३ ॥ उच्छ्राय १ उत्सेध २ उच्छ्रय ३ ॥

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥

जडसे शाखातक पेडके नाम २॥ प्रकाण्ड १ स्कन्ध २ ॥ १० ॥

समे शाखालते–

डालके नाम २ ॥ शाखा १ लता २ ॥

–स्कन्धशाखाशाले–

प्रधानशाखा (मोटे डगों) केनाम २ ॥ स्कन्धशाखा १ शाल २ ॥

–शिफाजटे ॥

जडके नाम २॥ शिफा १ जटा २ ॥

शाखाशिफावरोहः स्या–

वरोहका नाम १ ॥ अवरोह १ ॥

–न्मूलाच्चाग्रं गता लता॥ ११॥

मूळसे लेकर अग्रभागपर्यंत गईहुई गिलोय आदिके वेलका नामभी अवरोह है ॥ ११ ॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना–

टेनीके नाम २॥ शिरोग्र१ शिखर२ ॥

–मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ॥

मिट्टीके भीतरकी जडके नाम ३ ॥ मूल १ बुध्न २ अंघ्रिनामक सब शब्द३॥

सारो मज्जा नरि–

गूदेके नाम २॥ सार१ मज्जन् २ ॥

-त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

वृक्षकी छालके नाम ३ ॥ त्वच् १ वल्क २ वल्कल ३ ॥ १२ ॥

काष्ठं दा–

काठके नाम २॥ काष्ठ १ दारु ॥

–र्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित्स्त्रियाम् ॥

ईंधनके नाम ३ ॥ इन्धन १ एध२ इध्म ३ यज्ञादिके ईंधनके नाम २ ॥ एधस् १ समिध २ ॥

निष्कुहः कोटरं वा ना–

खोकलके नाम२॥निष्कुह१ कोटर२॥

–वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

मजरीके नाम २ ॥ वल्लरि१ मजरि २ ॥ १३ ॥

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ॥

पत्तोंके नाम ६ ॥ पत्र १ पलाश २ छदन ३ दल ४ पर्ण ५ छद ६ ॥

पल्लवोऽस्त्री किसलयं-

कोंपलके नाम २॥पल्लव१ किसलय२॥

विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥१४॥

डालोंके फैलनेके नाम २ ॥ विस्तार १ विटप २॥ १४ ॥

वृक्षादीनां फलं सस्यं-

वृक्षादिकोंके फलका नाम १ ॥ सस्य १ ॥

-वृन्तं प्रसवबन्धनम् ॥

नाकूके नाम २ ॥ वृन्त १ प्रसवबन्धन २ ॥

आमे फले शलाटुः स्या-

कच्चेफलका नाम १ ॥ शलाटु १ ॥

-च्छुष्के वान-

सूखे फलका नाम १॥ वान १ ॥

-मुभे त्रिषु ॥ १५ ॥

शलाटु और वान शब्द तीनोंलिंगोंमे होतेहै ॥ १५ ॥

क्षारको जालकं क्लीबे-

नई कली व कलीकी डंडीके नाम २ ॥ क्षारक१ जालक २ ॥

कलिका कोरकः पुमान् ॥

विना फूली कलीके नाम २ ॥ कलिका १ कोरक २ ॥

स्याद्गुच्छकस्तु स्तबकः-

गुच्छेका नाम १ ॥ स्तबक १ ॥

-कुड्मलो मुकुलो स्त्रियाम् १६

अधफूली कलीके नाम २ ॥ कुड्मल १ मुकुल २ ॥ १६ ॥

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ॥

फूलके नाम ॥५ सुमनस् १ पुष्प २ प्रसून ३ कुसुम ४ सुम ५ ॥

मकरन्दः पुष्परसः-

फूलके रसके नाम २ ॥ मकरन्द १ पुष्परस २ ॥

परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥

फूलकी धूलिके नाम २॥पराग १ सुमनोरजस् २ ॥ १७ ॥

द्विहीनं प्रसवे सर्वं-

आगे अश्वत्थ आदिकोंके जो फल पुष्पादिकोंके नाम कहेंगे वह शब्द केवल नपुंसकलिंगहीमें होंगे ॥

-हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ॥

भाषा--हरीतकी आदिकोंके फलोंके वाचक(हरीतकी)आदि शब्द स्त्रीलिंगमे होंगे।

आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैङ्गुदं फले ॥ १८ ॥ बार्हतं च-

(पीपलके फलका नाम) आश्वत्थ १ ॥ (वासका फल) वैणव १ ॥ (पाकडके फलका नाम) प्लाक्ष १ ॥ (वटके फलका नाम) नैयग्रोध १ ॥

(इगुदीके फलका नाम)ऐंगुद १॥१८॥
(भटकटैयाके फलका नाम)वार्हत१ ॥

—फले जम्बवा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥

जामुनके फलके नाम ३ ॥ जम्बू१ जम्बु २ जाम्बव ३ ॥

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा—

जुहीके फूलका नाम१॥ जाती १॥

—व्रीह्यः फले ॥ १९ ॥

यव आदि धान्योंके फलभी यव आदि नामसे ही कहे जाते है जैसे यवका फल यव, माषका फल माष, मुद्गका फल मुद्ग ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मूलेपि-

विदारी आदिकोंके जड पुष्प और फलभी विदारी आदि नामवाले ही होतेहें अर्थात् जाती आदि शब्दोंके पुष्पादिकमी स्वलिङ्ग ही होतेहैं ॥

—पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला ॥

पाटलाके पुष्पका नाम१॥पाटला१॥ यह शब्द पुष्पका नाम होकरमी स्वलिङ्ग अर्थात् पाटलाका लिङ्ग जो स्त्रीलिङ्ग उसमें होताहै ॥

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥

अश्वत्थे—

पीपलके नाम ५॥ बोधिद्रुम १ चलदल २ पिप्पल ३ कुंजराशन ४ ॥२०॥ अश्वत्थ ५ ॥

—ऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः ॥ तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

कैथके नाम ७ ॥ कपित्थ १दधित्थ २ ग्राहिन् ३ मन्मथ ४ दधिफल ५ पुष्पफल ६ दन्तशठ ७ ॥ २१ ॥

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ॥

गूलरके नाम ४ ॥ उदुम्बर१जन्तुफल २ यज्ञांग ३ हेमदुग्धक ४ ॥

कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥

कचनारके नाम ४ ॥ कोविदार १ चमरिक२कुद्दाल३युगपत्रक४ ॥ २२ ॥

सप्तपर्णो विशालत्वक्शारदो विषमच्छदः ॥

छतिवनीके नाम ४ ॥ सप्तपर्ण १ विशालत्वच् २ शारद ३ विषमच्छद४॥

आरग्वधे राजवृक्षशम्याकचतुरंगुलाः ॥ २३ ॥ आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ॥

अमलतासके नाम ८ ॥ आरग्वध १ राजवृक्ष२शम्याक ३चतुरंगुल४ ॥२३॥

आरेवत ५ व्याधिघात ६ कृतमाल ७ सुवर्णक ८ ॥

स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीर-जम्भलाः ॥ २४ ॥

जम्बीरी नींबूके नाम ५॥ जम्बीर १ दन्तशठ २ जभ ३ जंमीर ४ जंभल ५ ॥ २४ ॥

वरणो वरुणः सेतुस्तिक्तशाखः कुमारकः ॥

वरुण (वरणा) के नाम ५॥ वरण १ वरुण २ सेतु ३ तिक्तशाख ४ कुमारक ५ ॥

पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देव-वल्लभः ॥ २५ ॥

नागकेसरके नाम ५ ॥ पुन्नाग १ पुरुष २ तुङ्ग ३ केसर ४ देववल्लभ ५ ॥ २५ ॥

पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारि-जातकः ॥

बकायनके नाम ४ ॥ पारिभद्र १ निम्बतरु २ मन्दार ३ पारिजातक ४ ॥

तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुर-तिमुक्तकः ॥ २६ ॥

वञ्जुलश्चित्रकृच्चा-

वञ्जुल वृक्षके नाम ७॥ तिनिश १ स्यन्दन २ नेमि ३ रथद्रु ४ अतिमुक्तक ५ ॥ २६ ॥ वञ्जुल ६ चित्रकृत् ७ ॥

-ऽथ द्वौ पीतनकपीतनौ ॥

आम्रातके-

आम्वाडेके नाम ३॥ पीतन १ कपीतन २ आम्रातक ३ ॥

-मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमाः ॥ २७ ॥

वानप्रस्थमधुष्ठीलौ-

महुयेके नाम ५॥ मधूक १ गुडपुष्प २ मधुद्रुम ३ ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ ४ मधुष्ठील ५ ॥

-जलजेऽत्र मधूलकः ॥

जलके महुयेका नाम १ ॥ मधूलक १ ॥

पीलौ गुडफलः स्रंसी-

देशी अखरोटके नाम ३ ॥ पीलु १ गुडफल २ स्रंसिन् ३ ॥

-तस्मिंस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥

अक्षोटकन्दरालौ द्वा-

पहाडी अखरोटके नाम २ ॥ २८ ॥ अक्षोट १ कन्दराल २ ॥

-वंकोटे तु निकोचकः ॥

अंकोलके नाम २ ॥ अंकोट १ निकोचक २ ॥

पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो-

पलाशके नाम ४ ॥ पलाश १ किंशुक २ पर्ण ३ वातपोथ ४ ॥

-ऽथ वेतसे ॥ २९ ॥

रथाभ्रपुष्पविदुरशीतवानीरव-ञ्जुलाः ॥

वेतके नाम ७॥ वेतस १ ॥ २९ ॥ रथ २

अम्बुपुष्प ३ विदुर ४ शीत ५ वानीर ६ वञ्जुल ७ ॥

द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥

पानीके वेतके नाम ४॥ परिव्याध १ विदुल २ नादेयी ३ अम्बुवेतस ४॥३०॥

सोभाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ॥

सँहिजनेके नाम ५ ॥ सोभाञ्जन १ शिग्रु २ तीक्ष्णगन्धक ३ अक्षीव ४ मोचक ५ ॥

रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्या-

लालफूलवाले सँहिजनका नाम १॥ मधुशिग्रु १ ॥

-दरिष्टः फेनिलस्समौ ॥ ३१॥

रींठेके नाम २ ॥ अरिष्ट १ फेनिल २ ॥ ३१ ॥

विल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ॥

बेलके नाम ५ ॥ बिल्व १ शाण्डिल्य २ शैलूष ३ मालूर ४ श्रीफल ५ ॥

प्लक्षो जटी पर्कटी स्या-

पाकरके नाम ३ ॥ प्लक्ष १ जटिन् २ पर्कटिन् ३ ॥

-न्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३२॥

वटके नाम ३॥ न्यग्रोध १ बहुपाद् २ वट ३ ॥ ३२ ॥

गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ ॥

लोधके नाम ६॥ गालव १ शाबर २ लोध्र ३ तिरीट ४ तिल्व ५ मार्जन ६॥

आम्रश्चूतो रसालो-

आमके नाम ३ ॥ आम्र १ चूत २ रसाल ३ ॥

-ऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ३३

सुगंधित आमका नाम १ ॥ सहकार १ ॥ ३३ ॥

कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ॥

गूगलके नाम ५ ॥ कुम्भ १ उलूखलक २ कौशिक ३ गुग्गुलु ४ पुर ५ ॥

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

लसोढेके नाम ५॥ शेलु १ श्लेष्मातक २ शीत ३ उद्दाल ४ ॥ बहुवारक ५ ॥ ३४ ॥

राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्रुर्धनुष्पटः ॥

चिरोंजीके नाम ४ ॥ राजादन १ प्रियाल २ सन्नकद्रु ३ धनुष्पट ४ ॥

गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चा—

खँभारीके नाम ७ ॥ गम्भारी १ सर्वतोभद्रा २ काश्मरी ३ मधुपर्णिका ४ ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी ५ भद्रपर्णी ६ काश्मर्य ७ ॥

—प्यथ द्वयोः ॥

कर्कन्धूर्बदरी कोली—

बेरके नाम ३ ॥ कर्कन्धू १ बदरी २ कोली ३ ॥

—कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥ सौवीरं बदरं घोण्टा—

बेरके फलके नाम ६ ॥ कोल १ कुवल २ फेनिल ३ ॥३६॥ सौवीर ४ बदर ५ घोण्टा ६ ॥

—प्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः ॥ विकङ्कतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

टैंटीके नाम ५ ॥ स्वादुकण्टक १ विकङ्कत २ स्रुवावृक्ष ३ ग्रन्थिल ४ व्याघ्रपाद् ५ ॥ ३७ ॥

ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ॥

नारंगीके नाम ४॥ ऐरावत १ नागरङ्ग २ नादेयी ३ भूमिजम्बुका ४ ॥

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥

तेंदूके नाम ४॥ तिन्दुक १ स्फूर्जक २ कालस्कन्ध ३ शितिसारक ४ ॥ ३८॥

काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ॥

कुचलेके नाम ४ ॥ काकेन्दु १ कुलक २ काकतिन्दुक ३ काकपीलुक ४॥

गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

लोधके भेद मोखाके नाम ५ ॥ गोलीढ १ झाटल २ घण्टापाटलि ३ मोक्ष ४ मुष्कक ५ ॥ ३९ ॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्—

तिलकके नाम ३ ॥ तिलक १ क्षुरक २ श्रीमत् ३ ॥

—समौ पिचुलझावुकौ ॥

झाऊके नाम २ ॥ पिचुल १ झावुक २ ॥

श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥

कायफलके नाम ५ ॥ श्रीपर्णिका १ कुमुदिका २ कुम्भी ३ कैडर्य ४ कट्फल ५ ॥ ४० ॥

क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ॥

पठानी लोधके नाम ४॥ क्रमुक १ पट्टिकाख्य २ पट्टी ३ लाक्षाप्रसादन ४॥

तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥ तूलं च—

पार्श्वपिप्पल वा तूतके नाम ६॥ तूद १ यूप २ क्रमुक ३ ब्रह्मण्य ४ ब्रह्मदारु ५ ॥ ४१ ॥ तूल ६ ॥

—नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः॥

कदम्बके नाम ४ ॥ नीप १ प्रियक २ कदम्ब ३ हरिप्रिय ४ ॥

वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु ॥ ४२ ॥

भिलावेके नाम ४ ॥ वीरवृक्ष १ अरुष्कर २ अग्निमुखी ३ भल्लातकी ४॥ ४२

गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः ॥ प्लक्षश्च—

गेठी (पिलखन) के नाम ५ ॥ गर्दभाण्ड १ कन्दराल २ कपीतन ३ सुपार्श्वक ४ प्लक्ष ५ ॥

—तिन्तिडी चिञ्चाम्लिका—

इमलीके नाम ३ ॥ तिन्तिडी १ चिञ्चा २ अम्लिका ३ ॥

—ऽथ पीतसारके ॥ ४३ ॥

सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ॥

विजयसारके नाम ६ ॥ पीतसारक १ ॥ ४३ ॥ सर्जक २ असन ३ बन्धूक ४ पुष्पप्रियक ५ जीवक ६ ॥

साले तु सर्जकार्श्याश्वकर्णकाः सस्यसम्बरः ॥ ४४ ॥

शालके नाम ५ ॥ साल १ सर्ज २ कार्श्य ३ अश्वकर्णक ४ सस्यसबर ५ ॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ॥

अर्जुनवृक्षके नाम ५ ॥ नदीसर्ज १ वीरतरु २ इन्द्रद्रु ३ ककुभ ४ अर्जुन ५ ॥

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकाया—

खिन्नीके नाम ३ ॥ राजादन १ फलाध्यक्ष २ क्षीरिका ३ ॥

—मथ द्वयोः ॥ ४५ ॥

इंगुदी तापसतरु—

पांखीके नाम २ ॥ इंगुदी १ तापसतरु २ ॥ ४५ ॥

—भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ॥

भोजपत्रके वृक्षके नाम ३ ॥ भूर्ज १ चर्मिन् २ मृदुत्वच् ३ ॥

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

सेमलके नाम ५ ॥ पिच्छिला १ पूरणी २ मोचा ३ स्थिरायु ४ शाल्मलि ५ ॥ ४६ ॥

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे—

सेमलके गोंदके नाम २॥ पिच्छा १ शाल्मलीवेष्ट २ ॥

-रोचनः कूटशाल्मलिः ॥

काले सेमलके नाम २ ॥ रोचन १ कूटशाल्मलि २ ॥

चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥

करञ्जके नाम ४॥ चिरविल्व १ नक्तमाल २ करज ३ करंजक ४ ॥४७॥

प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ॥

कटीले करजके नाम ४॥ प्रकीर्य १ पूतिकरज २ पूतिक ३ कलिमारक ४ ॥

करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥

करजके भेद ३॥ षड्ग्रन्थ १ मर्कटी २ अङ्गारवल्लरी ३ ॥ ४८ ॥

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ॥

रोहीडाके नाम ४॥ रोहिन् १ रोहितक २ प्लीहशत्रु ३ दाडिमपुष्पक ४ ॥

गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥

खैरके अर्थात् कत्थेके नाम ४ ॥गायत्री १ बालतनय २ खदिर ३ दन्तधावन ४ ॥ ४९ ॥

अरिमेदो विट्खदिरे-

दुर्गंधयुक्त खैरके नाम २॥अरिमेद १ विट्खदिर २ ॥

-कदरः खदिरे सिते ॥

सोमवल्कोऽ-

सफेद खैरके नाम २ ॥ कदर १ सोमवल्क २ ॥

-प्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥ एरण्ड उरुबूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ॥ चञ्चुः पञ्चांगुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥५१

रेंड अर्थात् एरंडके नाम ११॥ व्याघ्रपुच्छ १ गन्धर्वहस्त २ ॥ ५०॥ एरण्ड ३ उरुबूक ४ रुचक ५ चित्रक ६ चञ्चु ७ पञ्चागुल ८ मंड ९ वर्धमान १० व्यडम्बक ११ ॥ ५१ ॥

अल्पा शमी शमीरः स्या-

छोटीशमी(जाँटी)का नाम १॥शमीर १॥

-च्छमी सक्तुफला शिवा ॥

शमी (जाँटी) के नाम ३ ॥ शमी १ सक्तुफला २ शिवा ३ ॥

पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः ॥५२ ॥शल्यश्च मदने-

मयनफलके नाम ६ ॥पिण्डीतक १ मरुबक २ श्वसन ३ करहाटक ४॥५२॥ शल्य ५ मदन ६ ॥

शक्रपादपः पारिभद्रकः ॥ भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारु-

देवदारुके नाम ८ ॥ शक्रपादप १ पारिभद्रक २ भद्रदारु ३ द्रुकिलिम ४ पीतदारु ५ दारु ६ ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठ ७ देवदारु ॥ ८ ॥

ण्यथ द्वयोः ॥

पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥

कृष्णवृन्ता कुवेराक्षी-

पाडरीके नाम ७॥ पाटलि १ पाटला २ मोघा ३ काचस्थाली ४ फलेरुहा ५॥५४ ॥ कृष्णवृन्ता ६ कुवेराक्षी ७ ॥

-श्यामा तु महिलाह्वया ॥ लता गोविन्दिनी गुन्द्रा प्रियंगुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ॥

काकुनीके नाम १२ ॥ श्यामा १ महिलाह्वया २ लता ३ गोविन्दिनी ४ गुन्द्रा ५ प्रियंगु ६ फलिनी ७ फली ८ ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना ९ गन्धफली १० कारम्भा ११ प्रियक १२ ॥

मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वंगटुण्टुकाः ॥ ५६ ॥ स्योनाकशुकनामर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ॥ शोणकश्चारलौ-

सरिवन (सोनापाठाके नाम १२ ॥ मण्डूकपर्ण १ पत्रोर्ण २ नट ३ कट्वंग ४ टुण्टुक ५ ॥ ५६ ॥ स्योनाक ६ शुकनास ७ ऋक्ष ८ दीर्घवृन्त ९ कुटन्नट १० शोणक ११ अरलु १२ ॥

-तिष्यफलात्वामलकी त्रिषु ५७॥ अमृता च व्यवस्था च-

आमलोके नाम ४ ॥ तिष्यफला १ आमलकी २॥५७॥अमृता ३ वयःस्था ४।

-त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ॥नाऽक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ५८ ॥

बहेडेके नाम ६ ॥ विभीतक १ अक्ष २ तुष ३ कर्षफल ४ भूतावास ५ कलिद्रुम ६ ॥५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता ॥ हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

हरडके नाम ११॥ अभया १ अव्यथा २ पथ्या ३ कायस्था ४ पूतना ५ अमृता ६ हरीतकी ७ हैमवती ८ चेतकी ९ श्रेयसी १० शिवा ११ ॥ ५९ ॥

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चा-

सरलाके नाम ३॥ पीतद्रु १ सरल २ पूतिकाष्ठ ३ ॥

-ऽथ द्रुमोत्पलः ॥

कर्णिकारः परिव्याधो-

करनेके नाम ३॥ द्रुमोत्पल १ कर्णिकार २ परिव्याध ३ ॥

-लकुचो लिकुचो डहुः ॥६०॥

बढहरके नाम ३ ॥ लकुच १ लिकुच २ डहु ३ ॥ ६० ॥

पनसः कण्टकिफलो-

कटहरके नाम २ ॥ पनस १ कण्टकिफल २ ॥

-निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ॥

समुद्रफलके नाम ३ ॥ निचुल १ हिज्जल २ अंबुज ३ ॥

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥

कठूमरके नाम ४॥ काकोदुम्बरिका १फल्गु २मलयू ३जघनेफला ४ ॥६१

अरिष्टः सर्वतोभद्रहिंगुनिर्यासमालकाः ॥ पिचुमन्दश्च निंब-

नींबके नाम ६ ॥ आरिष्ट १ सर्वतोभद्र २ हिंगुनिर्यास ३ मालक ४ पिचुमन्द ५ निंब ६ ॥

-ऽथपिच्छिलाऽगुरुशिंशपाः ६२॥

सीसमके नाम ३ ॥ पिच्छिला १ अगुरु २ शिशपा ३ ॥ ६२ ॥

कपिला भस्मगर्भा सा-

कृष्णवर्ण सीसमका नाम १ ॥ भस्मगर्भा ॥

शिरीषस्तु कपीतनः ॥

भण्डिलो-

शिरिसके नाम ३ ॥ शिरीष१कपीतन २ भण्डिल ३ ॥

-ऽथ :चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥

चम्पेके नाम ३ ॥ चाम्पेय १ चम्पक २ हेमपुष्पक ३ ॥ ६३ ॥

एतस्य कलिका गन्धफलीस्या-

चम्पेकी कलीका नाम १ ॥ गन्धफली १ ॥

-दथ केसरे ॥ बकुलो-

मौलसिरीके नामके२॥केसर१वकुल२॥

-वञ्जुलोऽशोके-

अशोकके नाम२॥वञ्जुल१अशोक२॥

-समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥

अनारके नाम२॥करक१दाडिम२६४॥

चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ॥

चपापुष्पके नाम ४ ॥ चापेय १ केसर २ नागकेसर ३ काञ्चनाह्वय ४

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

जाहीके नाम ५॥ जया १जयन्ती २ तर्कारी३नादेयी४वैजयंतिका५ ॥ ६५॥

श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ॥ जयो-

अरणीके नाम ५॥ श्रीपर्ण १ अग्निमय २कणिका३गणिकारिका४जय५॥

-ऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

कुरयाके नाम ४ ॥ कुटज १ शक्र२ वत्सक ३ गिरिमल्लिका ४॥ ६६ ॥

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ॥

इन्द्रजव अर्थात् कुरैयाके फलके नाम ३॥ कलिंग १ इन्द्रयव २ भद्रयव३ ॥

कृष्णपाकफलाविग्रसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥

करौंदाके नाम ४ ॥ कृष्णपाकफल १ अविग्र २ सुषेण ३ करमर्दक ४॥६७॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छो-

तमालके नाम ३ ॥ कालस्कन्ध १ तमाल २ तापिच्छ ३ ॥

-ऽथ सिन्दुके ॥ सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥

म्योंडी(सिंमालू)के नाम५॥सिन्दुक १ सिन्दुवार२इन्द्रसुरस ३ निर्गुण्डी ४ इन्द्राणिका ५ ॥ ६८ ॥

वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ॥

वृन्दाल वृक्ष जो गुजरातमें गोडी प्रसिद्ध है उसके नाम ५ ॥ वेणी १ खरा २ गरी ३ देवताड ४ जीमूत५॥

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी-

घुइयां (अरवी) के नाम २ ॥श्रीहस्तिनी १ भूरुण्डी २ ॥

-तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥ भूपदी शीतभीरुश्च-

वेला (मल्लिका) के नाम४ ॥ तृणशून्य १ मल्लिका २ ॥ ६९ ॥ भूपदी ३ शीतभीरु ४ ॥

-सैवास्फोटा वनोद्भवा ॥

वनवेलाका नाम १ ॥ आस्फोटा १॥

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥

न्यवारी (कालेपुष्पवाली निर्गुण्डी) के नाम ४ ॥ शेफालिका १ सुवहा २ निर्गुण्डी ३ नीलिका ४ ॥ ७० ॥

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवे-

उजली नेवाडीके नाम २॥ श्वेत-रसा १ भूतवेशी २ ॥

–श्यथ मागधी ॥

गणिका यूथिकाम्बष्ठा–

जुहीके नाम ४ ॥ मागधी १ गणिका २ यूथिका ३ अंबष्ठा ४ ॥

–सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥

पीले फूलकी जुहीका नाम १॥ हेमपुष्पिका १ ॥ ७१ ॥

अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ॥

वसन्तीके नाम ५॥ अतिमुक्त १ पुण्ड्रक२ वासन्ती ३ माधवी ४ लता५॥

सुमना मालती जातिः–

चमेलीके नाम ३ ॥ सुमनस् १ मालती २ जाति ३ ॥

–सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

वर्ग्रकी वेलीके नाम २॥ सप्तला १ नवमालिका २ ॥ ७२ ॥

माध्यं कुन्दं–

कुन्दके नाम २ ॥ माध्य १कुन्द२॥

–रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः॥

दुपहरी फूलके नाम ३ ॥ रक्तक १ बधूक २ बंधुजीवक ३ ॥

सहा कुमारी तरणि–

घीग्वारके नाम ३॥ सहा १ कुमारी २ तरणि ३ ॥

–रम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥

कटैयाके नाम २॥ अम्लान १महासहा २ ॥ ७३ ॥

तत्र शोणे कुरबक–

लालकटैयाका नाम १॥ कुरबक१॥

–स्तत्र पीते कुरण्टकः ॥

पीली कटैयाका नाम १॥कुरण्टक१॥

नीली झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

नीली झिंडीके नाम ३ ॥ बाणा १ दासी २ आर्तगल ३ ॥ ७४ ॥

सैरेयकस्तु झिण्टी स्या–

झिंडीमात्रके नाम २ ॥ सैरेयक १ झिण्डी २ ॥

–त्तस्मिन्कुरबकोऽरुणे ॥

लाल झिंडीका नाम १ ॥ कुरबक१ ॥

पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥

पीली झिंडीके नाम२ ॥ कुरण्टक१ सहचरी २ ॥ ७५ ॥

ओण्ड्रपुष्पं जपापुष्पं–

गुडहरके नाम २ ॥ ओंड्रपुष्प १ जपापुष्प २ ॥

–वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ॥

तिलीके फूलका नाम १ ॥ वज्रपुष्प १ ॥

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहय-मारकाः ॥ ७६ ॥ करवीरे—

कंदइल (कनेर) के नाम ५ ॥ प्रतिहास १ शतप्रास २ चण्डात ३ हयमारक ४ ॥ ७६ ॥ करवीर ५ ॥

—करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ॥

करीरके नाम ३ ॥ करीर १ क्रकर २ ग्रन्थिल ३ ॥

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥

मातुलो मदनश्चा—

धतूरेके नाम ७ ॥ उन्मत्त १ कितव २ धूर्त ३ धत्तूर ४ कनकाह्वय ५ ॥ ७७ ॥ मातुल ६ मदन ७ ॥

—ऽस्य फले मातुलपुत्रकः ॥

धतूरेके फलका नाम १ ॥ मातुल-पुत्रक १ ॥

फलपूरो बीजपूरो—

बिजौरा नींबूके नाम २ ॥ फलपूर १ बीजपूर २ ॥

—रुचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥

बिजौरा नींबूके भेद ॥ मातुलुङ्ग १ रुचक २ ॥ ७८ ॥

समीरणो मरुबकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः ॥ जम्बीरोऽ—

मरुआके नाम ५ ॥ समीरण १ मरुबक २ प्रस्थपुष्प ३ फणिज्जक ४ जंबीर ५ ॥

—प्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥

पनसके नाम ३ ॥ पर्णास १ कठि-ञ्जर २ कुठेरक ३ ॥ ७९ ॥

सितेऽर्जकोऽत्र—

श्वेत पनसका नाम १ ॥ अर्जक १ ॥

—पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ॥

चीतेके नाम ३ पाठी १ चित्रक २ वह्निसंज्ञक ३ जितने अग्निके नाम उतने भी चीतेके नाम हैं ॥

अर्काह्ववसुकाऽऽस्फोटगणरूपवि-कीरणाः ॥ ८० ॥ मन्दारश्चा-र्कपर्णो—

आकके नाम ७ ॥ अर्काह्व १ वसुक २ आस्फोट ३ गणरूप ४ विकीरण ५ ॥ ८० ॥ मन्दार ६ अर्कपर्ण ७ सूर्यके सब नाम आकके नाम हैं ॥

—ऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ॥

श्वेत आकके नाम २ ॥ अलर्क १ प्रतापस २ ॥

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥

गूमेके नाम ५ ॥ शिवमल्ली १ पा-शुपत २ एकाष्ठील ३ बुक ४ वसु ५ ॥ ८१ ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ॥

आकाशवेलके नाम ४ ॥ वन्दा १ वृक्षादनी २ वृक्षरुहा ३ जीवन्तिका ४॥

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ॥

गिलोयके नाम ९ ॥ वत्सादनी १ छिन्नरुहा २ गुडूची ३ तन्त्रिका ४ अमृता ५ ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका ६ सोमवल्ली ७ विशल्या ८ मधुपर्णी ९ ॥

मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ॥

चिनारके नाम १० ॥ मूर्वा १ देवी २ मधुरसा ३ मोरटा ४ तेजनी ५ स्रवा ६ ॥ ८३ ॥ मधूलिका ७ मधुश्रेणी ८ गोकर्णी ९ पीलुपर्णी १० ॥

पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ॥

पेठेके नाम १० ॥ पाठा १ अम्बष्ठा २ विद्धकर्णी ३ स्थापनी ४ श्रेयसी ५ रसा ६ ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला ७ पापचेली ८ प्राचीना ९ वनतिक्तिका १० ॥

कटुः कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ॥

कुटकीके नाम ८ ॥ कटु १ कटम्भरा २ अशोकरोहिणी ३ कटुरोहिणी ४ ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता ५ कृष्णभेदी ६ चक्रांगी ७ शकुलादनी ८॥

आत्मगुप्ताजहाऽव्यण्डाकण्डूरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ॥

कैंचके नाम ९ ॥ आत्मगुप्ता १ अजहा २ अव्यण्डा ३ कण्डूरा ४ प्रावृषायणी ५ ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६ शूकशिम्बि ७ कपिकच्छु ८ मर्कटी ९॥

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥

मूलीके नाम १० ॥ चित्रा १ उपचित्रा २ न्यग्रोधी ३ द्रवन्ती ४ शम्बरी ५ वृषा ६ ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी ७ सुतश्रेणी ८ रण्डा ९ मूषिकपर्णी १० ॥

अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ॥

अपामार्गके नाम ८ ॥ अपामार्ग १

शौखरिक २ अधामार्गव ३ मयूरक ४ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी ५ केशपर्णी ६ किणिही ७ खरमञ्जरी ८ ॥

हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥ अंगारवल्ली वालेयशाकवर्बरवर्धकाः ॥

भारगीके नाम ९ ॥ हञ्जिका १ ब्राह्मणी २ पद्मा ३ भार्गी ४ ब्राह्मणयष्टिका ५ ॥ ८९ ॥ अगारवल्ली ६ वालेयशाक ७ वर्वर ८ वर्द्धक ९॥

मञ्जिष्ठा विकसा जिंगी समंगा कालमेषिका ॥९० ॥ मण्डूकपर्णी मण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ॥

मजीठके नाम ९ ॥ मजिष्ठा १ विकसा २ जिगी ३ समंगा ४ कालमेपिका ५ ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी ६ मण्डीरी ७ भण्डी ८ योजनवल्ली ९॥

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥ रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा॥

जवासेके नाम १० ॥ यास १ यवास २ दुःस्पर्श ३ धन्वयास ४ कुनाशक ५ ॥ ९१ ॥ रोदनी ६ कच्छुरा ७ अनन्ता ८ समुद्रान्ता ९ दुरालभा १० ॥

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ॥

पिठिवनके नाम ९ ॥ पृश्निपर्णी १ पृथक्पर्णी २ चित्रपर्णी ३ अङ्घ्रिपर्णिका ४ ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना ५ सिंहपुच्छी ६ कलशी ७ धावनी ८ गुहा ९ ॥

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ॥

भटकटैया (कटेहली) के नाम १० ॥ निदिग्धिका १ स्पृशी २ व्याघ्री ३ बृहती ४ कण्टकारिका ५॥ ९३॥ प्रचोदनी ६ कुली ७ क्षुद्रा ८ दुःस्पर्शा ९ राष्ट्रिका १० ॥

नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ॥

नीलके नाम ११॥नीली १ काला २ क्लीतकिका ३ ग्रामीणा ४ मधुपर्णिका ५ ॥९४॥ रजनी ६ श्रीफली ७ तुत्था ८ द्रोणी ९ दोला १० नीलिनी ११ ॥

अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि॥

वकुचीके नाम ८ ॥ अवल्गुज १

सोमराजी २ सुवल्लि ३ सोमवल्लिका ४ ॥ ९५ ॥ कालमेषी ५ कृष्णफला ६ वाकुची ७ पूतिफली ८ ॥

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥ उषणा पिप्पली शौण्डी कोला–

पीपलके नाम १० ॥ कृष्णा १ उपकुल्या २ वैदेही ३ मागधी ४ चपला ५ कणा ६ ॥ ९६ ॥ उषणा ७ पिप्पली ८ शौण्डी ९ कोला १० ॥

ऽथ करिपिप्पली ॥
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥

गजपीपलके नाम ५॥ करिपिप्पली १ कपिवल्ली २ कोलवल्ली ३ श्रेयसी ४ वशिर ५ ॥ ९७ ॥

चव्यं तु चविका–

चावके नाम २ ॥ चव्य १ चविका २॥

–काकचिञ्चागुञ्जे तु कृष्णला ॥

घुंघुची (चिरमठी) के नाम ३ ॥ काकचिचा १ गुंजा २ कृष्णला ३ ॥

पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥ गोकण्टको गोक्षुरको वनशृंगाट इत्यपि ॥

गोखरूके नाम ७ ॥ पलंकषा १ इक्षुगन्धा २ श्वदंष्ट्रा ३ स्वादुकण्टक ४ ॥ ९८ ॥ गोकण्टक ५ गोक्षुरक ६ वनशृङ्गाट ७ ॥

विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषारुणा महौषधं चा–

अतीसके नाम ८ ॥ विश्वा १ विषा २ प्रतिविषा ३ अतिविषा ४ उपविषा ५ अरुणा ६ ॥ ९९ ॥ शृंगी ७ महौषध ८

–ऽथ क्षीरावी दुग्धिका समे ।

दूधीके नाम २॥ क्षीरावी १ दुग्धिका २

शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्री नारायण्यः शतावरी । अहेरु–

शतावरीके नाम १० ॥ शतमूल १ बहुसुता २ अभीरु ३ इन्दीवरी ४ वरी ५ ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६ अभीरुपत्री ७ नारायणी ८ शताव ९ अहेरु १० ॥

–रथ पीतद्रुकालेयकहरिद्रव ॥ १०१ ॥ दार्वी पचम्पचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ॥

दारुहलदीके नाम ७ ॥ पीतद्रु १ कालेयक २ हरिद्रु ३ ॥ १०१ ॥ दार्वी ४ पचंपचा ५ दारुहरिद्रा ६ पर्जनी ७

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ।

वचके नाम ५॥ वचा १ उग्रगन्धा २ षड्ग्रन्था ३ गोलोमी ४ शतपर्विका ५ ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती—

जिसका श्वेत जड हो उस वचका नाम १ ॥ हैमवती १ ॥

—वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका ॥ वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासिको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

अडूसेके नाम ८॥ वैद्यमातृ १ सिंही २ वाशिका ३ वृष ४ अटरूष ५ सिंहास्य ६ वासिक ७ वाजिदन्तक ८॥ १०३॥

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता ॥

विष्णुक्रान्ताके नाम ४॥ आस्फोटा १ गिरिकर्णी २ विष्णुक्रांता ३ अपराजिता ४॥

इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षु कोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

तालमखानेके नाम ५॥ इक्षुगन्धा १ काण्डेक्षु २ कोकिलाक्ष ३ इक्षुर ४ क्षुर ५ ॥ १०४ ॥

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ॥

मिश्रेया—

सोफके नाम ६॥ शालेय १ शीतशिव २ छत्रा ३ मधुरिका ४ मिसी ५ मिश्रेया ६ ॥

—ऽथ सीहुण्डो वज्रःस्नुक्स्त्री स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा—

सेहुड (थोहर) के नाम ६॥ सीहुंड १ वज्र २ स्नुह् ३ स्नुही ४ गुडा ५॥ ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा ६ ॥

—ऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ॥ तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम् ॥ १०६ ॥

वायविडंगके नाम ६ ॥ वेल्ल १ अमोघा २ चित्रतण्डुला ३ तण्डुल ४ कृमिघ्न ५ विडङ्ग ६॥ १०६ ॥

बला वाट्यालको—

बरियरा (खरहॅटी) के नाम २॥ बला १ वाट्यालक २ ॥

—घण्टारवा तु शणपुष्पिका ॥

सनाटाके नाम २ ॥ घटारवा १ शणपुष्पिका २ ॥

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

दाखके नाम ५ ॥ मृद्वीका १ गोस्तनी २ द्राक्षा ३ स्वाद्वी ४ मधुरसा ५ ॥ १०७ ॥

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ॥ त्रिभण्डी रोचनी—

श्वेत त्रिधारा (निसोत) के नाम७॥ सर्वानुभूति १ सरला २ त्रिपुटा ३ त्रिवृता ४ त्रिवृत् ५ त्रिभण्डी ६ रोचनी ७॥

श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥ काला मसूरविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेषिका ॥

काले त्रिधारे (निसोत) के नाम ७॥ श्यामा १ पालिन्दी २ सुषेणिका ३ ॥ १०८ ॥ काला ४ मसूरविदला ५ अर्द्धचन्द्रा ६ कालमेषिका ७ ॥

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

जेठीमधुके नाम ४ ॥ मधुक १ क्लीतक २ यष्टीमधुक ३ मधुयष्टिका ४ ॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्टी तु या सिता ॥

कृष्णभूकूष्माण्डके नाम ४॥ विदारी १ क्षीरशुक्ला २ इक्षुगन्धा ३ क्रोष्टी ॥

अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥

शुक्लभूकूष्माण्डके नाम ३॥ क्षीरविदारी १ महाश्वेता २ ऋक्षगन्धिका ३ ॥ ॥ ११० ॥

लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ॥

जलपीपलके नाम ४॥ लांगली १ शारदी २ तोयपिप्पली ३ शकुलादनी ४ ॥

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

मयूरशिखा वा अजमोदके नाम ५॥ खराश्वा १ कारवी २ दीप्य ३ मयूर ४ लोचमस्तक ५ ॥ १११ ॥

गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ॥

कालीशाम्ब (अनंतमूल) के नाम ५॥ गोपी १ श्यामा २ शारिवा ३ अनंता ४ उत्पलशारिवा ५ ॥

योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ-

ऋद्धि, औषधिके नाम ४ ॥ योग्य १ ऋद्धि २ सिद्धि ३ लक्ष्मी ४ ॥

-वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥११२॥

येही नाम वृद्धिनामक औषधकेभी होते हैं ॥ ११२ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला ॥ काष्ठीला-

केलेके नाम ६ ॥ कदली १ वारणबुसा २ रम्भा ३ मोचा ४ अंशुमत्फला ५ काष्ठीला ६ ॥

-मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥

वनमूंगके नाम ३ ॥ मुद्गपर्णी १ काकमुद्गा २ सहा ३ ॥ ११३ ॥

वार्ताकी हिंगुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ॥

वनभटे (रानकटेहली) के नाम ५॥

वार्ताकी १ हिंगुली २ सिंही ३ भण्टाकी ४ दुष्प्रधर्षिणी ५ ॥

नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ॥

रासन (तुलसी) के नाम ९ ॥ नाकुली १ सुरसा २ रास्ना ३ सुगंधा ४ गन्धनाकुली ५ ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा ६ भुजंगाक्षी ७ छत्राकी ८ सुवहा ९ ॥

विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

शालपर्णी वा सरिवनके नाम ५ ॥ विदारिगंधा १ अंशुमती २ शालपर्णी ३ स्थिरा ४ ध्रुवा ५ ॥ ११५ ॥

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च ॥

कपासके नाम ४ ॥ तुंडिकेरी १ समुद्राता २ कार्पासी ३ बदरा ४ ॥

भारद्वाजी तु सा वन्या—

वनकी कपास अर्थात् नरमाका नाम १ ॥ भारद्वाजी १ ॥

—शृंगी तु ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥

काकडासींगीके नाम ३ ॥ शृङ्गी १ ऋषभ २ वृष ३ ॥ ११६ ॥

गांगेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ॥

ककही (गँगेरन) के नाम ४ ॥ गांगेरुकी १ नागबला २ झषा ३ ह्रस्वगवेधुका ४ ॥

धामार्गवो घोषकः स्या—

श्वेत तुरईके नाम २ ॥ धामार्गव १ घोषक २ ॥

—न्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥

पीलेफूलकी तुरईका नाम १ ॥ महाजाली १ ॥ ११७ ॥

ज्योत्स्नी पटोलिका जाली—

चचेंडेके नाम ३ ॥ ज्योत्स्नी १ पटोलिका २ जाली ३ ॥

—नादेयी भूमिजम्बुका ॥

भूमिजामुनके नाम २ ॥ नादेयी १ भूमिजम्बुका २ ॥

स्याल्लांगलिक्यग्निशिखा—

करियारी (कलहारी) के नाम २ ॥ लांगलिकी १ अग्निशिखा २ ॥

—काकांगी काकनासिका ॥ ११८ ॥

काकजंघा अर्थात् कौवाठोढी (मकोह) के नाम २ ॥ काकांगी १ काकनासिका २ ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा—

हंसपदी (लज्जावंती) के नाम २ ॥ गोधापदी १ सुवहा २ ॥

—मुसली तालमूलिका ॥

मूसलीके नाम २ मुसली १ तालमूलिका २ ॥

अजशृंगी विषाणी स्या-

मेढासींगीके नाम २ ॥ अजश्रृङ्गी १ विषाणी २ ॥

-द्गोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥

गोभीकि नाम २ ॥ गोजिह्वा १ दार्विका २ ॥ ११९ ॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यथ-

नागवेल अर्थात् पानके नाम ३ ॥ तांबूलवल्ली १ तांबूली २ नागवल्ली ३॥

-प्यथ द्विजा ॥

हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥

गगनधूरिके नाम ६ ॥ द्विजा १ हरेणु २ रेणुका ३ कौन्ती ४ कपिला ५ भस्मगन्धिनी ६ ॥ १२० ॥

एलावालुकमैलेयं सुगन्धिहरिवालुकम् ॥ वालुकं च्चा-

एलुआ नामक गन्धद्रव्यविशेषके नाम ५ ॥ एलावालुक १ ऐलेय २ सुगन्धि ३ हरिवालुक ४ मालुक ५ ॥

-ऽथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ॥ १२१ ॥

पालवाके नाम ४ ॥ पालंकी १ मुकुन्द २ कुन्द३ कुन्दुरु ४ ॥ १२१

वालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ॥

नेत्रवालाके नाम ४ ॥ बाल १ ह्रीवेर २ बर्हिष्ठ ३ उदीच्य ४ ॥ केशके और उदकके सब नाम ५ ॥

कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥ शैलेयं-

शिलाजीतके नाम ५ ॥ कालानुसार्य १ वृद्ध २ अश्मपुष्प ३ शीतशिव ४ ॥ १२२ ॥ शैलेय ५॥

-तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ॥ गन्धिनी-

मुरैठी वा तालिसपत्रके नाम ५ ॥ तालपर्णी १ दैत्या २ गन्धकुटी ३ मुरा ४ गंधिनी ५ ॥

-गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ॥

कांसके नाम ८ ॥ गजभक्ष्या १ सुवहा २ सुरभि ३ रसा ४ ॥ १२३॥ महेरुणा ५ कुन्दुरुकी ६ सल्लकी ७ ह्लादिनी ८ ॥

अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥

धव (धायफूल) के नाम ४ ॥ अग्निज्वाला १ सुभिक्षा २ धातकी ३ धातुपुष्पिका ४ ॥ १२४ ॥

पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्बहुला-

बडी इलायची के नाम ५॥पृथ्वीका १ चन्द्रवाला २एला३निष्कुटी४ बहुला५॥

—ऽथ सा ॥

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्या कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १२५ ॥

गुजराती (छोटी) इलायचीके नाम ५ ॥ उपकुञ्चिका १ तुत्या २ कोरङ्गी ३ त्रिपुटा ४ त्रुटि५ ॥१२५॥

व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं व्याप्यं पाकलमुत्पलम् ॥

कूठके नाम ६ ॥ व्याधि १ कुष्ठ २ पारिभाव्य३व्याप्य४ पाकल५उत्पल६॥

शंखिनी चोरपुष्पी स्यात्केशि—

शंखाहुलीके नाम ३ ॥ शखिनी१ चोरपुष्पी २ केशिनी ३ ॥

—न्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥

झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ॥

भूम्यामलकी अर्थात् भुँवरीके नाम ७ ॥ वितुन्नक १ ॥ १२६ ॥ झटा२ अमला ३ अज्झटा ४ ताली ५ शिवा ६ तामलकी ७ ॥

प्रपौण्डरीकं पौण्डर्य—

गुलावके नाम २ ॥ प्रपौण्डरीक १ पौण्डर्य २ ॥

—मथ तुन्नः कुवेरकः ॥ १२७॥ कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षो—

तुनके नाम६॥ तुन्न१कुवेरक२॥१२७॥ कुणि३कच्छ ४कान्तलक५नन्दिवृक्ष६ ॥

—ऽथ राक्षसी ॥

चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥

धनहरीके नाम ६ ॥ राक्षसी १ चण्डा २ धनहरी ३ क्षेम ४ दुष्पत्र ५ गणहासक ६ ॥ १२८॥

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ॥

नखा, गन्धद्रव्यके नाम ४ ॥व्याडायुध१व्याघ्रनख२करज३चक्रकारक४

सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥

मालकागनीके नाम ५॥ सुषिरा १ विद्रुमलता २ कपोतांघ्रि ३ नटी ४ नली ५ ॥ १२९ ॥

धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हट्टविलासिनी ॥

कक्दनिके नाम ४ ॥ धमनी १ अञ्जनकेशी २ हनु ३ हट्टविलासिनी ४ ॥

शुक्तिः शंखः खुरः कोलदलं नख—

नखी नाम गन्धद्रव्यविशेषके नाम ५ ॥ शुक्ति १ शंख २ खुर ३ कोलदल ४ नख ५ ॥

—मथाढकी ॥ १३० ॥
काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालक सुराष्ट्रजे ॥

अरहरके नाम ६ ॥ आढकी १ ॥ ॥१३०॥ काक्षी २ मृत्स्ना ३ तुवरिका ४ मृत्तालक ५ सुराष्ट्रज ६ ॥

कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ॥

मोथाके नाम ९॥ कुटन्नट१ दाशपुर २ वानेय ३ परिपेलव ४॥ १३१॥ प्लव५गोपुर६गोनर्द७कैवर्त्ती८ मुस्तक९

ग्रन्थिपर्णं शुकं बर्हपुष्पं स्थौणेयकुक्कुरे ॥ १३२ ॥

ककरोंके नाम ५॥ग्रंथिपर्ण१शुक२ बर्हपुष्प३स्थौणेय४कुक्कुर ५॥१३२॥

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ॥ समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लंकोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥

असपरकके नाम १० ॥ मरुन्माला १ पिशुना २ स्पृक्का ३ देवी४ लता५ लघु ६ समुद्रान्ता७ वधू ८ कोटिवर्षा ९ लंकोपिका ॥ १० ॥१३३॥

तपस्विनी जटा मांसी जटिला लोमशा मिशी ॥

जटामांसीके नाम ६ ॥ तपस्विनी१ जटा २ मांसी ३ जटिला ४ लोमशा ५ मिशी ६ ॥

त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

तजके नाम ६॥त्वक्पत्र१ उत्कट२ भृंग३ त्वच४ चोच५वरांगक६॥१३४

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ॥

कचूरके नाम ४ कर्चूरक १ द्राविडक २ काल्पक ३ वेधमुख्यक ४ ॥

ओषध्यो जातिमात्रे स्यु-

सब अन्नोंका नाम १॥ ओषधी१॥

—रजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५॥

अन्नमात्रका नाम१ ॥औषध१॥१३५॥

शाकाख्यं पत्रपुष्पादि-

तर्कारीमात्रका नाम १॥शाक १ ॥

—तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ॥

चौराई के नाम २ ॥तण्डुलीय १ अल्पमारिष २ ॥

विशल्याग्निशिखाऽनन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

कलियारी इन्द्रपुष्पीके नाम ५ ॥ विशल्या १ अग्निशिखा २ अनन्ता ३ फलिनी ४ शक्रपुष्पिका ५ ॥ १३६ ॥

स्याहृक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः ॥ जुङ्गो-

विधाराके नाम ५ ॥ ऋक्षगन्धा १ छगलान्त्री २ आवेगी ३ वृद्धदारक ४ जुङ्ग ५ ॥

-ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥

ब्राह्मीके नाम ४ ॥ ब्राह्मी १ मत्स्याक्षी २ वयस्था ३ सोमवल्लरी ४ ॥१३७॥

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ॥

मकोईके नाम ४ ॥ पटुपर्णी १ हैमवती २ स्वर्णक्षीरी ३ हिमावती ४ ॥

हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥

मूगके नाम ४॥हयपुच्छी १ काम्बोजी २ माषपर्णी ३ महासहा ४॥१३८॥

तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ॥

कुंदुरीके नाम ४ ॥ तुण्डिकेरी १ रक्तफला २ बिम्बिका ३ पीलुपर्णी ४ ॥

बर्बरा कबरी तुंगी खरपुष्पाऽजगन्धिका ॥ १३९ ॥

बर्बराके नाम ५ ॥ बर्बरा १ कबरी २ तुंगी ३ खरपुष्पा ४ अजगन्धिका ५ ॥ १३९ ॥

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ॥

एलापर्णीके नाम ४ ॥ एलापर्णी १ सुवहा २ रास्ना ३ युक्तरसा ४ ॥

चांगेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

अम्लोना वा चूकाके नाम ५ ॥ चांगेरी १ चुक्रिका २ दन्तशठा ३ अम्बष्ठा ४ अम्ललोणिका ५॥१५०॥

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ॥

अमलवेतके नाम ४ ॥ सहस्रवेधी १ चुक्र २ अम्लवेतस ३ शतवेधी ४ ॥

नमस्कारी गण्डकारी समंगा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥

किसी २ के मतसे चागेरी आदि ९ भी अमलवेतके नाम हैं ॥ लजालूके नाम ४ ॥ नमस्कारी १ गण्डकारी २ समगा ३ खदिरा ४ ॥ १४१ ॥

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुः स्रवा ॥

जिसे गुर्जरदेशमे दोडी कहते हैं उस औषधिके नाम ६ ॥ जीवन्ती १ जीवनी २ जीवा ३ जीवनीया ४ मधु ५ स्रवा ६ ॥ कोईक ' मधुस्रवा ' एकनाम कहते हैं ॥

कूर्चशीर्षो मधुरकः शृंगहस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

जीवकके नाम ५ ॥ कूर्चशीर्ष १ मधुरक २ शृंग ३ ह्रस्वांग ४ जीवक ५ ॥ १४२ ॥

किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्य-

चिरायतेके नाम ३ ॥ किराततिक्त १ भूनिम्ब २ अनार्यतिक्त ३ ॥

-ऽथ सप्तला ॥

विमला सातला भूरिफेना चर्मकषेत्यपि ॥ १४३ ॥

सीहुण्डभेदके नाम ५ ॥ सप्तला १ विमला २ सातला ३ भूरिफेना ४ चर्मकषा ५ ॥ १४३ ॥

वायसोली स्वादुरसा वयस्था

काकोलीके नाम ३ ॥ वायसोली १ स्वादुरसा २ वयस्था ॥ ३ ॥

-ऽथ मकूलकः ॥

निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्छ्रे-ण्युदुम्बरपर्ण्यपि ॥ १४४ ॥

चजदन्ती अर्थात् दन्तियाके नाम जिसके बीजको जयपाल कहते हैं ५ ॥मकूलक १ निकुम्भ २ दन्तिका ३ प्रत्यक्श्रेणी ४ उदुम्बरपर्णी ५ ॥ १४४ ॥

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ॥

अजमोद या अजवायनके नाम ४ ॥ अजमोदा १ उग्रगन्धा २ ब्रह्मदर्भा ३ यवानिका ४ ॥

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥

पौहकरमूलके नाम ३ ॥ पुष्कर १ काश्मीर २ पद्मपत्र ३ ॥ १४५ ॥

अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ॥

पद्माखके नाम ५ ॥ अव्यथा १ अतिचरा २ पद्मा ३ चारटी ४ पद्मचारिणी ५ ॥

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्तां-गोरोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥

कबीलेके नाम ५ ॥ कांपिल्य १ कर्कश २ चन्द्र ३ रक्तांग ४ रोचनी ५ ॥ १४६ ॥

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्र-मर्दकः ॥ पद्माट उरणाख्यश्च-

चकवड वा पवाडके नाम ६ ॥ प्रपुन्नाड १ एडगज २ दद्रुघ्न ३ चक्रमर्दक ४ पद्माट ५ उरणाख्य ६ ॥

-पलाण्डुस्तु सुकन्दकः १४७ ॥

प्याजके नाम २ ॥ पलाण्डु १ सुकन्दक २ ॥ १४७ ॥

लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरिते-

हरे प्याजके नाम २ ॥ लतार्क १ दुद्रुम २ ॥

-ऽथ महौषधम् ॥

लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दर-सोनकाः ॥ १४८ ॥

लहसुनके नाम ६ ॥ महौषध १ लशुन २ गृंजन ३ अरिष्ट ४ महाकन्द ५ रसोनक ६ ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी-

गदहपुरैना (सांठी) के नाम २॥ पुनर्नवा १ शोथघ्नी २ ॥

–वितुन्नं सुनिषण्णकम् ॥

विसखपड़ाके नाम २॥ वितुन्न १ सुनिषण्णक २ ॥

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि ॥ १४९ ॥

पटशनके नाम ४॥ वातक १ शीतल २ अपराजिता ३ शणपर्णी ४॥ १४९॥

पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ॥

मालकागनीके नाम ५॥ पारावताङ्घ्रि १ कटभी २ पण्या ३ ज्योतिष्मती ४ लता ५ ॥

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

त्रायमाणके नाम ४ ॥ वार्षिक १ त्रायमाणा २ त्रायन्ती ३ बलभद्रिका ४ ॥ १५० ॥

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ॥

वाराहीकन्दके नाम ४ ॥ विष्वक्सेनप्रिया १ गृष्टि २ वाराही ३ बदरा ४ ॥

मार्कवो भृङ्गराजः स्या–

भृगराज (भगारा) के नाम २ ॥ मार्कव १ भृंगराज २ ॥

–त्काकमाची तु वायसी॥१५१॥

कांवैया वा कौवाहाडी गोडीके नाम २॥ काकमाची १ वायसी २ ॥१५१॥

शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ॥ अवाक्पुष्पी कारवी च–

सोंफके नाम ७॥ शतपुष्पा १ सितच्छत्रा २ अतिच्छत्रा ३ मधुरा ४ मिसि ५ अवाक्पुष्पी ६ कारवी ७ ॥

–सरणा तु प्रसारिणी॥१५२॥ तस्यां कटंभरा राजबला भद्रबलेत्यपि ॥

कुब्जप्रसारिणी वा चादवेल वा प्रसारनि (खींप) के नाम ५ ॥ सरणा १ प्रसारिणी २॥ १५२ ॥ कटम्भरा ३ राजबला ४ भद्रबला ५ ॥

जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा–

चक्रवर्तके नाम ६ ॥ जनी १ जतूका २ रजनी ३ जतुकृत् ४ चक्रवर्तिनी ५ ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा ६ ॥

–ऽथ शठी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ॥ कर्चूरोऽपि पलाशो–

कचूरके नाम ५ ॥ शठी १ गन्धमूली २ षड्ग्रन्थिका ३ कर्चूर ४ पलाश ५ ॥

–ऽथ कारवेल्लः कठिल्लकः ॥१५४ सुषवी चा–

करेलोंके नाम ३ ॥ कारवेल्ल १ कठिल्लक २ ॥ १९४ ॥ सुषवी ३ ॥

-ऽथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ॥

परवरके नाम ४ ॥ कुलक १ पटोल २ तिक्तक ३ पटु ४ ॥

कूष्मांडकस्तु कर्कारु-

कुम्हडा (कोहला) के नाम २ ॥ कूष्माण्डक १ कर्कारु २ ॥

-रीर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ॥१९५॥

ककडीके नाम २ ॥ ईर्वारु १ कर्कटी२ ॥ १९९ ॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्या-

रामतुरई अर्थात् लौकीके नाम २॥ इक्ष्वाकु १ कटुतुम्बी २ ॥

-त्तुम्ब्यलाबूरुभे समे ॥

तुम्बीके नाम २ तुम्बी १ अलाबू २॥

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा-

जठऊ कर्करी (गडूंभा) के नाम ३॥ चित्रा १ गवाक्षी २ गोडुम्बा ३ ॥

-विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥२९१॥

इंद्रवारुणीके नाम २॥ विशाला १ इंद्रवारुणी २ ॥ १९६ ॥

-अर्शोघ्नः सूरणः कन्दः-

सूरण अर्थात् जमीकन्दके नाम ३ ॥ अर्शोघ्न १ सूरण २ कन्द ३ ॥

गण्डीरस्तु समष्ठिला ॥

गंडरीके नाम २ ॥ गंडीर १ समष्ठिला २ ॥

कलम्ब्यु-

करंबुआका नाम १॥ कलम्बी १॥

-पोदिका-

फोईका नाम १ ॥ उपोदिका १ ॥

-स्त्री तु मूलकं-

मूलीका नाम १ ॥ मूलक १ ॥

-हिलमोचिका ॥ १९७ ॥

हिलसाका नाम १॥ हिलमोचिका १ ॥ १९७ ॥

वास्तूकं-

वथुएका नाम १ ॥ वास्तुक १ ॥

-शाकभेदाः स्यु-

यह सब शाकके भेद कहे ॥

-र्दूर्वा तु शतपर्विका ॥ सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहा ऽनन्ता-

दूबके नाम ६ ॥ दूर्वा १ शतपर्विका २ सहस्रवीर्या ३ भार्गवी ४ रुहा ५ अनन्ता ६ ॥

-ऽथ सा सिता ॥ १९८ ॥ गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षकः ॥

उजली दूबके नाम ४ ॥१९८ ॥ गोलोमी १ शतवीर्या २ गण्डाली २ शकुलाक्षक ४ ॥

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

मोथाके नाम ४ ॥ कुरुविन्द १ मेघनामन् २ मुस्ता ३ मुस्तक ४ ॥ ॥ १५९ ॥

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा–

नागरमोथाके नाम २ ॥ भद्रमुस्तक १ गुन्द्रा २ ॥

–चूडाला चक्रलोच्चटा ॥

मोथाविशेषके नाम ३ ॥ चूडाला १ चक्रला २ उच्चटा ३ ॥

वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥

वांशके नाम १० ॥ वंश १ त्वक्सार२ कर्मार ३ त्वचिसार४तृणध्वज ५ ॥ १६०॥ शतपर्वन् ६ यवफल ७ वेणु ८ मस्कर ९ तेजन १० ॥

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

जो छेदमें वायु जानेसे शब्द करने लगें उन वांशोंका नाम १ ॥ कीचक १ ॥ १६१ ॥

ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी–

गांठके नाम. ३ ॥ ग्रन्थि १ पर्वन् २ परुष् ३ ॥

–गुन्द्रस्तेजनकः शरः ॥

शरके नाम ३ ॥ गुन्द्र १ तेजनक २ शर ३ ॥

नडस्तु धमनः पोटगलो–

नलके नाम ३ ॥ नड १ धमन २ पोटगल ३ ॥

–ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२॥ इक्षुगन्धा पोटगलः–

काशके नाम ३ ॥काश१॥१६२॥ इक्षुगन्धा २ पोटगल ३ ॥

–पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ॥

बगईका नाम १ ॥ बल्वज १ ॥

रसाल इक्षु–

ऊख अर्थात् गन्नाके नाम २ ॥ रसाल १ इक्षु २ ॥

–स्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥

पोंडा ऊखके नाम २ ॥ पुंण्ड्र १ कान्तारक २ आदि ॥ १६३ ॥

स्याद्वीरणं वीरतरं–

गांडरके नाम २ ॥ वीरण १ वीरतर २ ॥

–मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ॥ अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥ लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ॥

गांडरेकी जड अर्थात् खशके नाम १० ॥उशीर १ अभय २ नलद३ सेव्य

४अमृणाल ५ जलाशय ६ ॥ १६४॥ लामज्जक ७ लघुलय ८ अवदाह ९ इष्टकापथ १० ॥

नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

नलादि गर्मुत् श्यामाकआदिका नाम १ ॥ तृण १.॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुशो दर्भः पवित्र–

कुशके नाम ४ ॥ कुश १ कुथ २ दर्भ ३ पवित्र ४ ॥

–मथ कत्तृणम् ॥

पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६

रोहिसके नाम ६ ॥ कत्तृण १ पौर २ सौगन्धिक ३ ध्याम ४ देवजग्धक ५ रौहिष ६ ॥ १६६ ॥

छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ–

पानीके तृणके नाम ३ ॥ छत्रा १ अतिच्छत्र २ पालघ्न ३ ॥

–मालातृणकभूस्तृणे ॥

तृणविशेषके नाम २ ॥ मालातृणक १ भूस्तृण २ ॥

शष्पं बालतृणं–

नये तृणके नाम २ ॥ शष्प १ बालतृण २ ॥

–घासो यवसं–

घासके नाम २ ॥ घास १ यवस २॥

–तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

तृणमात्रके नाम २ ॥ तृण १ अर्जुन २ ॥ १६७ ॥

तृणानां संहतिस्तृण्या–

तृणसमूहका नाम १ ॥ तृण्या १॥

–नड्या तु नडसंहतिः ॥

नलोंके समूहका नाम १॥नड्या १॥

तृणराजाह्वयस्तालो–

ताडके नाम २॥तृणराज १ ताल २॥

–नालिकेरस्तु लाङ्गली १६८॥

नारियलके नाम २ ॥ नालिकेर १ लांगली २ ॥ १६८ ॥

घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो–

सुपारीके नाम ५ ॥ घोण्टा १ पूग २ क्रमुक ३ गुवाक ४ खपुर ५ ॥

–ऽस्य तु ॥ फलमुद्वेग–

सुपारीके फलका नाम १ ॥ उद्वेग १ ॥

–मेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥ खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ॥

खजूरीके नाम ४ ॥ खर्जूर १ केतकी २ ताली ३ खर्जूरी ४॥पेडका तृणद्रुम नाम है ॥ १६९ ॥

इति वनौषधिवर्गः ४ ॥

अथ सिंहादिवर्गः ५.

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ॥

सिहके नाम ६ ॥ सिंह १ मृगेन्द्र २ पञ्चास्य ३ हर्यक्ष ४ केसरिन् ५ हरि६॥

शार्दूलद्वीपनौ व्याघ्रे—

वाघके नाम ३॥ शार्दूल १ द्वीपिन्२ व्याघ्र ३ ॥

—तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

चीतेके नाम २॥ तरक्षु १ मृगादन २ ॥ १ ॥

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः ॥ दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि२

सूअरके नाम १२ ॥ वराह१सूकर २ घृष्टि ३ कोल ४ पोत्रिन् ५ किरि६ किटि ७ दंष्ट्रिन् ८ घोणिन् ९ स्तब्ध-रोमन् १० क्रोड ११ भूदार १२॥२॥

कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवली-मुखाः ॥ मर्कटो वानरः कीशो वनौका—

वानरके नाम ९॥ कपि १ प्लवङ्ग २ प्लवग ३ शाखामृग ४ वलीमुख ५मर्कट ६ वानर ७ कीश ८ वनौकस् ९ ॥

—अथ भल्लुके ॥ ३ ॥

ऋक्षाऽच्छभल्लभल्लूका—

रीछके नाम ४ ॥ भल्लुक १॥ ३ ॥ ऋक्ष २ अच्छभल्ल ३ भल्लूक ४ ॥

—गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥

गैडेके नाम ३ ॥ गण्डक १ खड्ग२ खड्गिन् ३ ॥

लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासर-सैरिभाः ॥ ४ ॥

भैंसेके नाम ५ ॥ लुलाय १ महिष२ वाहद्विषत् ३ कासर ४ सैरिभ ५ ॥ ४ ॥

स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृग-धूर्तकाः ॥ शृगालवञ्चकक्रोष्टुफे-रुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥

सियार—गीदडके नाम १०॥ शिवा १ भूरिमाय २ गोमायु ३ मृगधूर्तक ४ शृगाल ५ वचक ६ क्रोष्टु ७ फेरु ८ फेरव ९ जम्बुक १० ॥ ५ ॥

ओतुर्बिडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक्—

बिलावके नाम५॥ओतु १ बिडाल २ मार्जार ३ वृषदशक ४आखुभुक् ५॥

त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गो-धिकात्मजे ॥ ६ ॥

चन्दनगोह (गुहेरा) अर्थात् यह जन्तु काले सर्पसे गोहमें उत्पन्न होता है उसके नाम ३ ॥ गौधेर १ गौधार २ गौधेय ३ ॥ ६ ॥

श्वावित्तु शल्य—

साहीके नाम २॥श्वाविद् १शल्य२॥

स्तल्लोम्नि शललो शललं शलम्॥

साहीके परोके नाम ३॥ शलली १ शलल २ शल ३॥

वातप्रमीर्वातमृगः-

शीघ्रगामी मृगविशेषके नाम २॥ वातप्रमी १ वातमृग २॥

-कोकस्त्वीहामृगो वृकः॥ ७॥

भेडियेके नाम ३॥ कोक १ ईहामृग २ वृक ३॥ ७॥

मृगे कुरंगवातायुहरिणाजिनयोनयः॥

मृगके नाम ५॥ मृग १ कुरङ्ग २ वातायु ३ हरिण ४ अजिनयोनि ५॥

ऐणेयमेण्याश्चर्माद्य-

हरिणीके चर्म मांसादिका नाम १॥ ऐणेय १॥

-मेणस्यैण-

हरिणके चर्म मांसादिका नाम १॥ऐण १॥

-मुभे त्रिषु॥ ८॥

ऐणेय और ऐण ये शब्द तीनोंलिंगोंमें होतेहै॥ ८॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि॥ समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः॥ ९॥

मृगोंके भेद ७॥ कदलिन् १ कन्दलिन् २ चीन ३ चमूर ४ प्रियक ५ समूरु ६ हरिण ७॥ ९॥

कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिषाः॥ गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो मृगाः॥ १०॥

तथा मृगोंके भेद १२॥ कृष्णसार १ रुरु २ न्यङ्कु ३ रङ्कु ४ शम्बर ५ रौहिष ६ गोकर्ण ७ पृषत ८ एण ९ ऋश्य १० रोहित११चमर१२॥१०॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः॥ इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः॥ ११॥

तथा मृगोंके भेद ६॥ गन्धर्व १ शरभ २ राम ३ सृमर ४ गवय ५ शश ६ इस प्रकार मृग आदि और सिंह आदि तथा गौआदि पशुजाति कहलाते हैं॥ ११॥

उन्दुरुर्मूषकोप्याखु-

चूहेके नाम ३॥ उन्दुरु १ मूषक २ आखु ३॥

-र्गिरिका बालमूषिका॥

छोटी चुहियाके नाम २॥गिरिका १ बालमूषिका २॥

सरटः कृकलासः स्या-

गिरगटके नाम २॥ सरट १ कृकलास २॥

-न्मुसली गृहगोधिका॥१२॥

छपकलीके नाम २ ॥ मुसली १ गृहगोधिका २ ॥१२॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ॥

मकडीके नाम४॥ लूता १ तन्तुवाय २ ऊर्णनाभ ३मर्कटक ४ ॥

नीलंगुस्तु कृमिः–

कीटविशेषके नाम २॥ नीलंगु१कृमि२ ॥

–कर्णजलौकाः शतपद्युभे॥१३॥

कानखजूरेके नाम २॥ कर्णजलौकस् १ शतपदी २ ॥ १३ ॥

वृश्चिकः शूककीटः स्या–

ऊनी वस्त्रके खानेवाले कीडेके नाम २ ॥ वृश्चिक १ शूककीट २ ॥

–दलिद्रोणौ तु वृश्चिके ॥

बीछूके नाम३॥अलि१द्रोण२वृश्चिक३॥

पारावतः कलरवः कपोतो–

कबूतरके नाम ३ ॥ पारावत १ कलरव २ कपोत ३ ॥

–ऽथ शशादनः ॥ १४ ॥

पत्री श्येन–

बाजके नाम ३ ॥ शशादन १ ॥ ॥ १४ ॥ पत्रिन् २ श्येन ३ ॥

–उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ॥

उल्लूके नाम ३॥ उलूक१ वायसाराति २ पेचक ३ ॥

व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः–

भरद्वाज पक्षीके नाम २ ॥ व्याघ्राट १ भरद्वाज २ ॥

खञ्जरीटस्तु खञ्जनः॥ १५ ॥

खञ्जनके नाम २ ॥ खञ्जरीट १॥ खञ्जन २ ॥ १५ ॥

–लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्या–

कङ्क पक्षीके नाम २॥लोहपृष्ठ१ कङ्क२॥

–दथ चाषः किकीदिविः ॥

नीलकण्ठके नाम २ ॥ चाष १ किकीदिवि २ ॥

कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा–

मस्तकचूडपक्षीके नाम ३ ॥ कलिङ्ग १ भृङ्ग २ धूम्याट ३ ॥

–अथ स्याच्छतपत्रकः ॥१६॥ दार्वाघाटो–

खुटवढई पक्षीके नाम २ ॥ शतपत्रक १ ॥ १६॥ दार्वाघाट २ ॥

–ऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः समाः ॥

पपीहा अर्थात् चातकके नाम ३ ॥ सारंग१ तोकक २ चातक ३ ॥

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥

मुरगेके नाम ४॥ कृकवाकु१ ताम्रचूड २ कुक्कुट ३ चरणायुध४॥१७॥

चटकः कलविङ्कः स्या-

चिरोंटे (चिडे) के नाम २ ॥

चटक १ कलविंक २ ॥

-त्तस्य स्त्री चटका-

चिडयाका नाम १ ॥ चटका १॥

-तयोः ॥ पुमपत्ये चाटकैरः-

इनके बचेका नाम १ ॥ चाटकैर १॥

स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥१८॥

इनके बचीका नाम १॥चटका १॥१८॥

कर्करेटुः करेटुः स्या-

एक प्रकारके अशुभ शब्द करनेवाले पक्षीके नाम २॥ कर्करेटु १ करेटु २॥

-त्कृकणक्रकरौ समौ ॥

चिडियाविशेषके नाम २ ॥ कृकण १ क्रकर २ ॥

वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

कोयलके नाम ४ ॥ वनप्रिय १ परभृत २ कोकिल ३ पिक ४ ॥१९॥

काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ॥ ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥

कौवेके नाम १० ॥ काक १ करट २ अरिष्ट ३ बलिपुष्ट ४ सकृत्प्रज ५ ध्वांक्ष ६ आत्मघोष ७ परभृत ८ बलिभुज् ९ वायस १० ॥ २०॥

द्रोणकाकस्तु काकोलो-

-डोम कौवेके नाम २॥ द्रोणकाक १ काकोल २ ॥

-दात्यूहः कालकण्ठकः ॥

काले कौवेके नाम २ ॥ दात्यूह १ कालकण्ठक २ ॥

आतापिचिल्लौ-

चीलके नाम २ ॥ आतापि १ चिल्ल २॥

-दाक्षाय्यगृध्रौ-

गीधके नाम २॥ दाक्षाय्य १ गृध्र २॥

-कीरशुकौ-

तोतेके नाम २॥ कीर १ शुक २ ॥

-समौ ॥ २१ ॥

आतापि, और चिल्ल, दाक्षाय्य और गृध्र, तथा कीर और शुक शब्द समानलिंग है ॥ २१ ॥

-कुङ्क्रौञ्चौ-

क्रौञ्चपक्षीके नाम २॥कुञ्च् १ क्रौञ्च २॥

-ऽथ बकः कह्वः-

बगुलेके नाम २॥ बक १ कह्व २॥

पुष्कराह्वस्तु सारसः ॥

सारसके नाम २॥पुष्कराह्व १ सारस २॥

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२ ॥

चकई, चकवाके नाम ४ ॥ कोक १ चक्र २ चक्रवाक ३ रथांग ४ ॥२२॥

कादम्बः कलहंसः स्या-

वर्त्तक पक्षीके नाम २ ॥ कादम्ब १ कलहंस २ ॥

उत्क्रोशकुररौ समौ ॥

कुररी पक्षीके नाम २॥ उत्क्रोश१ कुरर २ ॥

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्रांगा मानसौकसः ॥ २३ ॥

हंसके नाम ४ ॥ हंस १ श्वेतगरुत् १ चक्रांग ३ मानसौकस् ४ ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः ॥

जिन हसोंकी चोंच और पैर लाल हों और देह उज्ज्वल हो उन हसोंका नाम १ ॥ राजहंस १ ॥

मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते-

जिन हसोंके चरणादि मैले हों उनका १ ॥ मल्लिकाक्ष १ ॥

धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥

जिनके चोंच और चरण काले हों उन हसोंका नाम १ धार्त्तराष्ट्र १॥ २४ ॥

शरारिराटिराडिश्च-

आडी पक्षीके नाम ३ ॥ शरारि१ आटि २ आडि ३ ॥

-बलाका बिसकण्ठिका ॥

बगुलेके दूसरी जातिके नाम २ ॥ बलाका १ बिसकण्ठिका २ ॥

हंसस्य योषिद्वरटा-

हंसनीका नाम १ ॥ वरटा १ ॥

-सारसस्य तु लक्ष्मणा॥२५॥

सारसकी स्त्रीका नाम १ ॥लक्ष्मणा १ ॥ २५ ॥

जतुकाऽजिनपत्रा स्या-

चिमगादरके नाम २ ॥ जतुका १ अजिनपत्रा २ ॥

त्परोष्णी तैलपायिका ॥

चपरा पक्षीके नाम २ ॥ परोष्णी १ तैलपायिका २ ॥

वर्वणा मक्षिका नीला-

मक्खीके नाम ३ ॥ वर्वणा १ मक्षिका २ नीला ३ ॥

-सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥

शहदकी मक्खीके नाम २ ॥ सरघा १ मधुमक्षिका २ ॥ २६ ॥

पताङ्गिका पुत्तिका स्या-

छोटी मधुमक्खीके नाम २ ॥ पतंगिका १ पुत्तिका २ ॥

दंशस्तु वनमक्षिका ॥

डांसके नाम २॥ दंश १ वनमक्षिका२॥

दंशी तज्जातिरल्पा स्या-

छोटे डांसका नाम १ ॥ दशी १॥

-द्गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

गन्धेली मक्खीके नाम २॥ गन्धोली १ वरटा २ ॥ २७ ॥

भृंगारी झीरुका चीरी झिल्लि-
च समा इमाः ॥

झींगरके नाम ४ ॥ भृंगारी १ झीरुका २ चीरी ३ झिल्लिका ४ ॥

समौ पतंगशलभौ-

पतंगके नाम २॥पतग १ शलभ२॥

-खद्योतो ज्योतिरिंगणः२८॥

जुगुनू कीडेके नाम २ ॥ खद्योत १ ज्योतिरिङ्गण २ ॥ २८ ॥

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः ॥ द्विरेफपुष्पलिड्भृंगषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥

भँवरेके नाम ११॥ मधुव्रत १ मधुकर २ मधुलिह् ३ मधुप ४ अलिन् ५ द्विरेफ ६ पुष्पलिह् ७ भृङ्ग ८ षट्पद ९ भ्रमर १० अलि ११ ॥ २९ ॥

मयूरो बर्हिणो बर्हीं नीलकण्ठो भुजंगभुक् ॥ शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥३०॥

मोरके नाम ९॥ मयूर १बर्हिण २ बर्हिन् ३ नीलकण्ठ ४ भुजंगभुज् ५ शिखावल ६ शिखिन् ७ केकिन् ८ मेघनादानुलासिन् ९ ॥ ३० ॥

केका वाणी मयूरस्य-

मोरके शब्दका नाम १ ॥ केका१॥

-समौ चन्द्रकमेचकौ ॥

मोरके परोंपर चन्द्राकार चिह्नोंके नाम २ ॥ चन्द्रक १ मेचक २ ॥

शिखा चूडा-

मोरकी चोटीकेनाम२॥शिखा१चूडा२॥

-शिखण्डस्तु पिच्छबर्हे, नपुंसके ॥ ३१ ॥

मोरके परोंके नाम ३ ॥ शिखण्ड१ पिच्छ २ बर्ह ३ ॥ ३१ ॥

खगे विहंगविहगविहंगमविहायसः ॥ शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥ पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः ॥ नगौकोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ॥ ३३ ॥ नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः ॥

पक्षीमात्रके नाम २७॥ खग१विहंग २ विहग ३ विहंगम ४ विहायस् ५ शकुन्ति ६ पक्षिन् ७ शकुनि ८ शकुन्त ९ शकुन १० द्विज ११ ॥ ३२ ॥ पतत्रिन् १२ पत्रिन् १३ पतग १४ पतत् १५ पत्ररथ १६ अण्डज १७ नगौकस् १८ वाजिन् १९ विकिर२० वि२१ विष्किर २२ पतत्रि २३ ॥ ३३ ॥ नीडोद्भव २४ गरुत्मत् २५ पित्सत् २६ नभसगम २७ ॥

तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥ तित्तिरिः

कुक्कुभो लावो जीवंजीवश्च कोरकः ॥ कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

पक्षियोंके भेद १३ ॥ हारीत १ मद्गु २ कारण्डव ३ प्लव ४ ॥ ३४ ॥ तित्तिरि ५ कुक्कुभ ६ लाव ७ जीव-जीव ८ चकोरक ९ कोयष्टिक १० टिट्टिभक ११ वर्तक १२ वर्तिका १३ इत्यादि ॥ ३५ ॥

गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम् ॥

पक्षियोंके परोंके नाम ६॥ गरुत् १ पक्ष २ छद ३ पत्र ४ पतत्र ५ तनूरुह ६॥

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं-

पक्षियोंके बाजूके नाम २ ॥ पक्षति १ पक्षमूल २ ॥

-चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥

चोंचके नाम २ ॥ चञ्चु १ त्रोटि २ ॥ ३६ ॥

प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खग गतिक्रियाः ॥

पक्षियोंकी चालके भेद ३ ॥ प्रडीन १ उड्डीन २ संडीन ३ ॥

पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं-

अण्डेके नाम ३ ॥ पेशी १ कोश २ अण्ड ॥ ३ ॥

-कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥

पक्षियोंके घरके नाम २ ॥ कुलाय १ नीड २ ॥ ३७ ॥

पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ॥

पक्षीके वा साधारण बच्चोके नाम ७॥ पोत १ पाक २ अर्भक ३ डिंभ ४ पृथुक ५ शावक ६ शिशु ७॥

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं-

स्त्रीपुरुषके जोडेके नाम ३ ॥ स्त्रीपुंस १ मिथुन २ द्वन्द्व ३ ॥

-युग्मं तु युगुलं युगम् ॥ ३८ ॥

जोडेके नाम ३ ॥ युग्म १ युगुल २ युग ३ ॥ ३८ ॥

समूहो निवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः ॥ स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः ॥ ३९ ॥ समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः ॥ स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

समूहके नाम २२ ॥ समूह १ निवह २ व्यूह ३ सन्दोह ४ विसर ५ व्रज ६ स्तोम ७ ओघ ८ निकर ९ व्रात १० वार ११ संघात १२ संचय १३ ॥ ३९ ॥ समुदाय १४ समुदय १५ समवाय १६ चय १७ गण १८ संहति १९ वृन्द २० निकुरम्ब २१ कदंबक २२ ॥ ४० ॥

वृन्दभेदाः—

अब समूहोंके भेद कहतेहैं ॥

—समैवर्गः—

जीव अजीव एकही जातिके समूहका नाम १ ॥ वग १ ॥

—संघसार्थौ तु जन्तुभिः ॥

केवल प्राणियोंके समूहके नाम२॥ संघ १ सार्थ २ ॥

सजातीयैः कुलं—

एक जातिके ही प्राणियोंके समूहका नाम १ ॥ कुल १ ॥

—यूथ तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥४१॥

पक्षियोंके समूहका नाम १ ॥ यूथ १ ॥ ४१ ॥

पशूनां समजो—

पशुओंके समूहका नाम१॥समज१॥

—ऽन्येषां समाजो—

पक्षी और पशुओंसे दूसरोंके समूहका नाम १ ॥ समाज १ ॥

—ऽथ सधर्मिणाम् ॥

स्यान्निकायः—

एकधर्मावलंबियोंके समूहका नाम१॥ निकाय १ ॥

—पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

अन्नादिके ऊंचे ढेरके नाम ४ ॥ पुञ्ज१ राशि २ उत्कर ३ कूट४॥४२॥

कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे ॥

(कबूतरोंके समूहका नाम) कापोत॥ (तोतोंके समूहका नाम) शौक ॥ (मयूरोंके समूहका नाम)मायूर॥(तीतरोंके समूहका नाम) तैत्तिर इत्यादि ॥

गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥

घरके पालेहुए मृगपक्षी आदिके नाम २॥ छेक १ गृह्यक २ ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ६.

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ॥

मनुष्यमात्रके नाम ६ ॥ मनुष्य १ मानुष २ मर्त्य ३ मनुज ४ मानव ५ नर ६ ॥

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥

मनुष्यजातिपुरुषके नाम ५ ॥ पुस् १ पञ्चजन २ पुरुष ३ पूरुष ४ नृ ५ ॥ १ ॥

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमंतिनी वधूः ॥ प्रतीपदर्शिनी वामावनिता महिला तथा ॥ २ ॥

स्त्रीके नाम ११ ॥ स्त्री १ योषित् २ अबला३योषा ४ नारी ५सीमंतिनी ६

वधू ७ प्रतीपदर्शिनी ८ वामा९वनिता १० महिला ११ ॥ २ ॥

विशेषा-

त्रियोंके विशेषभेद कहते हैं ॥

-स्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ॥ प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥ सुन्दरी रमणी रामा-

अच्छे अगोंवाली स्त्रीका नाम १॥ अंगना १ ॥ डरभूत स्त्रीका नाम १॥ भीरु १ ॥ कामयुतस्त्रीका नाम १ ॥ कामिनी १ ॥ सुन्दरनेत्रोंवाली स्त्रीका नाम १॥ वामलोचना१॥बहुतकामवती स्त्रीका नाम १॥ प्रमदा १॥ प्रणयकोपवाली स्त्रीका नाम १॥मानिनी १ ॥ मन हरनेवाली स्त्रीका नाम १॥ कान्ता १ ॥ दुलारी स्त्रीके नाम२॥ललना १ नितम्बिनी२ ॥ ३ ॥ सुन्दरअगोंवाली स्त्रीका नाम १ ॥ सुन्दर अङ्गोंवाली स्त्रीकेनाम सुन्दरी १ ॥ जिसमें अतिचित्त रमित हो उस स्त्रीका नाम१॥ रमणी १ ॥ विहारके योग्य स्त्रीका नाम १ ॥ रामा १ ॥

-कोपना सैव भामिनी ॥

कोपवाली स्त्रीके नाम २॥कोपना१ भामिनी २ ॥

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

बहुत ही उत्तम स्त्रीके नाम ४ ॥ वरारोहा १ मत्तकाशिनी २ उत्तमा ३ वरवर्णिनी ४ ॥ ४ ॥

कृताभिषेका महिषी-

जिस रानीका अभिषेक हुआ हो उसका नाम १ ॥ महिषी १ ॥

-भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ॥

महिषीको छोड राजाकी अन्यस्त्रियोंका नाम १ ॥ भोगिनी १ ॥

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः-

व्याहीहुई स्त्रीके नाम ७ ॥ पत्नी १ पाणिगृहीती २ द्वितीया ३ सहधर्मिणी ४॥५॥भार्या५जाया६दारा पु०ब०७॥

स्यात्तु कुटुम्बिनी ॥

पुरन्ध्री-

जिस स्त्रीके पतिपुत्र दोनों विद्यमानहो उसके नाम २ ॥ कुटुम्बिनी १ पुरन्ध्री २ ॥

-सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥

पतिव्रता स्त्रीके नाम४॥सुचरित्रा१ सती २ साध्वी३पतिव्रता ४ ॥ ६ ॥

कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्ना-

जिसके बहुतसी स्त्रिया हो उनमे जो प्रथम व्याही गई हो उसके नाम३॥

कृतसापत्निका १ अध्यूढा २ अधिविन्ना ३ ॥

-ऽथ स्वयंवरा ॥
पतिंवरा च वर्याथ-

जो अपने आप स्वयंवरादिमें पतिकी इच्छा करे उस स्त्रीके नाम ३ ॥ स्वयंवरा १ पतिंवरा २ वर्या ३ ॥

-कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७॥

कुलवती स्त्रीके नाम २ ॥ कुलस्त्री १ कुलपालिका २ ॥ ७ ॥

कन्या कुमारी-

पांच वर्षकी कन्याके नाम २ ॥ कन्या १ कुमारी २ ॥

-गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा॥

दशवर्षकी कन्याके नाम ३॥ गौरी १ नग्निका २ अनागतार्तवा ३ ॥

स्यान्मध्यमा दृष्टरजा-

जिसको रजोधर्म्म होजाय उस स्त्रीका नाम १ ॥ मध्यमा १ ॥

-स्तरुणी युवतिः समे ॥ ८॥

युवास्त्रीके नाम २ ॥ तरुणी १ युवती २ ॥ ८ ॥

समाःस्नुषाजनीवध्व-

बहू (पुत्रवधू) के नाम ३ ॥ स्नुषा १ जनी २ वधू ३ ॥

-श्चिरण्टी तु सुवासिनी ॥

जो कि किंचित् युवावस्थाको प्राप्त ब्याही हुई निजपिताके घरमें रहती हो उस स्त्रीके नाम २ ॥ चिरण्टी १ ॥ सुवासिनी २ ॥

इच्छावती कामुका स्या-

जो धनादिकी इच्छा करती हो उस स्त्रीके नाम २॥ इच्छावती १ कामुका २॥

-दृषस्यन्ती तु कामुकी ॥९॥

मैथुनकी इच्छाकरनेवाली स्त्रीके नाम २ ॥ वृषस्यन्ती १ कामुकी २॥९॥

कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ॥

जो पतिकी इच्छाकर कामार्त्त हो संकेत स्थानको जावे उस स्त्रीका नाम १ ॥ अभिसारिका १ ॥

पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी ॥१० ॥ स्वैरिणी पांशुला च स्या-

व्यभिचारिणी स्त्रीके नाम ८ ॥ पुंश्चली १ धर्षिणी २ बन्धकी ३ असती ४ कुलटा ५ इत्वरी ६ ॥ १०॥ स्वैरिणी ७ पांशुला ८ ॥

-दशिश्वी शिशुना विना ॥

बिनपुत्रवाली स्त्रीका नाम १ ॥ अशिश्वी १ ॥

अवीरा निष्पतिसुता-

जिसके पतिपुत्र न हों उस स्त्रीका नाम १ ॥ अवीरा १ ॥

-विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११॥

विधवा स्त्रीके नाम २॥ विश्वस्ता १ विधवा २ ॥ ११ ॥

आलिः सखी वयस्याथ-

सखी या साथके खेलनेवाली स्त्रीके नाम३॥आलि १ सखी २ वयस्या ३॥

-पतिवत्नी सभर्तृका ॥

जिस स्त्रीका पति जीता हो उसके नाम २॥पतिवत्नी १ सभर्तृका २ ॥

वृद्धा पलिक्नी-

बूढी स्त्रीके नाम२॥वृद्धा १ पलिक्नी २॥

-प्राज्ञी तु प्रज्ञा-

कुछ कुछ समझदार स्त्रीके नाम२॥ प्राज्ञी १ प्रज्ञा २ ॥

-प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥

अतिबुद्धिमती स्त्रीके नाम२॥प्राज्ञा १ धीमती २ ॥ १२ ॥

शूद्री शूद्रस्य भार्या स्या-

चाहे अन्य जातिभी हो पर शूद्रकी स्त्री हो उस स्त्रीका नाम १॥ शूद्री १॥

-च्छूद्रा तज्जातिरेव च ॥

शूद्रजातिका नाम १ ॥ शूद्रा १॥

आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥

अहिरिनिके नाम २ ॥ आभीरी १ महाशूद्री २ ॥ १३ ॥

अर्याणी स्वयमर्या स्या-

बनेनीके नाम२॥अर्याणी १ अर्या २॥

त्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ॥

क्षत्रियानीके नाम २ ॥ क्षत्रिया १ क्षत्रियाणी २ ॥

उपाध्यायाप्युपाध्यायी-

पंडितानीके नाम २ ॥ उपाध्याया १ उपाध्यायी २ ॥

-स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४॥

जो अपने आप मन्त्रोंके अर्थ कहसके उसका नाम १॥ आचार्या १॥ १४॥

आचार्यानी तु पुंयोगे-

चाहे मंत्रादिकी, व्याख्या न करसके पर आचार्य्यकी स्त्री हो उसका नाम१॥ आचार्य्यानी १ ॥

-स्यादर्यी-

तैसेही अर्य (वैश्य) की स्त्रीका नाम १॥ अर्यी १ ॥

-क्षत्रियी तथा ॥

क्षत्रियकी स्त्रीका नाम १॥क्षत्रियी १॥

उपाध्यायान्युपाध्यायी-

पढानेवालेकी स्त्रीके इसी प्रकारके नाम २॥ उपाध्यायनी १ उपाध्यायी २॥

-पोटा स्त्री पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

डाढीमूछ आदियुक्त स्त्रीका नाम १॥ पोटा १ ॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या-

वीरकी स्त्रीके नाम २॥ वीरपत्नी १ वीरभार्या २ ॥

—वीरमाता तु वीरसूः ॥

वीरकी माताके नाम २ ॥ वीरमातृ १ वीरसू २ ॥

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥

जिसके बालक पैदा हुआ हो उस स्त्रीके नाम ४ ॥ जातापत्या १ प्रजाता २ प्रसूता ३ प्रसूतिका ४ ॥ १६ ॥

स्त्री नग्निका कोटवी स्या—

नंगी स्त्रीके नाम २ ॥ नग्निका १ कोटवी २

—द्दूती संचारिके समे ॥

दूतीके नाम २ ॥ दूती १ संचारिका २ ॥

कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥

गेरु आदिसे रंगेहुऐ वस्त्र पहरनेवाली कुछ वृद्ध विधवा स्त्रीका नाम १ ॥ कात्यायनी १ ॥ १७ ॥

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ॥

अपनी इच्छाके अनुसार पराये गृहमें रहकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्रीका नाम १ ॥ सैरन्ध्री १ ॥

असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥

घरके भीतर सेवा आदि कार्य करने वाली जवानस्त्रीकानाम २ ॥ असिक्नी १ ॥ १८

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा—

वेश्याके नाम ४ ॥ वारस्त्री १ गणिका २ वेश्या ३ रूपाजीवा ४ ॥

—ऽथ सा जनैः ॥

सत्कृता वारमुख्या स्या—

जिसका पुरुष अधिक सत्कार करे अर्थात् सबमें श्रेष्ठ वेश्याका नाम १ ॥ वारमुख्या १ ॥

—त्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

कुट्टनीके नाम २ ॥ कुट्टनी १ ॥ शम्भली २ ॥ १९ ॥

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा—

सामुद्रिक आदि शास्त्रानुसार लक्षण जानकर शुभाशुभ फल कहनेवाली स्त्रीके नाम ३ ॥ विप्रश्निका १ ईक्षणिका २ दैवज्ञा ३ ॥

—ऽथ रजस्वला ॥

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥ ऋतुमत्यप्युदक्यापि—

रजस्वला स्त्रीके नाम ८ ॥ रजस्वला १ स्त्रीधर्मिणी २ अवि ३ आत्रेयी ४ मलिनी ५ पुष्पवती ६ ॥ २० ॥ ऋतुमती ७ उदक्या ८ ॥

—स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ॥

स्त्रीके मासिक रजोधर्मके नाम ३ ॥ रजस् १ पुष्प २ आर्तव ३ ॥

श्रद्धालुर्दोहदवती—

गर्भके समय अनेकप्रकारकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम २ ॥ श्रद्धालु १ दोहदवती २ ॥

—निष्कला विगतार्तवा ॥२१॥

रजोहीन स्त्रीके नाम २ ॥ निष्कला १ विगतार्तवा २ ॥ २१ ॥

आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ॥

गर्भवाली स्त्रीके नाम ४ ॥ आपन्नसत्त्वा १ गुर्विणी २ अन्तर्वत्नी ३ गर्भिणी ४ ॥

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥

वेश्याओंके समूहका नाम१॥ गाणिक्य १ ॥ गर्भिणियोंके समूहका नाम १ ॥ गार्भिण १ ॥ युवतियोंके समूहका नाम १ ॥ यौवत १ ॥ २२ ॥

पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्वि—

जिस स्त्रीका विवाहसंस्कार द्वितीयवार हो उस स्त्रीके नाम २ ॥ पुनर्भू १ दिधिषू २ ॥

—स्तस्या दिधिषुः पतिः ॥

उसके पतिका नाम १॥ दिधिषु१॥

स तु द्विजोऽग्रेदिधिषुः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

जिसका द्वितीयवार विवाह सस्कार हो वह स्त्री और उसका पति उन दोनोंसे उत्पन्न बालकका नाम १ ॥ अग्रेदिधिषु १ ॥ २३ ॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतो—

कन्यासे उत्पन्न हुए पुत्रके नाम२॥ कानीन १ कन्यकाजात २ ॥

—ऽथ सुभगासुतः ॥

सौभागिनेयः—

सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्रके नाम २॥ सुभगासुत १ सौभागिनेय २ ॥

—स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः२४॥

परस्त्रीके पुत्रका नाम १ ॥ पारस्त्रैणेय १ ॥ २४ ॥

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः ॥ सुतो—

पिताकी बहन अर्थात् भूवाके पुत्रके नाम २ ॥ पैतृष्वसेय १ पैतृष्वस्रीय २ ॥

—मातृष्वसुश्चैवं—

मौसीके पुत्रके नाम २ ॥ मातृष्वसेय १ मातृष्वस्रीय २ ॥

—वैमात्रेयो विमातृजः ॥२५॥

सौतेले माईके नाम २ ॥ वैमात्रेय १ विमातृज २ ॥ २५ ॥

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ॥ कौलटेरः कौलटेयो—

कुलटाके पुत्रके नाम ५ ॥ बान्धकिनेय १ बन्धुल २ असतीसुत ३ कौलटेर ४ कौलटेय ५ ॥

-भिक्षुकी तु सती यदि॥२६॥ तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ॥

जो सती भिक्षाके निमित्त घरोंमें फिरै ॥ २६ ॥ उसके पुत्रके नाम २॥ कौलटिनेय १ कौलटेय २ ॥

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्र-

पुत्रके नाम ५ ॥ आत्मज १ तनय २ सूनु ३ सुत ४ पुत्र ५ ॥

-स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥
आहुर्दुहितरं सर्वे-

जो पुत्रके नाम स्त्रीलिंगमें हों तो पुत्रीके नाम हो जातेहैं ॥ २७ ॥

-ऽपत्यं तोकं तयोः समे ॥

पुत्र पुत्री साधारणका नाम २॥ अपत्य १ तोक २ ॥

स्वजाते त्वौरसोरस्यौ-

सगेपुत्रके नाम २ ॥ औरस १ उरस्य २ ॥

-तातस्तु जनकः पिता॥२८॥

पिताके नाम३॥ तात १ जनक २ पितृ ३ ॥ २८ ॥

जनयित्री प्रसूर्माता जननी-

माताके नाम ४ ॥ जनयित्री १ प्रसू २ मातृ ३ जननी ४

-भगिनी स्वसा ॥

बहिनके नाम २ ॥ भगिनी १ स्वसृ २ ॥

ननान्दा तु स्वसा पत्यु-

ननदका नाम १॥ ननान्दृ १ ॥

-र्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा २९॥

नातिनिके नाम ३ ॥ नप्त्री १ पौत्री २ सुतात्मजा ३ ॥ २९ ॥

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ॥

आपसमें भ्रातृवर्गकी स्त्रियोंका नाम १ ॥ यातृ १ ॥

प्रजावती भ्रातृजाया-

भौजाईके नाम २ ॥ प्रजावती १ भ्रातृजाया २ ॥

मातुलानी तु मातुली ॥३० ॥

मामीके नाम २ ॥ मातुलानी १ मातुली २ ॥ ३० ॥

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः-

पति और स्त्रीकी माताका नाम १ ॥ श्वश्रू १ ॥

-श्वशुरस्तु पिता तयोः ॥

पति और स्त्रीके पिताका नाम१॥ श्वशुर १ ॥

पितुर्भ्राता पितृव्यः स्या-

चाचा या ताऊका नाम १ ॥ पितृव्य१॥

-न्मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥३१॥

मामाके नाम २ ॥ मातुर्भ्रातृ १॥ मातुल २ ॥ ३१ ॥

श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः–

शालेका नाम १ ॥ श्याल १ ॥

–स्वामिनो देवृदेवरौ ॥

देवरके नाम २ ॥ देवृ १ देवर२॥

स्वस्रीयो भागिनेयः स्या–

भानजेके नाम २ ॥ स्वस्रीय १ भागिनेय २ ॥

–ज्जामाता दुहितुः पतिः॥३२॥

जमाईके नाम २ ॥ जामातृ १ दुहितुःपति २ ॥ ३२ ॥

पितामहः पितृपिता–

दादाके नाम २ ॥ पितामह १ ॥ पितृपितृ २ ॥

–तत्पिता प्रपितामहः ॥

परदादाका नाम १॥ प्रपितामह१॥

मातुर्मातामहाद्येवं–

इसी प्रकार (नानाका नाम) मातामह (परनानाका नाम) प्रमातामह ॥

–सपिण्डास्तु सनाभयः॥३३॥

सपिण्डके नाम २ ॥ सपिण्ड १ सनाभि २ ॥ ३३ ॥

समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ॥

सगेभाईके नाम ४ ॥ समानोदर्य१ सोदर्य २ सगर्भ्य ३ सहज ४ ॥

सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥

एक गोत्रवालोंके अर्थात् समगोत्रियोंके नाम ६ ॥ सगोत्र १ बान्धव २ ज्ञाति ३ बन्धु ४ स्व५स्वजन६॥३४॥

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ॥

बिरादरीके भावका नाम १॥ज्ञातेय १ ॥ परिवारके समूहका नाम १ ॥ बन्धुता १ ॥

धवः प्रियः पतिर्भर्ता–

पतिके नाम ४ ॥ धव १ प्रिय २ पति ३ भर्तृ ४ ॥

–जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५॥

जिसके साथ ब्याही हो उससे अन्यसे मैथुन करती हो तो उस पतिके नाम २ ॥ जार १ उपपति २॥३५॥

अमृते जारजः कुण्डो–

अपने पतिके जीतेही अन्य पतिसे जो पुत्र हो उसका नाम १॥कुण्ड १॥

–मृते भर्तरि गोलकः ॥

जो पतिके मरनेपर अन्य पतिसे उत्पन्नहो उसका नाम १ ॥ गोलक १ ॥

भ्रात्रीयो भ्रातृजो–

भतीजेके नाम २ ॥ भ्रात्रीय १ भ्रातृज २ ॥

–भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ॥३६॥

बहिनभाईके नाम २ ॥ भ्रातृभगिनी (न्यौ) १ भ्रातृ (तरौ) २॥३६॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ॥

जहां मातापिताको साथ ही कहना हो उसके नाम ४ ॥ मातापितृ (तरौ) १ पितृ (तरौ) २ मातरपितृ (तरौ) ३ प्रसूजनयितृ (तारौ) ४ ॥

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ-

ऐसेही सासुससुरके नाम २ ॥ श्वश्रूश्वशुर (रौ) १ श्वशुर (रौ) २॥

-पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ३७॥

इसी प्रकारं कन्यापुत्रका नाम १ ॥ पुत्र (त्रौ) १ ॥ ३७ ॥

दंपती जंपती जायापती भार्यापती च तौ ॥

स्त्रीपुरुषके इकट्ठे नाम ४ ॥दम्पति (ती) १ जम्पति (ती) २ जायापति (ती) २ भार्यापति (ती) २ ॥

गर्भाशयो जरायुः स्या-

गर्भस्थानके नाम २ ॥ गर्भाशय१ जरायु २ ॥

-दुल्वं च कललोऽस्त्रियाम्॥३८

गर्भबन्धनके नाम २ ॥ उल्व १ कलल २ ॥ ३८ ॥

सूतिमासो वैजननो-

गर्भ रहनेसे नवमे वा दशमें मासके नाम जिसमें बालक पैदा होता है २ ॥ सूतिमास १ वैजनन २ ॥

-गर्भो भ्रूण इमौ समौ ॥

गर्भके नाम २ ॥ गर्भ १ भ्रूण२॥

तृतीयाप्रकृतिः षण्ढः क्लीबः षण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥

हीजडेके नाम ५ ॥ तृतीयाप्रकृति १ षण्ढ २ क्लीव ३ षण्ड ४ नपुंसक ५ ॥ ३९ ॥

शिशुत्वं शैशवं बाल्यं-

लडकपनके नाम ३ ॥ शिशुत्व १ शैशव २ बाल्य ३ ॥

-तारुण्यं यौवनं समे ॥

जवानीके नाम २ ॥ तारुण्य १ यौवन २ ॥

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं-

बुढापेके नाम २ ॥ स्थाविर १ वृद्धत्व २ ॥

-वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥४०॥

बूढोंके समूहका नाम १ ॥ वार्धक १ ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ-

अतिबुढापेमें केश आदिकमे जराकरिकै जो सफेदी आती है उसका नाम १ ॥ पलित १ ॥

-विस्रसा जरा ॥

बुढाईके नाम २॥विस्रसा१जरा२॥

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥

दूधपिई छोटी लडकीके नाम ४ ॥
उत्तानशया १ डिम्भा २ स्तनपा ३ स्तनन्धयी ४ ॥ ४१ ॥

वालस्तु स्यान्माणवको–

सोलह वर्षपर्यन्त लडकेके नाम २॥ वाल १ माणवक २ ॥

–वयःस्थस्तरुणो युवा ॥

जवानपुरुषके नाम ३॥ वयःस्थ १ तरुण २ युवन् ३ ॥

प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

बूढेके नाम ६ ॥ प्रवयस् १ स्थविर २ वृद्ध ३ जीन ४ जीर्ण ५ जरत् ६ ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्याया–

अतिवृद्धेके नाम ३ ॥ वर्षीयस् १ दशमिन् २ ज्यायस् ३ ॥

–न्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः॥

ज्येष्ठभाईके नाम ३ ॥ पूर्वज १ अग्रिय २ अग्रज ३ ॥

जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोवरजानुजाः ॥ ४३ ॥

छोटे भाईके नाम ५ ॥ जघन्यज १ कनिष्ट २ यवीयस् ३ अवरज ४ अनुज ५ ॥ ४३ ॥

अमांसो दुर्वलश्छातो–

दुवलेके नाम ३ ॥ अमांस १ दुर्बल २ छात ३ ॥

बलवान्मांसलोंऽसलः ॥

बलवान्के नाम ३ ॥ बलवत् १ मांसल २ असल ३ ॥

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दीवृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

बडे पेटवालेके नाम५ ॥ तुन्दिल १ तुन्दिभ २ तुन्दिन् ३ बृहत्कुक्षि ४ पिचण्डिल ५ ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चाऽवभ्रटो नतनासिके ॥

चपटी नाकवालेके नाम ३॥ अवटीट १ अवनाट २ अवभ्रट ३ ॥

केशवः केशिकः केशी–

अच्छे बालवालेके नाम ३॥ केशव१ केशिक २केशिन् ३ ॥

वलिनो वलिभः समौ ॥ ४५ ॥

जिसकी बुढापेके मारे खाल सिकुरगई हो उसके नाम २ ॥ वलिन १ वलिभ २॥ ४५ ॥

विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः–

जिसका अपनेहीसे कोई अग अधिक वा कम हो उसके नाम २ ॥ विकलांग १ अपोगण्ड २ ॥

खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ॥

बौनेके नाम ३ ॥ खर्व १ ह्रस्व २ वामन ३ ॥

खरणाः स्यात्खरणसो–

जिसकी तीखी नाकहो उसके नाम २ ॥ खरणस् १ खरणस २ ॥

विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

नकटेके नाम २ ॥ विग्र १ गतनासिक२ ॥ ४६ ॥

खुरणाः स्यात्खुरणसः–

जिसकी पशुके खुरकी सदृश नासिका हो उसके नाम २॥ खुरणस् १ १ खुरणस २ ॥

प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ॥

वात आदिरोगसे जिसके घुटने बहुत दूर २ होगए हों उसके नाम २ ॥ प्रज्ञु १ प्रगतजानुक २ ॥

ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्या–

जिसके घुटने ऊचे हों उसके नाम२ ऊर्ध्वज्ञु १ ऊर्ध्वजानु २॥

–त्संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

जिसके घुटने मिले हुए हो उसके नाम२॥संज्ञु १ संहतजानुक २ ॥४७॥

स्यादेडे बधिरः–

बहिरेके नाम २ ॥एड१बधिर २॥

–कुब्जे गडुलः–

कुबडेके नाम २॥कुब्ज१गडुल२ ॥

–कुकरे कुणिः ॥

जिसके हाथमें रोगादिसे कुछ विकार हो उसकेनाम२॥ कुकर१ कुणि२॥

पृश्निरल्पतनौ–

जिसका बहुत ही छोटा शरीरहो उसके नाम २ ॥ पृश्नि १अल्पतनु २॥

–श्रोणः पंगौ–

लूलेके नाम २॥ श्रोण१पंगु२ ॥

–मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

जिसका शिर मुँडाहुवा हो उसके नाम २॥मुण्ड १ मुण्डित २ ॥४८ ॥

बलिरः केकरे–

भेडे(जिसके नेत्रकी पुतली फिरती हो) उसके नाम२॥ बलिर१केकर २॥

–खोडे खञ्ज–

लंगडेके नाम २ ॥खोड १ खञ्ज २॥

स्त्रिषु जरावराः ॥

जडुलः कालकः पिप्लु–

जिसके अंगमें लशुनाकारका चिह्न हो उसके नाम ३ ॥जडुल१ कालक २ पिप्लु ३ ॥

स्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥

देहके तिलके नाम २ ॥ तिलक १ तिलाकालक २ ॥ ४९ ॥

अनामयं स्यादारोग्यं–

विना रोगके नाम २ ॥ अनामय १ आरोग्य २ ॥

–चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ॥

इलाज करनेके नाम२॥चिकित्सा१ रुक्प्रतिक्रिया २ ॥

भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि॥ ५० ॥

औषधके नाम५॥ भेषज १ औषध २ भैषज्य ३ अगद ४ जायु५ ॥५०॥

स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ॥

रोगके नाम ७ ॥ रुज् १ रुजा २ उपताप ३ रोग ४ व्याधि ५ गद ६ आमय ७ ॥

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च—

क्षयी रोगके नाम ३ ॥ क्षय१शोष २ ॥ यक्ष्मन् ३ ॥

—प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥

पीनसरोगके नाम २ ॥ प्रतिश्याय १ पीनस २ ॥ ५१ ॥

स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि—

छींकके नाम३॥क्षुत्१क्षुत२क्षव३ ॥

—कासस्तु क्षवथुः पुमान् ॥

खांसीके नाम २ ॥ कास १क्षवथु२ ॥

शोफस्तु श्वयथुः शोथः—

सूजनके नाम ३ ॥ शोफ१ श्वयथु २शोथ ३ ॥

—पादस्फोटो विपादिका ॥५२॥

बिवायी रोगके नाम २ ॥ पादस्फोट १ विपादिका २॥ ५२ ॥

किलाससिध्मे—

सेहुवा (सीप) के नाम२ ॥ किलास १ सिध्म २ ॥

कच्छ्वां तु पामपामे विचर्चिका ॥

खाजुरोगके नाम ४ ॥ कच्छू १ पामन् २ पामा ३ विचर्चिका ४ ॥

कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया—

खुजलीके नाम ३॥ कण्डू१ खर्जू२ कण्डूया ३ ॥

—विस्फोटः पिटकोऽस्त्रियाम्॥५३॥

फोडेके नाम २॥विस्फोट १ पिटक २ ॥ ५३ ॥

व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे—

घावके नाम३॥ व्रण१ईर्म२ अरुस्३

—नाडीव्रणः पुमान् ॥

नासूरका नाम १ ॥ नाडीव्रण १॥

कोठो मण्डलकं—

जो गोल उज्वल चन्दे पडजातेहै उस कोढके नाम २ ॥ कोठ१मण्डलक २॥

कुष्ठश्वित्रे—

छाजनके नाम२॥कुष्ठ१ श्वित्र २ ॥

—दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

बवासीरके नाम २ ॥ दुर्नामक १ अर्शस् २ ॥ ५४ ॥

आनाहस्तु विबन्धः स्या—

कबजई जिसमे मलमूत्र रुकजाय उस रोगके नाम२ ॥ आनाह १ विबन्ध२॥

-ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ॥

सग्रहणी रोगके नाम २ ॥ ग्रहणी १ प्रवाहिका २ ॥

प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥

उलटी अर्थात् वमनके नाम ३ ॥ प्रच्छर्दिका १ वमि २ वमथु ३ ॥५५॥

व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेह-भगन्दराः ॥

व्यरथिया (एकप्रकारका फोडा)का नाम१॥ विद्रधि १ ॥ ज्वरका नाम १॥ ज्वर१ ॥

प्रमेहका नाम १ ॥ मेह १ ॥

भगन्दर अर्थात् गुदसमीपके फोडेका नाम १ ॥ भगन्दर १ ॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्-

कर्करोग अर्थात् पथरीरोगके नाम २ ॥ अश्मरी १ मूत्रकृच्छ्र २ ॥

-पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

यहासे लेकर शुक्रशब्दके पहले २के शब्द तीनों लिंगोमे होतेहैं ॥ ५६ ॥

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ॥

वैद्यके नाम ५॥ रोगहारिन् १अगदं-कार२भिषज् ३ वैद्य ४ चिकित्सक५॥

वार्त्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ५७ ॥

रोगरहितके नाम ४॥ वार्त१निरा-मय २ कल्य ३ उल्लाघ ४ ॥ ५७ ॥

ग्लानग्लास्नु-

रोगवशसे क्षीण हो जानेवालेके नाम २॥ ग्लान १ ग्लास्नु २॥

-रामयावी विकृतो व्याधितो-ऽपटुः ॥

आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः-

रोगीके नाम ७ ॥ आमयाविन् विकृत २ व्याधित ३ अपटु ४१ आतुर ५ अभ्यमित ६ अभ्यान्त ७ ॥

समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥

खुजलीवालेके नाम २ ॥ पामन१ कच्छुर २ ॥ ५८ ॥

दद्रुणो दद्रुरोगी स्या-

दद्रुरोगीके नाम २ ॥ दद्रुण १ दद्रुरोगिन् २ ॥

-दर्शोरोगयुतोऽर्शसः ॥

बवासीररोगीका नाम१॥अर्शस१॥

वातकी वातरोगी स्यात्-

वातरोगीके नाम २ ॥ वातकिन् १ वातरोगिन् २ ॥

-सातिसारोऽतिसारकी ॥५९॥

जिसको बहुत दस्त हों उसके नाम २ ॥ सातिसार १ अतिसारकिन् २ ॥ ५९ ॥

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी ॥

चुन्धेके नाम ४ ॥ क्लिन्नाक्ष १ चुल्ल २ चिल्ल ३ पिल्ल ४ ॥

उन्मत्त उन्मादवति-

उन्मत्त अर्थात् बावलेके नाम २ ॥ उन्मत्त १ उन्मादवत् २ ॥

-श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥६०॥

कफरोगवालेके नाम ३ ॥ श्लेष्मल १ श्लेष्मण २ कफिन् ३ ॥६० ॥

न्युब्जो भुग्ने रुजा-

कुबडेका नाम १ ॥ न्युब्ज १ ॥

-वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ॥

जिसकी वातरोगसे नाभि बढजाय उसके नाम ३ ॥ वृद्धनाभि १ तुन्दिल २तुन्दिभ ३ ॥

किलासी सिध्मलो-

किलास (सींप) रोगीके नाम२॥ किलासिन् १ सिध्मल २ ॥

-ऽन्धोऽदृक्-

अन्धेके नाम २ ॥ अन्ध १ अदृश् २ ॥

मूर्छाले मूर्तमूर्छितौ ॥ ६१ ॥

बेहोशीके नाम ३ ॥ मूर्च्छाल १ मूर्त २ मूर्छित ३ ॥ ६१ ॥

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ॥

धातुके नाम ६ ॥ शुक्र १ तेजस् २ रेतस् ३ बीज ४ वीर्य ५ इन्द्रिय ६ ॥

मायुः पित्तं-

पित्तके नाम २ ॥ मायु १ पित्त२॥

-कफः श्लेष्मा-

कफके नाम २॥ कफ १ श्लेष्मन्२॥

स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥६२ ॥

खालके नाम २ ॥ त्वच् १ असृग्धरा २ ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् ॥

मांसके नाम ६ ॥ पिशित १ तरस २ मांस ३ पलल ४ क्रव्य ५ आमिष६॥

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

सूखेमांसके नाम ३ ॥ उत्तप्त १ शुष्कमांस २ वल्लूर ३ ॥ ६३ ॥

रुधिरोऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ॥

रुधिरके नाम ७ ॥ रुधिर १ असृज् २ लोहित ३ अस्र ४ रक्त ५ क्षतज ६ शोणित ७ ॥

बुक्काग्रमांसं-

कलेजेके नाम २ ॥ बुक्का १ अग्रमांस २ ॥

-हृदयं हृत्-

हृदयके नाम २ ॥ हृदय १ हृद् २॥

-मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥

चरबीके नाम ३ ॥ मेदस् १ वपा २ वसा ३ ॥६४ ॥

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या-

गलेके पीछेकी नसका नाम१॥मन्या १॥

नाडी तु धमनिः शिरा ॥

नाडीके नाम ३॥ नाडी १ धमनि २ शिरा ३ ॥

तिलकं क्लोम-

शरीरके तिलके नाम २ ॥ तिलक १ क्लोमन् २ ॥

-मस्तिष्कं गोर्दं-

गुर्देके नाम २॥ मस्तिष्क १ गोर्द २ ॥

-किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

मैलके नाम २ ॥ किट्ट १ मल२॥६५॥

अन्त्रं पुरीत-

आंतोंके नाम २॥ अन्त्र १ पुरीतत् २॥

-द्गुल्मस्तु प्लीहा पुं-

पलैया (तिल्ली) रोगके नाम २॥ गुल्म १ प्लीहन् २ ॥

-स्यथ वस्नसा ॥ स्नायुः स्त्रियां-

नसके नाम २॥वस्नसा १ स्नायु २॥

-कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

पेटमें जो दहनी ओर बटिया हो उसके नाम २ ॥ कालखण्ड १ यकृत् २ ॥ ६६ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला-

लारके नाम ३ ॥ सृणिका १ स्यन्दिनी २ लाला ३ ॥

-दूषिका नेत्रयोर्मलम् ॥

कीचर (गीड) का नाम १॥दूषिका१॥

मूत्रं प्रस्राव-

मूतके नाम २॥ मूत्र १ प्रस्राव२॥

-उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥ पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ ॥

विष्ठाके नाम ९ ॥ उच्चार १ अवस्कर २ शमल ३ शकृत् ४ ॥ ॥६७ ॥ पुरीष ५ गूथ ६ वर्चस्क ७ विष्ठा ८ विश् ९ ॥

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री-

कपालके नाम २॥ कर्पर १ कपाल २॥

कीकसं कुल्यमस्थि च ॥६८॥

हड्डीके नाम ३ ॥ कीकस १ कुल्य २ अस्थि ३ ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थि कंकालः-

खांकरका नाम १ ॥ कंकाल १ ॥

-पृष्ठास्थ्नि तु कशेरुका ॥

पीठकी हड्डीका नाम१॥कशेरुका१॥

शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री-

खोपडीका नाम १ ॥ करोटि १ ॥

-पार्श्वास्थनि तु पर्शुका॥६९॥

पंशालीका नाम १॥ पर्शुका १॥६९॥

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनो-

अङ्गके नाम ४॥ अग १ प्रतीक २ अवयव ३ अपघन ४ ॥

—ऽथ कलेवरम् ॥

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥ कायो देहः क्लीवपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ॥

देहके नाम १२ ॥ कलेवर १ गात्र २ वपुस् ३ सहनन ४ शरीर ५ वर्ष्मन् ६ विग्रह ७ ॥ ७० ॥ काय ८ देह ९ मूर्ति १० तनु ११ तनू १२ ॥

पादाग्रं प्रपदं—

पावके आगेके नाम २॥ पादाग्र १ प्रपद २ ॥

—पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

पावके नाम ४ ॥ पाद १ पद् २ अंघ्रि ३ चरण ४ ॥ ७१ ॥

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ—

टांकनोंके नाम २ ॥ घुटिका १ गुल्फ २ ॥

—पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ॥

एडीका नाम १ ॥ पार्ष्णि १ ॥

जङ्घा तु प्रसृता—

जङ्घा (पींडी) के नाम २॥ जंघा १ प्रसृता २ ॥

—जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ७२

जानुके नाम ३ ॥ जानु १ ऊरु, पर्वन् २ अष्ठीवत् ३ ॥ ७२ ॥

सक्थि क्लीवे पुमानूरु—

निरोहके नाम २॥ सक्थि १ ऊरु २॥

—स्तत्सन्धिः पुंसि वङ्क्षणः ॥

टिहुनीका नाम १ ॥ वक्षण १ ॥

गुदं त्वपानं पायुर्ना—

गुदाके नाम ३ ॥ गुद १ ॥ अपान २ पायु ३ ॥

वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

जहां मूत्र रहता है अर्थात् पेडूका नाम १ ॥ वस्ति १ ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोणिफलकं—

कमरके दोनों बगलके नाम ३ ॥ कट १ श्रोणि २ फलक ३ ॥

—कटिः श्रोणिः ककुद्मती ॥

कमरके नाम ३ ॥ कटि १ श्रेणि २ ककुद्मती ३ ॥

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः—

स्त्रीके चूतरका नाम १॥ नितम्ब १॥

—क्लीवे तु जघनं पुरः ॥ ७४॥

स्त्रीके जांघका नाम १॥ जघन १॥ ॥ ७४ ॥

कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ॥

नितम्बमें जो दो गड्ढे होते हैं उनका नाम १ ॥ कुकुन्दर १ ॥

स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथा—

कूल्हेके नाम २ ॥ स्फिच् १ कटिप्रोथ २ ॥

—वुपस्थो वक्ष्यमाणयोः॥७५॥

लिंगयोनिका नाम १॥उपस्थ१॥७५

भगं योनिर्द्वयोः—

योनिके नाम २॥ भग १ योनि२॥

—शिश्नो मेढ्रं मेहनशेफसी ॥

लिंगके नाम ४॥ शिश्न १ मेढ्र २ मेहन ३ शेफस् ४ ॥

मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः—

अण्डकोशके नाम ३ ॥ मुष्क १ अण्डकोश २ वृषण ३ ॥

पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

पीठके बांसके नीचे जहां तीन हाड मिले है उस जोडका नाम १ ॥ त्रिक १ ॥ ७६ ॥

पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं—

पेटके नाम ५ ॥ पिचण्ड १ कुक्षि २ जठर ३ उदर ४ तुन्द ५ ॥

—स्तनौ कुचौ ॥

कुचके नाम २॥ स्तन १ कुच२॥

चूचुकं तु कुचाग्रं स्या—

कुचके अग्रभागके नाम २ ॥ चूचुक १ कुचाग्र २ ॥

—न्न ना क्रोडं भुजान्तरम्॥७७॥

गोदके नाम २ ॥ क्रोड१ भुजान्तर २ ॥ ७७ ॥

उरो वत्सं च वक्षश्च—

हृदयके नाम ३॥ उरस् १ वत्स १ वक्षस् ३ ॥

पृष्ठं तु चरमं तनोः ॥

पीठका नाम १ ॥ पृष्ठ १ ॥

स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री—

कंधेके नाम ३ ॥ स्कन्ध १ भुजशिरस् २ अंस ३ ॥

—सन्धी तस्यैव जत्रुणी॥७८॥

हँसलीका नाम १ ॥ जत्रु१॥७८॥

बाहुमूले उभे कक्षौ—

बगलोंका नाम १ ॥ कक्ष १ ॥

पार्श्वमस्त्री तयोरधः ॥

बगलके नीचेका नाम१॥पार्श्व १॥

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री-

पेटके नीचेका और कमरके ऊपरके भागके नाम ३ ॥ मध्यम १ अवलग्न २ मध्य ३ ॥

—द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्या—

बाहुके नाम ४ ॥ ७९ ॥ भुज १ बाहु २ प्रवेष्ट ३ दोस् ४ ॥

—त्कफोणिस्तु कूर्परः ॥

कोनीके नाम २ ॥ कफोणि १ कूर्पर २ ॥

अस्योपरि प्रगण्डः स्या—

कोनीके ऊपरका नाम१॥प्रगण्ड१॥

—त्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥८०॥

कोर्नीके नीचेका नाम १॥ प्रकोष्ठ १॥८०॥

मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो वहिः ॥

मणिवन्धसे कनिष्ठा अंगुलीपर्यंतका नाम १ ॥ करभ १ ॥

पञ्चशाखः शयः पाणि–

हाथके नाम ३ ॥ पञ्चशाख १ शय २ पाणि ३ ॥

–स्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी॥८१॥

हाथके अंगूठेके पासकी अंगुलीके नाम २॥ तर्जनी १ प्रदेशिनी २॥८१॥

अंगुल्यः करशाखाः स्युः–

अंगुलियोंके नाम २ ॥ अंगुली १ करशाखा २ ॥

–पुंस्यंगुष्ठः–

अंगूठेका नाम १ ॥ अंगुष्ठ १ ॥

–प्रदेशिनी ॥

अंगूठेके पासवाली अंगुलीका नाम १ ॥ प्रदेशिनी १ ॥

मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

बीचवाली अंगुलीका नाम १ ॥ मध्यमा २ ॥

बीचवाली और कन अंगुलीके बीचवालीका नाम १ ॥ अनामिका १ ॥

कन अंगुलीका नाम १ ॥ कनिष्ठा १ ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ॥

नाखुनोंके नाम ४ ॥ पुनर्भव १ कररुह २ नख ३ नखर ४ ॥

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥

अंगुष्ठ तर्जनीतककी लम्बाईका नाम १ ॥ प्रादेश १ ॥

अंगुष्ठ बीचवालीके फैलानेकी लम्बाईका नाम १ ॥ ताल १ ॥

अंगुष्ठ अनामिकाके फैलानेकी लम्बाईका नाम १ ॥ गोकर्ण १॥८३॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः ॥

नापनेमें विलस्तके नाम २ ॥ वितस्ति १ द्वादशांगुल २ ॥

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृतांगुलौ ॥ ८४ ॥

थप्पडके नाम ३ ॥ चपेट १ प्रतल २ प्रहस्त ३ ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ॥

दुहत्थडके नाम २ ॥ संहतल १ प्रतल २॥

पाणिर्निकुब्जः प्रसृति–

चुल्लूका नाम १ ॥ प्रसृति १ ॥

–स्तौ युतावञ्जलिः पुमान्॥८५

अंजलिका नाम १ ॥ अञ्जलि १ ॥ ८५ ॥

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो-

हाथका नाम १ ॥ हस्त १ ॥

-मुष्ट्या तु बद्धया ॥

सरत्निः स्या-

मुट्ठी बाधे हाथका नाम १ ॥ (सरत्नि) रत्नि १ ॥

-दरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

कनि अंगुलियाको छोडके मुट्ठीबाधे हाथका नाम १ ॥ अरत्नि १ ॥ ८६ ॥

व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ॥

हाथ फैलानेका नाम १ ॥ व्याम १ ॥

ऊर्ध्वविस्तृतदोः पाणिर्नृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥

ऊपरको हाथ उठाके नापनेका नाम १ ॥ पौरुष १ ॥ ८७ ॥

कण्ठो गलो-

गलेके नाम २ ॥ कण्ठ १ गल २ ॥

-ऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ॥

गर्दनके नाम ३ ॥ ग्रीवा १ शिरोधि २ कन्धरा ३ ॥

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा-

तीन रेखासे युक्त गर्दनका नाम १ ॥ कम्बुग्रीवा ॥ १ ॥

-ऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥

घांटीके नाम ३ ॥ अवटु १ घाटा २ कृकाटिका ३ ॥ ८८ ॥

वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ॥

मुँहके नाम ७ ॥ वक्त्र १ आस्य २ वदन ३ तुण्ड ४ आनन ५ लपन ६ मुख ७ ॥

क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥

नाकके नाम ५ ॥ घ्राण १ गन्धवाहा २ घोणा ३ नासा ४ नासिका ५ ॥ ८९ ॥

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ॥

होठके नाम ४ ॥ ओष्ठ १ अधर २ रदनच्छद ३ दशनवासस् ४ ॥

अधस्ताच्चिबुकं-

ठोडीका नाम १ ॥ चिबुक १ ॥

-गण्डौ कपोलौ-

गालके नाम २ ॥ गण्ड १ कपोल २ ॥

-तत्परा हनुः ॥ ९० ॥

कनपटीका नाम १ ॥ हनु १ ॥ ९० ॥

रदना दशना दन्ता रदा-

दातके नाम ४ ॥ रदन १ दशन २ दन्त ३ रद ४ ॥

-स्तालु तु काकुदम् ॥

तालुएके नाम २ ॥ तालु १ काकुद २ ॥

रसज्ञा रसना जिह्वा-

जीभके नाम ३ ॥ रसज्ञा १ रसना २ जिह्वा ३ ॥

प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥९१ ॥

होठोंके किनारोंका नाम १ ॥ सृक्किणी १ ॥ ९१ ॥

ललाटमलिकं गोधि-

लिलारके नाम ३ ॥ ललाट १ अलिक २ गोधि ३ ॥

ऊर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियां ॥

भौंहका नाम १ ॥ भ्रू १ ॥

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं-

भौंहके बीचका नाम १॥ कूर्च १ ॥

- तारकाक्ष्णः कनीनिका॥९२॥

आखके तिलका नाम १॥तारका१॥९२

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ॥ दृग्दृष्टी चा-

आखके नाम ८ ॥ लोचन १ २ नेत्र ३ ईक्षण ४ चक्षुस् ५ अक्षि ६ दृग् ७ दृष्टि ८ ॥

-ऽस्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्र-मश्रु च ॥ ९३ ॥

आसूके नाम ५॥ अस्रु १ नेत्राम्बु२ रोदन ३ अस्र ४ अश्रु ५ ॥ ९३ ॥

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ-

आखके किनारोंका नाम १ ॥ अपांग १ ॥

-कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ॥

अपागसे देखनेका नाम१॥कटाक्ष१॥

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

कानके नाम ६॥ कर्ण १ शब्दग्रह२ श्रोत्र३श्रुति४श्रवण ५ श्रवस्६ ॥९४ ॥

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्द्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ॥

शिरके नाम ५ ॥ उत्तमांग१ शिरस् २ शीर्ष ३ मूर्द्धन् ४ मस्तक ५ ॥

चिकुरः कुन्तलो वालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

वालके नाम ६॥ चिकुर १ कुन्तल २वाल३कच४ केश५शिरोरुह६॥९५॥

तद्वृन्दे कैशिकं कैश्य-

वालोंके समूहके नाम २ ॥ कैशिक १ कैश्य २ ॥

-मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ॥

टेढे वालोंके नाम २॥ अलक १ चूर्णकुन्तल २ ॥

ते ललाटे भ्रमरकाः-

ललाटपर लटकते हुए वालोंका नाम १ ॥ भ्रमरक १ ॥

-काकपक्षः शिखण्डकः॥९६॥

जुल्फोंके नाम २ ॥ काकपक्ष १ शिखण्डक २ ॥ ९६ ॥

कबरी केशवेशो-

मांगके नाम २ ॥ कबरी १ केश-वेश २ ॥

-ऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः॥

बँधेहुए बालोंका नाम १ ॥ धम्मिल्ल १ ॥

शिखा चूडा केशपाशी-

चोटीके नाम ३ ॥ शिखा १ चूडा २ केशपाशी ३ ॥

-व्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७॥

जटाके नाम२॥ सटा १ जटा २॥९७॥

वेणिः प्रवेणी-

तेलादि न लगानेके हेतु लटरे बाल हो जानेके नाम २॥ वेणि १ प्रवेणी २ ॥

-शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे॥

साफ बालोके नाम २ ॥ शीर्षण्य १ शिरस्य २ ॥

पाशः पक्षश्च हस्तश्च कला-पार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥

केशसमूहके नाम३॥केशपाश१केश-पक्ष २ कुन्तलहस्त ३॥इत्यादि ॥९८ ॥

तनूरुहं रोम लोम-

रुँवेके नाम ३ ॥ तनूरुह १ रोमन् २ लोमन् ३ ॥

-तद्वृद्धौ श्मश्रु पुमुंखे ॥

डाढी मूछका नाम १॥ श्मश्रु १ ॥

आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रति-कर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

अलंकारकी शोभाके नाम ५ ॥ आकल्प १ वेष २ नेपथ्य ३ प्रतिक-र्मन् ४ प्रसाधन ५ ॥ ९९ ॥

दशैते त्रि-

यह आगे कहे दश शब्द तीनों लिंगोंमे होते हैं ॥

-ष्वलंकर्त्ताऽलंकरिष्णुश्च-

अलङ्कार करनेवालेके नाम २ ॥ अलङ्कर्तृ १ अलङ्करिष्णु २ ॥

-मण्डितः ॥

प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥

अलंकारयुक्तके नाम ५ ॥ मण्डित १ प्रसाधित १ अलंकृत ३ भूषित ५ परिष्कृत ५ ॥ १०० ॥

विभ्राड् भ्राजिष्णुरोचिष्णू-

अलंकारादिसे अतिशोभित हुयेके नाम ३ ॥ विभ्राज् १ भ्राजिष्णु २ रोचिष्णु ३ ॥

-भूषणं स्यादलंक्रिया ॥

सँवारने वा सिंगारनेके नाम २ ॥ भूषण १ अलंक्रिया २ ॥

अलङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥ मण्डनं चा-

गहने आदिके नाम ५ ॥ अलङ्कार १ आभरण २ परिष्कार ३ विभूषण ४ ॥ १०१ ॥ मण्डन ५ ॥

—ऽथ मुकुटं किरीटं पुन्नपुंसकम् ॥

मुकुटके नाम२॥ मुकुट१ किरीट२॥ दोनोंभी पुं० न० ॥

चूडामणिः शिरोरत्नं—

चोटीकी मणिके नाम २॥चूडामणि १ शिरोरत्न २ ॥

—तरलो हारमध्यगः ॥१०२॥

जो हारके बीचमे सबसे बडा मणि होता है उसका नाम१॥तरल१॥१०२

वालपाश्या पारितथ्या—.

चोटीके गहनेके नाम२॥ वालपाश्या १ पारितथ्या २ ॥

—पत्रपाश्या ललाटिका ॥

बेंदी वा टीकेके नाम२॥ पत्रपाश्या ललाटिका २ ॥

कर्णिका तालपत्रं स्या—

वाली वा तरकींके नाम२॥कर्णिका १ तालपत्र २ ॥

—त्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

सुवर्णादिरचित वालीके नाम २ ॥ कुंडल १ कर्णवेष्टन २ ॥ १०३ ॥

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा—

कण्ठी वा कण्ठके नाम २॥ ग्रैवेयक १ कण्ठभूषा २ ॥

—लम्बनं स्याल्ललन्तिका ॥

जो सूँडीतक लम्बी कण्ठी हो उस कण्ठीके नाम२॥ लंबन १ललंतिका२॥

स्वर्णैः प्रालम्बिका—

ऐसी ही यदि सोनेकी कण्ठी हो तो उस कंठीका नाम १ ॥ प्रालंबिका१ ॥

—ऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

और वैसी ही मोतीसे गुथी हो तो उसका नाम१॥उरस्सूत्रिका१ ॥१०४॥

हारो मुक्तावली—

मोतीके हारके नाम २ ॥ हार १ मुक्तावली २ ॥

—देवच्छन्दोसौ शतयष्टिका ॥

जो सौ लडका हार हो उसका नाम १ ॥ देवच्छन्द १ ॥

हारभेदा यष्टिभेदाद्गुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥ अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ॥ सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥.

बत्तीस लडका हार हो उसका नाम १॥ गुच्छ१॥ जो चौबीस लडका हार हो उसका नाम१॥गुच्छार्ध १॥चार लडका हार हो उसका नाम१॥गोस्तन१।१०५ बारह लडका हार हो उसका नाम१ ॥ अर्द्धहार१॥बीस लडका हार हो उसका नाम१ ॥ माणवक१ ॥एक लडका हार हो उसका नाम १ ॥एकावली१॥ वही

एक लड अगर सत्ताईस मोतियोंकी हो तो उसका नाम १ ॥ नक्षत्रमाला १ ॥१०६ ॥

आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ॥

पहुचीके नाम ४ ॥ आवापक १ पारिहार्य २ कटक ३ वलय ४ ॥

केयूरमङ्गदं तुल्ये-

बाजूबन्दआदि भुजाके गहनोंके नाम २॥केयूर १ अङ्गद २ ॥

-अंगुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

छल्लेअगूठीके नाम २॥अङ्गुलीयक १ ऊर्मिका २ ॥ १०७ ॥

साक्षरांगुलिमुद्रा सा-

मोहरसहित अगूठीका नाम १ ॥ अगुलिमुद्रा १ ॥

-कंकणं करभूषणम् ॥

ककनके नाम २ ॥ कंकण १ करभूपण २ ॥

स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥

क्लीबे सारसनं चा-

स्त्रीके कमरकी जजीर अर्थात् मेखलाके नाम ५॥मेखला १ काञ्ची २ ससकी ३ रशना ४॥१०८॥सारसन ५

-ऽथ पुंस्कट्यां शृंखलं त्रिषु ॥

पुरुषके जजीरका नाम १ ॥शृखल १ ॥

पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥

पैंजण आदि स्त्रीके पांवके गहनेके नाम ४ ॥ पादाङ्गद १ तुलाकोटि २ ॥ मञ्जीर ३ नूपुर ४ ॥ १०९ ॥

हंसकः पादकटकः-

कडेके नाम २॥हंसक १ पादकटक २ ॥

-किंकिणी क्षुद्रघण्टिका ॥

घुघुरूके नाम २ ॥ किंकिणी १ क्षुद्रघण्टिका २ ॥

त्वक्फलक्रिमिरोमाणि वस्त्रयोनि-

भाषा ॥ वृक्षोंकी छाल फल और कीडोंके रोम वस्त्रके उत्पन्न होनेके स्थान हैं ॥

-र्दश त्रिषु ॥ ११० ॥

भाषा ॥ यह दशों शब्द तीनों लिंगोमे होते हैं ॥ ११० ॥

वाल्कं क्षौमादि-

वृक्षआदिकी छालसे वनेहुए वस्त्रोंके नाम २ ॥ वाल्क १ क्षौम २इत्यादि ॥

-फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ॥

कपाससे वनेहुये वस्त्रोंके नाम ३ ॥ फाल १ कार्पास २ बादर ३ ॥

कौशेयं कृमिकोशोत्थं-

रेशमीवस्त्रोंका नाम १ ॥ कौशेय १॥

—राङ्कवं मृगरोमजम् ॥१११॥
ऊनीवस्त्रोंका नाम १॥राङ्कव१॥१११॥

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ॥
कोरेवस्त्रके नाम ४॥ अनाहत१ निष्प्रवाणिन् २ तन्त्रक ३ नवाम्बर ४ ॥

तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥
धुलेहुये दो वस्त्रोंके जोडेका नाम १ ॥ उद्गमनीय १ ॥ ११२ ॥

पत्रोर्णं धौतकौशेयं—
धुलेहुए रेशमी वस्त्रका नाम १ ॥ पत्रोर्ण १ ॥

—बहुमूल्यं महाधनम् ॥
बडेमोलके वस्त्रादिका नाम १ ॥ महाधन १ ॥

क्षौमं दुकूलं स्या—
दुपट्टेके नाम २ ॥ क्षौम १ दुकूल २ ॥

—द्द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ११३
कपडेके छोरके नाम २ ॥ निवीत १ प्रावृत २ ॥ ११३ ॥

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्त्रयोर्द्वयोः ॥
छीराका नाम १ ॥ दशा १ ॥

दैर्घ्यमायाम आरोहः—
कपडेआदिकी लम्बाईके नाम ३ ॥ दैर्घ्य १ आयाम २ आरोह ३ ॥

—परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥
कपडेआदिकी चौडाईके नाम २॥ परिणाह १ विशालता २ ॥ ११४ ॥

पटच्चरं जीर्णवस्त्रं—
पुराने कपडेके नाम २ ॥ पटच्चर१ जीर्णवस्त्र २ ॥

—समौ नक्तककर्पटौ ॥
फटेचीथरेके नाम२॥ नक्तक१कर्पट२॥

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥
कपडेमात्रके नाम ६॥ वस्त्र १आच्छादन २ वासस् ३ चैल ४ वसन५ अंशुक ६ ॥ ११५ ॥

सुचेलकः पटोऽस्त्री—
अच्छे वस्त्रके नाम २॥सुचेलक१पट२॥

—स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ॥
मोटे वस्त्रके नाम २ ॥ वराशि १ स्थूलशाटक २ ॥

निचोलः प्रच्छदपटः—
पालकी आदिके ढकनेके वस्त्रके नाम २ ॥ निचोल १ प्रच्छदपट २ ॥

—समौ रल्लककम्बलौ ॥११६॥
कम्बलके नाम २ ॥ रल्लक१कम्बल २ ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंशुके ॥

धोतीके नाम ४॥ अन्तरीय १ उपसंव्यान २ परिधान ३ अर्धोशुक ४ ॥

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥ संव्यानमुत्तरीयं च-

अंगौछा (रुमालआदि) के नाम ५॥ प्रावार १ उत्तरासङ्ग २ बृहतिका ३ ॥ ११७ ॥ संव्यान ४ उत्तरीय ५ ॥

-चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ॥

चोलीके नाम २॥ चोल १ कूर्पासक २॥

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

रजाईका नाम १॥ नीशार १॥ ११८॥

अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ॥

लहँगेका नाम १ ॥ चण्डातक १॥

स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥

लंबेलहंगेका नाम १ ॥ आप्रपदीन १ ॥ ११९ ॥

अस्त्री वितानमुल्लोचो-

चंदोएके नाम २ ॥ वितान १ उल्लोच २ ॥

-दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ॥

तम्बू वा डेराका नाम १॥ दूष्य १॥

प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥

कनातके नाम ३॥ प्रतिसीरा १ जवनिका २ तिरस्करिणी ३ ॥ १२० ॥

परिकर्माङ्गसंस्कारः-

स्नानादि अगसंस्कारके नाम २ ॥ परिकर्मन् १ अङ्गसंस्कार २ ॥

-स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ॥

पोंछनेके नाम ३ ॥ मार्ष्टि १ मार्जना २ मृजा ३ ॥

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे-

उबटनके नाम २ ॥ उद्वर्त्तन १ उत्सादन २ ॥

-आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥ स्नानं-

न्हानेके नाम ३ ॥ आप्लाव १ आप्लव २ ॥ १२१ ॥ स्नान ३ ॥

-चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासको-

चन्दनादिसे देहके लेपके नाम ३॥ चर्चा १ चार्चिक्य २ स्थासक ३ ॥

-ऽथ प्रबोधनम् ॥ अनुबोधः-

गन्धोमटनिके नाम २ ॥ प्रबोधन १ अनुबोध २ ॥

-पत्रलेखा पत्रांगुलिरिमे समे १२२

स्त्रियोंके गाल स्तनादिपर कस्तूरी चन्दनसे की हुई चित्रकारीके नाम २ ॥ पत्रलेखा १ पत्रांगुलि २ ॥ १२२॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ॥ द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रिया–

मस्तकमें चन्दन कस्तूरी, आदिसे टीका लगानेके नाम ४ ॥ तमालपत्र १ तिलक २ चित्रक ३ विशेषक ४ ॥

–अथ कुंकुमम् ॥ १२३ ॥

काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने ॥ रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

केशरके नाम ११॥ कुंकुम १ ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्मन् २ अग्निशिख ३ वर ४ बाह्लीक ५ पीतन ६ रक्तसंकोच ७ पिशुन ८ धीर ९ लोहित १० चन्दन ११ ॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः ॥

महावरके नाम६ ॥ लाक्षा १ राक्षा२ जतु ३ याव ४ अलक्त ५ द्रुमामय६ ॥

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ–

लौंगके नाम ३ ॥ लवंग १ देवकुसुम २ श्रीसंज्ञ ३ ॥

–मथ जायकम् ॥ १२५ ॥

कालीयकं च कालानुसार्यं चा–

पीले चन्दनके नाम३॥ जायक १॥ ॥१२५ कालीयक २ कालानुसार्य३ ॥

–ऽथ समार्थकम् ॥ वंशकागुरुराजार्हलोहं कृमिजजोङ्गकम्१२६॥

अगरके नाम ६ ॥ वंशक १ अगुरु २ राजार्ह ३ लोह ४ कृमिज ५ जोङ्गक ६ ॥ १२६ ॥

कालागुर्वगुरुः–

काले अगरके नाम २ ॥ कालागुरु १ अगुरु २ ॥

–स्यात्तन्मंगल्या मल्लिगन्धि यत् ॥

अगरका भेद १ ॥ मंगल्या १ ॥

यक्षधूपः सर्जरसो राल सर्वरसावपि ॥ १२७ बहुरूपोऽ–

रालके नाम ५ ॥ यक्षधूप १ सर्जरस २ राल ३ सर्वरस ४॥१२७॥ बहुरूप ५ ॥

–प्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ॥

कृत्रिम धूपके नाम २ ॥ वृकधूप १ कृत्रिमधूप २ ॥

तुरुष्कः पिण्डकः सिह्लो यावनो–

लोबानके नाम ४ ॥ तुरुष्क १ पिण्डक २ सिह्ल ३ यावन ४ ॥

–प्यथ पायसः ॥ १२८ ॥

श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ ॥

देवदारु धूपके नाम ५ ॥ पायस १ ॥ १२८ ॥ श्रीवास २ वृकधूप ३ श्रीवेष्ट ४ सरलद्रव ५ ॥

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चा-

कस्तूरीके नाम ३ ॥ मृगनाभि १ मृगमद २ कस्तूरी ३ ॥

-ऽथ कोलकम् ॥ १२९ ॥ कङ्कोलकं कोशफल-

कंकोलके नाम ३ ॥ कोलक १ ॥ ॥ १२९ ॥ कंकोलक २ कोशफल ३॥

-मथ कर्पूरमस्त्रियाम् ॥ घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

कपूरके नाम ५ ॥ कर्पूर १ ॥ घनसार २ चन्द्रसज्ञ ३ सिताभ्र ४ हिमवालुका ५ ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् ॥

मलयागिरि चन्दनके नाम ४ ॥ गन्धसार १ मलयज २ भद्रश्री ३ चन्दन ४॥

तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

सफेद चन्दनका नाम १॥ तैलपर्णिक १ ॥ जिसमे कमलके समान गन्ध हो उस चन्दनका नाम १॥ गोशीर्ष १ ॥

कपिलवर्ण चन्दनका नाम १ ॥ हरिचन्दन १ ॥ १३१ ॥

तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ॥ कुचन्दनं चा-

लालचन्दनके नाम ५ ॥ तिलपर्णी १ पत्रांग २ रञ्जन ३ रक्तचन्दन ४ कुचन्दन ५ ॥

-ऽथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥

जायफलके नाम २ ॥ जातीकोश १ जातीफल २ ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षकर्दमः ॥

कपूर अगर कस्तूरी और कक्कोल इन को बराबर मिलानेसे जो लेपन बनताहै उसका नाम १ ॥ यक्षकर्दम १॥

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३

पिसीहुई लेपन वस्तुके नाम २ ॥ गात्रानुलेपनी १ वर्ति २ ॥

घिसी(रगडी) हुई लेपन वस्तुके नाम २ ॥ वर्णक १ विलेपन २ ॥ १३३॥

चूर्णानि वासयोगाः स्यु-

कपडछान करके जो गन्धवस्तु घोली जाय उसके नाम २॥ चूर्ण १ वासयोग २॥

-र्भावितं वासितं त्रिषु ॥

पुष्प इत्यादिसे वसाई हुई वस्तुके नाम २ ॥ भावित १ वासित २ ॥

संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥

सुगंध पुष्पादिसे संस्कार करनेके नाम १ ॥ अधिवासन १ ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि—

सिरपै धारण करने योग्य मालाके नाम ३ ॥ माल्य १ माला२ स्रज्३॥

—केशमध्ये तु गर्भकः ॥

बालोंके बीचमें धारण की हुई मालाका नाम १ ॥ गर्भक १ ॥

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि—

जो चोटीमें गुन्दी हुई माला हो उसका नाम १ ॥ प्रभ्रष्टक १ ॥

—पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १३५॥

जो शिखामें लिलारतक लपेटी माला हो उसका नाम१॥ललामक१॥१३५॥

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठा-

कंठमें पहरी हुई मालाका नाम१॥ प्रालम्ब १ ॥

—द्वैकक्षिकं तु तत् ॥ यत्तिर्यक्-क्षिप्तमुरसि—

जो यज्ञोपवीतके तुल्य पहनीजाय उस मालाका नाम १ ॥ वैकक्षिक१॥

—शिखास्वापीडशेखरौ॥१३६॥

जो शिखामें पहरी जाय उसमालाके नाम२॥आपीड १शेखर२ ॥ १३६ ॥

रचना स्यात्परिस्पन्द—

माला आदिके बनानेके नाम २ ॥ रचना १ परिस्पन्द २ ॥

—आभोगः परिपूर्णता ॥

सर्वसामग्रीके पूरे होनेके नाम २ ॥ आभोग १ परिपूर्णता २ ॥

उपधानं तूपबर्हः—

तकियेके नाम २॥ उपधान१उपबर्ह२॥

—शय्यायां शयनीयवत्॥ १३७॥ शयनं—

बिछौनेके नाम ३ ॥ शय्या १शयनीय २ ॥ १३७ ॥ शयन ३ ॥

—मञ्चपर्यंकपल्यंकाः खट्वया समाः ॥

पलंग वा खाटके नाम ४॥ मंच१ पर्यङ्क २ पल्यङ्क ३ खट्वा ४ ॥

गेन्दुकः कन्दुको—

गेंदके नाम २॥ गेन्दुक१कन्दुक २ ॥

—दीपः प्रदीपः—

दियाके नाम २ ॥ दीप१प्रदीप२॥

—पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

पीढाके नाम २॥ पीठ १आसन२ ॥ १३८ ॥

समुद्गकः संपुटकः—

डिब्बाके नाम २ ॥ समुद्गक१संपुटक २ ॥

—प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ॥

पीकदानके नाम २ ॥ प्रतिग्राह १ पतद्ग्रह २ ॥

प्रसाधनी कंकतिका—

कंघीके नाम २ ॥ प्रसाधनी १ कङ्कतिका २ ॥

—पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥

बुक्काके नाम २॥ पिष्टात १पटवासक २ ॥ १३९ ॥

दर्पणे मुकुरादर्शौ—

दर्प्पण (सीसे) के नाम३॥दर्प्पण १ मुकुर २ आदर्श ३ ॥

—व्यजनं तालवृन्तकम् ॥

पखेके नाम२॥व्यजन१तालवृन्तक२॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ८ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः ७.

संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ॥ वंशोऽन्ववायःसन्तानो—

वंशके नाम ९ ॥ सन्तति १गोत्र२ जनन ३ कुल ४ अभिजन ५ अन्वय ६ वंश ७ अन्ववाय ८ सन्तान ९ ॥

—वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

ब्राह्मण आदिका नाम१॥ वर्ण१॥१॥

विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारोंका इकट्ठा नाम १ ॥ चातुर्वर्ण्य१ ॥

राजबीजी राजवंश्यो—

राजाके वंशवालोंके नाम २ ॥ राजबीजिन् १ राजवंश्य २ ॥

—बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

कुलीनके नाम २ ॥ बीज्य१कुलसभव २ ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ॥

सज्जनके नाम६॥महाकुल१कुलीन २ आर्य्य ३सभ्य ४ सज्जन ५ साधु६ ॥

ब्रह्मचारी गृहीः वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥३॥ आश्रमोऽस्त्री—

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थ यति इन चारोंका इकट्ठा नाम १॥३॥आश्रम१॥

—द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ॥ विप्रश्च ब्राह्मणो—

ब्राह्मणके नाम ६ ॥ द्विजाति १ अग्रजन्मन् २ भूदेव ३ वाडव ४विप्र५ ब्राह्मण ६ ॥

—ऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥

इज्या अध्ययन दान याचन अध्यापन प्रतिग्रह इन षट् कर्मोंकरके युक्त विप्रका नाम १॥षट्कर्मन् १ ॥ ४ ॥

विद्वान्विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः ॥ धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ॥ ५ ॥ धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः॥ दूरदर्शी दीर्घदर्शी—

पण्डितके नाम २२ ॥ विद्वस् १ विपश्चित् २ दोषज्ञ ३ सत् ४ सुधी ५ कोविद ६ बुध ७ धीर ८ मनीषिन् ९ ज्ञ १० प्राज्ञ ११ संख्यावत् १२ पण्डित १३ कवि १४॥ ५ ॥ धीमत् १५ सूरि १६ कृतिन् १७ कृष्टि १८ लब्धवर्ण १९ विचक्षण २० दूरदर्शिन् २१ दीर्घदर्शिन् २२॥

—श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ॥६॥

वेदपाठीके नाम २ ॥ श्रोत्रिय १ छान्दस २ ॥ ६ ॥

उपाध्यायोऽध्यापको—

जो पढाता हो उस पडितके नाम २ ॥ उपाध्याय १ अध्यापक २ ॥

—ऽथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः ॥

गर्भाधानादि कर्म्म करानेवालेका नाम १ ॥ गुरु १ ॥

मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य—

मन्त्रकी व्याख्या करनेवालेका नाम १ ॥ आचार्य १ ॥

—आदेष्टा त्वध्वरे—

यज्ञमें सब ऋत्विजोंके सिखानेवाले-का नाम १ ॥ आदेष्टृ १ ॥

व्रती ॥ ७ ॥

यष्टा च यजमानश्च—

यजमानके नाम ३ ॥ व्रतिन् १ ॥ ७ ॥ यष्टृ २ यजमान ३ ॥

—स सोमवति दीक्षितः ॥

सोमयज्ञके यजमानका नाम १ ॥ दीक्षित १ ॥

इज्याशीलो यायजूको—

वारम्वार यज्ञ करनेवालेके नाम २॥ इज्याशील १ यायजूक २ ॥

—यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥८॥

जो विधिसे यज्ञ करै उसका नाम १ ॥ यज्वन् १ ॥ ८ ॥

स गीष्पतीष्टचा स्थपतिः—

बृहस्पति यज्ञ करनेवालेका नाम१॥ स्थपति १ ॥

सोमपीथी तु सोमपाः ॥

सोमवल्लीका रस पीनेवालेके नाम २ ॥ सोमपीथिन् १ सोमपा २ ॥

सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

जो यज्ञमें अपना सब धन दे डाले उसका नाम १ ॥ सर्ववेदस् १ ॥ ९ ॥

अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती-

रागोपांग वेद पढनेवालेका नाम १ ॥ अनूचान १ ॥

-गुरोस्तु यः ॥ लब्धानुज्ञः समावृत्तः-

वही अनूचान गुरुकी गृहस्थाश्रमादिमे प्राप्त होनेकी आज्ञा पावे तो उसका नाम १ ॥ समावृत्त १ ॥

-सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥१०॥

अभिषव स्नानकरैयाका नाम १ ॥ सुत्वन् १ ॥ १० ॥

छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये-

विद्यार्थीके नाम ३ ॥ छात्र १ अन्तेवासिन् २ शिष्य ३ ॥

-शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥

छोटे (नये) विद्यार्थीके नाम २ ॥ शैक्ष १ प्राथमकल्पिक २ ॥

एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥

सहपाठी अर्थात् एक साथ एकही वस्तु पढनेवालेका नाम १॥ सब्रह्मचारिन् १ ॥ ११ ॥

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव-

जितने एक गुरुसे पढते हों उनका नाम १ ॥ सतीर्थ्य १ ॥

-श्चितवानग्निमग्निचित् ॥

जो अग्निको बटोरे है उसका नाम १ ॥ अग्निचित् १ ॥

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

परम्परा उपदेशके नाम २॥ ऐतिह्य १ इतिह २ ॥ १२ ॥

उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्या-

प्रथमज्ञानका नाम १॥उपज्ञा १ ॥

-ज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ॥

समझके ग्रन्थके प्रारम्भकरनेका नाम१॥ उपक्रम १ ॥

यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥

यज्ञके नाम ७ ॥ यज्ञ १ सव २ अध्वर ३ याग ४ सप्ततन्तु ५ मख ६ क्रतु ७ ॥ १३ ॥

पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

महायज्ञके नाम ५ ॥ पाठ १ होम २ अतिथिपूजा ३ तर्प्पण ४ बलि ५ ॥ १४ ॥

समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ॥ आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥

सभाके नाम ९ ॥ समज्या १ परिषद् २ गोष्ठी ३ सभा ४ समिति ५ संसद् ६ आस्थानी ७ आस्थान ८ सदस् ९ ॥ १५ ॥

प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात्-

सदस्योंके गृहका नाम १॥प्राग्वंश१

-त्सदस्या विधिदर्शिनः ॥

समानें विचार करनेवालोंका नाम १ ॥ सदस्य १ ॥

सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥

सभामें बैठनेवालोंके नाम ४ ॥ सभासद् १ सभास्तार २ सभ्य ३ सामाजिक ४ ॥ १६ ॥

अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ॥

यजुर्वेद जाननेवालेका नाम १ ॥ अध्वर्यु १ ॥ सामवेदीका नाम१॥उद्गातृ १॥ ऋग्वेदीका नाम १ ॥ होतृ १ ॥

आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥

जिनको धन आदि देकर यज्ञमें वरण किया जाय तिस आग्नीध्र आदि सोलहके नाम २ ॥ ऋत्विज १ याजक २॥१७॥

वेदिः परिष्कृता भूमिः-

वेदीका नाम १ ॥ वेदि १ ॥

-समे स्थण्डिलचत्वरे ॥

यज्ञार्थ चबूतरेके नाम २ ॥ स्थण्डिल १ चत्वर २ ॥

चषालो यूपकटकः-

खम्भाके ऊपर जो कलशाकार काष्ठका रहता है उसके नाम २॥चषाल १ यूपकटक २ ॥

-कुम्बा सुगहना वृतिः ॥१८॥

यज्ञोंको अन्यजाति न देखनेके निमित्त जो टट्टी आदि लगाई जाती है उसका नाम १ ॥ कुम्बा १॥१८॥

यूपाग्रं तर्म-

यज्ञस्तम्भके आगेके नाम २॥यूपाग्र १ तर्मन् २ ॥

-निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ॥

जिस लकडीको मथके अग्नि निकालते हैं उसका नाम १ ॥ अरणि १ ॥

दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

यज्ञकी अग्निके नाम ३॥ दक्षिणाग्नि १ गार्हपत्य २ आहवनीय ३ ॥ १९॥

अग्नित्रयमिदं त्रेता-

इन तीनों अग्नियोंका नाम १॥त्रेता१ ॥

-प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ॥

संस्कारित अग्निका नाम १॥प्रणीत१

समूह्यःपरिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥

यज्ञाग्निके नाम ३॥समूह्य १ परिचाय्य २ उपचाय्य ३ ॥ २० ॥

यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ॥

तस्मिन्नानाय्यो-

गार्हपत्याग्निसे लेकर जो दक्षिणाग्नि प्रवेश:कराया जावे उसका नाम १॥ आनाय्य १ ॥

-ऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥ २१ ॥

स्वाहा अर्थात् अग्निकी स्त्रीके नाम ३॥ अग्नायी १ स्वाहा २ हुतभुक्प्रिया ३॥ २१॥

ऋक्सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने ॥

अग्निबालनेके अर्थ जो ऋचा पढी-जाय:उसके: नाम २ ॥ सामिधेनी १ धाय्या २ ॥

गायत्रीप्रमुखं छन्दो-

गायत्री उष्णिह् अनुष्टुभ् इत्यादिका नाम १ ॥ छन्दस् १ ॥

-हव्यपाके चरुः पुमान्॥ २२॥

अग्निमे छोडने योग्य साकल्यका नाम १ ॥ चरु १ ॥ २२ ॥

आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ॥

गरमपके दूधमें दही डालनेसे जो बनता है उसका नाम १॥ आमिक्षा १॥

धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥

मृगचर्मसे बने हुये बीजनाका नाम १ ॥ धवित्र १ ॥ २३ ॥

पृषदाज्यं सदध्याज्ये-

दही घी मिलेहुएका नाम १॥ पृषदाज्य १॥

-परमान्नं तु पायसम् ॥

खीरके नाम २॥ परमान्न १ पायस २॥

हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने-

देवताके अर्थकी खीरका नाम १॥ हव्य १ ॥ पितरोंकी खीरका नाम १ ॥ कव्य १ ॥

पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥

स्रुवा आदिका नाम १ ॥ पात्र १॥ २४॥

ध्रुवोपभृज्जुहूर्नां तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः ॥

स्रुवाके भेद ४ ॥ ध्रुवा १ उपभृत् २ जुहू ३ स्रुव ४ ॥

उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥

यज्ञके पशुका नाम १ ॥ उपाकृत १ ॥ २५ ॥

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ॥

यज्ञके अर्थ पशुमारनेके नाम ३ ॥ परम्पराक १ शमन २ प्रोक्षण ३ ॥

-वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥

यज्ञमें मारेहुये पशुके नाम ३॥ प्रमीत १ उपसम्पन्न २ प्रोक्षित ३ ॥ २६॥

सान्नाय्यं हवि-

साकल्यके नाम २ ॥ सान्नाय्य १॥ हविष् २ ॥

—रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ॥

अग्निमें जो हुनाजावे उसका नाम १ ॥ वषट्कृत १ ॥

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञः—

यज्ञान्तस्नानका नाम १॥अवभृथ १॥

—तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥ ॥ २७ ॥ त्रि—

यज्ञयोग्यवस्तुका नाम १ ॥ यज्ञिय १ ॥ २७ ॥

—ऽथ क्रतुकर्मेष्टं—

यज्ञमें कर्मका नाम १ ॥ इष्ट १ ॥

—पूर्तं खातादि कर्म यत् ॥

बावडी तालाव आदि खुदानेका नाम १ ॥ पूर्त्त १ ॥

अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजन-शेषयोः ॥ २८ ॥

यज्ञसे बची हुई जाउरि आदिका नाम १॥ अमृत १॥ और भोजनसे बची हुई वस्तुका नाम १॥ विघस १॥२८॥

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जन-विसर्जने ॥ विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥ प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ॥

दानके नाम १४ ॥ त्याग १ विहा-पित ५ दान ३ उत्सर्जन ४ विसर्जन ५ विश्राणन ६ वितरण ७ स्पर्शन ८ प्रति-पादन ९ ॥२९॥ प्रादेशन १० निर्व-पण ११ अपवर्जन १२॥ अहति १३॥

मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्या दौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥

मृतकके अर्थ जो दश दिनके बीचमें पिंडादि दिये जाते है उनका नाम १॥ और्ध्वदेहिक १ ॥ ३० ॥

पितृदानं निवापः स्या—

पितरोंके देनेके निमित्त जो दान दिया जावे उसके नाम २॥ पितृदान १ निवाप २ ॥

—च्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ॥

पितरोंके देनेके निमित्तके कर्मका नाम ॥ १ ॥ श्राद्ध १ ॥

अन्वाहार्यमासिकें—

अमावास्याके श्राद्धके नाम २॥ अ-न्वाहार्य १ मासिक २ ॥

—ऽशोऽष्टमोऽह्नःकुतपोऽस्त्रि याम् ॥ ३१ ॥

दिनके आठवें हिस्सेका नाम १ ॥ कुतप १ ॥ ३१ ॥

पर्येषणा परीष्टिश्चाऽन्वेषणा च गवेषणा ॥

श्राद्धमे ब्राह्मणकी भक्ति और सेवा

करनेके नाम २ ॥ पर्येषणा १ परीष्टि २ ॥ धर्म आदिके खोजनेके नाम २ ॥ अन्वेषणा १ गवेषणा २ ॥ भाषा—अथवा ४ नाम धर्म आदिके खोजनेकेही जानने ॥

सनिस्त्वध्येषणा—

विनतीके नाम २॥सनि १ अध्येषणा २॥

—याच्ञाऽभिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥

मांगनेके नाम ४ ॥ याच्ञा १ अभिशस्ति १ याचना ३ अर्थना ४॥३२॥

—षट्तु त्रि—

भाषा—यह छः शब्द तीनों लिंगोंमें होते है ॥

—ष्वर्घ्यमर्घार्थे पाद्यं पादाय वारिणि ॥

पूजार्थ पानी छोडनेका नाम १ ॥ अर्घ्य १ ॥ पांव धोनेको छोडने योग्य पानीका नाम १ पाद्य १ ॥

क्रमादातिथ्यातिथेय अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥

अतिथिके अर्थ जो कर्म उसका नाम १॥ आतिथ्य १॥ अतिथिके निमित्त जो सिद्ध हो वह १॥ आतिथेय १॥ ३३॥

स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ॥

महिमानके नाम ४ ॥ आवेशिक १ आगन्तु २ अतिथि ३ गृहागत ४ ॥

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्यार्चार्हणाः समाः ॥ ३४ ॥

पूजाके नाम ६ ॥ पूजा १ नमस्या २ अपचिति ३ सपर्या ४ अर्चा ५ अर्हणा ६ ॥ ३४ ॥

वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ॥

उपासनाके नाम ४॥ वरिवस्या १ शुश्रूषा २ परिचर्या ३ उपासना ४ ॥

व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं—

विदेशमे भ्रमणकरनेके नाम ३॥व्रज्या १ अटाट्या २ पर्यटन ३ ॥

—चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥३५॥

योगमार्गमें स्थितिका नाम १ ॥ चर्या १ ॥ ३५ ॥

उपस्पर्शस्त्वाचमन—

आचमनके नाम २ ॥ उपस्पर्श १॥ आचमन २ ॥

—मथ मौनमभाषणम् ॥

चुपरहनेके नाम २ ॥ मौन १ अभाषण २ ॥

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥३६॥ पर्यायश्चा-

अनुक्रमके नाम ५ ॥ आनुपूर्वी १ आवृत् २ परिपाटी ३ अनुक्रम ४ ॥ ३६ ॥ पर्य्याय ५ ॥

—ऽतिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥

अतिक्रमके नाम ३ ॥ अतिपात २ पर्य्यय २ ॥ उपात्यय ३ ॥

नियमो व्रतमस्त्री—

व्रतके नाम २ ॥ नियम १ व्रत २ ॥

—तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥

चान्द्रायणादि व्रतका नाम १ ॥ पुण्य १ ॥ ३७ ॥

औपवस्त तूपवासो—

उपवासके नाम २ ॥ औपवस्त १ उपवास २ ॥

—विवेकः पृथगात्मता ॥

प्रकृतिपुरुषके भेद जाननेके विचारके नाम २ ॥ विवेक १ पृथगात्मता २ ॥

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धि—

सदाचारपालन और वेदाभ्यास करनेसे जो तेज होता है उसका नाम १ ॥ ब्रह्मवर्चस १ ॥

—रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥ पाठे-ब्रह्माञ्जलिः—

वेदपढनेके समयकी अजलिका नाम १ ॥ ब्रह्माञ्जलि १ ॥ ३८ ॥

—पाठे विप्रुषो ब्रह्मविन्दवः ॥

वेदपढनेके समय जो मुखसे जल चूता है उनका नाम १ ॥ ब्रह्मविन्दु १ ॥

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं—

ध्यान और योगके आसनका नाम १ ॥ ब्रह्मासन १ ॥

—कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥

नियोगशास्त्रके नाम ३ ॥ कल्प १ विधि २ क्रम ३ ॥ ३९ ॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो—

प्रथम विधिका नाम १ ॥ मुख्य १ ॥

—ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥

द्वितीयविधिका नाम १ ॥ अनुकल्प १ ॥

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

संस्कारपूर्वक वेदके सुननेका नाम १ ॥ उपाकरण १ ॥ ४० ॥

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ॥

नामगोत्रादि पूर्वक प्रणाम करनेके नाम २ ॥ पादग्रहण १ अभिवादन २ ॥

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥

सन्यासीके नाम ५ ॥ भिक्षु १ परिव्राज् २ कर्मन्दिन् ३ पाराशरिन् ४ मस्करिन् ५ ॥ ४१ ॥

तपस्वी तापसः पारिकांक्षी-

तपस्वीके नाम ३ ॥ तपस्विन् १ तापस २ पारिकांक्षिन् ३ ॥

–वाचंयमो मुनिः ॥

मुनिके नाम २ ॥ वाचंयम १ मुनि २ ॥

तपःक्लेशसहो दान्तो–

तपस्याके क्लेशके सहनेवालेका नाम १ ॥ दान्त १ ॥

–वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥४२॥

ब्रह्मचारीके नाम २ ॥ वर्णिन् १ ब्रह्मचारिन् २ ॥ ४२ ॥

ऋषयः सत्यवचसः–

ऋषिकेनाम २॥ऋषि १ सत्यवचस् २॥

–स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ॥

जो वेदव्रतधारण किये हुये गुरुकी आज्ञासे स्नान करै उसका नाम १ ॥ स्नातक १ ॥

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥ ४३ ॥

जितेंद्रियके नाम २ ॥ यतिन् १ ॥ यति २ ॥ ४३ ॥

यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ ॥ स्थाण्डिलश्चा–

जो व्रतवश हो पृथ्वीपर चबूतरा बना उसपर सोवै उसके नाम २॥स्थण्डिलशायिन् १ स्थांडिल २ ॥

–ऽथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ॥ ४४ ॥

रजोगुण तमोगुण रहित व्यासादि मुनिके नाम २ ॥ विरजस्तमस् १ द्वयातिग २ ॥ ४४ ॥

पवित्रः प्रयतः पूतः–

पवित्रके नाम ३ ॥ पवित्र १ प्रयत २ पूत ३ ॥

–पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः ॥

बौद्धक्षपणकादि दुष्ट शास्त्रवर्तियोंके नाम २॥पाखण्ड १ सर्वलिङ्गिन् २ ॥

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते–

ब्रह्मचर्यमें पलाशके दण्डका नाम १ ॥ आषाढ १ ॥

–राम्भस्तु वैणवः ॥ ४५ ॥

यदि वह दण्ड बांसका हो तो उसका नाम १ राम्भ १ ॥ ४५ ॥

अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी–

व्रतियोंके लोटेके नाम २॥कमण्डलु १ कुण्डी २ ॥

–व्रतिनामासनं बृसी ॥

और उनके आसनका नाम १ ॥ बृसी १ ॥

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री–

मृगादिके चर्मके नाम ३॥ अजिन १ चर्मन् २ कृत्ति ३ ॥

–भैक्षं भिक्षाकदम्बकम्॥ ४६॥

भिक्षाके ढेरका नाम १॥भैक्ष १॥४६॥

स्वाध्यायः स्याज्जपः—

वेदके अभ्यासके नाम२॥ स्वाध्याय १ जप २ ॥

—सुत्याऽभिषवः सवनं च सा॥

यज्ञौषधिके कूटनेके नाम ३॥सुत्या १ अभिषव २ सवन ३ ॥

सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥ ४७ ॥

सब पापके नाशकरनेवाले मंत्रका नाम १ ॥ अघमर्षण १ ॥ ४७ ॥

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥

अमावसके दिनके यज्ञका नाम १॥ दर्श १ पौर्णमासीके दिनके यज्ञका नाम १ ॥ पौर्णमास १ ॥

शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कम तद्यमः ॥ ४८ ॥

अहिंसा सत्य चोरी न करना ब्रह्मचर्य्य अपरिग्रह (दान न लेना) इन नित्यकर्मका नाम १ ॥ यम १ ॥४८॥

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ॥

शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वरप्रणिधान इन आगन्तु कर्म साधनका नाम १ ॥ नियम १ ॥

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ॥ ४९ ॥

बांये कांधेके जनेऊके नाम२॥उपवीत १ ब्रह्मसूत्र २ ॥ ४९ ॥

प्राचीनावीतमन्यस्मि—

दहने कांधेपर रहनेवाले जनेऊका नाम १ ॥ प्राचीनावीत १ ॥

न्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥

मालाकार यज्ञोपवीत पहिरनेका नाम २ ॥ निवीत १ ॥

अंगुल्यग्रे तीर्थं दैवं—

भाषा ॥ अगुलियोंका अग्रभाग देवताओंका तीर्थ कहाता है ॥

—स्वल्पांगुल्योर्मूले कायम्॥५०॥

भाषा—कन अगुलियोंके मूलका नाम १ ॥ प्रजापति तीर्थ है ॥ ५० ॥

मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्योः पित्र्यं—

भाषा—अंगुष्ठ और तर्जनी अगुलीके मध्यमें पितृतीर्थ कहाता है ॥

—मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥

भाषा ॥ अगुष्ठके मूलमें ब्राह्मतीर्थ कहाता है ॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥

ब्रह्ममें मिलजानेके नाम ३ ॥ ब्रह्मभूय १ ब्रह्मत्व २ ब्रह्मसायुज्य३॥५१॥

देवभूयादिकं तद्वत्—

देवमें मिलजानेके नाम ३॥देवभूय १ देवत्व २ देवसायुज्य ३ ॥

--कृच्छ्रं सान्तपनादिकम्॥

गोमूत्र गोबर दूध दही घी कुशोदक इनका भक्षण करने और एक रात्रिके उपवासका नाम १ ॥ कृच्छ्र १ ॥

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायो-

सन्यासपूर्वक भोजनत्यागका नाम १ ॥ प्राय १ ॥

--ऽथ वीरहा ॥५२॥ नष्टाग्निः--

जिस तपस्वीकी अग्नि बुझगई हो उस तपस्वीके नाम २ ॥ वीरहन् १ ॥५२॥ नष्टाग्नि २ ॥

कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ॥

दम्भसे ध्यानादि करनेका नाम १॥ कुहना १ ॥

व्रात्यः संस्कारहीनः स्या--

जिस ब्राह्मणका गौण कालमेंभी यज्ञोपवीत न हुआ हो उसका नाम १ ॥ व्रात्य १ ॥

--दस्वाध्यायो निराकृतिः॥५३॥

वेदाभ्यासरहितका नाम १॥ निराकृति १ ॥ ५३ ॥

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्ति--

बहुरूपिया ब्राह्मणके नाम २ ॥ धर्मध्वजिन् १ लिंगवृत्ति २ ॥

--रवकीर्णी क्षतव्रतः ॥

जिसका ब्रह्मचर्य नष्ट होगया हो उसके नाम २॥अवकीर्णिन्१क्षतव्रत२॥

सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥ अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम्॥

सायं सन्ध्यामें सोनेवालेका नाम१॥ अभिनिर्मुक्त १ ॥ प्रातःकालकी संध्यामें सोनेवालेका नाम १॥अभ्युदित१॥५४॥

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ ५५ ॥

जिसका बडा भाई न व्याहा गया हो प्रथम छोटा व्याहा जाय तो उस छोटेका नाम १ ॥ परिवेत्तृ १ ॥ ५५॥

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान्--

उसके बडेभाईका नाम १ ॥ परिवित्ति १ ॥

--विवाहोपयमौ समौ ॥ तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥

विवाहके नाम ६ ॥ विवाह १ उपयम २ परिणय ३ उद्वाह ४ उपयाम५ पाणिपीडन ६ ॥ ५६ ॥

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥

मैथुनके नाम ५ ॥ व्यवाय१ग्राम्यधर्म २ मैथुन ३ निधवन ४ रत ५ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थै-

वेदविहितयज्ञादि विधि, स्त्रीसेवन, न्यायसे धनोपार्जन, इनका नाम १ ॥ त्रिवर्ग १ ॥

-श्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥

और मोक्ष करके युक्त धर्म अर्थ काम हो तो उसका नाम १॥ चतुर्वर्ग १॥५७॥

सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं-

और वे धर्मादि सबल हो तो उनका नाम १ ॥ चतुर्भद्र १ ॥

-जन्याः स्निग्धा वरस्य ये॥५८॥

बराती अर्थात् वरके पक्षवालोंका नाम ॥ १ ॥ जन्य १ ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८.

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ॥

क्षत्रियके नाम ५॥ मूर्द्धाभिषिक्त १ राजन्य २ बाहुज ३ क्षत्रिय ४ विराज् ५॥

राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजाके नाम ७॥ राजन् १ राज् २ पार्थिव ३ क्ष्माभृत् ४ नृप ५ भूप ६ महीक्षित् ७ ॥ १ ॥

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ॥

जो बहुत राजाओंका मालिक हो उसका नाम १ ॥ अधीश्वर १ ॥

चक्रवर्ती सार्वभौमो-

समुद्रपर्यन्त पृथ्वीका जिसका राज्य हो उसके नाम २ ॥ चक्रवर्तिन् १ सार्वभौम २ ॥

-नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

चारहजार ४००० कोशके भूमडलके राजाका नाम १॥ मण्डलेश्वर १॥ २॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ॥ शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्रा-

वही मण्डलेश्वर राजसूययज्ञ किये हो और सब राजाओंका शिक्षक हो तौ उसका नाम १ ॥ सम्राज् १ ॥

-ड्थ राजकम् ॥ ३ ॥ राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ॥

राजाओंके गणका नाम १ ॥ राजक १॥३॥ और क्षत्रियोंके गणका नाम १ ॥ राजन्यक १ ॥

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो-

मन्त्रीके नाम ३ ॥ मन्त्रिन् १ धीसचिव २ अमात्य ३ ॥

-ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

मन्त्रीसे छोटे अन्य मुसाहिबोंका नाम १ ॥ कर्मसचिव १ ॥ ४ ॥

महामात्राः प्रधानानि–

मुख्यमंत्रीके नाम २ ॥ महामात्र १ प्रधान २ ॥

–पुरोधास्तु पुरोहितः ॥

पुरोहितके नाम २ ॥ पुरोधस् १ पुरोहित २ ॥

द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्ष-दर्शकौ ॥ ५ ॥

पंच अर्थात् न्यायाधीशके नाम २॥ प्राड्विवाक १ अक्षदर्शक २ ॥ ५ ॥

प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाः-स्थितदर्शकाः ॥

द्वारपालके नाम ५ ॥ प्रतीहार १ द्वारपाल२द्वाःस्थ३द्वाःस्थित४दर्शक५॥

रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थो–

रखवालेके नाम २ ॥ रक्षिवर्ग १ अनीकस्थ २ ॥

–ऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥

अधिकारीके नाम २ ॥ अध्यक्ष १ अधिकृत २ ॥ ६ ॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे–

एक ग्रामके ठेकेदारका नाम १ ॥ स्थायुक १ ॥

गोपो ग्रामेषु भूरिषु ॥

बहुत ग्रामोंके ठेकेदारका नाम १॥ गोप १ ॥

भौरिकः कनकाध्यक्षो–

सोनेके अधिकारीके नाम २ ॥ भौरिक १ कनकाध्यक्ष २ ॥

–रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥

खजानचीके नाम २ ॥ रूप्याध्यक्ष १ नैष्किक २ ॥ ७ ॥

अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्त-र्वंशिको जनः ॥

जो जनानेकी वस्तुओंका अधिकारी हो उसका नाम १ ॥ अन्तर्वंशिक १॥

सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

राजा वा राजस्त्रियोंके निकट जो बेत लिये हुए खडे रहते हैं उनके नाम ४॥ सौविदल्ल १ कञ्चुकिन् २स्थापत्य ३ सौविद ४ ॥ ८ ॥

षण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ–

खोजोंके नाम२॥ षण्ढ१वर्षवर२॥

–सेवकार्थ्यनुजीविनः ॥

सेवक वा नौकरके नाम ३॥ सेवक १ अर्थिन् २ अनुजीविन् ३ ॥

विषयानन्तरो राजा शत्रु–

राजाके देशके पासके राजाका नाम १ ॥ शत्रु १ ॥

–र्मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

उससे अन्य राजाका नाम १ ॥ मित्र १ ॥ ९ ॥

उदासीनः परतरः—

इन शत्रु मित्रोंसे पर अन्य राजाओंका नाम १ ॥ उदासीन १ ॥

—पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ॥

अपने राज्यके पीछे राजा हो उसका नाम १ ॥ पार्ष्णिग्राह १ ॥

रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः॥१०॥ द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः ॥ अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपंथिनः ॥ ११ ॥

दुश्मनके नाम १९ ॥ रिपु १ वैरिन् २ सपत्न ३ अरि ४ द्विषत् ५ द्वेषण ६ दुर्हृद् ७ ॥ १० ॥ द्विष् ८ विपक्ष ९ अहित १० अमित्र ११ दस्यु १२ शात्रव १३ शत्रु १४ अभिघातिन् १५ पर १६ अराति १७ प्रत्यर्थिन् १८ परिपंथिन् १९ ॥ ११ ॥

वयस्यः स्निग्धः सवया—

हमजोलीके नाम ३ ॥ वयस्य १ स्निग्ध २ सवयस् ३ ॥

—अथ मित्रं सखा सुहृत् ॥

मित्रके नाम ३॥मित्र १ सखि २ सुहृद् ३

सख्यं साप्तपदीनं स्या—

मित्रताके नाम २ ॥ सख्य १ साप्तपदीन २ ॥

—दनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२॥

मला मनाने (मुलाहिजे)के नाम २॥ अनुरोध १ अनुवर्त्तन २ ॥ १२ ॥

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ॥ चारश्च गूढपुरुष—

जासूस वा हलिकारेके नाम ७ ॥ यथार्हवर्ण १ प्रणिधि २ अपसर्प ३ चर ४ स्पश ५ चार ६ गूढपुरुष ७ ॥

—श्चाप्तप्रत्ययितौ समौ ॥१३॥

विश्वासीके नाम २ ॥ आप्त १ प्रत्ययित २ ॥ १३ ॥

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि ॥ स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥१४॥

ज्योतिषी पण्डितके नाम ८॥ सांवत्सर १ ज्योतिषिक २ दैवज्ञ ३ गणक ४ मौहूर्तिक ५ मौहूर्त ६ ज्ञानिन् ७ कार्तान्तिक ८ ॥ १४ ॥

तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः—

शास्त्रीके नाम २ ॥ तान्त्रिक १ ज्ञातसिद्धान्त २ ॥

—सत्री गृहपतिः समौ—

मोदीके नाम २॥ सत्रिन् १ गृहपति २॥

लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥

लेखकके नाम ४॥ लिपिकर १ अक्षरचण २ अक्षरचुञ्चु ३ लेखक ४॥१५॥

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ ॥

लिखे हुए लेखके नाम ४॥ लिखित १ अक्षरविन्यास २ लिपि ३ लिबि ४ ॥

स्यात्संदेशहरो दूतो-

दूतके नाम २॥ संदेशहर १ दूत २॥

-दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥

दूतपनका नाम १॥ दूत्य १॥ १६॥

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ॥

रस्तेगीरके नाम ५ ॥ अध्वनीन १ अध्वग २ अध्वन्य ३ पान्थ ४ पथिक ५॥

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥ राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥

स्वामी (राजा) अमात्य (मन्त्री) सुहृद् (मित्र) कोश (खजाना) राष्ट्र (देशकी भूमि) दुर्ग (दुर्गमस्थान) बल (फौज) ॥ १७ ॥ पुरवासी और शिल्पी इन सबके नाम २॥ राज्याङ्ग १ प्रकृति २ ॥

संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥ षड्गुणाः-

सुवर्णादि देके शत्रुके मिलानेका नाम १॥ सन्धि १॥ शत्रुके साथ विगडनेका नाम १॥ विग्रह १॥ शत्रुपर चढाई करनेका नाम १॥ यान १॥ अपने स्थानपर तैयार हो रहनेका नाम १॥ आसन १॥ शत्रुके अधिकारियोंमें फूंट करानेका नाम १॥ द्वैध १ ॥ दूसरेका आसरा लेनेका नाम १ ॥ आश्रय १ ॥ १८ ॥ ये छः गुण कहलाते हैं.

-शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ॥

राजाकी शक्तियोंके नाम ३॥ प्रभावज १ उत्साहज २ मन्त्रज ३॥

क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

नीतिशास्त्रोक्त क्षय स्थान वृद्धिका नाम १ ॥ त्रिवर्ग १ ॥ १९ ॥

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ॥

खजाना और दंडके प्रभावके नाम २ ॥ प्रताप १ प्रभाव २ ॥

सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥

राजाके चारों उपायोंके नाम ४ ॥ सामन् १ दान २ भेद ३ दण्ड ४ ॥ २० ॥

साहसं तु दमो दण्डः-

दण्ड देनेके नाम ३ ॥ साहस १ दम २ दण्ड ३ ॥

-साम सान्त्व-

सलूक करनेके नाम २॥ सामन् १ सान्त्व २ ॥

—मथो समौ ॥ भेदोपजापा-

फरक डालनेके नाम २ ॥ भेद १ उपजाप २ ॥

—वुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् २१

धर्म अर्थ काम और भयसे मंत्री इत्यादिकोंकी परीक्षा करनेका नाम १ ॥ उपधा १ ॥ २१ ॥

पञ्च त्रि—

भाषा—अषडक्षीण आदि निःशलाक पर्य्यन्त पाच शब्द तीनो लिङ्गोंमें होतेहैं॥

—ष्वषडक्षीणोयस्तृतीयाद्यगो-चरः ॥

दो जनोंकीही सलाहका नाम १ ॥ अषडक्षीण १ ॥

विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाका स्तथा रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु चालिङ्गे—

एकान्तके नाम ७ ॥ विविक्त १ विजन २ छन्न ३ निश्शलाक ४ रहस् ५ ॥ २२ ॥ रह ६ उपांशु ७ ॥

—रहस्यं तद्भवे त्रिषु ॥

एकान्तकी वात वा कामका नाम १ ॥ रहस्य १ ॥

समौ विस्रम्भविश्वासौ—

विश्वासके नाम २ ॥ विस्रम्भ १ विश्वास २ ॥

—भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३

अन्यायका नाम १ ॥भ्रेष१॥२३॥

अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ॥

न्यायके नाम ५ ॥ अभ्रेष १ न्याय २ कल्प ३ देशरूप ४ समञ्जस ५ ॥

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमाना-भिनीतवत् ॥ २४ ॥ न्याय्यं च त्रिषु षट्—

न्यायसे जो वस्तु ली जावे उसके नाम ६ ॥युक्त १ औपयिक २ लभ्य ३ भज-मान ४ ॥अभिनीत ५ ॥ २४ ॥ न्याय्य ६ ॥ये छः शब्द त्रिलिंग हैं ॥

—संप्रधारणा तु समर्थनम् ॥

यही उचित है ऐसे निश्चय करनेके नाम २ ॥ सम्प्रधारणा १ समर्थन २ ॥

अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥ शिष्टि-श्चाज्ञा च—

आज्ञाके नाम ६ ॥ अववाद १ निर्देश २ निदेश ३ शासन ४ ॥ २५ ॥ शिष्टि ५ आज्ञा ६ ॥

—संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥

मर्य्यादाके नाम ४ ॥ संस्था १ मर्यादा २ धारणा ३ स्थिति ४ ॥

आगोऽपराधो मन्तुश्च-

अपराधके नाम ३ ॥ आगस् १ अ-पराध २ मन्तु ३ ॥

-समे तूद्दानबन्धने ॥ २६ ॥

बन्धनके नाम २ ॥ उद्दान १ ॥ बन्धन २ ॥ २६ ॥

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो-

दूने दण्डका नाम १ द्विपाद्य १ ॥

-भागधेयः करो बलिः ॥

करके नाम ३ ॥ भागधेय १ कर २ बलि ३ ॥

घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री-

घाटीवगैरहमे देने योग्य महसूलका नाम १ ॥ शुल्क १ ॥

-प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

मित्रादिको भेट वा नजर देनेके नाम २ ॥ प्राभृत १ प्रदेशन २ ॥ २७ ॥

उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ॥

राजाको भेंट वा नजर देनेके नाम ४ ॥ उपायन १ उपग्राह्य २ उपहार ३ उपदा ४ ॥

यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥

दहेज वा भाईबन्धुओंके देनेकी वस्तुके नाम २ सुदाय १ हरण २ ॥ २८ ॥

तत्कालस्तु तदात्वं स्या-

वर्तमानसमयके नाम २ ॥ तत्काल १ तदात्व २

-दुत्तरः काल आयतिः ॥

आनेवाले समयका नाम १ आयति १ ॥

सांदृष्टिकं फलं सद्य-

तुरन्तके फलका नाम १ ॥ सांदृष्टिक १ ॥

-उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

आगेके होनेवालेका नाम १ ॥ उदर्क १ ॥ २९ ॥

अदृष्टं वह्नितोयादि-

आग लगने और अतिवृष्टिहोने आदि उत्पातका नाम १ ॥ अदृष्ट १ ॥

-दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥

अपने या पराये राज्यसे चौरादिके भयका नाम १ ॥ दृष्ट १ ॥

महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥

अपने सहायकसे भयका नाम १ ॥ अहिभय १ ॥ ३० ॥

प्रक्रिया त्वधिकारः स्या-

कानून चलानेके नाम २ ॥ प्रक्रिया १ अधिकार २ ॥

-च्चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥

चॅवरके नाम २ ॥ चामर १ प्रकीर्णक २ ॥

नृपासनं यत्तद्भद्रासनं-

मणि आदिसे बनीहुई राजगद्दीके नाम २ ॥ नृपासन १ भद्रासन २ ॥

—सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
हैमं—

कदाचित् वही राजाके बैठनेका स्थान सोनेसे बनाहो तो उसका नाम १ ॥ सिंहासन १ ॥ ३१ ॥

—छत्रं त्वातपत्रं—

छतुरीके नाम २॥ छत्र १ आतपत्र २॥

—राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ॥

राजाके छत्रका नाम १॥नृपलक्ष्मन् १॥

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो—

भरेघडेके नाम २ ॥ भद्रकुम्भ १ पूर्णकुम्भ २

भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

झारी या गडुवेके नाम २॥भृङ्गार १ कनकालुका २ ॥ ३२ ॥

निवेशः शिविरं षण्ढे—

डेराके नाम २॥ निवेश १ शिविर २॥

सज्जनं तूपरक्षणम् ॥

पहरेके नाम २॥ सज्जन १ उपरक्षण २॥

हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥

हाथी घोडा रथ सिपाही इन सबका नाम १ ॥ सेनाङ्ग १ ॥ ३३ ॥

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४॥ इभः स्तम्बेरमः पद्मी—

हाथीके नाम १५॥ दन्तिन् १ दन्तावल २ हस्तिन् ३ द्विरद ४ अनेकप ५ द्विप ६ मतंगज ७ गज ८ नाग ९ कुञ्जर १० वारण ११ करिन् १२॥३४॥ इभ १३ स्तम्बेरम १४ ॥ पद्मिन् १५ ॥

—यूथनाथस्तु यूथपः ॥

हाथियोंके सिरदार हाथीके नाम २॥ यूथनाथ १ यूथप २ ॥

मदोत्कटो मदकलः—

मदान्ध हाथीके नाम २॥ मदोत्कट १ मदकल २ ॥

—कलभः करिशावकः ॥ ३५॥

हाथीके बच्चोंके नाम २॥ कलभ १ करिशावक २ ॥ ३५ ॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः—

जिसके मद बहता हो उसके नाम ३॥ प्रभिन्न १ गर्जित २ मत्त ३ ॥

—समावुद्वान्तनिर्मदौ ॥

वे मदवालेके नाम २ ॥ उद्वान्त १ निर्मद २ ॥

हास्तिकं गजता वृन्दे—

हाथियोंके समूहके नाम २॥ हास्तिक १ गजता २ ॥

—करिणी धेनुका वशा ॥ ३६॥

हथिनीके नाम ३॥ करिणी १ धेनुका २ वशा ३ ॥ ३६ ॥

गण्डः कटो–

हाथीके गालके नाम २ ॥ गण्ड १ कट २ ॥

–मदो दानं–

हाथीके मदके नाम २ ॥ मद १ दान २ ॥

–वमथुः करशीकरः ॥

हाथीकी सूँडसे पानी निकलनेके नाम २ ॥ वमथु १ करशीकर २ ॥

कुम्भौ तु पिण्डौ शिरस–

हाथीके मस्तकके मासका नाम १॥ कुम्भ १ ॥

–स्तयोर्मध्ये विदुः पुमान्॥३७॥

दोनों कुम्भोके मध्यमे जो खाली रहता है उसका नाम १ ॥ विदु १ ॥३७॥

अवग्रहो ललाटं स्या–

हाथीके लिलारका नाम १॥अवग्रह १

–दिषिका त्वक्षिकूटकम् ॥

उसके नेत्रोंकी गोलाईके नाम २॥ इपिका १ अक्षिकूटक २ ॥

अपांगदेशो निर्याणं–

उसके निहारनेका नाम १॥निर्याण १॥

–कर्णमूलं तु चूलिका ॥३८॥

हाथीके जहां से कान जमते हैं उस जगहका नाम १ ॥ चूलिका १॥३८॥

अधः कुम्भस्य वाहित्थं–

हाथीके लिलारके नीचेका नाम १॥ वाहित्थ १ ॥

प्रतिमानमधोऽस्य यत् ॥

वाहित्थके नीचेका नाम १॥ प्रतिमान १ ॥

आसनं स्कन्धदेशः स्या–

हाथीके कन्धेका नाम १॥आसन १॥

–त्पद्मकं विन्दुजालकम्॥३९॥

हाथीके बिन्दुओंका नाम १॥ पद्मक १ ॥ ३९ ॥

पार्श्वभागः पक्षभागो–

हाथीकी बगलके नाम २॥ पार्श्वभाग १ पक्षभाग २ ॥

–दन्तभागस्तु योऽग्रतः ॥

हाथीके आगेके भागका नाम १॥ दन्तभाग १ ॥

द्वौ पूर्वपश्चाज्जंघादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥

हाथीके आगेके जघादि भागका नाम १ ॥ गात्र १ ॥ हाथीके पीछेके भागका नाम १ ॥ अवर १ ॥ ४० ॥

तोत्रं वैणुक–

चाबुककी डंडीके नाम २ ॥ तोत्र १ वैणुक २ ॥

–मालानं बन्धस्तम्भे–

हाथीके खूटेका नाम १॥आलान १॥

—ऽथ शृंखले ॥ अन्दुको निगडोऽस्त्री स्या—

हाथीकी जंजीरके नाम ३॥ शृंखल १ अन्दुक २ निगड ३ ॥

—दंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ४१

अंकुशके नाम २ ॥ अंकुश १ सृणि २ ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा च—

हाथीकी कमर बांधनेकी रस्सीके नाम ३॥ दूष्या १ कक्ष्या २ वरत्रा३॥

—कल्पना सज्जना समे ॥

मालिकके चढनेके वास्ते हाथीको तैयारकरनेके नाम २ ॥ कल्पना १ सज्जना २ ॥

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

गद्दी वा झूलके नाम ५ ॥ प्रवेणी १ आस्तरण २ वर्ण ३ परिस्तोम ४ कुथ ५ ॥ ४२ ॥

वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं—

हाथी घोडेका नाम १ ॥ वीत१॥

—वारी तु गजबन्धनी ॥

जिस भूमिमें हाथी बाधेजायँ उसका नाम १ ॥ वारी १ ॥

घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ॥

घोडेके नाम १३ ॥ घोटक १ वीति २ तुरग ३ तुरङ्ग ४ अश्व ५ तुरङ्गम ६ ॥ ४३ ॥ वाजिन् ७ वाह ८ अर्वन् ९ गन्धर्व १० हय ११ सैन्धव १२ सप्ति १३ ॥

आजानेयाः कुलीनाः स्यु—

कुलीन घोडेका नाम १॥आजानेय१॥

—र्विनीताः साधुवाहिनः॥४४॥

सीखेहुये घोडेका नाम १ ॥ विनीत १ ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ॥

वनायु देशमें पैदाहुऐ घोडेका नाम १ ॥ वनायुज १ ॥

पारसदेशोत्पन्न घोडेका नाम १ ॥ पारसीक १ ॥

काबुली घोडेका नाम १॥ बाह्लिक१॥

ययुरश्वोऽश्वमेधीयो—

अश्वमेधके श्यामकर्णवाले घोडेका नाम १ ॥ ययु १ ॥

—जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५॥

जल्दी चलनेवाले घोडेका नाम १ ॥ जवन १ ॥ ४५ ॥

पृष्ठ्यः स्थौरी—

लदनेवाले घोडेके नाम २ ॥पृष्ठ्य१ स्थौरिन् २ ॥

—सितः कर्को—

उजले घोडेका नाम १ ॥ कर्क १॥

—रथ्यो वोढा रथस्य यः ॥

रथके घोडेका नाम १ ॥ रथ्य १॥

बालः किशोरो—

घोडेके बच्चेका नाम १॥ किशोर १॥

—वाम्यश्वा वडवा—

घोडीके नाम ३ ॥ वामी १ अश्वा २ वडवा ३ ॥

—वाडवं गणे ॥ ४६ ॥

घोडीके समूहका नाम १ वाडव १॥४६

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ॥

घोडेके एक दिन चलने योग्य मार्गका नाम १ ॥ आश्वीन १ ॥

कश्यं तु मध्यमश्वानां—

घोडेके मध्यभागका नाम १॥कश्य १॥

—हेषा हेषा च निःस्वनः॥४७॥

घोडेके शब्दका नाम २ ॥ हेषा १ ह्रेषा २ ॥ ४७ ॥

निगालस्तु गलोद्देशो—

घोडेके गलेका नाम १॥ निगाल १॥

—वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ॥

घोडोंके समूहका नाम २ ॥ अश्वीय १ आश्व २ ॥

आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥ गतयोऽमूः पञ्च धारा—

घोडेके पांच प्रकारकी चालोंके नाम ५ ॥ आस्कन्दित १ धौरितक २ रेचित ३ वल्गित ४ प्लुत ५ ॥ ४८॥

—घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ॥

घोडेकी नाकका नाम १ ॥ प्रोथ १॥

कविका तु खलीनोऽस्त्री—

घोडेकी लगामके नाम २ ॥ कविका १ खलीन २ ॥

—शफं क्लीबे खुरः पुमान्॥४९॥

घोडेके खुरके नाम ३ ॥ शफ १ खुर २ (क्षुर) ३ ॥ ४९ ॥

पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले—

पूंछके नाम ३॥ पुच्छ १ लूम २ लांगूल ३॥

—वालहस्तश्च वालधिः ॥

वालसहित पूँछके नाम २ ॥ वालहस्त १ वालधि २ ॥

त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

पृथ्वीमें लोटनेके नाम २ ॥ उपावृत्त १ लुठित २ ॥ ५० ॥

याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ॥

युद्धके रथके नाम ३ ॥ शतांग १ स्यन्दन २ रथ ३ ॥

असौ पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ―

सामान्य रथका नाम १ ॥ पुष्परथ १ ॥ ५१ ॥

कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ॥

स्त्रियोंकी गाडीके नाम ३॥ कर्णीरथ १ प्रवहण २ डयन ३ ॥

क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्या―

छकडेके नाम२ अनस् १ शकट २ ॥

―द्गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ५२ ॥

गाडीके नाम २ ॥ गन्त्री १ (गान्त्री) २ ॥ ५२ ॥

शिविका: याप्ययानं स्या―

पालकीके नाम २ ॥ शिविका १ याप्ययान २ ॥

―द्दोला प्रेखादिका स्त्रियाम् ॥

दोली वा हिंढोलेके नाम २ ॥ दोली १ प्रेखा २ ॥

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥

जिसमे वघेरके चमडेका परदा हो उसके नाम२ ॥ द्वैप १ वैयाघ्र २ ॥ ५३ ॥

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ॥

पीले रंगवाले परदेके रथका नाम १ ॥ पाण्डुकम्बली १ ॥

रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

कम्बलके परदेवाले रथका नाम १ ॥ काम्बल १ ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वैपाद्यो―

भाषा―द्वैप आदि शब्द तीनों लिंगो मे होते है ॥

―रथ्या रथकव्या रथव्रजे ॥

रथके समूहके नाम २ ॥ रथ्या १ रथकव्या २ ॥

धूःस्त्री क्लीबे यानमुखं―

धूरीके नाम २॥ धुर १ यानमुख २॥

स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

तांगेके नाम २॥ रथांग १ अपस्कर २ ॥ ५५ ॥

चक्रं रथाङ्गं―

पहियेके नाम २ ॥ चक्र १ रथाङ्ग २॥

―तस्यान्ते नेमिः स्त्रीस्यात्प्रधिः पुमान् ॥

रथकी नेमिके नाम२॥ नेमि १ प्रधि २॥

पिण्डिका नाभि―

पुट्टीके नाम २॥ पिण्डिका १ नाभि २॥

―रक्षाग्रकीलके तु द्वयोराणिः ॥ ५६ ॥

कुलावेका नाम १ ॥ अणि १ ॥ ५६॥

रथगुप्तिर्वरूथो ना―

लोहे जडेहुये रथके आवरणके नाम २॥ रथगुप्ति १ वरूथ २ ॥

कूबरस्तु युगंधरः ॥

काठके जुएके बांधनेके स्थानके नाम २ ॥ कूबर १ युगधर २ ॥

अनुकर्षो दार्वधःस्थं-

सुगनके नाम १ ॥ अनुकर्ष १ ॥

-प्रासङ्गो ना युगाद्युगः॥५७॥

जुएके नाम २॥प्रासंग १ युग २॥५७॥

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ॥

सवारीके नाम ५॥ वाहन १ यान २ युग्य ३ पत्र ४ धोरण ५

परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकम-स्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

कहार आदि वाहनोंका नाम १ ॥ वैनीतक १ ॥ ५८ ॥

आधोरणा हस्तिपका हस्त्या-रोहा निषादिनः ॥

हाथीवान्‌के नाम ४॥ आधोरण १ हस्तिपक २ हस्त्यारोह ३ निषादिन् ४॥

नियंता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥ सव्येष्ठद-क्षिणस्थौ च संज्ञारथकुटुम्बिनः ॥

रथादिके हाँकनेवालेके नाम ८॥ नियन्तृ १ प्राजितृ ४ यन्तृ ३ सूत ४ क्षत्तृ ५ सारथि ६ ॥५९॥ सव्येष्ठ ७ दक्षिणस्थ ८ ॥

रथिनः स्यन्दनारोहा-

रथके ऊपर चढके लडनेवालोंके नाम २॥ रथिन १ स्यन्दनारोह २ ॥

-अश्वारोहास्तु सादिनः॥६०॥

घुडसवारके नाम २ ॥ अश्वारोह १ सादिन् २ ॥ ६० ॥

भटा योधाश्च योद्धारः-

लडनेवालेके नाम ३ ॥ भट १ योध २ योद्धृ ३ ॥

-सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥

पहरा देनेवालेके नाम २ ॥ सेनारक्ष १ सैनिक २ ॥

सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण सेनाके नाम २ ॥ सैन्य १ सैनिक २ ॥ ६१ ॥

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ॥

हजार सिपाहियोंके मालिकके नाम २ ॥ साहस्र १ सहस्रिन् २ ॥

परिधिस्थः परिचरः-

जो फौज रखानेके अर्थ चारोंतरफ घूमताहै उसके नाम २ ॥ परिधिस्थ १ परिचर २ ॥

—सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२॥

सेनाके मालिकके नाम २ ॥ सेनानी १ वाहिनीपति २ ॥ ६२ ॥

कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री—

योद्धाओंको युद्धके समय पहरनेके वस्त्रके नाम २॥ कञ्चुक१ वारबाण२॥

यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ॥

वध्नंति तत्सारसनमधिकाङ्गो—

इसे पहन कर जो योद्धा पट्टी बाधते हैं उसके नाम २ ॥ सारसन १ अधिकाग २ ॥

—ऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥ शीर्षण्यं च शिरस्त्रे—

टोपके नाम ३ ॥ शीर्षक १ ॥६३ ॥ शीर्षण्य २ शिरस्त्र ३ ॥

—ऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ॥ उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

कवचके नाम७ ॥ तनुत्र १ वर्मन् २ दंशन ३ उरश्छद ४ कंकटक ५ जगर ६ कवच ७ ॥ ६४ ॥

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ॥

पहिरेहुए कवचके नाम ४॥ आमुक्त १ प्रतिमुक्त २ पिनद्ध ३ अपिनद्ध४॥

संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥

मत्रादि कवच धारण किये हुएके नाम ५ ॥ संनद्ध १ वर्मित २ सज्ज ३ दशित ४ व्यूढकंकट ५ ॥ ६५ ॥

त्रिष्वामुक्तादयो—

भाषा ॥ आमुक्त आदि शब्द तीनो लिंगोमें होतेहैं ॥

—वर्मभृतां कावचिकं गणे ॥

कवच धारण करनेवालोंके समूहका नाम १ ॥ कावचिक १ ॥

पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥ पद्गश्च पदिकश्चा—

पैदलके नाम ७ ॥ पदाति १ पत्ति २ पदग ३ पादातिक ४ पदाजि ५ ॥ ६६ ॥ पद्ग ३ पदिक ७ ॥

—ऽथ पादातं पत्तिसंहतिः ॥

पैदलसमूहके नाम २ ॥ पादात १ पत्तिसहति २ ॥

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

जो हथियार बांधकर जीविका करते हैं उनके नाम ४॥शस्त्राजीव १ काण्डपृष्ठ २ आयुधीय३ आयुधिक४॥६७॥

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुंखवत् ॥

तीरन्दाजके नाम ३ ॥ कृतहस्त१ सुप्रयोगविशिख २ कृतपुंख ३ ॥

अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्य-इच्युतसायकः ॥ ६८ ॥

जिसका तीर निशानेसे चूक जाय उसका नाम १॥अपराद्धपृषत्क १॥ ६८॥

धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः ॥

धनु वा बाण बाधनेवालेके नाम ६ ॥ धन्विन् १ धनुष्मत् २ धानुष्क निषंगिन् ४ अस्त्रिन् ५ धनुर्धर ६ ॥

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः-

केवल बाण बांधनेवालेके नाम २॥ काण्डवत् १ काण्डीर २ ॥

-शाक्तीकःशक्तिहेतिकः॥६९॥

शक्ति आदिके शस्त्रधारीके नाम२॥ शाक्तीक १ शक्तिहेतिक २ ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधहेतिकौ ॥

लठिया रखनेवालेका नाम १ ॥ याष्टीक १ ॥ फरसा बांधनेवालेका नाम १ ॥ पारश्वधिक १ ॥

नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्या-

तरवार बांधेहुएके नाम २॥ नैस्त्रिंशिक १ असिहेति २ ॥

-त्समौ प्रासिककौन्तिकौ७०॥

वल्लमके बांधनेवालेका नाम १ ॥ प्रासिक १ ॥ भालेवालेका नाम १ ॥ कौन्तिक १ ॥ ७० ॥

चर्मी फलकपाणिः स्या-

ढाल बांधनेवालेके नाम२॥ चर्म्मिन् १ फलकपाणि २ ॥

-त्पताकी वैजयन्तिकः ॥

निशान बांधनेवालेके नाम २ ॥ पताकिन् १ वैजयन्तिक २ ॥

अनुप्लवः सहायश्चाऽनुचरोऽभिचरः समाः ॥ ७१ ॥

सहायकके नाम ४ ॥ अनुप्लव १ सहाय २ अनुचर ३ अभिचर४॥७१॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः ॥ पुरोगमः पुरोगामी-

अग्रगामीके नाम ७ ॥ पुरोग १ अग्रेसर २ प्रष्ठ ३ अग्रतस्सर ४ पुरस्सर ५ पुरोगम ६ पुरोगामिन् ७॥

-मन्दगामी तु मन्थरः॥७२॥

धीरे चलनेवालेके नाम २ ॥ मन्दगामिन् १ मन्थर २ ॥ ७२ ॥

जंघालोऽतिजवस्तुल्यौ-

जादे चलनेवालेके नाम २ ॥ जंघाल १ अतिजव २ ॥

जंघाकारिकजांघिकौ ॥

जो जंघाके बलसे जीता है उसके नाम २॥ जघाकारिक १ जांघिक २॥

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

वेगसे चलनेवालेके नाम ६॥ तरस्विन् १ त्वरित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन ५ जव ६ ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतुं–

जिसे जीतसके उसका नाम १ ॥ जय्य १ ॥

–जेयो जेतव्यमात्रके ॥

जीतने लायकका नाम १॥ जेय १

जैत्रस्तु जेता–

जो जीतसके उसके नाम २॥ जैत्र १ जेतृ २ ॥

–यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ॥

सामर्थ्यसे शत्रुओंके संमुख जानेवाले के नाम ३ ॥७४॥ अभ्यमित्र्य १ अभ्यमित्रीय २ अभ्यमित्रीण ३ ॥

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३ ॥ ऊर्जस्वल १ ऊर्जस्विन् २ ऊर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो–

बडी छातीवालेके नाम २॥ उरस्वत् १ उरसिल २ ॥

–रथिनो रथिको रथी ॥

रथके स्वामीके नाम ३॥ रथिन १ रथिक २ रथिन् ३ ॥

कामङ्गाम्यनुकामीनो–

जो अपने मनसे चलता हो उसका नाम १ ॥ अनुकामीन १ ॥

–ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥

वारम्वार चलनेवालेका नाम १ ॥ अत्यन्तीन १ ॥ ७६ ॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तो–

शूरके नाम ३ ॥ शूर १ वीर २ विक्रान्त ३ ॥

–जेता जिष्णुश्च जित्वरः ॥

जीतने वालेके नाम ३॥ जेतृ १ जिष्णु जित्वर ३ ॥

सांयुगीनो रणे साधु–

युद्धकुशलका नाम १॥ सांयुगीन १॥

–शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥७७॥

भाषा–शस्त्राजीव आदि शब्द तीनों लिंगों में होते है ॥७७॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ॥ वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥७८॥

सेनाके नाम ११॥ ध्वजिनी १ वाहिनी २ सेना ३ पृतना ४ अनीकिनी ५ चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९ चक्र १० अनीक ११ ॥ ७८ ॥

व्यूहस्तु बलविन्यासो–

सेनाकी रचनाके नाम २॥ व्यूह १ बलविन्यास २ ॥

-भेदा दण्डादयो युधि ॥

सेनाकी रचनाके अनेकभेद १॥ दण्ड इत्यादि १॥ ये चक्र, मयूर, कमल आदिक व्यूह है.

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः-

व्यूहके पीछेके नाम २॥प्रत्यासार १ व्यूहपार्ष्णि २ ॥

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

फौजके पीछेके नाम २ ॥ सैन्यपृष्ठ १ प्रतिग्रह २ ॥ ७९ ॥

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्च पदातिका ॥

जिसमें हाथी १ रथ १ घोडे ३ पैदल ५ हों उस सेनाका नाम १॥ पत्ति १॥

पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ॥ अनीकिनी-

क्रमसे तिगुने पत्ति (पैदलों)के नाम ७ ॥ ८० ॥ (तीन पत्ति (पैदलों)का नाम) ॥ सेनामुख १ (तीन सेनामुखका नाम) गुल्म १॥ (तीन गुल्मका नाम) गण १ ॥ (तीन गणका नाम) वाहिनी १ ॥ (तीन वाहिनीका नाम) पृतना १ ॥ (तीन पतनाका नाम)चमू १॥ (तीन चमूका नाम) अनीकिनी १॥

-दशानीकिन्यक्षौहि-

दश अनीकिनीका नाम १ ॥ अक्षौहिणी १ ॥

अक्षौहिणी आदि सेनाका प्रमाण ।

सेना	पैदल (पत्ति)	सेना मुख	गुल्म	गण	वाहिनी	पृतना	चमू	अनीकिनी	अक्षौहिणी
हाथी, रथ	१	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	२१८७०
घोडे	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	६५६१	६५६१०
पैदल	६	१५	४५	१३५	४०५	१२५५	३६४५	१०९३५	१०९३५०

-थ संपदि ॥ ८१ ॥ संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च-

सम्पत्तिके नाम ४॥ सपद १॥ ८१॥ संपत्ति २ श्री ३ लक्ष्मी ४ ॥

-विपत्त्यां विपदापदौ ॥

विपत्तिके नाम ३ ॥ विपत्ति १ विपद् २ आपद् ३ ॥

आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्र-

हथियारके नाम ४ ॥ आयुध १ प्रह-रण २ शस्त्र ३ अस्त्र ४ ॥

—मथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥ धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ॥ इष्वासोऽ—

धनुषके नाम ७ ॥ ८२ ॥ धनुस् १ चाप २ धन्वन् ३ शरासन ४ कोदण्ड ५ कार्मुक ६ इष्वास ७ ॥

—प्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥

राजा कर्णके धनुषके नाम १ ॥ कालपृष्ठ २ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसकौ ॥

अर्जुनके धनुषका नाम २ ॥ गाण्डीव १ गाण्डिव २ ॥

कोटिरस्याटनी—

धनुषके दोनों कोनोंके नाम २ ॥ कोटि १ अटनी २ ॥

—गोधातले ज्याघातवारणे ८४ ॥

चमडेके दस्तानोंके नाम २ ॥ गोधा १ तल २ ॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं—

धनुषके मध्यभागका नाम १ ॥ लस्तक १ ॥

—मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ॥

धनुषकी प्रत्यञ्चाके नाम ४ ॥ मौर्वी १ ज्या २ शिञ्जिनी ३ गुण ४ ॥

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

धनुषधारियोंके आसनविशेषके नाम २ ॥ प्रत्यालीढ १ आलीढ २ ॥ इत्यादि पांच स्थान ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च—

निशानेके नाम ३ ॥ लक्ष १ लक्ष्य २ शरव्य ३ ॥

—शराभ्यास उपासनम् ॥

बाणछोडनेके अभ्यासके नाम २ ॥ शराभ्यास १ उपासन २ ॥

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ॥

बाणके नाम १२ ॥ पृषत्क १ बाण २ विशिख ३ अजिह्मग ४ खग ५ आशुग ६ ॥ ८६ ॥ कलम्ब ७ मार्गण ७ शर ९ पत्रिन् १० रोप ११ इषु १२ ॥

प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः—

लोहेके तीरके नाम २ ॥ प्रक्ष्वेडन १ नाराच २ ॥

—पक्षो वाज—

बाणके पक्षके नाम २ ॥ पक्ष १ वाज २ ॥

—स्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥

अर्थ—लिप्तकपर्यंत सब शब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ८७ ॥

निरस्तः प्रहिते बाणे—

छोडेहुये बाणका नाम १॥ निरस्त १॥

—विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ॥

विषयुक्त बाणके नाम ३॥ विषाक्त १ दिग्ध २ लिप्तक ३ ॥

तूणोपासङ्गतूणीरनिषंगा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८८ ॥ तूण्यां—

तरकसके नाम ६॥ तूण १ उपासंग २ तूणीर ३ निषंग ४ इषुधि ५ ॥ ॥ ८८ ॥ तूणी ६ ॥

—खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ॥ कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

तलवारके नाम९॥ खड्ग १ निस्त्रिंश २ चन्द्रहास ३ असि ४ रिष्टि ५ कौक्षेयक ६ मण्डलाग्र ७ करवाल ८ कृपाण ९ ॥ ८९ ॥

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्या—

तलवारआदिकी मूठका नाम १॥ त्सरु १॥

—न्मेखला तन्निबन्धनम् ॥

तलवारके म्यानका नाम १॥ मेखला १॥

फलकोऽस्त्री फलं चर्म—

ढालके नाम ३ ॥ फलक १ फल २ चर्मन् ३ ॥

—संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥

ढालकी मूठका नाम १॥ संग्राह १॥ ९०॥

द्रुघणो मुद्गरघनौ—

मुद्गरकेनाम३॥ द्रुघण १ मुद्गर १ २ घन ३॥

—स्यादीली करवालिका ॥

गुप्तीके नाम२॥ ईली १ करवालिका २॥

भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ—

गोफनके नाम२॥ भिन्दिपाल १ सृग २॥

—परिघः परिघातिनः ॥ ९१॥

परिघके नाम २॥ परिघ १ परिघातिन् २ ॥ ९१ ॥

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ॥

कुल्हाडीके नाम ४ ॥ कुठार १ स्वधिति २ परशु ३ परश्वध ४ ॥

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥

छुरीके नाम ४ ॥ शस्त्री १ असिपुत्री २ छुरिका ३ असिधेनुका ४॥ ९२॥

वा पुंसि शल्यं शंकुर्ना—

बर्छीके नाम२॥ शल्य १ शंकु२ ॥

सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम्—

गडासके नाम२॥ सर्वला १ तोमर २॥

प्रासस्तु कुन्तः—

भालेके नाम२॥ प्रास १ कुन्त२॥

—कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥

खड्गादिकी नोकके नाम ४॥कोण १ पालि २ अश्रि ३ कोटि ४ ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ॥

सेनाकी तैयारीके नाम ३ ॥ सर्वाभिसार १ सर्वौघ २ सर्वसंनहन ३ ॥

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥

महानवमीके पहिले लड़ाईके निमित्त राजाओंके शस्त्र पूजनेका नाम १ ॥ लोहाभिसार १ ॥ ९४ ॥

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ॥

शत्रुके ऊपर सेना चढनेका नाम १ ॥ अभिषेणन १ ॥

यात्रा व्रज्याऽभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

चलनेके नाम ६ ॥ यात्रा १ व्रज्या २ अभिनिर्याण ३ प्रस्थान ४ गमन ५ गम ६ ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं–

सेनाके फैलनेके नाम २ ॥ आसार १ प्रसरण २ ॥

–प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥

चलीहुई सेनाके नाम २ ॥ प्रचक्र १ चलित २ ॥

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

निडर होकर शत्रुपर चढाईका नाम १ ॥ अभिक्रम १ ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकराः–

प्रातःकालके राजाके जगानेवालोंके नाम २॥ वैतालिक १ बोधकर २॥

–श्चाक्रिका घाण्टिकाऽर्थकाः ॥

घड़ियालीके नाम २ ॥ चाक्रिक १ घाण्टिक २ ॥

स्युर्मागधास्तु मगधाः–

राजाका वंश वर्णन करनेवालोंके नाम २ ॥ मागध १ ॥ मगध २ ॥

–र्वन्दिनः स्तुतिपाठकाः॥९७॥

भाटके नाम २ ॥ बन्दिन् १ स्तुतिपाठक २ ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु समयात्सङ्ग्रामादनिवर्तिनः ॥

शपथ खाकर युद्धमें पीठ न देनेवालेका नाम १ ॥ संशप्तक १ ॥

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

धूलिके नाम ४ ॥ रेणु १ धूलि २ पांसु ३ रजस् ४ ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षोदः–

चूनके नाम २॥ चूर्ण १ क्षोद २॥

—समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले॥

अकुलानेके नाम २ ॥ समुत्पिञ्ज १ पिञ्जल २ ॥

पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

झंडेके नाम ४ ॥ पताका १ वैजयन्ती २ केतन ३ ध्वज ४ ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ॥

भ यं युद्धके स्थानका नाम १ ॥ वीराशंसन १ ॥

अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

जिसमें वीर कहैं कि, हम पहले लडैंगे हम पहले लडैंगे उस लडाईका नाम १ ॥ अहपूर्विका १ ॥ १०० ॥

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ॥

जिसमें कहैं कि हम पुरुष हैं हमही लडैंगे उसका नाम १॥ आहोपुरुपिका १॥

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः ॥ १०१ ॥

आपसके इस कहनेको कि, हम शक्त हैं हम लड सक्तेहैं उसका नाम १ ॥ अहमहमिका १ ॥ १०१ ॥

द्रविणं तरःसहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ॥ शक्तिः पराक्रमः प्राणो—

पराक्रमके नाम १० ॥ द्रविण १ तरस् २ सहस् ३ बल ४ शौर्य ५ स्थामन् ६ शुष्मन् ७ शक्ति ८ पराक्रम ९ प्राण १० ॥

—विक्रमस्त्वतिशक्तिता १०२॥

अतिपराक्रमके नाम २ ॥ विक्रम १ अतिशक्तिता २ ॥ १०२ ॥

वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥

लडनेके निमित्त पहले या पीछे नसा खाने पीनेका नाम १ ॥ वीरपान १ ॥

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥ मृधमास्कन्दनं सङ्ख्यं समीकं साम्परायिकम् ॥ अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥ संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥ समुदायः स्त्रियः संयत्सामित्याजिसमिद्युधः ॥

युद्धके नाम३१॥ युद्ध १ आयोधन२ जन्य ३ प्रधन ४प्रविदारण ५॥१०३॥ मृध६ आस्कन्दन ७ संख्य ८समीक ९

सांपरायिक १० समर ११ अनीक १२ रण १३ कलह १४ विग्रह १५॥१०४॥ संप्रहार १६ अभिसम्पात १७ कलि १८ संस्फोट १९ संयुग २० अभ्यामर्द २१ समाघात २२ संग्राम २३ अभ्यागम २४ आहव २५॥१०५॥ समुदाय २६ संयत् २७ समिति २८ आजि २९ समित् ३० युध् ३१॥

नियुद्धं बाहुयुद्धे स्या-

भुजाके युद्धके नाम २॥ नियुद्ध १ बाहुयुद्ध २॥

त्तुमुलं रणसंकुले॥ १०६॥

घोरसंग्रामका नाम १॥ तुमुल १॥ ॥ १०६॥

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्या-

वीरोंके गर्जनेके नाम २॥ क्ष्वेडा १ सिंहनाद २॥

त्करिणां घटना घटा॥

हाथियोंके समूहके नाम २॥ घटना १ घटा २॥

क्रन्दनं योधसंरावो-

युद्धके शब्दका नाम १॥ क्रन्दन १॥

-बृंहितं करिगर्जितम्॥१०७॥

हाथीके शब्दका नाम १॥ बृंहित १॥ ॥ १०७॥

विस्फारो धनुषः स्वानः-

धनुषके शब्दका नाम १॥ विस्फार १॥

-पटहाडम्बरौ समौ॥

नगाडेके शब्दके नाम २॥ पटह १ आडंबर २॥

प्रसभं तु बलात्कारो हठो-

हठके नाम ३॥ प्रसभ १ बलात्कार २ हठ ३॥

-ऽथ स्खलितं छलम्॥१०८॥

धोखादेनेके नाम २॥ स्खलित १ छल २॥ १०८॥

अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम्॥

उत्पातके नाम ३॥ अजन्य १ उत्पात २ उपसर्ग ३॥

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहो-

मूर्च्छाके नाम ३॥ मूर्च्छा १ कश्मल २ मोह ३॥

-प्यवमर्दस्तु पीडनम्॥१०९॥

देशादिको उपद्रव देनेके नाम २॥ अवमर्द १ पीडन २॥ १०९॥

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं-

धोखेसे दबालेनेके नाम २॥ अभ्यवस्कन्दन १ अभ्यासादन २॥

-विजयो जयः॥

जीतके नाम २॥ विजय १ जय २॥

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा॥ ११०॥

वैर दूरकरनेके नाम ३॥ वैरशुद्धि १ प्रतीकार २ वैरनिर्यातन ३॥११०॥

प्रद्रावोद्द्रावसन्द्रावसन्दावा विद्रवो द्रवः ॥ अपक्रमोऽपयानं च—

पलायन (भागने) के नाम ८ ॥ प्रद्राव १ उद्द्राव २ संद्राव ३ संदाव ४ विद्रव ५ द्रव ६ अपक्रम ७ अपयान ८॥

—रणेभङ्गः पराजयः ॥१११॥

हारके नाम २ ॥ रणेभङ्ग १ पराजय २ ॥ १११ ॥

पराजितपराभूतौ—

हारेहुएके नाम २॥ पराजित १ पराभूत २ ॥

—त्रिषु नष्टतिरोहितौ ॥

छिपेहुएके नाम २॥ नष्ट १ तिरोहित २ ॥

प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥ प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम् ॥ निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥ निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥ उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ॥ आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ११५

मारनेके नाम ३० ॥ प्रमापण १ निबर्हण २ निकारण ३ विशारण ४ ॥ ॥११२॥ प्रवासन ५ परासन ६ निषूदन ७ निर्हिंसन ८ निर्वासन ९ संज्ञपन १० निर्ग्रन्थन ११ अपासन १२॥ ॥ ११३॥ निस्तर्हण १३ निहनन १४ क्षणन १५ परिवर्जन १६ निर्वापण १७ विशसन १८ मारण १९ प्रतिघातन २० ॥ ११४ ॥ उद्वासन २१ प्रमथन २२ क्रथन २३ उज्जासन २४ आलम्भ २५ पिञ्ज २६ विशर २७ ॥ घात २८ उन्माथ २९ वध ३० ॥ ॥ ११५ ॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ॥ अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६ ॥

मृत्युके नाम १०॥ पञ्चता १ कालधर्म २ दिष्टान्त ३ प्रलय ४ अत्यय ५ अन्त ६ नाश ७ मृत्यु ८ मरण ९ निधन १० ॥ ११६ ॥

परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः॥ मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते—

मृत्युको प्राप्तहुयेके नाम ७॥ परासु १ प्राप्तपञ्चत्व २ परेत ३ प्रेत ४ संस्थित ५ मृत ६ प्रमीत ७ ॥

-चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥

चिताके नाम ३ ॥ चिता १ चित्या २ चिति ३ ॥ ११७ ॥

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ॥

शिररहित चेष्टा करनेवाले शरीरका नाम १ ॥ कबन्ध १ ॥

श्मशानं स्यात्पितृवनं-

श्मशानके नाम २ ॥ श्मशान १ पितृवन २ ॥

-कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥

मुर्देके नाम २ ॥ कुणप १ शव २ ॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहो वन्द्यां-

बंदीके नाम ३ ॥ प्रग्रह १ उपग्रह वन्दी ३ ॥

-कारा स्याद्बन्धनालयं ॥

जेहलखानेका नाम १ ॥ कारा १ ॥

पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं-

प्राणके नाम २ ॥ असु १ प्राण २ ॥

-जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

जीवके नाम २ ॥ जीव १ असुधारण २ ॥ ११९ ॥

आयुर्जीवितकालो-

आयुका नाम १ ॥ आयुस् १ ॥

-ना जीवातुर्जीवनौषधम् ॥

मृतसंजीवनी बूटीके नाम २ ॥ जीवातु १ जीवनौषध २ ॥

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९.

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ॥

वैश्यके नाम ६ ॥ ऊरव्य १ ऊरुज २ अर्य ३ वैश्य ४ भूमिस्पृक् ५ विश् ६ ॥

आजीवो जीविका, वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

जीविकाके नाम ६ ॥ आजीव १ जीविका २ वार्त्ता ३ वृत्ति ४ वर्त्तन ५ जीवन ६ ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ॥

जीविकाके भेद ३ ॥ (खेती करनेका नाम) कृषि १ ॥ (पशुपालनका नाम) पाशुपाल्य २ ॥ (व्यापारका नाम) वाणिज्य ३ ॥ ये तीनों वैश्यवृत्ति हैं ॥

सेवा श्ववृत्ति-

परसेवाके नाम २ ॥ सेवा १ श्ववृत्ति २ ॥

-रनृतं कृषि-

खेतीकेनाम २ ॥ अमृत १ कृषि२ ॥

–रुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

उञ्छवृत्तिके नाम ३ ॥ उञ्छ १ शिल २ ऋत ३ ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ॥

मांगनेसे प्राप्तिहुई वस्तुका नाम१॥ मृत १ ॥ विना मागे प्राप्तहुई वस्तुका नाम १ ॥ अमृत १ ॥

सत्यानृतं वणिग्भावः स्या–

व्यापारके नाम २ ॥ सत्यानृत १ वणिग्भाव २ ॥

–दृणं पर्युदञ्चनम् ॥३॥ उद्धारो–

कर्जके नाम ३॥ऋण १ पर्युदञ्चन २ ॥ ३ ॥ उद्धार ३ ॥

–ऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ॥

व्याजके नाम ३ ॥ अर्थप्रयोग १ कुसीद २ वृद्धिजीविका ३ ॥

याच्ञाप्तं याचितकं–

मांगनेकी वस्तुका नाम१॥याचितक१॥

–निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

बायदेपर लीहुई वस्तुका नाम १॥ आपमित्यक १ ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ॥

ऋण देनेवालेका नाम १॥ उत्तमर्ण १॥ऋणकेलेनेवालेकानाम१॥अधमर्ण१।

कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

व्याजसे जीनेवालेके नाम४॥कुसीदिक १ वार्धुषिक २ वृद्ध्याजीव ३ वार्धुषि ४ ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ॥

किसानके नाम ४ ॥ क्षेत्रा जीव१ कर्षक २ कृषिक ३ कृषीवल ४ ॥

क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥

व्रीहि होनेके योग्य खेतका नाम १ ॥ व्रैहेय १ ॥

धानके खेतका नाम१॥शालेय१॥६॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत् ॥

जौके खेतका नाम१॥ यव्य १॥छोटे जौके खेतका नाम १ ॥ यवक्य १ ॥ साठीके खेतका नाम १॥षष्टिक्य १ ॥

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभंगाद्विरूपता ॥ ७ ॥

तिलके खेतके नाम २ ॥ तिल्य १ तैलीन २ ॥ उरद होनेवालेके नाम २॥ माष्य१ मापीण२॥ अलसी होनेवालेके

नाम २ ॥ उम्य १ औमीन २ ॥ अणुके होनेवालेके नाम २ ॥ अणव्य १ आणवीन २ ॥ भग (ताग) होनेवालेके नाम २ ॥ भग्य २ भगीन २ ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम् ॥

मूगहोनेवालेका नाम १ ॥ मौद्गीन १ ॥ कोदो होनेवाले खेतका नाम १॥ कौद्रवीण १ ॥ चणेहोनेवाले खेतका नाम १ ॥ चाणकीन १ ॥ गेहूं होनेवालेका नाम १॥ गौधूमीन १ इत्यादि॥

बीजाकृत नुप्तकृष्टे-

बीज बोनेका नाम १ ॥ बीजाकृत १॥

-सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोतेहुए खेतके नाम ३ ॥ सीत्य १ कृष्ट २ हल्य ३ ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ॥

तीनवार जुतेहुये खेतके नाम ४ ॥ त्रिगुणाकृत १ तृतीयाकृत २ त्रिहल्य ३ त्रिसीत्य ४ ॥

द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

दोवार जुतेहुयेके नाम ४॥ द्विगुणाकृत १ द्वितीयाकृत २ द्विहल्य ३ द्विसीत्य ४ ॥ ९ ॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ॥

जिसमें द्रोण (१०२४) तोला धान-आदि बोया जाय उस खेतका नाम १॥ द्रौणिक १ ॥ आढक (२५६) तोला भर वालेका नाम १॥ आढकिक १॥ आदि

खारीवापस्तु खारीक-

जिसमें खारी (४ द्रोण अर्थात् ४०९६) तोला भर अन्न बोया जाय उसका नाम ॥ १ ॥ खारीक १ ॥

-उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

उत्तमर्णादि शब्द तीनो लिंगोंमे होते हे ॥ १० ॥

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्र-

खेतके नाम ३॥ वप्र १ केदार २ क्षेत्र ३॥

-मस्य तु ॥ केदारकं स्यात्केदार्यं क्षैत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥

खेतके समूहके नाम ४॥ कैदारक १ कैदार्य २ क्षैत्र ३ कैदारिक ४॥ ११ ॥

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि-

ढेलेके नाम २ ॥ लोष्ट १ लेष्टु २॥

-कोटिशो लोष्टभेदनः ॥

मूंगरीके नाम २ ॥ कोटिश १ लोष्टभेदन २ ॥

प्राजनं तोदनं तोत्रं-

पैने (लाठी, चाबुक आदि) के नाम ३ ॥ प्राजन १ तोदन २ तोत्र ३ ॥

-खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

कुदालके नाम २ ॥ खनित्र १ अवदारण २ ॥ १२ ॥

दात्रं लवित्र-

खुरपा फावडा आदिके नाम २॥ दात्र १ लवित्र २ ॥

-माबन्धो योत्रं योक्त्र-

नाथके नाम ३ ॥ आबन्ध १ योत्र २ योक्त्र ३ ॥

-मथो फलम् ॥ निरीशं कुटकं फालः कृषको-

फाल अर्थात् हलके नीचे लगेहुए लोहेके नाम ५ ॥ फल १ निरीश १ कुटक ३ फाल ४ कृषक ५ ॥

-लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥ गोदारणं च सीरो-

हलके नाम ४ ॥ लाङ्गल १ हल २ ॥ १३ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥

-ऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः॥

सैले (सिमल) के नाम २ ॥ शम्या १ युगकीलक २ ॥

-ईषा लाङ्गलदण्डः स्या-

हलस (हाल) के नाम २ ॥ ईषा १ लाङ्गलदण्ड २ ॥

-त्सीता लाङ्गलपद्धतिः॥ १४॥

हलकी रेखा (खूड) के नाम २॥ सीता १ लाङ्गलपद्धति २ ॥ १४ ॥

पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ॥

जो धान्यमर्दनकरनेके स्थान अर्थात् पैरमें गाडेहुये पशु बांधनेके खूंटे (मेढ) के नाम २ ॥ मेधि १ खलेदारु २ ॥

आशुर्व्रीहिः पाटलः स्या-

सट्टी (धान) के नाम ३ ॥ आशु १ व्रीहि २ पाटल ३ ॥

-च्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥

जौके नाम २॥शितशूक १यव२॥१५॥

तोक्मस्तु तत्र हरिते-

हरे जौका नाम १ ॥ तोक्म १ ॥

-कलायस्तु सतीनकः ॥

हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्-

मटरके नाम ४ ॥ कलाय १ सतीनक २ हरेणु ३ खण्डिक ४ ॥

-कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

कोदोंके नाम २ ॥ कोरदूष १, कोद्रव २ ॥ १६ ॥

मङ्गल्यको मसूरो-

मसूरके नाम २ ॥ मगल्यक १ मसूर २ ॥

-ऽथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ ॥ वनमुद्गे-

मोठके नाम ३ ॥ मकुष्ठक १ मयुष्ठक २ वनमुद्ग ३ ॥

सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

सरसोंके नाम ३॥ सर्षप १ तन्तुभ २ कदम्बक ३ ॥ १७ ॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवलो-

सफेदसरसोका नाम १॥ सिद्धार्थ १॥

-गोधूमः सुमनः समौ ॥

गेहूंके नाम २॥ गोधूम १ सुमन २॥

स्याद्यावकस्तु कुल्माष-

कुलथीके नाम २॥ यावक १ कुल्माष २॥

-श्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

अरहरे (चने) के नाम २॥ चणक १ हरिमन्थक २ ॥ १८ ॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ॥

'फलहीन' 'वांझतिल' 'रान तिल' के नाम २॥ तिलपेज १ तिलपिंज २ ॥

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

राईके नाम ५ ॥ क्षव १ क्षुताभिजनन २ राजिका ३ कृष्णिका ४ आसुरी ५ ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गू द्वे-

कंगनीके नाम २॥ कगु १ प्रियंगु २॥

-अतसी स्यादुमा क्षुमा ॥

अलसीके नाम ३॥ अतसी १ उमा २ क्षुमा ३ ॥

मातुलानी तु भङ्गायाम्-

भगके नाम २ ॥ मातुलानी १ भगा २ ॥

व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

चीनाधान्यका नाम १॥ अणु १॥ २०

किंशारुः सस्यशूकं स्या-

जौ इत्यादिके तीखे अग्रभाग (सीकुर) के नाम २ ॥ किंशारु १ सस्यशूक २ ॥

-त्कणिशं सस्यमञ्जरी ॥

धान्यकी बालके नाम २॥ कणिश १ सस्यमजरी २ ॥

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः-

धान्यमात्रके नाम ३ ॥ धान्य १ व्रीहि २ स्तम्बकरि ३ ॥

-स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

यव आदिकी जडके नाम २॥ स्तम्ब १ गुच्छ २ ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य-

नलुआके नाम २॥ नाडी १ नाल २॥

-पलालोऽस्त्री स निष्फलः ॥

प्यालका नाम १॥ पलाल १ ॥

कडङ्गरो बुसं क्लीबे-

मोटे भुसके नाम २ ॥ कडङ्गर १ बुस २ ॥

-धान्यत्वाचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

भूसीका नाम १॥ तुष १ ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे-

यव आदिके चिकने और तीखे अग्रभागके नाम २ ॥ शूक १ श्लक्ष्ण-तीक्ष्णाग्र २ ॥

-शमी शिम्बा-

मटर आदिकी फलीके नाम २ ॥ शमी १ शिम्बा २ ॥

-त्रिषूत्तरे ॥

आगे कहे हुए सब शब्द तीनों लिङ्गोंमे होंगे ॥

-ऋद्धमावसितं धान्यं-

तृण दूर करके पैरेमे इकट्ठे करने योग्य धान्यके नाम २॥ऋद्ध१आवसित २॥

-पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

साफ करके इकट्ठे किए हुये धान्यके नाम २ ॥ पूत १ बहुलीकृत २॥२३॥

माषादयः शमीधान्ये ॥

फलीके भीतर होनेवाले धान्य माष आदि हैं ॥

-शूकधान्ये यवादयः ॥

यव आदि शूक धान्य अर्थात् बालसे पैदा होनेवाले है ॥

शालयः कलमाद्याश्च षष्टिका-द्याश्च-

यव आदि और शाठी आदि शालि-धान्य कहलाते हैं ॥

-पुंस्यमी ॥ २४ ॥

माष आदि शब्द पुँल्लिङ्गमें होते हैं ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवाराः-

पशाई आदि मुनियोके धान्यका नाम १ ॥ नीवार १ ॥

-स्त्री गवेधुर्गवेधुका ॥

जिसको कोंकणदेशमें कसाद्द कसा कहतेहैं उस मुनिअन्नके नाम २ ॥ गवेधु १ ॥ गवेधुका २ ॥

अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्या-

मूसलके नाम २ ॥ अयोग्र १ मुसल २ ॥

-दुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥

ओखलीके नाम २ ॥ उदूखल १ उलूखल २५ ॥

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री-

छाजके नाम २॥प्रस्फोटन१शूर्प२॥

-चालनी तितउः पुमान् ॥

चलनीके नाम २ ॥ चालनी १ तितउ २ ॥

स्यूतप्रसेवौ-

वस्त्र सण आदिसे बने हुए थैलेके नाम २ ॥ स्यूत १ प्रसेव२ ॥

-कण्डोलपिटौ-

टोकरीके नाम२॥ कण्डोल १ पिट२ ॥

कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

चटाईके नाम २॥ कट १ किलिंजक २ ॥ २६ ॥

समानौ–

यह समान लिंग है ॥

–रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ॥

रसोईके स्थानके नाम ३॥ रसवती १ पाकस्थान २ महानस ३ ॥

पौरोगवस्तदध्यक्षः–

रसोईके अधिकारीके नाम २॥पौरोगव १ तदध्यक्ष (महानसाध्यक्ष) २॥

–सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ॥

रसोइयेके नाम ७ ॥ सूपकार १ बल्लव २ ॥२७॥ आरालिक३ आन्धसिक ४ सूद ५ औदनिक ६ गुण ७॥

आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

पुआ आदि बनानेवालेके नाम३ ॥ आपूपिक १ कान्दविक २भक्ष्यकार३॥ ये शब्द तीनों लिंगोंमें होतेहैं ॥२८॥

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणीचुल्लिरन्तिका ॥

चूल्हेके नाम५॥ अश्मन्त १उद्धान २ अधिश्रयणी ३चुल्लि४ अन्तिका५॥

अंगारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥ हसन्य–

वरोसी (सिगडीके) नाम ४ ॥ अगारधानिका१अंगारशकटी२ हसन्ती ३ ॥ २९ ॥ हसनी ४ ॥

–प्यथ न स्त्री स्यादंगारो–

अंगारेका नाम १॥ अगार १ ॥

–ऽलातमुल्मुकम् ॥

जलतेहुए काष्टके नाम२ ॥ अलात १ उल्मुक २ ॥

क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो–

भाडके नाम २ ॥ अम्बरीष१भ्राष्ट्र२॥

–ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

कढाईके नाम २ ॥ कन्दु १ स्वेदनी २ ॥ ३० ॥

अलिञ्जरः स्यान्माणिकः–

माट (बडा घडाके) नाम २ ॥ अलिञ्जर १ मणिक २ ॥

–कर्कर्यालुर्गलन्तिका ॥

कठौतीके नाम ३ ॥ कर्करी १ आलु २ गलन्तिका ३ ॥

पिठरः स्थाल्युखाकुण्डं–

बटलोईके नाम ४ ॥ पिठर १ स्थाली २ उखा ३ कुण्ड ४ ॥

–कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१॥

घटः कुटनिपा–

घोडेके नाम ४ ॥ कलश १ ॥ ॥ ३१ ॥ घट २ कुट ३ निप ४ ॥

–वस्त्री शरावो वर्धमानकः ॥

सरवेके नाम २ ॥ शराव १ वर्द्ध-भानक २ ॥

ऋजीषं पिष्टपचनं–

तवेके नाम २ ॥ ऋजीष १ पिष्ट-पचन २ ॥

–कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥३२॥

कटोरीके नाम २ ॥कंस १ पान-भाजन २॥ ३२ ॥

कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं–

कुप्पेका नाम १ ॥ कुतू १ ॥

–सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ॥

कुप्पीका नाम १ ॥ कुतुप १ ॥

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥

बरतनके नाम ५ ॥ आपवन १ भाण्ड२ पात्र३अमत्र ४ भाजन५॥३३॥

दार्विः कम्बिः खजाका च–

कर्छलीके नाम ३॥ दार्वि १ कम्बि २ खजाका ३॥

स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ॥

डोईके नाम २॥ तर्दू १ दारुहस्तक२॥

अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रु–

शाकके नाम ३ ॥ शाक १ हरि-तक २ शिग्रु ३ ॥

–रस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥

कलम्बश्च कडम्बश्च–

शाककी डंडीके नाम ३॥ नाडिका १ ॥ ३४ ॥ कलम्ब २ कडम्ब ३ ॥

–वेसवार उपस्करः ॥

मसालेके नाम २॥ वेसवार १ उपस्कर २ ॥

तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षा-म्लम्–

चूख (अमचूरआदि) के नाम ३॥ तिन्तिडीक १ चुक्र २ वृक्षाम्ल ३ ॥

–मथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥

मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ॥

मिर्चके नाम ६ ॥वेल्लज १॥३५॥ मरीच २ कोलक ३ कृष्ण ४ ऊषण ५ धर्मपत्तन ६ ॥

जीरको जरणोऽजाजी कणा–

जीरेके नाम ४ ॥ जीरक १ जरण २ अजाजी ३ कणा ४ ॥

–कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥

सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ॥

काले जीरेके नाम ६॥३६॥सुषवी१

कारवी २ पृथ्वी ३ पृथु ४ काला ५ उपकुञ्चिका ६ ॥

आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्या-

अदरखके नाम२॥आर्द्रक १ शृङ्गवेर२॥

-दथ च्छत्रा वितुन्नकम्॥३७॥

कुस्तुम्बुरु च धान्याक-

धनियेंके नाम ४॥ छत्रा १ वितुन्नक २ ॥३७॥ कुस्तुम्बुरु ३ धान्याक ४ ॥

-मथ शुण्ठी महौषधम् ॥

स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

सोंठके नाम ५॥शुण्ठी १ महौषध २ विश्व ३ नागर ४ विश्वभेषज ५॥३८॥

आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च ॥ अवन्तिसोमधान्याम्ल-कुञ्जलानि च काञ्जिके ॥३९॥

काञ्जीके नाम ७ आरनालक १ सौवीर २ कुल्माषाभिषुत ३ अवन्तिसोम ४ धान्याम्ल ५ कुञ्जल ६ काञ्जिक ७॥३९॥

सहस्रवेधि जतुकं वाल्हीकं हिङ्गु रामठम् ॥

हींगके नाम ५॥सहस्रवेधिन् १ जतुक २ वाल्हीक ३ हिंगु ४ रामठ ५ ॥

तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥

हींगके वृक्षके पत्तेके नाम ५ ॥ कारवी १ पृथ्वी २ वाष्पिका ३ कबरी ४ पृथु ५ ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ॥

हलदीके नाम ५॥ निशा १ कांचनी २ पीता ३ हरिद्रा ४ वरवर्णिनी ५ ॥

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

समुद्रझागके नाम २ अक्षीव १ वशिर २ ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थश्च सिन्धुजे ॥

सैंधेके नाम ४ ॥ सैन्धव १ शीतशिव २ माणिमन्थ ३ सिन्धुज ४ ॥

रौमकं वसुकं-

सामरके नाम २॥रौमक १ वसुक २॥

-पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ४२

खारीकनाम२॥पाक्य १ विड २ ॥४२

सौवर्चलेऽक्षरुचके-

संचलखारके नाम ३॥ सौवर्चल १ अक्ष २ रुचक ३ ॥

-तिलकं तत्र मेचके ॥

काले सचलखारके नाम२॥तिलक १ मेचक २॥

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारे-

रावके नाम २ ॥ मत्स्यडी १ फाणित २ ॥

–शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

मिश्रीके नाम २ ॥ शर्करा १ सिता २॥ ४३ ॥

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्या–

मावेके नाम २ ॥ कूर्चिका १ क्षीर-विकृति २ ॥

–द्रसाला तु मार्जिता ॥

श्रीखण्डके नाम . २ रसाला १ मार्जिता २ ॥

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं–

कढीके नाम २॥तेमन १ निष्टान २॥

–त्रिलिङ्गावासितावधेः ॥ ४४ ॥

भाषा–वासितपर्य्यन्त शब्द तीनों लिंगोंमें होतेहैं ॥ ४४ ॥

शूलाकृतं भटित्रं च शूल्य–

लोहशलाकासे पकायेहुए मासकेनाम ३ ॥ शूलाकृत १ भटित्र २ शूल्य ३॥

–मुख्यं तु पैठरम् ॥

बटलोईमें पकाये हुए अन्नादिके नाम २ ॥ उख्य १ पैठर २ ॥

प्रणीतमुपसंपन्नं–

पकीहुई रसोईके नाम २॥ प्रणीत १ उपसम्पन्न २ ॥

–प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

घृततैलादिसे बनीहुई रसोईके नाम२ प्रयस्त १, सुसंस्कृत २ ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं–

पनीले भोजनके नाम२॥ पिच्छिल१ विजिल २ ॥

–संमृष्टं शोधितं समे ॥

बीने हुए अन्नके नाम २॥ सम्मृष्ट१ शोधित २ ॥

चिक्कणं मसृणं स्निग्धं–

चिकनेके नाम ३ ॥ चिक्कण १ मसृण २ स्निग्ध ३ ॥

–तुल्ये भावितवासिते ॥४६॥

छौंकीहुई वस्तुके नाम २॥भावित१ वासित २ ॥ ४६ ॥

आपक्वं पौलिरभ्यूषो–

घृत आदिमें भूनीहुई वस्तुके नाम३॥ आपक्व १ पौलि २ अभ्यूष ३ ॥

–लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः ॥

खीलोंका नाम १ ॥ लाज १ ॥

पृथुकः स्याच्चिपिटको–

परमलके नाम २ ॥ पृथुक१ चिपि-टक २ ॥

–धाना भृष्टयवे स्त्रियः ॥४७॥

भुनेहुए जौके नाम २ ॥ धाना १ भृष्टयव २ ॥ ४७ ॥

पूपोऽपूपः पिष्टकः स्या–

पुएकेनाम३॥पूप१अपूप२पिष्टक३॥

त्करम्भो दधिसक्तवः ॥

दधियुक्त सत्तुओंके नाम २ ॥ करम्भ १ दधिसक्तु २ ॥

भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री सदीदिविः ॥ ४८ ॥

मातके नाम ६ ॥ भिस्सा १ भक्त २ अन्धस् ३ अन्न ४ ओदन ५ दीदिवि ६ ॥ ४८ ॥

भिस्सटा दग्धिका-

जलके अन्नके नाम २ ॥ भिस्सटा १ दग्धिका २ ॥

-सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ॥

माडका नाम १ ॥ मण्ड १ ॥

मासराचामनिस्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥

केवल भातके माडके नाम३॥मासर १ आचाम २ निस्राव ३ ॥ ४९ ॥

यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा ॥

पतले मातके नाम ५ ॥ यवागू १ उष्णिका २ श्राणा ३ विलेपी ४ तरला ५ ॥

गव्यं त्रिषु गवां सर्वं-

गायसे उत्पन्न वस्तुका नाम १॥गव्य १॥

-गोविट् गोमयमस्त्रियाम् ५० ॥

गौके गोबरके नाम २ ॥ गोविट् १ गोमय २ ॥ ५०

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री-

सूखे हुए गोबरका नाम १॥ करीष १॥

-दुग्धं क्षीरं पयः समम् ॥

दूधके नाम ३॥दुग्ध १ क्षीर २ पयस् ३॥

पयस्यमाज्यदध्यादि-

घृत दही आदिका नाम १॥ पयस्य १॥

-द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥

पतले दहीका नाम १॥ द्रप्स १॥ ५१॥

घृतमाज्यं हविः सर्पि-

घीके नाम ४ ॥ घृत १ आज्य २ हविष् ३ सर्पिष् ४ ॥

-र्नवनीतं नवोद्धृतम् ॥

मक्खनके नाम २ ॥ नवनीत १ नवोद्धृत ॥

तत्तु हैयङ्गवीनं यद्ध्योगोदोहोद्भवं घृतम् ॥ ५२ ॥

नौनीघीका नाम १॥ हैयङ्गवीन १॥ ५२॥

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ॥

मट्ठेके नाम ४ ॥ दण्डाहत १ कालशेय २ अरिष्ट ३ गोरस ४ ॥

तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥

मट्ठेके भेद ३ ॥ तक्र १ उदश्वित् २ मथित ३ ॥ ५३ ॥

मण्डं दधिभवं मस्तु-

दहीके पानीका नाम १॥ मस्तु १॥

-पीयूषोऽभिनवं पयः ॥

खीसका नाम १ ॥ पीयूष १ ॥

अशनाया बुभुक्षा क्षु-

भूखके नाम ३॥ अशनाया १ बुभुक्षा २ क्षुध् ३ ॥

-द्ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥५४॥

ग्रासके नाम २ ॥ ग्रास १ कवल २ ॥ ५४ ॥

सपीतिः स्त्री तुल्यपानं-

साथपीनेके नाम २ ॥ सपीति १ तुल्यपान २ ॥

-सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ॥

एकसाथ भोजन करनेके नाम २ ॥ सग्धि १ सहभोजन २ ॥

उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो-

प्यासके नाम ४ ॥ उदन्या १ पिपासा २ तृष् ३ तर्ष ४ ॥

-जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥ जेमनं लेह आहारो निघसो न्याद इत्यपि ॥

भोजनके नाम ७॥ जग्धि १ भोजन २ ॥ ५५ ॥ जेमन ३ लेह ४ आहार ५ निघस ६ न्याद ७ ॥

सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः-

तृप्तिके नाम३॥सौहित्य१तर्पण२तृप्ति३॥

-फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥

भोजन करके त्यागी हुई वस्तुका नाम १॥ फेला १ ॥ ५६ ॥

कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ॥

इच्छाके नाम ६ ॥ काम१प्रकाम२ पर्याप्त३ निकाम ४ इष्ट ५ यथेप्सित६ ॥

गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥

अहीरके नाम ६ ॥ गोप १ गोपाल २ गोसंख्य ३ गोदुह् ४ आभीर ५ वल्लव ६ ॥ ५७ ॥

गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं-

घरमें बांधने लायक गाय भैंस आदिका नाम १ ॥ पादबन्धन १ ॥

-द्वौ गवीश्वरे ॥ गोमान्गोमी-

गायके मालिकके नाम ३ ॥ गवीश्वर १ गोमत् २ गोमिन् ३ ॥

-गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥ ५८ ॥

गायोंके समूहके नाम २ ॥ गोकुल १ गोधन २ ॥ ५८ ॥

त्रिष्वाशितं गवीनं तद्गावो यत्राशिताः पुरा ॥

जहां गैयां आदिको पहिले खिलाया

गया हो उस स्थानका नाम१ ॥ आशितंगवीन १ ॥

उक्षा भद्रो वलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥५९ ॥ अनड्वान्सौरभेयो गौ–

बैलके नाम ९॥ उक्षन् १ भद्र २ वलीवर्द३ऋषभ४वृषभ५वृष६ ॥५९ ॥ अनडुह् ७ सौरभेय ८ गो ९ ॥

रुक्षणां संहतिरौक्षकम् ॥

बैलोंके समूहका नाम१॥औक्षक१॥

गव्या गोत्रा गवाम्–

गायोंके समूहके नाम२॥ गव्या १ गोत्रा २ ॥

–वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥६० ॥

बछडोंके समूहका नाम१॥ वात्सक १ धेनुओंके समूहका नाम १ ॥ धैनुक १ ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्या–

बडे बैलका नाम १ ॥ महोक्ष ॥

–वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ॥

बूढे बैलका नाम २ ॥ वृद्धोक्ष १ जरद्गव २ ॥

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः–

जवान बैलका नाम १ ॥जातोक्ष१

–सद्योजातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥

छोटे बछडेका नाम१॥तर्णक१॥६१॥

शकृत्करिस्तु वत्सः स्या–

बछडेमात्रके नाम २ ॥ शकृत्करि१ वत्स २ ॥

–दम्यवत्सतरौ समौ ॥

थोडे जवान बछडेके नाम २ ॥ दम्य १ वत्सतर २ ॥

आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः–

बधिया करने लायकका नाम १ ॥ आर्षभ्य १ ॥

–षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥

सांडके नाम३॥षण्ड १ गोपति २ इट्चर ३ ॥ ६२ ॥

स्कन्धदेशे त्वस्य वहः–

बैलके कन्धेका नाम १ ॥ वह १ ॥

सास्ना तु गलकम्बलः ॥

गैयोंके गलेमें जो मास लटकता है उस मासके नाम २ ॥ सास्ना १ गलकम्बल २ ॥

स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः–

नाथवाले बैलके नाम २॥नस्तित१ नस्योत २ ॥

–प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥६३ ॥

जिससे गाडीमें जोतनेके अर्थ बैल सधाये जायँ उस काष्ठके नाम॥ २ ॥ प्रष्ठवाह्१ युगपार्श्वग २ ॥ ६३ ॥

युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ॥

जुयेके उठानेवालेका नाम १ ॥ युग्य १॥जोडके उठानेवालेका नाम १ ॥ प्रासङ्गय १ ॥छकडेके उठानेवाले बैलका नाम १ ॥ शाकट १ ॥

खनति तेन तद्वोढाऽस्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

हलमें चलनेवालेके नाम २ ॥हालिक १ सैरिक २ ॥ ६४ ॥

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ॥

बोझा ढोनेवाले बैलके नाम ५ ॥ धूर्वह १ धुर्य्य २ धौरेय ३ धुरीण ४ धुरन्धर ५ ॥

उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥

एक बोझेके ढोनेवालेके नाम ३॥ एकधुरीण १ एकधुर २ एकधुरावह ३॥ ६५॥

स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ॥

जो सब बोझा ले चलै उसके नाम २ ॥सर्वधुरीण १ सर्वधुरावह २ ॥

माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृंगिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यात्-

गायके नाम ९ ॥ माहेयी १ सौरभेयी २ गो ३ उस्रा ४ मातृ ५ शृंगिणी ६ ॥ ६६ ॥ अर्जुनी ७ अघ्न्या ८ रोहिणी ९ ॥

-दुत्तमा गोषु नैचिकी ॥

अच्छीगायका नाम १॥नैचिकी १॥

वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शवलीधवलादयः ॥ ६७ ॥

चितकबरीका नाम १ ॥ शवली १॥ सफेदका नाम १ ॥ धवला १॥ ६७ ॥

द्विहायनी द्विवर्षा गौ-

दो वर्षकी गायके नाम २ ॥ द्विहायनी १ द्विवर्षा २ ॥

-रेकाब्दा त्वेकहायनी ॥

एकवर्षकीके नाम २ ॥ एकाब्दा १ एकहायनी २ ॥

चतुरब्दा चतुर्हाय-

चार वर्षकीके नाम २॥चतुरब्दा १ चतुर्हायणी २ ॥

-ण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी॥६८॥

तीन वर्षकीके नाम २ ॥त्र्यब्दा १ त्रिहायणी २। ६८ ॥

वशा वन्ध्या-

बांझके नाम २ ॥ वशा १ वंध्या २

-ऽवतोका तु स्रवद्गर्भा-

जिसका अकस्मात् गर्भ गिरगया हो उस गायके नाम २ ॥अवतोका १ स्रवद्गर्भा २ ॥

—थ सन्धिनी ॥

आक्रान्ता वृषभेणा—

बैलके साथ लगाईहुई गायका नाम १॥ सधिनी १ ॥

—थ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥६९॥

बैलके संयोगसे गर्भको गिरादेनेवाली गायके नाम २ ॥ वेहत् १ गर्भोपघातिनी २ ॥ ६९ ॥

काल्योपसर्या प्रजने—

जिसको गर्भ धारणकरनेका समय हो उसका नाम १ ॥ उपसर्य्या १ ॥

—प्रष्ठौही बालगर्भिणी ॥

पहलौनका नाम १ ॥ प्रष्ठौही १॥

स्यादचण्डी तु सुकरा—

सूधी गौके नाम २ ॥ अचण्डी १ सुकरा २ ॥

—बहुसूतिः परेष्टुकाः ॥ ७० ॥

बहुत दफे व्याई हुईके नाम २ ॥ बहुसूति १ परेष्टुका २ ॥ ७० ॥

चिरप्रसूता बष्कयिणी—

बकेन (बहुतदिनोंमें व्यानेवाली) गायके नाम २ ॥ चिरप्रसूता १ वष्कयिणी २ ॥

—धेनुः स्यान्नवसूतिका ॥

नई व्याई हुईके नाम २ ॥ धेनु१ नवसूतिका ॥

सुव्रता सुखसन्दोह्या—

जो सरलतासे दुही जाय उस गायके नाम २ ॥ सुव्रता १ सुखसदोह्या २॥

—पीनोध्नी पीवरस्तनी ॥७१॥

बडे अयनवालीके नाम२॥ पीनोध्नी १ पीवरस्तनी २ ॥ ७१ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा—

द्रोण१२॥सेर दूध देनेवालीके नाम २॥ द्रोणक्षीरा १ द्रोणदुग्धा २ ॥

—धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥

गिरवी रक्खी हुईका नाम १ ॥ धेनुष्या १ ॥

समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥

प्रतिवर्ष व्यानेवाली गौका नाम१॥ समांसमीना १ ॥७२॥

ऊधस्तु क्लीवमापीन—

अयन (औहडी) के नाम२॥ऊधस् १ आपीन २ ॥

—समौ शिवककीलकौ ॥

खूटके नाम २॥शिवक१कीलक२॥

न पुंसि दाम सन्दानं—

दुहनेके समय पांवबाधनेकी रस्सीके नाम २ ॥ दामन् १ सदान २ ॥

पशुरज्जुस्तु दामनी ॥७३॥

पशु बाधनेकी रस्सीके नाम२॥पशुरज्जु १ दामनी २ ७३ ॥

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ॥

मथनेका दंडा अर्थात् रईके नाम ५॥ वैशाख १ मन्थ २ मन्थान ३ मथिन् ४ मन्थदण्डक ५ ॥

कुठरो दण्डविष्कम्भो-

जिसमें रई बांधी जाय उस काष्ठके नाम २ ॥ कुठर १ ॥ दण्डविष्कम्भ २॥

मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥

मथनेके पात्रके नाम २ मन्थनी १ गर्गरी २ ॥ ७४ ॥

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः-

ऊटके नाम ४ ॥ उष्ट्र १ क्रमेलक २ मय ३ महांग ४ ॥

-करभः शिशुः ॥

ऊटके बच्चेके नाम २ ॥ करभ १ शिशु २ ॥

करभाः स्युः शृंखलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥

काठसे पैर बधे हुए बच्चेका नाम १॥ शृंखलक १ ॥ ७५ ॥

अजा छागी-

बकरीके नाम २ ॥ अजा १ छागी २॥

-शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे

बकरेके नाम ५ ॥ शुभ १ छाग २ बस्त ३ छगलक ४ अज ५ ॥

मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥

मेंढेके नाम ७ ॥ मेढ्र १ उरभ्र २ उरण ३ ऊर्णायु ४ मेष ५ वृष्णि ६ एडक ७ ॥ ७६ ॥

उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ॥

ऊटोंके समूहका नाम १॥ औष्ट्रक १॥ मेंढोंके समूहका नाम १ ॥ औरभ्रक १ ॥ अजे (बकरोंके) समूहका नाम १॥ आजक १ ॥

चक्रीवन्तस्तु वालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥७७ ॥

गधेके नाम ५ ॥ चक्रीवत् १ वालेय २ रासभ ३ गर्दभ ४ खर ५ ॥७७॥

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ॥ पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः॥७८॥

व्यापारीके नाम ८॥ वैदेहक १ सार्थवाह २ नैगम निगम ३ वाणिज ४ वणिज ५ ॥ पण्याजीव ६ आपणिक ७ क्रयविक्रयिक ८ ॥ ७८ ॥

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः-

बेचनेवालेके नाम २ ॥ विक्रेतृ १ विक्रयिक २॥

—क्रायिकक्रयिकौ समौ ॥
मोल लेनेवालेके नाम २ ॥ क्रायिक १ क्रयिक २ ॥

वाणिज्यं तु वणिज्या स्या-
व्यापारके नाम २ ॥ वाणिज्य १ वणिज्या २ ॥

—न्मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः॥७९॥
मोलके नाम ३ ॥ मूल्य १ वस्न २ अवक्रय ३ ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधनं—
मूलधनके नाम ३ ॥ नीवी १ परिपण २ मूलधन ३ ॥

—लाभोऽधिकं फलम् ॥
नफेके नाम३॥ लाभ १ अधिक२ फल३

परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥
अदले बदलेके नाम ४॥ परिदान १ परीवर्त्त २ नैमेय ३ निमय ४ ॥ ८० ॥

पुमानुपनिधिर्न्यासः—
धरोहरके नाम २ ॥ उपनिधि १ न्यास२॥

—प्रतिदानं तदर्पणम् ॥
धरोहर लौटादेनेके नाम २ ॥ प्रतिदान १ तदर्पण २ ॥

क्रये प्रसारितं क्रय्यं—
वेचनेके अर्थ दुकानम रक्खीहुई वस्तुका नाम १ ॥ क्रय्य १ ॥

क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥
दुकानपर रखने योग्य वस्तुका नाम १ ॥ क्रेय १ ॥ ८१ ॥

विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं—
वेचनेयोग्य वस्तुके नाम ३ ॥ विक्रेय १ पणितव्य २ पण्य ३ ॥

—क्रय्यादयास्त्रिषु ॥
भाषा—क्रय्य आदि शब्द तीनो लिंगोंमे होते हैं ॥

क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥
साई अर्थात् वयानेके नाम ३॥सत्यापन १ सत्यङ्कार २ सत्याकृति ३॥८२॥

विपणो विक्रयः—
वेचनेके नाम२॥ विपण१ विक्रय २॥

—संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ॥
एकसे अष्टादश पर्यंत संख्या गिनने योग्य वस्तुमें रहती है और वह संख्याशब्द संख्येय शब्दवत् तीनों लिंगोंमें होते हैं॥

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥
विंशति (वीस) आदि संपूर्ण संख्या (गिनती) और संख्येय अर्थात् गिनने-योग्य वस्तुमे रहती है और विंशति आदि शब्द सदा एकवचन होते है ॥ ८३ ॥

संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्त—

केवल गिनती अर्थवाले विंशति आदि शब्द द्विवचन और बहुवचनमें होते हैं ॥

–स्तासु चानवतेः स्त्रियः ॥

विंशति आदि नवतिपर्यंत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं ॥

पंक्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

दश संख्याका क्रमसे उत्तरोत्तर दश गुण शत सहस्र आदि संख्याएँ होती हैं ॥ ८४ ॥

यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ॥

तोलके नाम ३ ॥ यौतव १ द्रुवय २ पाय्य ३ ॥

मानं तुलाऽङ्गुलिप्रस्थै–

(तोल तीन प्रकारकी है) तुलामान १ अगुलिमान २ प्रस्थमान ३ ॥

–र्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥८५॥

पांच रत्तीका शास्त्रोक्त माषा (मासा) होता है ॥ ८५ ॥

ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री–

सोलहमासेका एक अक्ष होता है उसको ही कर्ष कहते हैं ॥

–पलं कर्षचतुष्टयम् ॥

चार कर्षका एक पल होताहै ॥

सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे–

कर्षभर सुवर्णके नाम २॥ सुवर्ण १ विस्त २ ॥

–कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥

पलभर सुवर्णका नाम १ ॥ कुरुविस्त १ ॥ ८६ ॥

तुला स्त्रियां पलशतं–

सौ पलका नाम १ ॥ तुला १ ॥

–भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ॥

बीस तुलाका नाम १ ॥ भार १ ॥

आचितो दश भाराः स्युः–

दशभारका नाम १ ॥ आचित १ ॥

–शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

शकटभर भारका नाम १ ॥ आचित १ ॥ ८७ ॥

कार्षापणः कार्षिकः स्या–

चांदीके रुपयेके नाम २ ॥ कार्षापण १ कार्षिक २ ॥

–त्कार्षिके ताम्रिके पणः ॥

तामेका कार्षापण अर्थात् पैसेका नाम पण १ ॥

अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥ कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ॥

(चार सेरका नाम) आढक १ (आठ आढकका नाम) द्रोण १ ॥

(तीन द्रोणका नाम) खारी १॥ (आठ द्रोणका नाम) वाह १ ॥ (मुट्ठीभरका नाम) निकुंचक १॥ ८८ ॥ (पावभर का नाम) कुडव १॥ (सेरभरका नाम) प्रस्थ १ ॥ इत्यादि अलग २ तोलके नाम हैं ॥

पादस्तुरीयो भागः स्या-

चौथे भागका नाम १ ॥ पाद १॥

-दंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥

बांट अर्थात् भागके नाम ३॥ अंश १ भाग २ वंटक ३ ॥ ८९ ॥

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ॥ हिरण्यं: द्रविणं द्युम्न मर्थरैविभवा अपि ॥ ९० ॥

धनके नाम १३ ॥ द्रव्य १ वित्त २ स्वापतेय ३ रिक्थ ४ ऋक्थ ५ धन ६ वसु ७ हिरण्य ८ द्रविण९ द्युम्न१० अर्थ ११ रै १२ विभव १३ ॥ ९० ॥

स्यात्कोपश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ॥

गढ़े वा नहीं गढ़े हुए सोने वा चांदीके नाम २ ॥ हिरण्य १ कोष२॥

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं-

सोने चांदीसे अन्य ताम्रादि धातुका नाम १ ॥ कुप्य १ ॥

-रूप्य तद्द्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥

तांबा और चांदीके मिलाये हुएका नाम १ ॥ रूप्य १ ॥ ९१ ॥

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ॥

मरकतमणिके नाम ४ ॥ गारुत्मत १ मरकत २ अश्मगर्भ ३ हरिन्मणि ४ ॥

शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागो-

पद्मरागमणिके नाम ३॥ शोणरत्न १ लोहितक २ पद्मराग ३ ॥

-ऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

मुक्ता-

मोतीके नाम २॥ मौक्तिक १॥ ९२॥ मुक्ता २ ॥

-ऽअथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम् ॥

मूँगेके नाम २ ॥ विद्रुम १ प्रवाल २ ॥

रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेपि च ॥ ९३ ॥

पद्मराग आदि पाषाण जाति और मुक्ताफल आदिके नाम २ ॥ रत्न १ मणि २ ॥ ९३ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ॥ तपनीयं शातकुम्भं गांगेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥ चामीकरं जातरूपं महारजत काञ्चने ॥ रुक्मं कार्तस्वरं जा-

म्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥
सुवर्णके नाम १९॥स्वर्ण १ सुवर्ण २ कनक ३ हिरण्य ४ हेमन् ५ हाटक ६ तपनीय ७ शातकुम्भ ८ गांगेय ९ भर्मन् १० कर्बुर ११ ॥ ९४ ॥ चामीकर १२ जातरूप १३ महारजत १४ कांचन १५ रुक्म १६ कार्तस्वर १७ जांबूनद १८ अष्टापद १९ ॥ ९५ ॥

अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ॥
सुवर्णके गहनेका नाम १॥शृंगीकनक १॥

दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥
चांदीके नाम ५॥दुर्वर्ण १ रजत २ रूप्य ३ खर्जूर ४ श्वेत ५ ॥ ९६ ॥

रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रिया-
पीतलके नाम २॥रीति १ आरकूट २ ॥

-मथ ताम्रकम् ॥ शुल्बं म्लेच्छमुखंद्व्यष्टवरिष्टोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥
तांबेके नाम ६॥ताम्रक १ शुल्ब २ म्लेच्छमुख ३ द्व्यष्ट ४ वरिष्ट ५ उदुंबर ६ ॥ ९७ ॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ॥ अश्मसारो-
लोहेके नाम ७॥लोह १ शस्त्रक २ तीक्ष्ण ३ पिण्ड ४ कालायस ५ अयस् ६ अश्मसार ७ ॥

-ऽथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥
लोहेके मल अर्थात् मडूरके नाम २॥ मण्डूर १ सिंहाण २ ॥ ९८ ॥

सर्वं च तैजसं लोहं-
चांदी सोना लोहादि सर्वधातुओंका नाम १ ॥ लोह १ ॥

-विकारस्त्वयसः कुशी ॥
लोहेके फालका नाम १ ॥ कुशी १ ॥

क्षारः काचो-
कांचके नाम २ ॥ क्षार १ कांच २ ॥

-ऽथ चपलो रसः सूतश्च पारदे ॥ ९९ ॥
पारेके नाम ४ ॥ चपल १ रस २ सूत ३ पारद ४ ॥ ९९ ॥

गवलं माहिषं शृंग-
भसेके सींगका नाम १॥ गवल १॥

-मभ्रकं गिरिजामले ॥
अबरखके नाम ३॥अभ्रक १ गिरिज २ अमल ३ ॥

स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥
सुर्माके नाम ४॥स्रोतोंजन १ सौवीर २ कापोतांजन ३ यामुन ४ ॥१००॥

तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीव वितुन्नकमयूरके ॥

तूतिया (नीलाथोथा) के नाम४॥ तुत्थाञ्जन १ शिखिग्रीव २ वितुन्नक ३ मयूरक ४ ॥

कर्परी दार्विका क्काथोद्भवं तुत्थं-

तूतियाके भेद ३॥ कर्परी१दार्विका २ तुत्थ ३ ॥

-रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥ रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं-

रसोतके नाम३॥रसाञ्जन१॥१०१॥ रसगर्भ २ तार्क्ष्यशैल ३ ॥

-गन्धाश्मनि तु गान्धिकः ॥ सौगन्धिकश्च-

गन्धकके नाम ३ ॥ गन्धाश्मन् १ गन्धिक २ सौगन्धिक ३ ॥

-चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥

काले सुर्मेके नाम ३॥ चक्षुष्या १ कुलाली २ कुलत्थिका ३ ॥ १०२ ॥

गीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ॥

पीतलको तपाके घिसनेसे जो अंजन बने उसके नाम ४ ॥ गीतिपुष्प १पुष्पकेतु २ पौष्पक ३ कुसुमाजन ४ ॥

पिञ्जरं पीतनं तालमालं च-

-हरितालके ॥ १०३ ॥

हरितालके नाम ५ ॥ पिञ्जर १ पीतन २ ताल ३ आल ४ हरितालक ५ ॥ १०३ ॥

गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ॥

शिलाजीतके नाम ५॥गैरेय १अर्थ्य २ गिरिज ३ अश्मज ४ शिलाजतु ५॥

बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः १०४ ॥

गन्धरसके नाम ५ ॥ बोल१गन्धरस २ प्राण ३ पिण्ड ४गोपरस५॥१०४॥

डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः-

समुद्रझागके नाम ३ ॥ डिंडीर १ अब्धिकफ २ फेन ३ ॥

-सिन्दूरं नागसंभवम् ॥

सिंदूरके नाम २ ॥ सिंदूर १ नागसम्भव २ ॥

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि-

सीसेके नाम ४ ॥ नाग१सीसक२ योगेष्ट ३ वप्र ४ ॥

-त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥ रङ्गवङ्गे-

रांगके नाम ४ ॥ त्रपु १ पिच्चट२ ॥ १०५ ॥ रंग ३ वग ४ ॥

-अथ पिचुस्तूलो-

रुईके नाम २ ॥ पिचु १ तूल २ ॥

–ऽथ कमलोत्तरम् ॥ स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

कुसुम्भेके नाम ४ कमलोत्तर १ कुसुम्भ २ वह्निशिख ३ महारजन ४ ॥ १०६ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः–

ऊनी कम्बलके नाम २ ॥ मेषकम्बल १ ऊर्णायु २ ॥

–शशोर्णं शशलोमनि ॥

खरगोसकी ऊनके नाम २ ॥ शशोर्ण १ शशलोमन् २ ॥

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि–

शहदके नाम ३ ॥ मधु १ क्षौद्र २ माक्षिक ३ ॥

मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

मोमके नाम २ ॥ मधूच्छिष्ट १ सिक्थक २ ॥ १०७ ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ॥ नैपाली कुनटी गोला–

मैनशिलके नाम ७ ॥ मनश्शिला १ मनोगुप्ता २ मनोह्वा ३ नागजिह्विका ४ नैपाली ५ कुनटी ६ गोला ७ ॥

–यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥ पाक्यो–

जवाखारके नाम ३ ॥ यवक्षार १ यवाग्रज २ ॥ १०८ ॥ पाक्य ३ ॥

–ऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ॥ सौवर्चलं स्याद्रुचकं–

सज्जीके नाम ५ ॥ सर्जिकाक्षार १ कापोत २ सुखवर्चक ३ सौवर्चल ४ रुचक ५ ॥

–त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

वंशलोचनके नाम २ ॥ त्वक्क्षीरी १ वंशरोचना २ ॥ १०९ ॥

शिग्रुजं श्वेतमरिचं–

सफेदमिर्चके नाम २ ॥ शिग्रुज १ श्वेतमरिच २ ॥

–मोरटं मूलमैक्षवम् ॥

ईखकी जडका नाम १ ॥ मोरट १ ॥

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥

पीपलामूलके नाम ३ ॥ ग्रंथिक १ पिप्पलीमूल २ चटकाशिरस् ३ ॥ ११० ॥

गोलोमी भूतकेशो ना–

जटामांसीके नाम २ ॥ गोलोमी १ भूतकेश २ ॥

–पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ॥

पतगके नाम २ ॥ पत्राग १ रक्तचन्दन २ ॥

त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं–

सोंठ पीपल मिर्च इन तीनोंके समूहके नाम ३॥ त्रिकटु १ त्र्यूषण २ व्योष ३॥

–त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥१११॥

आंवला हरड बहेडा इन तीनोंके समूहके नाम २ ॥ त्रिफला १ फलत्रिक २ ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

अथ शूद्रवर्गः १०.

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ॥

शूद्रके नाम ४ ॥ शूद्र १ अवरवर्ण २ वृषल ३ जघन्यज ४ ॥

आचण्डालात्तु सङ्कीर्णा अम्बष्ठ करणादयः ॥ १ ॥

(ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न हो उसका नाम) चण्डाल १॥ चण्डालसे ले अम्बष्ठ करण आदिकोंका नाम १॥सङ्कीर्ण १॥ १॥

शूद्राविशोस्तु करणो–

शूद्रामे वैश्यसे उत्पन्नहुएका नाम १॥ करण १ ॥

–ऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ॥

वनैनीमे ब्राह्मणसे उत्पन्न हो तो उसका नाम १ ॥ अम्बष्ठ १ ॥

शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो–

शूद्रामें क्षत्रियसे उत्पन्नहुएका नाम १ ॥ उग्र १ ॥

–मागधः क्षत्रियाविशोः ॥२॥

क्षत्रियाणीमे वैश्यसे उत्पन्नहुएका नाम १ ॥ मागध १ ॥ २ ॥

माहिष्योर्याक्षत्रिययोः–

वनैनीमे क्षत्रियसे उत्पन्नहुएका नाम १ ॥ माहिष्य १ ॥

–क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ॥

वनैनीमें शूद्रसे उत्पन्नहुएका नाम १ ॥ क्षत्तृ १ ॥

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूत–

ब्राह्मणीमे क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका नाम १ ॥ सूत १ ॥

–स्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्नहुएका नाम १ ॥ वैदेहक १ ॥ ३ ॥

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः ॥

करणीमे माहिष्यसे उत्पन्न हुएका नाम १ ॥ रथकार १ ॥

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

ब्राह्मणीमे शूद्रसे उत्पन्न हुएका नाम १ ॥ चण्डाल १ ॥ ४ ॥

कारुः शिल्पी–

कारीगरोंके नाम २ ॥ कारु १ शिल्पिन् २ ॥

—संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ॥

कारीगरोके समूहका नाम १॥ श्रेणि १॥

कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी—

कारीगरोके अफसर अर्थात् मिस्तरीके नाम २॥ कुलक १ कुलश्रेष्ठी २॥

—मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥

मालीके नाम २ ॥ मालाकार १ मालिक २ ॥ ५ ॥

कुम्भकारः कुलालः स्या—

कुम्भारके नाम २ ॥ कुम्भकार १ कुलाल २ ॥

—त्पलगण्डस्तु लेपकः ॥

कमंगरके नाम २ ॥ पलगण्ड १ लेपक २ ॥

तन्तुवायः कुविन्दः स्या—

जुलाहेके नाम २ ॥ तन्तुवाय १ कुविन्द २ ॥

—त्तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥

दरजीके नाम २ ॥ तुन्नवाय १ कुविन्द २ ॥ ६ ॥

रङ्गाजीवश्चित्रकरः—

चित्रकारके नाम २ ॥ रङ्गाजीव १ चित्रकर २ ॥

—शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ॥

शिकिलीगरके नाम २ ॥ शस्त्रमार्ज १ असिधावक २ ॥

पादूकृच्चर्मकारः स्या—

चमारके नाम२॥ पादूकृत् १ चर्मकार२॥

—द्व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥

लोहारके नाम २ ॥ ॥ व्योकार १ लोहकारक २ ॥ ७ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ॥

सुनारके नाम ४ ॥ नाडिन्धम १ स्वर्णकार २ कलाद ३ रुक्मकारक ४ ॥

स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः—

मनिहारके नाम २ ॥ शांखिक १ काम्बविक २ ॥

—शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥

ठठेरेके नाम २ ॥ शौल्बिक १ ताम्रकुट्टक २ ॥ ८ ॥

तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट् ॥

वढईके नाम ५ ॥ तक्षन् १ वर्धकि २ त्वष्टृ ३ रथकार ४ काष्ठतक्ष् ५ ॥

ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः—

गाँवके वढईके नाम २ ॥ ग्रामाधीन १ ग्रामतक्ष २ ॥

—कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥

स्वतन्त्रवढईका नाम १ ॥ कौटतक्ष १ ॥ ९ ॥

क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः ॥

नाईके नाम ५ ॥ क्षुरिन् १मुण्डिन् २ दिवाकीर्ति३नापित४अन्तावसायिन्५ ॥

निर्णेजकः स्याद्रजकः–

धोबीके नाम २ ॥ निर्णेजक १ रजक २ ॥

–शौण्डिको मण्डहारकः ॥१०॥

कलालके नाम २ ॥ शौण्डिक १ मंडहारक २ ॥ १० ॥

जावालः स्यादजाजीवो–

गडरियेके नाम २ ॥ जावाल १ अजाजीव २ ॥

देवाजीवस्तु देवलः ॥

पण्डाके नाम २ ॥ देवाजीव १ ॥ देवल २ ॥

स्यान्माया शाम्बरी–

इन्द्रजालके नाम २ ॥ माया १ शांबरी २ ॥

मायाकारस्तु प्रतिहारकः॥ ११ ॥

इन्द्रजाली अर्थात् बाजीगरके नाम२ मायाकार १ प्रतिहारक २ ॥११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जाया जीवाः कृशाश्विनः ॥ भरता इत्यपि नटा–

नटके नाम ६ ॥शैलालिन् १ शैलूष २ जायाजीव ३ कृशाश्विन् ४ भरत ५ नट ६ ॥

चारणास्तु कुशीलवाः॥ १२॥

कत्थकके नाम २ ॥चारण १कुशीलव २॥ १२ ॥

मार्दङ्गिका मौरजिकाः–

मृदगके बजानेवालेके नाम २ ॥ मार्दगिक १ मौरजिक २ ॥

–पाणिवादास्तु पाणिघाः ॥

ताली बजानेवालेके नाम २ ॥पाणिवाद १ पाणिघ २ ॥

वेणुध्माः स्युर्वैणविका–

बांसुरी बजानेवालेके नाम ॥ २ ॥ वेणुध्मा १ वैणविक २ ॥

–वीणावादास्तु वैणिकाः१३॥

वीणा बजानेवालेके नाम२ ॥वीणावाद १ वैणिक २ ॥ १३ ॥

जीवान्तकः शाकुनिको–

चिडीमारके नाम २ ॥ जीवान्तक १ शाकुनिक २ ॥

–द्वौ वागुरिकजालिकौ ॥

व्याधके नाम २ ॥ वागुरिक १ जालिक २ ॥

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

कसाईके नाम ३ ॥ वैतसिक १ कौटिक २ मासिक ३ ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ॥

मजूरके नाम ४ ॥ भृतक १ भृतिभुज् २ कर्मकर ३ वैतनिक ४ ॥

वार्तावहो वैवधिको-

दूतके नाम २ ॥ वार्तावह १ वैवधिक २ ॥

-भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥

बोझा उठानेवालेके नाम २ ॥ भारवाह १ भारिक २ ॥ १५ ॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतः पृथग्जनः ॥ निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥

नीचके नाम १० ॥ विवर्ण १ पामर २ नीच ३ प्राकृत ४ पृथग्जन ५ निहीन ६ अपसद ७ जाल्म ८ क्षुल्लक ९ इतर १० ॥ १६ ॥

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ॥ नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः १७

दास वा टहलुवेके नाम ११ ॥ भृत्य १ दासेर २ दासेय ३ दास ४ गोप्यक ५ चेटक ६ नियोज्य ७ किंकर ८ प्रैष्य ९ भुजिष्य १० परिचारक ११ ॥ १७ ॥

पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ॥

जो दूसरेसे पालाजाय उसके अर्थात् रहुआके नाम ४ ॥ पराचित १ परिस्कन्द २ परजात ३ परैधित ४ ॥

-मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

आलसीके नाम ६ ॥ मंद १ तुन्दपरिमृज २ आलस्य ३ शीतक ४ अलस ५ अनुष्ण ६ ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ॥

चतुरके नाम ६ ॥ दक्ष १ चतुर २ पेशल ३ पटु ४ सूत्थान ५ उष्ण ६ ॥

चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥ निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ॥

चाण्डालके नाम १० ॥ चण्डाल १ प्लव २ मातङ्ग ३ दिवाकीर्ति ४ जनंगम ५ ॥ १९ ॥ निषाद ६ श्वपच ७ अन्तेवासिन् ८ चाण्डाल ९ पुक्कस १० ॥

भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥

म्लेच्छजातिके भेद जंगली गोमांस खानेवाले हेवूढेआदिके नाम ३ ॥ किरात १ शबर २ पुलिन्द ३ ॥ २० ॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ॥

मृग पकडनेवालेके नाम ४॥ व्याध १ मृगवधाजीव २ मृगयु ३ लुब्धक ४ ॥

कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥ शुनको भषकः श्वा स्या-

कुत्तेके नाम ७ ॥ कौलेयक १ सारमेय २ कुक्कुर ३ मृगदंशक ४ ॥ २१ ॥ शुनक ५ भषक ६ श्वन् ७ ॥

दलर्कस्तु स योगितः ॥

प्रयोगसे उन्मत्त हुए कुत्तेका नाम १ ॥ अलर्क १ ॥

श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः-

शिकारी कुत्तेका नाम १ ॥ विश्वकद्रु १ ॥

-सरमा शुनी ॥ २२ ॥

कुतियाके नाम २ ॥ सरमा १ शुनी २ ॥ २२ ॥

विट्चरः सूकरो ग्राम्यो-

गावके सूकरका नाम १ ॥ विट्चर १ ॥

-वर्करस्तरुणः पशुः ॥

तरुणपशुका नाम १ ॥ वर्कर १ ॥

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

शिकारके नाम ४ ॥ आच्छोदन १ मृगव्य २ आखेट ३ मृगया ४ ॥ २३ ॥

दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ॥

व्याधने जिस मृगके दहिने अंगमे मारा हो उसका नाम १ ॥ दक्षिणेर्मन् १ ॥

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ॥

चोरके नाम १० ॥ चोर १ ऐकागारिक २ स्तेन ३ दस्यु ४ तस्कर ५ मोषक ६ ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिन् ७ परास्कन्दिन् ८ पाटच्चर ९ मलिम्लुच १० ॥

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं-

चोरीके नाम ४ ॥ चौरिका १ स्तैन्य २ चौर्य ३ स्तेय ४ ॥

लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥

चौरीके मालका नाम १ ॥ लोप्त्र १ ॥ २५ ॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ॥

पक्षी वा मृगोंके पकडनेकी सामग्री अर्थात् जालादिका नाम १ ॥ वीतंस १ ॥

उन्मायः कूटयन्त्रं स्या-

कावकपींजरे आदिके नाम २ ॥ उन्माय १ कूटयन्त्र २ ॥

-द्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

जालके नाम २ ॥ वागुरा १ मृगबन्धनी २ ॥ २६ ॥

शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ॥

रस्सीके नाम ५ ॥ शुल्ब १ वराटक २ रज्जु ३ वटी ४ गुण ५ ॥

उद्घाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

अरहटके नाम २ ॥ उद्घाटन १ घटीयन्त्र २ ॥ २७ ॥

पुंसि वेमा वायदण्डः-

जुलाहेके कपडा बुननेके औजारके नाम २ ॥ वेमन् १ वायदण्ड २ ॥

-सूत्राणि नरि तन्तवः-

सूतके नाम २ ॥ सूत्र१ तन्तु २॥

-वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये

कपडे आदिके बुननेके नाम २ ॥ वाणि १ व्यूति २ ॥

-पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥२८॥

मिट्टी आदिसे लीपने पोतनेका नाम १ ॥ पुस्त १ ॥ २८ ॥

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ॥

गुडियाँ अर्थात् वस्त्रकी बनाई हुई पुतलीके नाम २ ॥ पांचालिका १ पुत्रिका २ ॥

जतुत्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ॥

लाखके विकारका नाम१॥जातुष१ रांगके विकारका नाम १ ॥त्रापुष १॥

पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूषा-

पिटारेके नाम ४ ॥ पिटक १ पेटक २ पेटा ३ मंजूषा ४॥

ऽ-थ विहङ्गिका ॥ २९ ॥

-भारयष्टि-

बहगी (खूँटी)के नाम२॥ विहंगिका १ ॥ २९ ॥भारयष्टि २ ॥

स्तदालम्बि शिक्यं काचो-

बहंगीके छीकेके नाम २ ॥ शिक्य १ काच २ ॥

-ऽथ पादुका॥पादूरुपानत्स्त्री-

जूतेके नाम ३॥ पादुका १ पादू२ उपानत् ३ ॥

-सैवानुपदीना पदायता॥३०॥

मोजेके नाम १॥अनुपदीना२॥३०॥

नध्री वध्री वरत्रा स्या-

चमडेकी रस्सीके नाम ३॥ नध्री१ वध्री २ वरत्रा ३ ॥

-दश्वादेस्ताडनी कशा ॥

कोडेका नाम १ ॥ कशा १ ॥

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ ३१ ॥

किंगरीवाजोंके नाम ३ ॥ चाण्डालिका १ कण्डोलवीणा २ चण्डालवल्लकी ३ ॥ ३१ ॥

नाराची स्यादेषणिका–

काटा अर्थात् सोना आदि तोलनेकी तराजूके नाम २॥ नाराची १ एषणिका २॥

–शाणस्तु निकषः कषः ॥

कसौटीके नाम ३ ॥ शाण १ निकष २ कष ३ ॥

व्रश्चना पत्रपरशु–

रेतीके नाम २॥ व्रश्चन १ पत्रपरशु २॥

–रीषिका तूलिका समे ॥ ३२॥

सलाईके नाम २ ॥ ईषिका १ तूलिका २ ॥ ३२ ॥

तैजसा वर्तनी मूषा–

सुवर्ण इत्यादि धातु गलानेकी घरियाके नाम ३॥ तैजसा १ वर्तनी २ मूषा ३॥

–भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥

फुकनीके नाम २ ॥ भस्त्रा १ चर्मप्रसेविका २ ॥

आस्फोटनी वेधनिका–

बर्मेके नाम २ ॥ आस्फोटनी १ वेधनिका २ ॥

–कृपाणी कर्त्तरी समे ॥ ३३॥

एक प्रकारकी कैंचीके नाम २ ॥ कृपाणी १ कर्त्तरी २ ॥ ३३ ॥

वृक्षादनी वृक्षभेदी–

बसूले आदिके नाम २ ॥ वृक्षादनी १ वृक्षभेदी २ ॥

–टंकः पाषाणदारणः ॥

टांकी अर्थात् पत्थरफोडनेके हथियारके नाम २॥ टङ्क १ पाषाणदारण २॥

क्रकचोऽस्त्री करपत्र–

आरेके नाम २॥ क्रकच १ करपत्र २॥

–मारा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥

आरीके नाम २॥ आरा १ चर्मप्रभेदिका २ ॥ ३४ ॥

सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा–

लोहेकी मूर्त्तिके नाम ३॥ सूर्मी १ स्थूणा २ अयःप्रतिमा ३ ॥

–शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥

कारीगरीका नाम १ ॥ शिल्प १ ॥

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमाप्रतियातना प्रतिच्छाया ॥ ३५ ॥ प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधि–

प्रतिमा अर्थात् तसवीरके नाम ८॥ प्रतिमान १ प्रतिबिम्ब २ प्रतिमा ३ प्रतियातना ४ प्रतिच्छाया ५ ॥ ३५ ॥ प्रतिकृति ६ अर्चा ७ प्रतिनिधि ८ ॥

–रुपमोपमानं स्यात् ॥

मिसाल और जिसकी मिसाल दी जाय उसके नाम २॥ उपमा १ उपमान २॥

वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥ साधारणः समानश्च–

बराबरके नाम ७ ॥ सम १ तुल्य २

सदृक्ष ३ सदृश ४ सदृश् ५ ॥ ३६ ॥
साधारण ६ समान ७ ॥

–स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥ निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ॥ ३७ ॥

समानके नाम ५॥ निभ१ संकाश२ नीकाश ३ प्रतीकाश ४ उपमा ५॥३७॥

कर्मण्या तु विधा भृत्या भृतयो भर्म वेतनम् ॥ भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥

मजूरीके नाम ११ ॥ कर्मण्या १ विधा २ भृत्या३ भृति ४ भर्मन्५ वेतन ६ भरण्य ७ भरण ८ मूल्य ९ निर्वेश १० पण ११ ॥ ३८ ॥

सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा ॥ गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकादम्बर्यः परिस्रुता ॥ ३९ ॥ मदिरा कश्यमद्ये चा–

मदिरा अर्थात् शराबके नाम १३ ॥ सुरा१ हलिप्रिया २ हाला३ परिस्रुत् ४ वरुणात्मजा ५ गन्धोत्तमा ६ प्रसन्ना ७ इरा८ कादम्बरी९ परिस्रुता १०॥३९॥ मदिरा ११ कश्य १२ मद्य १३ ॥

–प्यवदंशस्तु भक्षणम् ॥

मद्यपानकी रुचि उत्पन्न करनेके लिये भूजा चना इत्यादिके खानेके नाम १ ॥ अवदश १ ॥

शुण्डापानं मदस्थानं–

मदिरा पीनेके स्थानके नाम २ ॥ शुण्डापान १ मदस्थान २ ॥

–मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४०॥

मदिरा पीनेके समयके नाम२॥मधुवार १ मधुक्रम २ ॥ ४० ॥

मध्वासवो माधवको मधु माध्वीकमद्वयोः ॥

महुआसे उत्पन्न मदिराके नाम ४॥ मध्वासव १ माधवक२मधु३माध्वीक४॥

मैरेयमासवः सीधु–

गुडसीराकी मदिराके नाम ३॥ मैरेय १ आसव २ सीधु ३ ॥

–र्मेदको जगलः समौ ॥४१॥

मदिराकी फोकसके नाम२॥मेदक१ जगल २ ॥ ४१ ॥

संधानं स्यादभिषवः–

मदिराकरनेके नाम २ ॥ संधान१ अभिषव २ ॥

–किण्वं पुंसि तु नग्नहूः ॥

तंडुलादि द्रव्यसे बनाएहुए मद्यके नाम २ ॥ किण्व १ नग्नहू २ ॥

कारोत्तरः सुरामण्ड–

मदिराके मण्डके नाम २॥ कारोत्तर १सुरामण्ड २ ॥

–आपानं पानगोष्ठिका ॥४२॥

दारूपीनेकी सभाके नाम२॥आपान १ पानगोष्ठिका २ ॥ ४२ ॥

चपकोऽस्त्री पानपात्रं-

दारू पीनेके वर्त्तन (प्याले)के नाम २ ॥ चपक १ पानपात्र २ ॥

-सरकोऽत्यनुतर्षणम् ॥

मदिरा पीनेके नाम २ ॥ सरक १ अनुतर्षण २ ॥

धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृत्समाः ॥ ४३ ॥

जुआरीके नाम ५ ॥ धूर्त्त १ अक्षदेविन् २ कितव ३ अक्षधूर्त्त ४ द्यूतकृत् ५ ॥ ४३ ॥

स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः-

जामिनके नाम २॥लग्नक १ प्रतिभू २॥

-सभिका द्यूतकारकाः ॥

जुआ खिलानेवालेके नाम २॥सभिक १ द्यूतकारक २ ॥

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ॥ ४४ ॥

जूएके नाम ४ ॥ द्यूत १ अक्षवती २ कैतव ३ पण ४ ॥ ४४ ॥

पणोऽक्षेषु ग्लहो-

बाजी लगानेके नाम२॥पण१ग्लह२ ॥

-ऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।

पासेके नाम ३ ॥ अक्ष १देवन २ पाशक ३ ॥

परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥

सारक इधर उधर फेरनेका नाम १॥ परिणाय १ ॥ ४५ ॥

अष्टापदं शारिफलं-

बिसायती (चौपड) के नाम २ ॥ अष्टापद १ शारिफल २ ॥

-प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥

मुरगा आदि जीवोंकी लडाईरूप द्यूतके नाम२॥प्राणिद्यूत १ समाह्वय २ ॥

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येव यौगिकाः ॥ ४६ ॥ ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ॥

भाषा—इस वर्गमे जो यौगिक मालाकारमार्दङ्गिक वैणविक आदि शब्द काव्यादिकोंके अधिक प्रयोगके अनुसार केवल पुँलिगहीमे कहें हैं वह शब्द व्याकरणके नियमानुसार स्त्रीलिंग नपुसकलिगमेंभी होते हैं जैसे मालाकारकी स्त्री मालाकारी और मालाकारका कुल मालाकार इसी प्रकार सर्वत्र जानना ॥ ४६ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिंगानुशासने ॥ भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः सांग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशे

ज्वालाप्रसादकृतभाषाटीकायां

द्वितीयः काण्डः समाप्तः ॥२ ॥

इति द्वितीयः काण्डः ॥ २ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ तृतीयकाण्डः ३.

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः १.

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ॥ लिंगादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः॥१॥

भाषा—इस सामान्य तृतीयकाण्डमें स्वर्गादि वर्गोंके आश्रित शब्द विशेष्यनिघ्नवर्ग संकीर्णवर्ग नानार्थवर्ग अव्ययवर्ग और स्त्रीलिंगादिसग्रहवर्गके द्वारा कहेगे १

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ॥ गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः॥२॥

भाषा—स्त्री दार आदि विशेष्यभूत पदोंमे जो लिङ्ग और सख्या हो वही लिग और संख्या गुण और द्रव्य तथा क्रियावाचकशब्दोमें होनेसे दार स्त्री आदि शब्दोंके गुण द्रव्य क्रिया वाचक शब्द विशेषण हो सक्ते हैं जैसे 'सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः; सुकृति कलत्रम् । दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः; दण्डि कलत्रम्।पाचिका स्त्री, पाचका दाराः; पाचकं कलत्रम्' ॥ २ ॥

सुकृती पुण्यवान् धन्यो—

भाग्यवान् पुरुषके नाम ३ ॥ सुकृतिन् १ पुण्यवत् २ धन्य ३ ॥

—महेच्छस्तु महाशयः ॥

उदारचित्तपुरुषके नाम २ ॥महेच्छ १ महाशय २ ॥

हृदयालुः सुहृदयो—

शुद्धचित्तपुरुषके नाम २ ॥हृदयालु १ सुहृदय २ ॥

—महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

बहुत उद्यम करनेवाले पुरुषके नाम ॥ २ महोत्साह १ महोद्यम २ ॥ ३ ॥

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ॥ वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

चतुरपुरुषके नाम १०॥ प्रवीण १ निपुण २ अभिज्ञ ३ विज्ञ ४ निष्णात ५ शिक्षित ६ वैज्ञानिक ७ कृतमुख ८ कृतिन् ९ कुशल १० ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः—

मान्यपुरुषके नाम २॥पूज्य १ प्रतीक्ष्य २॥

सांशयिकः संशयापन्नमानसः ॥

संशय करानेवाली वस्तुके नाम २ ॥ सांशयिक १ संशयापन्नमानस २ ॥

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दाक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

दक्षिणाके योग्यपुरुषके नाम ३॥ दक्षिणीय १ दक्षिणार्ह २ दाक्षिण्य ३॥५॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ॥

अतिदानी पुरुषके नाम ४॥ वदान्य १ स्थूललक्ष्य २ दानशौण्ड ३ बहुप्रद ४॥

जैवातृकः स्यादायुष्मा-

दीर्घायु पुरुषके नाम २ ॥ जैवातृक १ आयुष्मत् २ ॥

-नन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

शास्त्रीके नाम २ ॥ अन्तर्वाणि १ शास्त्रविद् २ ॥ ६ ॥

परीक्षकः कारणिको-

परीक्षकके नाम २॥ परीक्षक १ कारणिक २

-वरदस्तु समर्धकः ॥

वरदान देनेवालेके नाम २॥ वरद १ समर्धक २ ॥

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥

प्रसन्नके नाम ४॥ हर्षमाण १ विकुर्वाण २ प्रमनस् ३ हृष्टमानस ४ ॥ ७ ॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः-

उदास पुरुषके नाम ३ ॥ दुर्मनस् १ विमनस् २ अन्तर्मनस् ३ ॥

-स्यादुत्क उन्मनाः ॥

उत्कण्ठायुक्त पुरुषके नाम २ ॥ उत्क १ उन्मनस् २ ॥

दक्षिणे सरलोदारौ-

सीधे पुरुषके नाम ३ ॥ दक्षिण १ सरल २ उदार ३ ॥

-सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥

दानी और भोगीपुरुषका नाम १ सुकल १ ॥ ८ ॥

तत्परे प्रसितासक्ता-

कार्य्यविशेषमें चित्त लगानेवाले पुरुषके नाम ३॥ तत्पर १ प्रसित २ आसक्त ३॥

-विष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ॥

अभीष्टवस्तुके प्राप्त करनेमें तत्पर पुरुषके नाम २॥ इष्टार्थोद्युक्त १ उत्सुक २॥

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥

प्रसिद्ध पुरुषके नाम ६ ॥ प्रतीत १ प्रथित २ ख्यात ३ वित्त ४ विज्ञात ५ विश्रुत ६ ॥ ९ ॥

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ ॥

गुणोंसे प्रसिद्ध पुरुषके नाम २॥ कृतलक्षण १ आहितलक्षण २ ॥

इभ्य आढ्यो धनी-

धनी पुरुषके नाम ३ ॥ इभ्य १ आढ्य २ धनिन् ३ ॥

-स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥१०॥ अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिबृढोऽधिपः ॥

स्वामीके नाम १० ॥ स्वामिन् १ ईश्वर २ पति ३ ईशितृ ४ ॥ १० ॥ अधिभू ५ नायक ६ नेतृ ७ प्रभु ८ परिबृढ ९ अधिप १० ॥

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्या-

सम्पत्तिमान् पुरुषके नाम २ ॥ अधिकर्द्धि १ समृद्ध २ ॥

-त्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः॥११॥ स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ॥

कुटुम्बके पालनकरनेमे तत्परपुरुषके नाम ३ ॥ कुटुम्बव्यापृत १ ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक २ उपाधि ३ ॥

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥

अंग और रूपसे अतिश्रेष्ठ पुरुषका नाम १ ॥ सिंहसंहनन १ ॥ १२ ॥

निर्वार्यः कार्यकर्ता यः सम्पन्नः सत्त्वसम्पदा ॥

जो दुःखमेभी प्रसन्नताके साथ कार्य किया करताहै उस पुरुषका नाम १ ॥ निर्वार्य १ ॥

अवाचि मूको-

गूंगे पुरुषके नाम २॥अवाच्१ मूक २॥

-ऽथ मनोजवसः पितृसन्निभः॥ १३ ॥

जो पुरुष पिताके समान माना जाय उस पुरुषके नाम २॥मनोजवस१ पितृसन्निभ २ ॥ १३ ॥

सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ॥

जो वरको आदरपूर्वक वस्त्रभूषण सहित कन्यादान दे उस पुरुषका नाम १ ॥ कूकुद १ ॥

लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमा-

शोभावान्के नाम ४॥ लक्ष्मीवत् १ लक्ष्मण २ श्रील ३ श्रीमत् ४ ॥

-न्स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥

स्नेही पुरुषके नाम २ ॥ स्निग्ध १ वत्सल २ ॥ १४ ॥

स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ॥

दयावान् पुरुषके नाम ४॥ दयालु १ कारुणिक २ कृपालु ३ सूरत ४ ॥

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

स्वतन्त्र पुरुषके नाम ५ ॥ स्वतन्त्र १ अपावृत २ स्वैरिन् ३ स्वच्छन्द ४ निरवग्रह ५ ॥ १५ ॥

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ॥

पराधीनपुरुषके नाम ४ ॥ परतन्त्र १ पराधीन २ परवत् ३ नाथवत् ४ ॥

अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

अधीनके नाम ५ ॥ अधीन १ निघ्न २ आयत्त ३ अस्वच्छन्द ४ गृह्यक ५ ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो—

बुहारने झारनेवाले मनुष्यके नाम २ ॥ खलपू १ बहुकर २ ॥

—दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥

दीर्घसूत्र (थोडी देरके कामको बहुत देरमें करनेवालों) के नाम २ ॥ दीर्घसूत्र १ चिरक्रिय २ ॥

—जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्या—

विना विचारे कार्यकरनेवाले पुरुषके नाम २ ॥ जाल्म १ असमीक्ष्यकारिन् २

—त्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥

आलसी वा मूढ पुरुषका नाम १ ॥ कुण्ठ १ ॥ १७ ॥

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः—

कार्य्यकरनेमें समर्थपुरुषके नाम २ ॥ कर्मक्षम १ अलङ्कर्मीण २ ॥

—क्रियावान्कर्मसूद्यतः ॥

कार्यकरनेमे तत्पर पुरुषका नाम १ ॥ क्रियावत् १ ॥

स कार्मः कर्मशीलो यः—

जो नित्यकाममे लगारहै उस पुरुषके नाम २ ॥ कार्म १ कर्मशील २ ॥

—कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

प्रयत्नपूर्वक जो कार्यको समाप्त करै उस पुरुषके नाम २ ॥ कर्मशूर १ कर्मठ २ ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः—

मजदूरके नाम २ ॥ भरण्यभुज् १ कर्मकर २ ॥

—कर्मकारस्तु तत्क्रियः ॥

विना मजूरीके भी जो कार्य करदेय उस पुरुषका नाम १ ॥ कर्मकार १ ॥

अपस्नातो मृतस्नात—

किसीके मरनेके अनन्तर स्नान किये हुये पुरुषके नाम २ ॥ अपस्नात १ मृतस्नात २ ॥

—आमिषाशी तु शौष्कुलः १९ ॥

मास खानेवाले पुरुषके नाम २ ॥ आमिषाशिन् १ शौष्कुल २ ॥ १९ ॥

बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ॥

भूखे पुरुषके नाम ४ ॥ बुभुक्षित १ क्षुधित २ जिघत्सु ३ अशनायित ४ ॥

परान्नः परपिण्डादो-

जो पराये ही अन्नसे जीता हो उस पुरुषके नाम २॥परान्न १ परपिण्डाद २ ॥

-भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥ २० ॥

खानेवालेके नाम ३॥भक्षक १ घस्मर २ अद्मर ३ ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जित ॥

अत्यन्तही भूखे पुरुषके नाम २ ॥ आद्यून १ औदरिक २ ॥

उभौ त्वात्मंभरिः कुक्षिंभरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

पेटको ही भरनेवाले पुरुषके नाम २॥ आत्मम्भरि १ कुक्षिम्भरि २ ॥ २१ ॥

सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी-

जो सब वर्णोंका अन्न भोजन करलेता हो उस पुरुषके नाम २ ॥सर्वान्नीन १ सर्वान्नभोजिन् २ ॥

-गृध्नस्तु गर्धनः ॥

लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्-

लोभी पुरुषके नाम ५ ॥ गृध्न १ गर्धन २ लुब्ध ३ अभिलाषुक ४ तृष्णज् ५ ॥

-समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥

अतिलोभीके नाम २ ॥ लोलुप १ लोलुभ २ ॥ २२ ॥

सोन्मादस्तून्मादिष्णुः स्या-

उन्मत्तपुरुषके नाम २ ॥ उन्माद १ उन्मदिष्णु २ ॥

-दविनीतः समुद्धतः ॥

अन्यायी पुरुषके नाम २ अविनीत १ समुद्धत २ ॥

मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः-

मतवालेके नाम ४ ॥ मत्त १ शौण्ड २ उत्कट ३ क्षीव ४ ॥

-कामुके कमिताऽनुकः ॥ २३ ॥

कम्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ॥

कामीके नाम ९॥ कामुक १ कमितृ २ अनुक ३ ॥ २३ ॥ कम्र ४ कामयितृ ५ अभीक ६ कमन ७ कामन ८ अभिक ९

विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः ॥ २४ ॥

वचनग्रहण करनेवाले पुरुषके नाम ४ विधेय १ विनयग्राहिन् २ वचनेस्थित ३ आश्रव ४ ॥ २४ ॥

वश्यः प्रणेयो-

वशीभूतके नाम २ ॥ वश्य १ प्रणेय २ ॥

-निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ॥

नम्रपुरुषके नाम ३ ॥ निभृत १ विनीत २ प्रश्रित ३ ॥

धृष्टे धृष्णग्वियातश्च—

धीठ पुरुषके नाम ३ ॥ धृष्ट १ धृष्णज् २ वियात ३ ॥

—प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥२५॥

अतिधीठ निर्भय पुरुषके नाम २ ॥ प्रगल्भ १ प्रतिभान्वित २ ॥ २५ ॥

स्यादधृष्टे तु शालीनो—

लज्जावान् पुरुषके नाम २ ॥ अधृष्ट १ शालीन २ ॥

—विलक्षो विस्मयान्विते ॥

अचम्भेमें पडेहुए पुरुषके नाम २ ॥ विलक्ष १ विस्मयान्वित २ ॥

अधीरे कातर—

व्याकुलहुए पुरुषके नाम २ ॥ अधीर १ कातर २ ॥

—स्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥२६॥

डरपोकके नाम ४॥ त्रस्त १ भीरु२ भीरुक ३ भीलुक ४ ॥ २६ ॥

आशंसुराशंसितरि—

इष्ट अर्थप्राप्तिकी इच्छावाले पुरुषके नाम २ ॥ आशंसु १ आशंसितृ २ ॥

—गृहयालुर्ग्रहीतरि ॥

लेनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २॥ गृहयालु १ ग्रहीतृ २ ॥

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते—

श्रद्धायुक्त स्वभाववाले पुरुषका नाम १॥ श्रद्धालु १ ॥

—पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

गिरनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम२॥ पतयालु १ पातुक २ ॥ २७ ॥

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णु—

लज्जाशील पुरुषके नाम २॥ लज्जाशील १ अपत्रपिष्णु २ ॥

—र्वन्दारुरभिवादके ॥

वन्दना करनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २ ॥ वन्दारु १ अभिवादक २ ॥

शरारुर्घातुको हिंस्रः—

हिंसा करनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम ३॥ शरारु १ घातुक २ हिंस्र ३॥

—स्याद्वर्द्धिष्णुस्तु वर्धनः॥२८॥

बढनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम२॥ वर्द्धिष्णु १ वर्धन २ ॥ २८ ॥

उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता—

कूदनेके स्वभाववालेके नाम२॥उत्पतिष्णु १ उत्पतितृ २ ॥

—ऽलंकरिष्णुस्तु मण्डनः ॥

भूषण आदि पहरनेके स्वभाववालेके नाम २ ॥ अलंकरिष्णु १ मडन २ ॥

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता—

होनेके स्वभाववालेके नाम ३ ॥ भूष्णु १ भविष्णु २ भवितृ ३ ॥

—वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥

वर्त्ताव करनेके स्वभाववालेके नाम २ ॥ वर्तिष्णु १ वर्त्तन २ ॥ २९ ॥

निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्या-

तिरस्कार करनेके स्वभाववालेके नाम २ ॥ निराकरिष्णु १ क्षिप्नु २ ॥

—त्सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ॥

सघन और चिकनेका नाम १ ॥ मेदुर ॥ १ ॥

ज्ञाता तु विदुरो विन्दु-

जाननेके स्वभाववालेके नाम ३ ॥ ज्ञातृ १ विदुर २ विन्दु ३ ॥

—र्विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥

खिलनेके स्वभाववालेके नाम २ ॥ विकासिन् १ विकस्वर २ ॥ ३० ॥

विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि ॥

फैलनेके स्वभाववालेके नाम ४ ॥ विसृत्वर १ विसृमर २ प्रसारिन् ३ विसारिन् ४ ॥

सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥

सहनशीलवालेके नाम ६ ॥ सहिष्णु १ सहन २ क्षन्तृ ३ तितिक्षु ४ क्षमितृ ५ क्षमिन् ६ ॥ ३१ ॥

क्रोधनोऽमर्षणः कोपी-

क्रोधके स्वभाववालेके नाम ३ ॥ क्रोधन १ अमर्षण २ कोपिन् ३ ॥

—चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ॥

अत्यन्त क्रोधके स्वभाववालेके नाम २ ॥ चण्ड १ अत्यन्तकोपन २ ॥

जागरूको जागरिता-

जागनेके स्वभाववालेके नाम २ ॥ जागरूक १ जागरितृ २ ॥

—घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

घूरनेवालेके नाम २ ॥ घूर्णित १ प्रचलायित २ ॥ ३२ ॥

स्वप्नक्छयालुर्निद्रालु-

निद्रालुके नाम ३ ॥ स्वप्नज् १ शयालु २ निद्रालु ३ ॥

—र्निद्राणशयितौ समौ ॥

शयन करनेवालेके नाम २ ॥ निद्राण १ शयित २ ॥

पराङ्मुखः पराचीनः-

विमुखके नाम २ ॥ पराङ्मुख १ पराचीन २ ॥

—स्यादवाङप्यधोमुखः ॥ ३३ ॥

नीचेको मुख करनेवालेके नाम २ ॥ अवाच् १ अधोमुख २ ॥ ३३ ॥

देवानञ्चति देवद्र्यङ्-

देवताओंकी पूजा करनेवालेका नाम १ ॥ देवद्र्यच् ॥ १ ॥

–विष्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति ॥

सब ओर जानेवालेका नाम १ ॥ विष्वद्र्यच् १ ॥

यः सहाञ्चति सध्र्यङ् सः–

साथ रहनेवालेका नाम १ ॥ सध्र्यच् १ ॥

–स तिर्यङ् य स्तिरोऽञ्चति ॥ ३४ ॥

टेढे चलनेवालेका नाम १ ॥ तिर्यच् १ ॥ ३४ ॥

वदो वदावदो वक्ता–

वक्ताके नाम ३ ॥ वद १ वदावद २ वक्तृ ३ ॥

–वागीशो वाक्पतिः समौ ॥

चातुर्ययुक्त बोलनेवालेके नाम २ ॥ वागीश १ वाक्पति २ ॥

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्ग्मी वावदूकोऽतिवक्तरि ॥ ३५ ॥

शास्त्रानुसार अत्यन्त बोलनेवालेके नाम ४ ॥ वाचोयुक्तिपटु १ वाग्मिन् २ वावदूक २ अतिवक्तृ ४ ॥ ३५ ॥

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ॥

अतिनिन्दित भाषण करनेवालेके नाम ४ ॥ जल्पाक १ वाचाल २ वाचाट ३ बहुगर्ह्यवाच् ॥ ४ ॥

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ–

अप्रियबोलनेवालेके नाम ३ ॥ दुर्मुख १ मुखर २ अबद्धमुख ३ ॥

–शक्लः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

प्रिय बोलनेवालेके नाम २ ॥ शक्ल १ प्रियंवद २ ॥ ३६ ॥

लोहलः स्यादस्फुटवा–

जो स्फुट न बोलता हो उस पुरुषके नाम २ ॥ लोहल १ अस्फुटवाच् २ ॥

–गर्ह्यवादी तु कद्वदः ॥

निन्दितवाक्य बोलनेवाले पुरुषके नाम २ ॥ गर्ह्यवादिन् १ कद्वद २ ॥

समौ कुवादकुचरौ–

बुराईकहनेवालेके नाम २ कुवाद १ कुचर २ ॥

स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

रूखे स्वरवालेके नाम २ असौम्यस्वर १ अस्वर २ ॥ ३७ ॥

रवणः शब्दनो–

चिल्लानेवालेके नाम २ ॥ रवण १ शब्दन २ ॥

–नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ॥

नान्दीवादी अर्थात् नाटकके आरंभमें स्तुतिविशेष करनेवालेके नाम २ ॥ नान्दीवादिन् १ नान्दीकर २ ॥

जडोऽज्ञ–

महामूर्खके नाम २ ॥ जड १ अज्ञ २ ॥

–एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥

जो गूंगा बहिरा दोनों हो उसका नाम १ ॥ एडमूक १ ॥ ३८ ॥

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको-

मौनरहनेवाले पुरुषके नाम २॥ तूष्णीशील १ तूष्णीक २ ॥

-नग्नोऽवासा दिगम्बरे ॥

नग्नपुरुषके नाम३ ॥नग्न१अवासस् २ दिगम्बर ३ ॥

निष्कासितोऽवकृष्टः स्या-

निकालेहुएके नाम २ ॥निष्कासित १ अवकृष्ट २ ॥

-दपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥

धिक्कार दियेहुये पुरुषके नाम २ ॥ अपध्वस्त १ धिक्कृत २ ॥ ३९ ॥

आत्तगर्वोऽभिभूतः स्या-

तिरस्कारको प्राप्तहुये पुरुषके नाम२ आत्तगर्व १ अभिभूत २ ॥

-द्दापितः साधितः समौ ॥

धनादि दिवाकर वशमें कियेहुए पुरुषके नाम २ ॥ दापित १ साधित २॥

प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥

निरादरको प्राप्तहुए पुरुषके नाम४॥ प्रत्यादिष्ट १ निरस्त २ प्रत्याख्यात ३ निराकृत ४ ॥ ४० ॥

निकृतः स्याद्विप्रकृतो-

बुरेरूपवालेके नाम २ ॥ निकृत १ विप्रकृत २ ॥

-विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ॥

ठगेहुये पुरुषके नाम२॥विप्रलब्ध १ वञ्चित २ ॥

मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥

मनोहतपुरुषके नाम ४॥ मनोहत १ प्रतिहत २प्रतिबद्ध ३ हत ४ ॥ ४१॥

अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो-

जिसके ऊपर आक्षेप किया गया हो उस पुरुषके नाम२ ॥ अधिक्षिप्त १ प्रतिक्षिप्त २ ॥

-बद्धे कीलितसंयतौ ॥

बाधेहुएके नाम ३॥ बद्ध१कीलित२ २सयत ३ ॥

आपन्न आपत्प्राप्तः स्या-

आपत्तिको प्राप्तहुए पुरुषके नाम२ आपन्न १ आपत्प्राप्त २ ॥

त्कांदिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥

भयसे भागेहुयेके नाम २ ॥कांदिशीक १ भयद्रुत २ ॥ ४२ ॥

आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते-

मैथुनके निमित्त वृथा दोष लगाये हुए पुरुषके नाम ३ ॥ आक्षारित १क्षारित २ अभिशस्त ३ ॥

—संकसुकोऽस्थिरे ॥
चचलस्वभाववाले पुरुषके नाम २॥ संकसुक १ अस्थिर २ ॥
व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ—
दैवी और मानुषी पीडासे युक्त पुरुषके नाम २ ॥ व्यसनार्त १ उपरक्त २ ॥
—विहस्तव्याकुलौ समौ॥४३॥
शोकादिसे व्याकुलपुरुषके नाम २॥ विहस्त १ व्याकुल २ ॥ ४३ ॥
—विक्लवो विह्वलः—
विकलपुरुषके नाम २ ॥ विक्लव १ विह्वल २ ॥
—स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ॥
मरणके समीप आनेसे जिसकी बुद्धि विपरीत होजाय उस पुरुषके नाम २ ॥ विवश १ अरिष्टदुष्टधी २ ॥
कश्यः कशार्हे—
बेतमारने योग्यके नाम २ ॥ कश्य १ कशार्ह २ ॥
—सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते॥४४॥
मारनेयोग्यका नाम १ ॥ आततायिन् १ ॥ ४४ ॥
द्वेष्ये त्वक्षिगतो—
द्वेष करने लायकके नाम २ ॥ द्वेष्य १ अक्षिगत २ ॥
—वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ॥
शिरकाटने योग्यके नाम २॥ वध्य १ शीर्षच्छेद्य २ ॥
विष्यो विषेण यो वध्यो—
विषकरके मारने योग्यका नाम १॥ विष्य १ ॥
—मुसल्यो मुसलेन यः ॥४५॥
मुसलसे मारने योग्यका नाम १॥ मुसल्य १ ॥ ४५ ॥
शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा—
पापकर्म न करनेवाले पुरुषके नाम २ ॥ शिश्विदान १ अकृष्णकर्मन् २ ॥
—चपलश्चिकुरः समौ ॥
विना दोष विचारे मारनेवालेके नाम २ ॥ चपल १ चिकुर २ ॥
दोषैकदृक्पुरोभागी—
केवल दोपको ही दृष्टि करनेवालेके नाम२॥दोषैकदृश् १ पुरोभागिन् २ ॥
—निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥४६॥
कुटिलहृदयके नाम ३ ॥ निकृत १ अनृजु २ शठ ३ ॥ ४६ ॥
कर्णेजपः सूचकः स्या—
चुगलखोरके नाम २ ॥ कर्णेजप १ सूचक २ ॥
—त्पिशुनो दुर्जनः खलः ॥
आपसमें भेद करानेवालेके नाम ३॥ पिशुन १ दुर्जन २ खल ३ ॥

नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो-

घातक अथवा कठोरपुरुषके नाम ४ नृशंस १ घातुक २ क्रूर ३ पाप ४ ॥

-धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥

ठगके नाम २॥ धूर्त्त १ वञ्चक २ ॥४७॥

अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ॥

मूर्खके नाम ६ ॥ अज्ञ १ मूढ २ यथाजात ३ मूर्ख ४ वैधेय ५ बालिश ६॥

कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥

कृपणके नाम ५॥ कदर्य १ कृपण २ क्षुद्र ३ किंपचान ४ मितम्पच ५॥४८॥

निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ॥

दरिद्रपुरुषके नाम ५॥ निःस्व १ दुर्विध दीन ३ दरिद्र ४ दुर्गत ५ ॥

वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

मांगनेवालेके नाम ५ ॥ वनीयक १ याचनक २ मार्गण ३ याचक ४ अर्थिन् ५ ॥ ४९ ॥

अहंकारवानहंयुः-

अहंकारयुक्त पुरुषके नाम २॥ अहंकारवत् १ अहंयु २ ॥

-शुभंयुस्तु शुभान्वितः ॥

शुभयुक्त पुरुषके नाम २॥ शुभंयु १ शुभान्वित २ ॥

दिव्योपपादुका देवा-

देवताओंका नाम १ ॥ दिव्योपपादुक १ ॥

-नृगवाद्या जरायुजाः ॥५०॥

मनुष्य, गौ आदि 'जरायुज' कहलाते हैं ॥ ५० ॥

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः-

कीड़ा और डांस आदि 'स्वेदज' कहलाते हैं ॥

-पक्षिसर्पाद्योऽण्डजाः ॥

पक्षी, सर्पादि 'अण्डज' कहलाते हैं ॥

(इति प्राणिवर्गः)

उद्भिदस्तरुगुल्माद्या-

वृक्ष, वेल, घास आदि 'उद्भिद्' कहलाते हैं ॥

-उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

उद्भिद्के नाम ३ ॥ उद्भिद् १ उद्भिज्ज २ उद्भिद ३ ॥ ५१ ॥

सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ॥ कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ॥ ५२ ॥

सुन्दरके नाम १२॥ सुन्दर १ रुचिर २

चारु ३ सुषम ४ साधु ५ शोभन ६ कान्त ७ मनोरम ८ रुच्य ९ मनोज्ञ १० मञ्जु ११ मंजुल १२ ॥ ५२ ॥

तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ॥

जिसके देखनेसे तृप्तिके अन्तको प्राप्त न हो उसका नाम १ ॥ आसेचनक १ ॥

अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

प्रियके नाम ६ ॥ अभीष्ट १ अभीप्सित २ हृद्य ३ दयित ४ वल्लभ ५ प्रिय ६ ॥ ५३ ॥

निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः ॥ कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः ॥ ५४ ॥

अधमके नाम १३ ॥निकृष्ट १प्रतिकृष्ट २ अर्वन् ३ रेफ ४ याप्य५ अवम ६ अधम ७ कुपूय ८ कुत्सित९ अवद्य १० खेट ११ गर्ह्य १२ अणक १३ ॥ ५४ ॥

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ॥

मलिनके नाम ४॥ मलीमस १ मलिन २ कच्चर ३ मलदूषित ४

पूतं पवित्रं मेध्यं च—

पवित्रके नाम३॥ पूत १ पवित्र२ मेध्य ३॥

—वीध्रं तु विमलार्थकम् ॥ ५५॥

स्वभावसे निर्मलके नाम २॥वीध्र १ विमलार्थक २॥५५ ॥

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ॥

शुद्ध कियेहुएके नाम ५॥निर्णिक्त १ शोधित २ मृष्ट ३ निःशोध्य ४ अनवस्कर ५ ॥

असारं फल्गु—

असारवस्तुके नाम २॥असार १ फल्गु २॥

—शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥

शून्यके नाम ४ ॥ शून्य १ वशिक २ तुच्छ ३ रिक्तक ४ ॥ ५६ ॥

क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ॥ मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवरार्ध्यवत् ॥ ५७ ॥ परार्ध्याग्र्यप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ॥

प्रधानके नाम १७ ॥प्रधान १ प्रमुख २ प्रवेक ३ अनुत्तम ४ उत्तम ५ मुख्य ६ वर्य्य ७ वरेण्य ८ प्रवर्ह९ अनवरार्ध्य १० ॥ ५७॥परार्ध्य ११ अग्र १२ प्राग्रहर १३ प्राग्र्य १४ अग्र्य १५ अग्रीय १६ अग्रिय १७

श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

अतिसुंदरके नाम ५ ॥ श्रेयस १ श्रेष्ठ २ पुष्कल ३ सत्तम ४ अतिशोभन ५ ॥ ५८ ॥

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः ॥ सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥

व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ; कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नागादि शब्दोंके उत्तर आनेसे श्रेष्ठ अर्थके वाचक होते हैं जैसे पुरुषव्याघ्र, द्विजपुङ्गव. इत्यादि ॥५९॥

अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ॥

अप्रधानके नाम३॥ अप्राग्र्य१ अप्रधान २ उपसर्जन ३ ॥

विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥६० ॥ वड्रोरुविपुलं—

चौडेके नाम ९॥विशङ्कट १ पृथु २ बृहत् ३ विशाल ४ पृथुल ५महत्६ ॥६० ॥ वड्र ७ उरु ८ विपुल ९ ॥

—पीनपीव्नी तु स्थूलपीवरे ॥

मोटेके नाम ४ ॥ पीन १ पीवन्२ स्थूल ३ पीवर ४॥

स्तोकाल्पक्षुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥ स्त्रियां मात्रात्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः ॥

थोडेके नाम १४ ॥स्तोक१अल्प२ क्षुल्लक ३ सूक्ष्म ४ श्लक्ष्ण ५दभ्र६कृश ७ तनु ८॥ ६१ ॥ मात्रा९त्रुटि १० लव ११ लेश १२ कण१३अणु१४॥

अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

अतिअल्पके नाम ४ ॥ अल्पिष्ठ १ अल्पीयस्२कनीयस्३अणीयस्४॥६२।

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ॥ पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

बहुतके नाम १२ ॥ प्रभूत१प्रचुर२ प्राज्य ३ अदभ्र ४बहुल ५बहु६पुरुहू७ पुरु ८ भूयिष्ट ९ स्फार १०भूयस११ भूरि १२ ॥६३॥

परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शताधिकात् ॥

जिनकी संख्या शतसे अर्थात् सहस्रादिसे अधिक हो वह परः शत आदि कहलाते है ॥

गणनीये तु गणेयं—

गिननेयोग्य वस्तुके नाम २ ॥ गणनीय १ गणेय २ ॥

—संख्याते गणित—

गिनेहुएके नाम २ ॥ सख्यात १ गणित २ ॥

मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥
विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनि-
खिलाखिलानि निःशेषम् ॥
समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्याद-
नूनके ॥ ६५ ॥

सम्पूर्णके नाम १४॥ सम १ सर्व२ ॥ ६४ ॥ विश्व ३ अशेष ४ कृत्स्न ५ समस्त ६ निखिल ७ अखिल ८ निःशेष ९ समग्र १० सकल ११ पूर्ण १२ अखण्ड १३ अनूनक १४ ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं-

घनेके नाम ३॥ घन १ निरन्तर२ सान्द्र३॥

-पेलवं विरलं तनु॥

छितरे (छीदे) के नाम ३॥ पेलव १ विरल २ तनु ३ ॥

समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टस-
नीडवत् ॥ ६६ ॥ सदेशाभ्या-
शसविधसमर्यादसवेशवत् ॥
उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अ
प्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

समीपके नाम १५ ॥ समीप १ निकट २ आसन्न ३ सन्निकृष्ट ४ सनीड ५ ॥ ६६॥ सदेश ६ अभ्याश ७ सविध ८ समर्याद ९ सवेश १० उपकण्ठ ११ अन्तिक १२ अभ्यर्ण १३ अभ्यग्र १४ अभितः १५ ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तर-
मित्यपि ॥

मिलेहुएके नाम ३॥ संसक्त १ अव्यवहित २ अपदान्तर ३ ॥

नेदिष्ठमन्तिकतमं-

अतिसमीपके नाम २ ॥ नेदिष्ठ १ अन्तिकतम २ ॥

-स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥

दूरके नाम २॥ दूर १ विप्रकृष्ट २॥ ६८

दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरे-

अत्यन्तदूरके नाम ३॥ दवीयस् १ दविष्ठ २ सुदूर ३ ॥

-दीर्घमायतम्॥

लम्बेके नाम२ ॥ दीर्घ१ आयत२॥

वर्तुलं निस्तलं वृत्तं-

गोलके नाम३॥ वर्तुल १ निस्तल२ वृत्त ॥

-बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

ऊँचेनीचेके नाम २ ॥ बन्धुर१ उन्नतानत २ ॥ ६९ ॥

उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छितास्तुङ्गे-

ऊंचेके नाम ६ ॥ उच्च १ प्रांशु २ उन्नत ३ उदग्र ४ उच्छ्रित ५ तुङ्ग६॥

-ऽथ वामने ॥
न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्यु-

बौने पुरुषके नाम५ ॥ वामन १ न्यक् २ नीच ३ खर्व ४ ह्रस्व ५ ॥

—रवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥

नमेहुएके नाम ३॥ अवाग्र १ अवनत २ आनत ३ ॥ ७० ॥

अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कुञ्चितं नतम्। आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्रमित्यपि ७१

टेढेके नाम ११ अराल १ वृजिन २ जिह्म ३ ऊर्मिमत् ४ कुञ्चित ५ नत ६ आविद्ध ७ कुटिल ८ भुग्न ९ वेल्लित १० वक्र ११ ॥ ७१ ॥

ऋजावजिह्मप्रगुणौ—

सीधेके नाम ३॥ ऋजु १ अजिह्म २ प्रगुण ३ ॥

—व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ॥

व्याकुलके नाम ३॥ व्यस्त १ अप्रगुण २ आकुल ३॥

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥

नित्यके नाम ५॥ शाश्वत १ ध्रुव २ नित्य ३ सदातन ४ सनातन ५॥७२॥

स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेया-

अतिस्थिरके नाम ३॥ स्थास्नु १ स्थिरतर २ स्थेयस् ३ ॥

—नेकरूपतया तु यः ॥ कालव्यापी स कूटस्थः-

निश्चल रहनेवालेका नाम १॥ कूटस्थ

—स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

वृक्षादिके नाम २ स्थावर १ जगमेतर २ ॥ ७३ ॥

चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम् ॥

चलनेवालेके नाम ६ ॥ चरिष्णु १ जगम २ चर ३ त्रस ४ इंग. ५ चराचर ६ ॥

चलनं कम्पनं कम्प्रं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥ चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ॥

कांपनेके नामे १० ॥ चलन कपन २ कम्प्र ३ चल ४ लोल ५ चलाचल ६ ॥ ७४ ॥ चञ्चल ७ तरल ८ पारिप्लव ९ परिप्लव १० ॥

अतिरिक्तः समधिको—

अधिकके नाम २॥ अतिरिक्त १ समधिक २ ॥

—दृढसंधिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥

मिलापके नाम २॥ दृढसंधि १ संहत २ ॥ ७५ ॥

कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ॥ जठरं मूर्तिमन्मूर्त—

कठिनके नाम ९॥ कर्कश १ कठिन २ क्रूर ३ कठोर ४ निष्ठुर ५ दृढ ६ जठर ७ मूर्तिमत् ८ मूर्त ९ ॥

—प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

वढेहुएके नाम ३॥ प्रवृद्ध १ प्रौढ २ एधित ३ ॥ ७६ ॥

पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः ॥

पुरानेके नाम ५ ॥ पुराण १ प्रतन २ प्रत्न ३ पुरातन ४ चिरन्तन ५ ॥

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥ नूत्नश्च—

नयेके नाम ७ ॥ प्रत्यग्र १ अभिनव २ नव्य ३ ॥ नवीन ४ नूतन ५ नव ६ ॥ ७७ ॥ नूत्न ७ ॥

—सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ॥

सुकुमारके नाम ४॥ सुकुमार १ कोमल २ मृदुल ३ मृदु ४ ॥

अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीवमव्ययम् ॥ ७८ ॥

पीछेके नाम २॥ अन्वच् १ अन्वक्ष २ अनुग ३ अनुपद ४ ॥ ७८ ॥

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियक—

प्रत्यक्षके नाम २॥ प्रत्यक्ष १ ऐन्द्रियक २॥

—मप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ॥

जो न दीखे उसके नाम २॥ अप्रत्यक्ष १ अतीन्द्रिय २ ॥

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥ अप्येकसर्ग एकाग्र्योऽप्येकायनगतोऽपि सः ॥

एकाग्रके नाम ७ ॥ एकतान १ अनन्यवृत्ति २ एकाग्र ३ एकायन ४ ॥ ७९ ॥ एकसर्ग ५ एकाग्र्य ६ एकायनगत ७ ॥

पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या—

पहिलेके नाम ५ ॥ आदि १ पूर्व २ पौरस्त्य ३ प्रथम ४ आद्य ५ ॥

—अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥

अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ॥

पिछलेके नाम ६ ॥ ८० ॥ अन्त १ जघन्य २ चरम ३ अन्त्य ४ पाश्चात्य ५ पश्चिम ६ ॥

मोघं निरर्थकं—

व्यर्थके नाम २॥ मोघ १ निरर्थक २ ॥

—स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्वणम् ॥ ८१ ॥

स्पष्टके नाम ४ ॥ स्पष्ट १ स्फुट २ प्रव्यक्त ३ उल्वण ४ ॥ ८१ ॥

साधारणं तु सामान्य—

सामान्यके नाम २ ॥ साधारण १ सामान्य २ ॥

—मेकाकी त्वेक एककः ॥

अकेलेके नाम ३॥ एकाकिन् १ एक २ एकक ३ ॥

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥

अन्यके नाम ६॥भिन्न १ अन्यतर २ एक ३ त्व ४ अन्य ५ इतर६॥८२॥

उच्चावचं नैकभेद-:

अनेकप्रकारके नाम २॥ उच्चावच १ नैकभेद २ ॥

-मुच्चण्डमविलम्बितम् ॥

शीघ्रके नाम २ ॥ उच्चण्ड १ अविलंबित २ ॥

अरुंतुदस्तु मर्मस्पृ-

मर्मभेदकके नाम २ ॥ अरुन्तुद १ मर्मस्पृश् २ ॥

गवाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

जिसके कोई बाधा न हो उसके नाम २॥ अवाध १ निरर्गल २ ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च ॥

विपरीतके नाम ४ ॥प्रसव्य १ प्रतिकूल २ अपसव्य ३ अपष्ठु ४ ॥

वामं शरीरं सव्यं स्या-

बांये अंगका नाम १ ॥सव्य १ ॥

-दपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥

दहिने अंगका नाम १ ॥ अपसव्य १ ॥ ८४ ॥

संकटं ना तु संबाधः-

सकट (भीड मार्गआदि)के नाम २ संकट १ सबाध २ ॥

-कलिलं गहनं समे ॥

जो बडेही दुःखसे प्राप्तहोनेके योग्य हो उसके नाम२ ॥ कलिल १गहन२॥

संकीर्णे संकुलाकीर्णे-

नाना जातिके लोगोंके एकत्र बैठनेके नाम३॥सकीर्ण १संकुल २ आकीर्ण३॥

-मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

मुण्डेहुएके नाम २ ॥ मुण्डित १ परिवापित २ ॥ ८५॥

ग्रन्थितं सन्दितं दृब्धं-

गण्ठेहुएके नाम ३ ॥ ग्रन्थित १ संदित २ दृब्ध ३ ॥

-विसृतं विस्तृतं ततम् ॥

फैलेहुयेके नाम ३ ॥ विसृत १ विस्तृत २ तत ३ ॥

अन्तर्गतं विस्मृतं स्या-

भूलेहुएके नाम २ ॥ अंतर्गत १ विस्मृत २ ॥

-त्प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६॥

रक्खेहुयेके नाम २॥ प्राप्त १प्रणिहित २ ॥ ८६ ॥

वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचालिताकम्पिताधुते ॥

थोडा कांपते हुएके नाम ६ ॥वेल्लित १

प्रेंखित २ आधूत ३ चलित ४ आकंपित ५ धुत ६ ॥

-नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धाक्षिप्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

प्रेरितके नाम ७ ॥ नुत्त १ नुन्न २ अस्त ३ निष्ठ्यूत ४ आविद्ध ५ क्षिप्त ६ ईरित ७ ॥ ८७ ॥

परिक्षिप्तं तु निवृत्तं-

घेरेहुएके नाम २ ॥ परिक्षिप्त १ निवृत्त २ ॥

-मूषितं मुषितार्थकम् ॥

चुरायेहुयेके नाम २ ॥ मूषित १ मुषित २ ॥

प्रवृद्धप्रसृते-

फैलनेके नाम २॥ प्रवृद्ध १ प्रसृत २॥

-न्यस्तनिसृष्टे-

फेंकेहुएके नाम २ ॥ न्यस्त १ निसृष्ट २ ॥

-गुणिताहते ॥ ८८ ॥

गुणेहुएके नाम २॥ गुणित १ आहत २ ॥ ८८ ॥

निदिग्धोपचिते-

वढेहुएके नाम २ ॥ निदिग्ध १ उपचित २ ॥

-गूढगुप्ते-

छिपेहुएके नाम २॥ गूढ १ गुप्त २॥

-गुण्ठितरूषिते ॥

धूलिसे सनेहुएके नाम २ ॥ गुण्ठित १ रूषित २ ॥

द्रुतावदीर्णे-

द्रवीभूतके नाम २ ॥ द्रुत १ अवदीर्ण २ ॥

-उद्गूर्णोद्यते-

मारनेको उठायेहुए शस्त्रादिके नाम २॥ उद्गूर्ण १ उद्यत २ ॥

-काचितशिक्यिते ॥ ८९ ॥

छींकेपै धरी हुई वस्तुके नाम २ ॥ काचित १ ॥ शिक्यित २ ॥ ८९ ॥

घ्राणघ्राते-

सूंघेहुएके नाम २॥ घ्राण १ घ्रात २

-दिग्धलिप्ते-

लीपेहुएके नाम २॥ दिग्ध १ लिप्त २॥

-समुदक्तोद्धृते-

कूपादिसे निकालेहुए जलादिके नाम २ ॥ समुदक्त १ उद्धृत २ ॥

-समे ॥

उपरोक्तशब्द समानलिंग होते हैं ॥

वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥

नदी आदिसे घेरेहुएके नाम ५ ॥ वेष्टित १ वलयित २ संवीत ३ रुद्ध ४ आवृत ५ ॥ ९० ॥

रुग्णं भुग्ने-

टूटेहुयेके नाम २ ॥ रुग्ण१ भुग्न२॥

-ऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ॥

तेज किये हुयेके नाम ४॥ निशित १ क्ष्णुत २ शात ३ तेजित ४ ॥

स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं-

पकेहुए मरने वा काटनेके योग्य वस्तु के नाम २ ॥ विनाशोन्मुख १ पक्व २॥

-ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते ॥९१॥

लज्जायुक्तके नाम ३॥ ह्रीण१ ह्रीत२ लज्जित ३ ॥ ९१ ॥

वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ-

वरण कियेहुएके नाम ३॥ वृत्त १ वृत २ व्यावृत्त ३ ॥

-संयोजित उपाहितः ॥

मिलाये हुएके नाम २॥ सयोजित १ उपाहित २ ॥

प्राप्यं गम्यं समासाद्यं-

प्राप्तकरनेके योग्यके नाम ३॥ प्राप्य १ गम्य २ समासाद्य ३ ॥

-स्यन्नं रीणं स्नुतं स्रुतम् ॥९२॥

वहते हुएके नाम ४ ॥ स्यन्न १ रीण २ स्नुत ३ स्रुत ४ ॥ ९२ ॥

संगूढं स्यात्संकलितो-

जोडेहुए अंकादिके नाम २॥ संगूढ १ सङ्कलित २ ॥

-ऽवगीतः ख्यातगर्हणः ॥

निन्दितके नाम २ ॥ अवगीत १ ख्यातगर्हण २ ॥

विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥

विविधप्रकारके नाम ४॥ विविध १ बहुविध २ नानारूप ३ पृथग्विध ४॥९३॥

अवरीणो धिक्कृतश्चा-

धिक्कारे हुएके नाम २ ॥ अवरीण १ धिक्कृत २ ॥

-प्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः ॥

चूर्ण किये गयेके नाम २॥ अवध्वस्त १ अवचूर्णित २ ॥

अनायासकृतं फाण्टं-

अनयाससे किये कायका नाम १॥ फाण्ट १ ॥

-स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥

जिसने शब्द किया हो उसके नाम २॥ स्वनित १ ध्वनित २ ॥ ९४ ॥

बद्धे संदानितं मूतमुद्दितं संदितं सितम् ॥

बँधेहुएके नाम ६॥ बद्ध १ संदानित २ मूत ३॥ मुद्दित ४ संदित ५ सित ६॥

निष्पक्वे क्वथितं

अच्छी तरह पकायेहुए काढे आदिके नाम २ ॥ निष्पक्व १ क्वथित २ ॥

पाके क्षीराज्यहविषां　　शृतम् ॥ ९५ ॥

पकेहुये घृत दुग्धादिका नाम १ ॥ शृत १ ॥ ९५ ॥

निर्वाणोमुनिवह्न्यादौ-

मुनि अग्नि आदिके मुक्तहोनेकानाम १ ॥ निर्वाण १ ॥

-निर्वातस्तु गतेऽनिले ॥

जब वायु न चलता होउस समयका नाम १ ॥ निर्वात १ ॥

पक्वं परिणते-

पकेहुयेके नाम २ ॥ पक्व १ परिणत २ ॥

-गूनं हन्नं-

हगेहुयेके नाम २॥ गून १ हन्न२ ॥

-मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥

मूतेहुयेकेनाम२।मीढ१मूत्रित॥ ९६

पुष्टं तु पुषितं-

पोषणकियेके नाम २ ॥ पुष्ट १ पुषित २ ॥

-सोढे क्षान्त—

सहेहुयेके नाम २ ॥ सोढ१क्षान्त२

मुद्रान्तमुद्गतं ॥

डाके हुये अन्नादिकेनाम २॥उद्वान्त १ उद्गत २ ॥

दान्तस्तु दमितं—

दमनकिये वृषभ आदिके नाम २ ॥ दान्त १ दमित ॥२ ॥

शान्तः शमितं—

शमनको प्राप्त हुयेके नाम२॥शान्त १ शमित २ १

-प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥

मागेहुयेके नाम २ ॥ प्रार्थित १ अर्दित २ ॥ ९७ ॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते-

जानेहुयेके नाम २॥ज्ञप्त१ज्ञपित२॥

-छन्नश्छादिते-

छायेके नाम २ ॥ छन्न१छादित२॥

पूजितेऽञ्चितः ॥

पूजाकियेगयेके नाम २ ॥ पूजित १ अञ्चित २ ॥

पूर्णस्तु पूरिते-

पूरेके नाम २॥ पूर्ण १ पूरित २॥

-क्लिष्टः क्लिशितं-

क्लेशितकेनाम२॥क्लिष्ट१ क्लिशित२॥

-वसिते सितः ॥ ९८ ॥

समाप्तके नाम २ अवसित १ सित २ ॥ ९८ ॥

प्रुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे-

जलेहुयेके नाम ४ ॥प्रुष्ट १प्लुष्ट २ उषित ३ दग्ध ४

तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥

सूक्ष्मकिये गयेके नाम ३ ॥ तष्ट १ त्वष्ट २ तनूकृत ३ ॥

वेधितच्छिद्रितौ विद्धे-

छेदेहुयेके नाम ३॥वेधित १ छिद्रित २विद्ध ३ ॥

-विन्नवित्तौ विचारिते ॥९९ ॥

विचारेहुएके नाम ३ ॥विन्न १वित्त २ विचारित ३ ॥ ९९ ॥

निष्प्रभे विगतारोकौ-

तेजरहितके नाम ३ ॥ निष्प्रभ १ विगत २ अरोक ३ ॥

-विलीने विद्रुतद्रुतौ ॥

पिघल जानेके नाम ३ ॥ विलीन १ विद्रुत २ द्रुत ३ ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ-

सिद्धके नाम ३ ॥ सिद्ध १ निर्वृत्त २ निष्पन्न ३ ॥

-दारिते भिन्नभेदितौ ॥ १०० ॥

चीरेहुयेके नाम ३॥दारिद १ भिन्न २ भेदित ३ ॥ १०० ॥

ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंतते ॥

तंतुके विस्तारके नाम ३ ॥ ऊत १ स्यूत २ उत ३ ॥

स्यादर्हिते नमस्यितं नमसितमपचायितार्चितापऽचितम् ॥ १०१ ॥

पूजितके नाम ६ ॥ अर्हित १ मनस्यित २नमसित ३अपचायित ४अर्चित ५ अपचित ६ ॥ १०१

वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं च ॥

सेवाकियेगयेके नाम ४ ॥वरिवसित १ वरिवस्यित २ उपासित ३उपचरित ४॥

संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥ १०२ ॥

तपायेहुएके नाम ५ ॥ संतापित १ सन्तप्त २धूपित ३धूपायित ४दून ५ १०२

हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः ॥

हर्षितके नाम ६ ॥हृष्ट १ मत्त २ तृप्त ३ प्रह्लन्न ४ प्रमुदित ५ प्रीत ६॥

छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ॥ १०३ ॥

काटेहुयेके नाम ८॥छिन्न १ छात २ लून ३ कृत्त ४ दात ५ दित ६ छित ७ वृक्ण ८ ॥१०३ ॥

स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ॥

चुयेहुयेके नाम ७ ॥स्रस्त १ ध्वस्त २भ्रष्ट ३स्कन्न ४पन्न ५च्युत ६गलित ७ ॥

लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च ॥ १०४ ॥

पायेहुएके नाम ६ ॥ लब्ध १ प्राप्त २ विन्न ३ भावित ४ आसादित ५ भूत ६ ॥ १०४ ॥

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ॥

ढूंढेहुएके नाम ५॥ अन्वेषित १ गवेषित २ अन्विष्ट ३ मार्गित ४ मृगित ५॥

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५ ॥

भींजेहुएके नाम ७॥ आर्द्र १ सार्द्र २ क्लिन्न ३ तिमित ४ स्तिमित ५ समुन्न ६ उत्त ७ ॥ १०५ ॥

त्रातं त्राणं रक्षितमवित्त गोपायितं च गुप्तं च॥

रक्षाकिये गयेके नाम ६॥ त्राण १ त्रात २ रक्षित ३ अवित ४ गोपायित ५ गुप्त ॥ ६ ॥

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितं परिभूते ॥ १०६ ॥

अपमानकिये गयेके नाम ५॥ अवगणित १ अवमत २ अवज्ञात ३ अवमानित ४ परिभूत ५ ॥ १०६ ॥

त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ॥

त्यागेहुयेके नाम ६ ॥ त्यक्त १ हीन २ विधुत ३ समुज्झित ४ धूत ५ उत्सृष्ट ६॥

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् १०७

कहेहुयेके नाम ७॥ उक्त १ भाषित २ उदित ३ जल्पित ४ आख्यात ५ अभिहित ६ लपित ७ ॥ १०७ ॥

बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ॥

जानेगयेके नाम ७॥ बुद्ध १ बुधित २ मनित ३ विदित ४ प्रतिपन्न ५ अवसित ६ अवगत ७ ॥

ऊरीकृतमुररीकृतमंगीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥

संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ॥

अंगीकारकिये गयेके नाम ११॥ ऊरीकृत १ उररीकृत २ अंगीकृत ३ आश्रुत ४ प्रतिज्ञात ५ ॥ १०८ ॥ संगीर्ण ६ विदित ७ संश्रुत ८ समाहित ९ उपश्रुत १० उपगत ११ ॥

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९

अवगीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ॥

स्तुति किये गयेके नाम १२॥ ईलित १ शस्त २ पणायित ३ पनायित ४ प्रणुत ५ पणित ६ पनित ७॥ १०९॥ अवगीर्ण ८ वर्णित ९ अभिष्टुत १० ईडित ११ स्तुत १२ ॥

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसित-
गिलितखादितप्सातम् ११० ॥
अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ता-
शितं भुक्ते ॥

खायेगयेके नाम १४॥ भक्षित १ चर्वित २ लीढ ३ प्रत्यवसित ४ गिलित ५ खादित ६ प्सात ७ ॥ ११० ॥ अभ्यवहृत ८ अन्न ९ जग्ध १० ग्रस्त ११ ग्लस्त १२ अशित १३ भुक्त १४

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थवि-
ष्ठबंहिष्ठाः॥१११॥ क्षिप्रक्षुद्रा-
भीप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षा-
र्थाः ॥

भाषा-(अतिशय करके त्वरितका नाम) क्षेपिष्ठ १ ॥ (अतिशय क्षुद्रका नाम) क्षोदिष्ठ १॥ (अतिशय अभीप्सितका नाम) प्रेष्ठ १॥ अतिशय पृथुका नाम) वरिष्ठ १ ॥ (अतिशय स्थूलका नाम) स्थविष्ठ १ ॥ अतिशय बहुलका नाम) बंहिष्ठ १ ॥ १११ ॥

साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसि-
ष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥
बाढव्यायतबहुगुरुवामन
वृन्दारिकातिशये ॥

भाषा-(अतिशय बाढका नाम) साधिष्ठ १॥ (अतिशय दीर्घका नाम) द्राघिष्ठ १॥ अतिशय स्फिरका नाम) स्फेष्ठ १॥ (अतिशयका गुरुका नाम) गरिष्ठ १॥(अतिशयह्रस्वका नाम) ह्रसिष्ठ १॥ (अतिशय वृन्दारकका नाम) वृन्दिष्ठ ॥ ११२ ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्गः २

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे
लिङ्गमुन्नयेत् ॥

भाषा-प्रकृतिप्रत्यय आदिके अर्थोंके द्वारा संकीर्णवर्गमें लिंग जानने ॥

कर्म. क्रिया-

क्रियाके नाम २॥ कर्मन् १ क्रिया २॥

-तत्सातत्ये गम्ये स्युरपर-
स्पराः ॥ १ ॥

अपरस्परोंके निरन्तर चलनेका नाम १॥ अपरस्पर १ ॥ १ ॥

साकल्यासंगवचने पारायणप-
रायणे ॥

साकल्यके वचनका नाम १॥ पारायण १॥ आसंगके वचनका नाम १॥ परायण १ ॥

यदृच्छा स्वैरिता-

स्वतन्त्रताके नाम २ ॥ यदृच्छा १ स्वैरिता ॥ २ ॥

-हेतुशून्या त्वास्या विल-
क्षणम् ॥ २ ॥

विना कारणकी स्थितिका नाम १॥ विलक्षण १ ॥ २ ॥

शमथस्तु शमः शान्ति-

शांतिके नाम ३ ॥ शमथ १ शम २ शान्ति ३ ॥

-र्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥

इंद्रियोंके रोकनेके नाम ३ ॥ दांति १ दमथ २ दम ३ ॥

अवदानं कर्मवृत्तं-

अच्छेकर्मके नाम २ ॥ अवदान १ कर्मवृत्त २ ॥

-काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥

कामनाकरके दान देनेके नाम २ ॥ काम्यदान १ प्रवारण २ ॥ ३ ॥

वशक्रिया संवननं-

वशीकरणके नाम २॥ वशक्रिया १ सवनन २ ॥

-मूलकर्म तु कार्मणम् ॥

औषधीकी जड आदिसे उच्चाटनके नाम २ ॥ मूलकर्म १ कार्मण २ ॥

विधूननं विधुवनं-

कांपनेके नाम २ ॥ विधूनन १ विधुवन २ ॥

-तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥

तृप्तिके नाम ३ ॥ तर्पण १ प्रीणन २ अवन ३ ॥ ४ ॥

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधारणमित्यपि ॥

कोई किसीको मारता हो उसके रोक लेनेके अर्थ हाथ पकड लेनेके नाम ३ ॥ पर्याप्ति १ परित्राण २ हस्तधारण ३॥

सेवनं सीवनं स्यूति-

सीनेके नाम ३ ॥सेवन १सीवन २ स्यूति ३ ॥

-र्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥

फूटनेके नाम ३॥विदर १स्फुटन २ भिदा ३ ॥ ५ ॥

आक्रोशनमभीषङ्गः-

गरियानेके नाम २ ॥ आक्रोशन १ अभीषङ्ग २

-संवेदो वेदना न ना ॥

अनुभवज्ञानके नाम २ ॥ संवेद १ वेदना २ ॥

संमूर्च्छनमभिव्याप्ति-

सब ओरसे व्याप्तिके नाम २॥सम्मूर्च्छन १ अभिव्याप्ति २ ॥

-र्याच्ञा भिक्षार्थनार्दना ॥ ६ ॥

भीखके नाम ४॥याच्ञा १ भिक्षा २ अर्थना ३ अर्दना ४ ॥ ६ ॥

वर्धनं छेदने-

काटनेके नाम २॥वर्धन १ छेदन २ ॥

-ऽथ द्वे आनन्दनसभाजने ॥

आप्रच्छन्न–

कुशल प्रश्न पूछनेसे उत्पन्न हुए आनन्दके नाम ३ ॥ आनन्दन १ सभाजन २ आप्रच्छन्न ३ ॥

–मथाम्नायः संप्रदायः–

गुरुके उत्तम परम्परा उपदेश करनेके नाम २॥आम्नाय १ सम्प्रदाय२ ॥

–क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

क्षय होनेके नाम २ ॥ क्षयः १ क्षिया २ ॥ ७ ॥

ग्रहे ग्राहो–

लेनेके नाम २॥ ग्रह १ ग्राह २ ॥

–वशः कान्तौ–

इच्छाके नाम २॥ वश १ कांति२ ॥

–रक्षणस्त्राणे -

रक्षाके नाम २॥रक्षण १ त्राण २॥

–रणः क्वणे ॥

शब्दकरनेके नाम २॥ रण १ क्वण२॥

व्यधो वेधे–

छेदनेके नाम २ ॥ व्यध १ वेध २ ॥

–पचा पाके–

अन्नादि पकानेके नाम २॥ पचा१ पाक २ ॥

–हवो हूतौ–

बुलानेके नाम २:॥ हव १ हूति २ ॥

वरो वृतौ ॥ ८ ॥

वरदानके नाम २॥ वर१वृति २॥८

ओषः प्लोषे–

जलानेके नाम २॥ ओष १प्लोष२॥

–नयो नाये–

नीतिके नाम २ ॥ नय १नाय२॥

–ज्यानिर्जीर्णौ–

जीर्णताके नाम २ ॥ ज्यानि १ जीर्णि २ ॥

भ्रमो भ्रमौ ॥

भ्रमके नाम २ ॥ भ्रम१ भ्रमि२ ॥

स्फातिर्वृद्धौ–

बढतीके नाम २॥ स्फाति१ वृद्धि२ ॥

–प्रथा ख्यातौ–

प्रसिद्धताके नाम २ ॥ प्रथा १ ख्याति २ ॥

स्पृष्टिः पृक्तौ–

छूनेके नाम २ ॥ स्पृष्टि १ पृक्ति २ ॥

स्नवः स्रवे ॥ ९ ॥

झरनाके नाम २ ॥ स्नव १ स्रव २॥९

एधा समृद्धौ–

वृद्धिके नाम २ ॥ एधा १ समृद्धि२ ॥

–स्फुरणे स्फुरणा–

फडकनेके नाम २॥स्फुरण१स्फुरणा२॥

–प्रमितौ प्रमा ॥

यथार्थज्ञानके नाम २ ॥ प्रमिति १ प्रमा २ ॥

प्रसूतिः प्रसवे-

जन्महोनेके नाम २ ॥ प्रसूति १ प्रसव २ ॥

-श्च्योते प्राघारः-

घृतादिके चुअनेके नाम २॥श्च्योत १ प्राघार २ ॥

-क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥

ग्लानिके नाम २॥ क्लमथ १ क्लम २ ॥ १० ॥

उत्कर्षोऽतिशये-

प्रकर्षके नाम २॥ उत्कर्ष १ अति- शय २ ॥

-संधिः श्लेषे-

मिलापके नाम २॥सधि १श्लेष२॥

-विषय आश्रये ॥

आश्रयके नाम २ ॥ विषय १ आश्रय २ ॥

क्षिपायां क्षेपणं-

फेंकने (प्रेरणे)के नाम २ ॥ क्षिपा १ क्षेपण २ ॥

-गीर्णिर्गिरौ

लीलने (निगलने) के नाम२ ॥ गीर्णि१ गिरि २॥

-गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

उद्यमके नाम २ ॥गुरण १ उद्यम२ ॥ ११ ॥

उन्नाय उन्नये-

ऊपरको लेजानेके नाम २॥ उन्नाय १ उन्नय २ ॥

-श्रायः श्रयणे-

सेवाके नाम २ ॥श्राय १ श्रयण २॥

जयने जयः॥

जीतके नाम २॥ जयन१ जय२॥

निगादो निगदः-

कहनेके नाम२निगाद१ निगद२ ॥

-मादो मदः-

हर्षके नाम २ ॥ माद १ मद २ ॥

-उद्वेग उद्भ्रमे ॥१२॥

घबरानेके नाम २॥ उद्वेग १उद्भ्रम २ ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमले-

कुंकुमआदि मर्दनके नाम२॥विमर्दन १ परिमल २ ॥

-ऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ॥

हितकरने अनहितहटानेकी प्रवृत्तिके नाम२॥अभ्युपपत्ति १ अनुग्रह २॥

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्या-

अनुग्रहसे विपरीतका नाम १ ॥ निग्रह १ ॥

-दभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३॥

लडाईमें ललकारनेके नाम २ ॥अभि योग १ अभिग्रह १३ ॥

मुष्टिबन्धस्तु संग्राहो-
मूठीसेदृढपकडनेकेनाम २॥मुष्टिबन्ध १ संग्राह २ ॥

-डिम्बे डमरविप्लवौ ॥
मनुष्योंके लूटनेके नाम ३ ॥ डिम्ब १ डमर २ विप्लव ३ ॥

बन्धनं प्रसितिश्चारः-
बांधनेके नाम ३॥ बन्धन १ प्रसिति २ चार ३ ॥

-स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तरि ॥ १४ ॥
सन्तापको प्राप्तहुये पुरुषकेनाम ३॥ स्पर्श १ स्प्रष्टृ २ उपत ३ ॥ १४ ॥

निकारो विप्रकारः स्या-
अपकारके नाम २ ॥निकार १ विप्रकार २ ॥

-दाकारास्त्विङ्ग इङ्गितम् ॥
अभिप्रायके अनुसार चेष्टाकेनाम ३॥ आकार १ इङ्ग २ इंगित ३॥

परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥
प्रकृति वदलजानेके नाम ४॥ परिणाम १ विकार २ विकृति ३ विक्रिय ४ ॥ १५ ॥

अपहारस्त्वपचयः-
अपहरणके नाम २ ॥ अपहार १ अपचय २ ॥

समाहारः समुच्चयः॥
बटोरनेकेनाम २॥समाहार १ समुच्चय २॥

प्रत्याहार उपादानं-
इन्द्रियोके खींचनेके नाम २ ॥ प्रत्याहार १ उपादान २ ॥

-विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥
खेलनेमे पैदल चलनेके नाम २ ॥ विहार १ परिक्रम २ ॥ १६ ॥

अभिहारोऽभिग्रहणं-
चोरीकरनेके नाम २ ॥ अभिहार १ अभिग्रहण २ ॥

निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ॥
युक्तिपूर्वक शस्त्रादि निकालनेकेनाम २ ॥निर्हार १ अभ्यवकर्षण २ ॥

अनुहारोऽनुकारः स्या-
विडम्बना अर्थात् नकलकरनेकेनाम २॥ अनुहार १ अनुकार २ ॥

-दर्थस्यावगमे व्ययः ॥ १७ ॥
खर्चकरनेका नाम १॥व्यय १॥ १७॥

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्या-
जलआदिकी निरन्तरगतिके नाम २॥ प्रवाह १ प्रवृत्ति २ ॥

-त्प्रवहो गमनं बहिः ॥
बाहर जानेका नाम १ ॥प्रवह १॥

वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥

संयमके नाम ६ ॥ वियाम१ वियम२ यामरे यम४ संयाम५ संयम ६॥१८॥

हिंसाकर्माभिचारः स्या-

मारडालनेके नाम २॥ हिंसाकर्म१ अभिचार २ ॥

-ज्जागर्या जागरा द्वयोः ॥

जागनेके नाम२॥ जागर्या१ जागरा२॥

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः-

विघ्नके नाम३॥ विघ्न१ अन्तराय २ प्रत्यूह ३ ॥

-स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये॥१९॥

समीपके आश्रयके नाम२॥ उपघ्न१ अन्तिकाश्रय २ ॥ १९ ॥

निर्वेश उपभोगः स्या-

उपभोगके नाम २॥ निर्वेश१ उपभोग २ ॥

-त्परिसर्पः परिक्रिया ॥

परिवारके घेरनेके नाम २॥ परिसर्प १ परिक्रिया २ ॥

विधुरं तु प्रविश्लेषो-

अत्यन्तवियोगके नाम २॥ विधुर १ प्रविश्लेष २ ॥

-ऽभिप्रायश्छन्द आशयः॥२०॥

अभिप्राय अर्थात् मनकी बातके नाम ३॥ अभिप्राय१ छन्द२ आशय ३॥२०॥

संक्षेपणं समसनं-

संक्षेपके नाम २ ॥ संक्षेपण समसन २ ॥

-पर्यवस्था विरोधनम् ॥

विरोधके नाम २ ॥ पर्यवस्था १ विरोधन २ ॥

परिसर्या परीसारः-

सब ओर गमनकरनेके नाम२॥ परिसर्या १ परीसार २ ॥

स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥

आसनस्थितिके नाम ३ ॥ आस्या १ आसना २ स्थिति ३ ॥ २१ ॥

विस्तारो विग्रहो व्यासः-

विस्तारके नाम ३॥ विस्तार१ विग्रह २ व्यास ३ ॥

स च शब्दस्य विस्तरः ॥

शब्दके विस्तारका नाम१॥ विस्तर१

संवाहनं मर्दनं-

पाँवआदिके दाबनेके नाम२॥ संवाहन १ मर्दन २ ॥

-स्याद्विनाशः स्याददर्शनम्॥२२॥

न देख पडनेके नाम२॥ विनाश१ अदर्शन २ ॥ २२ ॥

संस्तवः स्यात्परिचयः-

जानपहिचानके नाम२॥ संस्तव १ परिचय २ ॥

-प्रसरस्तु विसर्पणम् ॥

फैलनेके नाम २ ॥ प्रसर १ विसर्पण २ ॥

नीवाकस्तु प्रयामः स्या-

धन धान्यादिके बटोरनेके नाम २॥ नीवाक १ प्रयाम २ ॥

-त्संनिधिः संनिकर्षणम्॥२३॥

पड़ोस (निकट)के नाम२॥संनिधि१ संनिकर्षण २ ॥ २३ ॥

लवोऽभिलावो लवने-

काटनेके नाम ३ ॥ लव १ अभिलाव २ लवन ३ ॥

-निष्पावः पवने पवः ॥

अन्नादि पछोरने (बरसाने) आदिके नाम ३॥ निष्पाव १ पवन २ पव ३॥

प्रस्तावः स्यादवसर-

प्रसंगके नाम२॥प्रस्ताव१ अवसर२॥

-स्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥

जुलाहे लोग जिस तरह सूत्रको लपेटतेहे उस क्रियाके नाम २ ॥ त्रसर १ सूत्रवेष्टन २ ॥ २४ ॥

प्रजनः स्यादुपसरः-

गार्भिणी होनेके नाम २॥ प्रजन१ उपसर २ ॥

-प्रश्रयप्रणयौ समौ ॥

प्रेमके नाम २॥ प्रश्रय१प्रणय २॥

धीशक्तिर्निष्क्रमो-

धी (बुद्धि) शक्तिके नाम २॥ धीशक्ति १ निष्क्रम २ ॥

-ऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥

कठिन रस्तेके नाम २ ॥ संक्रम १ दुर्गसंचर २ ॥ २५ ॥

प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः-

युद्धके अर्थ तैयारी करनेके नाम२॥ प्रत्युत्क्रम १ प्रयोगार्थ २ ॥

-प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ॥

स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः-

आरम्भमात्रके नाम ५ ॥ प्रक्रम १ उपक्रम २ अभ्यादान ३ उद्धात ४ आरम्भ ५ ॥

-संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥

वेगके नाम २ ॥ सम्भ्रम १ त्वरा २ ॥ २६ ॥

प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भो-

कार्य रुक जानेके नाम २ ॥ प्रतिबंध १ प्रतिष्टम्भ २ ॥

-ऽवनायस्तु निपातनम् ॥

गिरनेके नाम२॥ अवनाय१ निपातन २॥

उपलम्भस्त्वनुभवः-

साक्षात्करनेके नाम २॥ उपलम्भ १ अनुभव

-समालम्भो विलेपनम्॥२७॥

चन्दनादिके लेपनके नाम २ ॥समालम्भ १ विलेपन २॥ २७ ॥

विप्रलम्भो विप्रयोगो-

वियोगके नाम २ ॥ विप्रलम्भ १ विप्रयोग ॥ २

-विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥

दानकेनाम२॥विलम्भ१अतिसर्जन॥

विश्रावस्तु प्रतिख्याति-

अतिप्रसिद्धिके नाम २ ॥ विश्राव १ प्रतिख्याति ॥ २

-रवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥

वस्तुओंके देखनेके नाम २ ॥अवेक्षा १ प्रतिजागर २॥ २८ ॥

निपाठनिपठौ पाठे-

पढनेके नाम ३ ॥ निपाठ१ निपठ२ पाठ ३ ॥

-तेमस्तेमौ समुन्दने ॥

गीलाहोनेके नाम ३॥ तेम १ स्तेम २ समुन्दन ३ ॥

आदीनवास्रवौ क्लेशे-

क्लेशके नाम३ ॥आदीनव १आस्रव २ क्लेश ३ ॥

-मेलके सङ्गसंगमौ ॥ २९ ॥

मेलके नाम ३ मेलक १ सग २ गम ३ ॥ २९ ॥

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ॥

अच्छे प्रकार ढूंढनेके नाम ५॥ सवीक्षण १ विचयन २ मार्गण ३ मृगणा ४ मृग ५ ॥

परिरम्भः परिष्वंगःसंश्लेषउपगूहनम् ॥ ३० ॥

प्रेमपूर्वक लिपटजानेके नाम ४ ॥ परिरम्भ १ परिष्वंग २ सश्लेश ३ उपगूहन ४ ॥ ३० ॥

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम् ॥

देखनेके नाम५॥ निर्वर्णन १ निध्यान २ दर्शन. ३-आलोकन ४ ईक्षण ५ ॥

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥

निराकरणके नाम ४॥प्रत्याख्यान१ निरसन २ प्रत्यादेश३निराकृति४॥३१

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ॥

अनुक्रमसे पहरेपर जागने सोनेवालेके नाम २ ॥ उपशाय १ विशाय२

अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

करुणा वा घिनानेके नाम४॥अर्तन १ ऋतीया २ हृणीया ३ घृणा४॥३२

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो
व्यत्ययश्च विपर्यये ॥
विपरीतके नाम ४ ॥ व्यत्यास १
विपर्यास २ व्यत्यय ३ विपर्य्यय ४ ॥

पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नति-
पात उपात्ययः ॥ ३३ ॥
किञ्चित् विपरीतके नाम४॥पर्यय१
अतिक्रम२अतिपात३उपात्यय४॥३३॥

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्या-
त्प्रतिशासनम् ॥
टहल आदिको बुलाकर भेजनेका
नाम १॥ प्रतिशासन १॥

स संस्तावः क्रतुषु या स्तुति-
भूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥
यज्ञमें ब्राह्मणोंकी स्तवन भूमिका
नाम १ ॥ संस्ताव १ ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे
काष्ठं स उद्घनः ॥
वहटन वठिहा (जिसकेउपरकाष्ठ
धरा जाता है) का नाम १॥उद्घन१॥

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो
येन निहन्यते ॥ ३५ ॥
खुरपाआदिके नाम २॥ स्तम्बघ्न १
स्तम्बघन २ ॥ ३५ ॥

आविधो विध्यते येन ॥
वरमेका नाम १॥ आविध १ ॥

-तत्र विष्वक्समे निघः ॥
बराबर जमेहुये वृक्षादिकोका नाम
१ ॥ निघ १ ॥

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्यो-
त्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥
अनाज आदि निकालनेके नाम२॥
उत्कार १ निकार २ ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु
गरणादिषु ॥
(खानेका नाम) निगार १ ॥
(उलटी करनेका नाम) उद्गार १ ॥
(छींकनेका नाम) विक्षाव १ ॥
(डकारनेका नाम) उद्ग्राह १ ॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामे-
उपरामके नाम ४ ॥ आरति १ अवर
ति २ विरति ३ उपराम ४ ॥

ऽस्त्रियां तु निष्ठेवः ॥ ३७ ॥
निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्य-
भिन्नानि ॥
थूकनेके नाम ४॥ निष्ठेव१ ॥३७॥
निष्ठ्यूति २ निष्ठेवन ३ निष्ठीवन ४॥

जवने जूतिः-
वेगके नाम २॥ जवन १ जूति २॥

-सातिस्त्ववसाने स्या-
अन्तके नाम२॥साति१अवसान२॥

-द्‍थ ज्वरे जूर्तिः ॥ ३८ ॥

ज्वरके नाम २ ॥ज्वर १ जूर्ति२॥ ॥ ३८ ॥

उद्जस्तु पशुप्रेरण-

पशुओंके हाकनेका नाम१॥उद्ज १ ॥

-मकरणिरित्यादयः शापे ॥

शापका नाम१ ॥ अकरणि१॥ इत्यादि

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ॥ ३९ ॥

जिसके समीप गाये हों उसके समूहका नाम १ ॥ औपगवक १ ॥ ३९ ॥

आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥

(पूओंके समूहका नाम) आपूपिक १ ॥ (पूरियोंके समूहका नाम) शाष्कुलिक १ आदि ॥

माणवानां तु माणव्यं-

लडकोंके समूहका नाम १॥माणव्य१॥

-सहायानां सहायता ॥ ४० ॥

मित्रोंके समूहका नाम १ ॥ सहायता १ ॥ ४० ॥

हल्या हलानां-

हलोंके समूहका नाम १ ॥ हल्या १ ॥

-ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥

ब्राह्मणोंके समूहके नाम२ ॥ ब्राह्मण्य १ वाडव्य २ ॥

द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनुक्रमात् ॥ ४१ ॥

पांसलियोंके समूहका नाम १ ॥ पार्श्व १॥पीठकेसमूहकानाम१॥पृष्ठ्य १॥४१

खलानां खलिनी खल्या-

खलोंके समूहके नाम२ ॥खलिनी१ खल्या २ ॥

-थ मानुष्यकं नृणाम् ॥

मनुष्योंके समूहका नाम १॥ मानुष्यक १ ॥

-ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ॥ ४२ ॥

(ग्रामोंके समूहका नाम)ग्रामता१॥ (जनोंके समूहका नाम) जनता १॥ (धूमके समूहका नाम)धूम्या १॥(फांसियोके समूहका नाम) पाश्या१॥(बडे काशोके समूहका नाम)गल्या१॥४२

अपि साहस्रकारीषवार्मणाथर्वणादिकम् ॥

भाषा-(सहस्रके समूहका नाम) साहस्र १ ॥ (कण्डीके समूहका नाम) कारीष १॥ (कवचोंके समूहका नाम) वार्मण १॥ (चमडोके समूहका नाम) चार्मण१ ॥(अथर्वणोंके समूहका नाम) आथर्वण १

॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गः ३.

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ॥ भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

भाषा—कोई ककारान्तादि नानार्थके शब्द पूर्वोक्तवर्गोंमें कहचुके हैं, परन्तु उनका पूर्वोक्तवर्गोंमें जो प्रयोग किया है सो जिस अर्थमें जो शब्द अधिक आता है उस एकही अर्थमें कहा है, अब उनही पूर्वोक्त वर्गोमे कहेहुए शब्दोके यहां अनेक अर्थ वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

आकाशे त्रिदिवे नाको-

नाक—आकाश तथा स्वर्ग ॥

-लोकस्तु भुवने जने ॥

लोक—स्वर्गादि लोक तथा जन ॥

पद्ये यशसि च श्लोकः-

श्लोक—अनुष्टुभादि पद्य तथा कीर्त्ति

-शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

सायक—तीर तथा तलवार॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ-

जम्बुक—शृगाल तथा वरुण ॥

-पृथुकौ चिपिटार्भकौ ॥

पृथुक—चिउडा तथा बालक ॥

आलोकौ दर्शनद्योतौ-

आलोक—दर्शन तथा प्रकाश ॥

भेरीपटहमानकौ ॥ ३ ॥

आनक—भेरी तथा नगाडा ॥ ३ ॥

उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः-

अंक—गोदी तथा चिह्न ॥

-कलंकाऽङ्कापवादयोः ॥

कलंक—चिह्न तथा लाञ्छन ॥

तक्षको नागवर्धक्यो-

तक्षक—सर्प तथा बढई ॥

-ऽर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥

अर्क—स्फटिक मणि तथा सूर्य ॥ ४ ॥

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः ॥

क-(पुँल्लिङ्ग) वायु, ब्रह्मा, सूर्य ॥

क—(नपुंसक) शिर तथा जल ॥

स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥

पुलाक—धानकी भूसी, संक्षेप तथा भातका सीत ॥ ५ ॥

उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ॥

पेचक—उलूपक्षी तथा हाथीके पुरीषद्वारका आच्छादक मांस ॥

कमण्डलौ च करकः-

करक—बनौरी(ओला)जो कभी, कभी पानी के सग बरसतीहै तथा अनारफल ॥

-सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

विनायक—बुद्ध,गणेश,तथा गरुड॥ ६ ॥

किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च-
किष्कु-हाथ तथा वितस्ति ॥
-शूककीटे च वृश्चिकः ॥
वृश्चिक-विच्छू तथा आठवीं राशि॥
प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥
प्रतीक-प्रतिकूल ॥ ७
स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च ॥
भूतिक-चिरायता-औषधी और गंध तृणविशेष ॥
ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशात-
कोशातकी-एक प्रकारका फल, परवर, तरकारी तथा चिचिंडा वृक्ष ॥
-क्यथ कट्फले ॥ ८ ॥
सिते च खदिरे सोमवल्कः स्या-
सोमवल्क-सपेद खैर तथा कायफल औषधी ॥ ८ ॥
-दथ सिह्लके ॥
तिलकल्के च पिण्याको-
पिण्याक-सिह्लक तथा तिलकीखरी॥
-बाह्लीकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥
बाह्लीक-रामठहींग तथाबाह्लीकदेशमे होनेवाला अश्व ॥ ९ ॥

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ॥
कौशिक-इन्द्र, गुग्गुलु, उल्लूपक्षी, तथा सांपका पकडनेवाला ॥
रुक्तापशङ्कास्वातंकः-
आतंक-रोग, ताप तथा शंका ॥
-स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥
क्षुल्लक-छोटा तथा नीच, कनिष्ठ और दरिद्र ॥ १० ॥
जैवातृकः शशांकेऽपि-
जैवातृक-चन्द्रमा तथा दीर्घायुपुरुष
-खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ॥
वर्तक घोडेके खुर तथा पक्षी ॥
व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना-
पुण्डरीक-व्याघ्र दिग्गज तथा श्वेत कमल ॥
-यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥
दीपक-दीया तथा मोरकी चोटी॥ ११॥
शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्वानः-
शालावृक-कुत्ता, वन्दर तथा सियार
स्वर्णेऽपि गैरिकम् ॥
गैरिक-गेरुधातु तथा सोना ॥
पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्या-
व्यलीक-पीडा तथा झूठ ॥
-दलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥
अलीक-अप्रिय तथा झूठा ॥ १२॥

शीलान्वयावनूके-

अनूक-स्वभाव तथा वंश ॥

-द्वे शल्के शकलवल्कले ॥

शल्क-टुकडा तथा छुकला ॥

साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥१३॥ दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री-

निष्क-सोना एक प्रकारका गलेका भूषण तथा असर्फी ॥ १३ ॥

-कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ॥ दम्भे-

कल्क-मलिन तथा पाप और पाखण्ड ॥

-प्यथ पिनाकोऽस्त्रीशूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

पिनाक—शूल तथा महादेवका धनुष ॥ १४ ॥

धेनुका तु करेण्वां च-

धेनुका-हथिनी तथा नईब्याईहुईगौ

-मेघजाले च कालिका ॥

कालिका-मेघका समूह तथा देवी॥

कारिका यातनावृत्योः-

कारिका-नरकपीडा तथा करना॥

कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥

करिहस्तेऽङ्गुलौ पद्मबीजकोश्यां-

कर्णिका- कानका भूषण, ॥ १५॥ हाथीकी सूंडकाअग्रभाग तथा कमलके बीज रहनेका कमलका भाग ॥

-त्रिषूत्तरे ॥

आगे जो शब्द कहे जायँगे वे तीनों लिंगोंमे होते हैं ॥

वृन्दारकौ रूपमुख्या-

वृन्दाकर-देवता, सुन्दर तथा मुख्य ॥

-वेके मुख्यान्यकेवलाः॥१६॥

एक-मुख्य,अन्य तथाकेवल॥१६ ॥

स्याद्दाम्भिकः कौकुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः ॥

कौकुटिक-मायाकरनेवाला तथा थोरेसे ही देखनेवाला ॥

लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

लालाटिक-जो कार्य करनेमेंअसमर्थ हो औरस्वामीका मुखदेखे ॥ १७ ॥

इति कान्ताः॥

मयूखस्त्विट्करज्वाला-

मयूख-कान्ति, किरण तथा ज्वाला॥

स्वालिबाणौ शिलीमुखौ ॥

शिलीमुख- भ्रमर तथा बाण ॥

शंखो निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ न स्त्री-

शंख-एकनिधि, ललाटकी हड्डी और शंख ॥

–न्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥
ख–शून्य तथा इन्द्रिय ॥ १८ ॥
घृणिज्वाले अपि शिखे–
शिखा–किरण, ज्वाला तथा चोटी॥
॥ इति खान्ताः ॥
शैलवृक्षौ नगावगौ ॥
नग–अग पर्वत और वृक्ष ॥
आशुगौ वायुविशिखौ–
आशुग–वायु तथा वाण ॥
–शरार्कविहगाः खगाः ॥१९॥
खग–वाण, सूर्यादि ग्रह तथा पक्षी १९॥
–पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च–
पतग–सूर्य तथा पक्षी
–पूगः क्रमुकवृन्दयोः ॥
पूग–सुपारी तथा समूह ॥
पशवोऽपि मृगा–
मृग–हरिण, ढूढना, पशु ॥
–वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥२०॥
वेग–प्रवाह तथा जोरसे चलना॥२०॥
परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ॥
पराग–पुष्पधूलि स्नानकरनेके योग्य मसाला तथा धूलि ॥
गजेपि नागमातङ्गा–
नाग–मातङ्ग–हाथी तथा चण्डाल वा डोम

–वपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥२१॥
अपाग–नेत्रोंके कोने, अगहीन तथा तिलक ॥ २१ ॥
सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ॥
सर्ग–स्वभाव, त्याग, निश्चय तथा ग्रथका अध्याय, सृष्टि ॥
योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥
योग–कवच सामदानादि, ध्यान तथा मेल और युक्ति ॥ २२ ॥
भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः ॥
भोग–सुखदेनेवाला तथा सुख, वेश्या आदिको पालन करना वा मोल लेना सर्पका फन और शरीर ॥
चातले हरिणे पुंसि सारङ्गः शवले त्रिषु ॥ २३ ॥
सारग–चितकवरा रङ्गवाला, चितकवरा रङ्ग, मृगपशु, पक्षी, पपीहा पक्षी तथा मृगी ॥ २३ ॥
कपौ च प्लवगः–
प्लवग–वन्दर, मेढक तथा सारथि ॥
–शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ॥
अभिषङ्ग–शाप तथा अनादर ॥
यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥

युग (पुँल्लिङ्ग)—जुँआ, युग—नपुसक जोडा (दो), सत्ययुगादि तथा चार हाथ॥ २४ ॥

स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ॥ लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौ—

गौ—(पुँल्लिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग) स्वर्ग, बाण, पशु, (गाय—बैल,) वाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, भूमि, तथा जल

—लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

लिङ्ग—चिह्न तथा शिश्न इन्द्रिय॥२५॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च—

शृङ्ग—प्रभुता अर्थात् प्रधानता तथा कँगूरा ॥

—वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः ॥

वराङ्ग—माथा तथा स्त्रीका मूत्रद्वार॥

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

भग—लक्ष्मी, इच्छा, ऐश्वर्य, वीर्य, उपाय, सूर्य, बडाई ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

परिघः परिघातेऽस्त्रेऽ—

परिघ—चारों ओरसे मारना तथा अस्त्र ॥

—प्योघो वृन्देऽम्भसां रये ॥

ओघ—समूह तथा जलका वेग ॥

—मूल्ये पूजाविधावर्घो—

अर्घ—मूल्य तथा पूजामें जल देना॥

—ऽहो दुःखव्यसनेष्वघम् ॥२७॥

अघ—पाप, दुःख, शिकार, जुआ खेलना आदि ॥ २७ ॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

लघु—इष्ट और थोडा ॥

॥ इति घान्ताः ॥

—काचाः शिक्यमृद्भेदद्दग्रजः॥

काच—छींका, कांचका भेद तथा नेत्ररोग ॥

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः—

प्रपञ्च—विपरीत तथा शब्दका विस्तार और जगत् तथा ठगना ॥

—पावके शुचिः ॥ २८ ॥

मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ॥

शुचि—(पु०) अग्नि ॥ २८ ॥ आषाढमास, राजाका मन्त्री, निष्कपट (त्रि०) पवित्र तथा श्वेत वस्तु ॥

अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

रुचि—आलिंगन करना, इच्छा तथा किरण ॥ २९ ॥

॥ इति चान्ताः ॥

केकिताक्ष्यौवहिभुजौ—

अहिभुक्–मोर और गरुड ॥

–दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ॥

द्विज–दांत, पक्षी तथा ब्राह्मण ॥

अजा विष्णुहरच्छागा–

अज–विष्णु, शिव तथा बकरा ॥

–गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ३० ॥

व्रज–गोशाला, मार्ग और समूह ३०

धर्मराजौ जिनयमौ–

धर्मराज–जिन (बुद्ध) और यमराज

–कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ॥

कुञ्ज–हाथीका दांत और सघन वन

वलजे क्षेत्रपूर्द्वारे वलजा वल्गुदर्शना ॥ ३१ ॥

वलज–(न०) खेत, नगरका दर वाजा (स्त्री) सुन्दर स्त्री ॥ ३१ ॥

समे क्ष्मांशे रणेऽप्याजिः ॥

आजि-पृथ्वीकासमानभागऔरसंग्राम

–प्रजा स्यात्संततौ जने ॥

प्रजा–सन्तान और जनसमूह ॥

अब्जौ शंखशशांकौ च–

अब्ज–शंख और चन्द्रमा ॥

–स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥

निज–(त्रि०)अपनातथा नित्य॥३२॥

॥ इति जान्ताः॥

पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः ॥

क्षेत्रज्ञ–आत्मा और चतुर ॥

संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यै-श्चार्थसूचना ॥ ३३ ॥

संज्ञा–चेतनशक्ति, नाम और हस्त आदिसे–अभिप्रायकाप्रगटकरना॥३३॥

॥ इति ञान्ताः ॥

काकेभगण्डौ करटौ–

करट–काक और हस्तीका गण्डस्थल

गजगण्डकटी कटौ ॥

कटि–हस्तीका गण्डस्थल और कमर ॥

शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥

शिपिविष्ट–गञ्जा, खुदरी हुई खाल और शिवजी ॥ ३४ ॥

देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा–

त्वष्टा–विश्वकर्मा, सूर्य और बढई ॥

–दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ॥

दिष्ट–प्रारब्ध और समय ॥

रसे कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्स-रतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥

कटु–(पु०) रसविशेष, (न०) अकार्य, (त्रि०)अहकारऔर तीक्ष्ण ३५

रिष्टं क्षेमाशुभाभावे–

रिष्ट–क्षेम, अशुभ और अभाव ॥

–ष्वरिष्टं तु शुभाशुभे ॥

अरिष्ट–शुभ और अशुभ ॥

मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥ अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ॥

कूट—माया, निश्चल, यन्त्र,(मृगफँसानेका जाल)कपट,झूँठ, राशि ॥३६॥ लोहेका वन, पर्वतका कँगूरा तथा हलका अग्रभाग ॥

सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥

त्रुटि—छोटी इलायची, काल,[अक्षरका रहजाना] अल्प तथा संशय ३७

आर्त्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो—

कोटि—धनुषकी टोंक,प्रकर्ष, कोना तथा करोडसंख्या ॥

—मूले लग्नकचे जटा ॥

जटा—वृक्षकी जड तथा केशोंकी जटा॥

व्युष्टिः फले समृद्धौ च—

व्युष्टि—फल तथा सम्पदा ॥

—दृष्टिर्ज्ञानेऽक्ष्णि दर्शने ॥ ३८ ॥

दृष्टि—ज्ञान नेत्र तथा देखना॥३८॥

इष्टिर्यागेच्छयोः—

इष्टि—यज्ञ तथा इच्छा ॥

—सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ।

सृष्ट—बहुत तथा निश्चय कियागया ।

कष्टे तु कृच्छ्रगहने—

कष्ट—दुःख तथा गहन ॥

—दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥ पटु—

पटु—दक्ष तीक्ष्ण तथा रोगहीन॥३९॥

द्वौ वाच्यलिंगौ च—

पटु और कष्ट शब्द वाच्यलिंग हैं ॥

इति टान्ताः ॥

—नीलकण्ठः शिवेऽपि च ॥

नीलकण्ठ—मयूर तथा शिव ॥

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥

कोष्ठ—पेटका मध्य भाग, धान्यका स्थान, गृहके भीतरका भाग ॥ ४० ॥

निष्ठा—निष्पत्तिनाशान्ताः—

निष्ठा—निष्पादन,नाश तथा अन्त॥

—काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ॥

काष्ठा—उत्कर्ष, स्थिति, दिशा तथा कालविशेष ॥

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि—

ज्येष्ठ—अत्युत्तम, अतिवृद्ध, बडा भाई तथा वैशाखके उत्तरका मास ॥

—कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥

कनिष्ठ—अतिछोटा तथाछोटा भाई४१॥

इति ठान्ताः ॥

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्या—

दंड—दंडा तथा सजा आदि ॥

—द्गुडो गोलेक्षुपाकयोः ॥

गुड—गुड तथा मिट्टी आदिकागोला

सर्पमांसात्पशू व्याडौ—

व्याड—सर्प तथा मांसखानेवाला पशु व्याघ्र आदि ॥

—गोभूवाचस्त्विडाइलाः॥४२॥

इडा—गैया तथा पृथ्वी, वाणी और नाडी ॥ ४२ ॥

क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि—

क्ष्वेडा—विष सिंहनाद, तथा बांसकी खपच्ची ॥

—नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ॥

नाडी—नाडी अर्थात् वात पित्तकफ इत्यादिके विकारको जनानेवाली नस तथा छः क्षण ॥

काण्डोऽस्त्री दण्डवाणार्ववर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥

काण्ड—दंडा वा लाठी,बाण, खराव घोडा, परिच्छेद जैसे कि प्रथम काण्ड, अवसर तथा जल ॥ ४३ ॥

स्याद्भाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूल वणिग्धने ॥

भाण्ड—पात्र वा वरतन,घोडोका गहना, वनियेका मूल धन वा पूँजी ॥

इति डान्ताः॥

भृशप्रतिज्ञयोर्वाढं—

वाढ—अत्यर्थ तथा प्रतिज्ञा ॥

—प्रगाढं भृपकृच्छ्रयोः ॥४४॥

प्रगाढ—मजबूत तथा दुःख॥४४॥

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ—

दृढ—समर्थ तथा मोटा ॥

—व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ॥

व्यूढ—विन्यस्त तथा संहत और पृथुल ॥

इति ढान्ताः ॥

भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे—

भ्रूण—बालक तथा स्त्रीका गर्भ ॥

—बाणो बलिसुते शरे ॥४५ ॥

बाण- बाणासुर तथा तीर ॥४५॥

कणोतिसूक्ष्मे धान्यांशे—

कण—अत्यन्तसूक्ष्म तथा धान्यकण॥

—संघाते प्रमथे गणः॥

गण—समूह तथा शिवके अनुचर ॥

पणोद्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेपि च ॥ ४६ ॥

पण—जुआ आदिमें लगायाहुआधन पैसा तथा मजूरी वा तलब ॥ ४६ ॥

मौर्व्यां द्रव्याश्रितेः सत्त्वशौर्ये, संध्यादिके गुणः ॥

गुण—प्रत्यञ्चारूपआदि चौवीससत्व आदि शुक्ल आदि, सन्धि आदि ॥

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

क्षण—तीसकलासमय, उत्सव तथा बेकाम बैठना तथा विश्राम करना॥४७॥

वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाक्षरे ॥

वर्ण—शुक्ल पीतादिरंगतथावर्ण(पु० न०) अक्षर ब्राह्मणादि, स्तुति ॥

अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदे पि च त्रिषु ॥ ४८ ॥

अरुण—सूर्य्य, सूर्य्यका सारथि, वर्ण भेद ॥ ४८ ॥

स्थाणुः शर्वोऽप्यथ—

स्थाणु—ठूठावृक्ष तथा अत्यन्त स्थिर और महादेव, खम्भा, वृक्ष पर्वत ॥

—द्रोणः काके—

द्रोण—काक तथा द्रोणाचार्य ॥

—ऽप्याजौ रवेरणः॥

रण—सग्राम तथा शब्द ॥

ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

ग्रामणी—नाई,मुख्यग्रामाधिप ॥४९॥

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्त्ते चान्तरा भ्रुवोः ॥

ऊर्णा—मेडका बाल तथा दोनोंभौंके बीचकी भौंरी ॥

हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥

हरिणी—मृगी, सोनेकी मूर्ति तथा हरे रंगकी मूर्ति ॥ ५० ॥

त्रिषु पाण्डौ च हरिणः—

हरिण—मृग तथा पाण्डुर वर्ण ॥

—स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ॥

स्थूणा—खम्भा तथा लोहेकी मूर्ति॥

तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे—

तृष्णा—इच्छा (वाञ्छा) तथा प्यास

—जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥

घृणा—जुगुप्सा वा निन्दा तथा करुणा ॥ ५१ ॥

वणिक्पथे च विपणिः—

विपणि—बाजारकी गली तथा दुकान ॥

—सुराप्रत्यक् च वारुणी ॥

वारुणी—मदिरा तथा पश्चिमकी दिशा

करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे—

करेणु—हाथी तथा हथिनी ॥

—द्रविणं तु बलं धनम् ॥५२॥

द्रविण—बल तथा धन ॥ ५२ ॥

शरणं गृहरक्षित्रोः—

शरण—गृह तथा रक्षा करनेवाला ॥

—श्रीपर्णं कमलेऽपि च ॥

श्रीपर्ण- कमल तथा अग्निमन्थ ॥

विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरं त्रिषु ॥ ५३ ॥

तीक्ष्ण—अत्यन्त गरम वस्तु, अत्यन्त तीखा, विष युद्ध तथा लोहा ॥ ५३ ॥

प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रयत्ता- प्रमातृषु ॥

प्रमाण—हेतु, मर्यादा, शास्त्रपरिच्छेद तथा ज्ञाता ॥

करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रि- येष्वपि ॥ ५४ ॥

करण—खेत, करण कारक, शरीर इन्द्रिय तथा वैश्य शूद्रा स्त्रीसे उत्पन्न ॥ ५४ ॥

प्राण्युत्पादे संसरणमसंबाधच- मूगतौ ॥ घण्टापथे-

संसरण—राजमार्ग, प्राणीका जन्म तथा बेरोक सेनाकी यात्रा ॥

-ऽथ वान्तान्ने समुद्गिरणमु- न्नये ॥ ५५ ॥

समुद्गिरण—वमन कियाहुआ अन्न तथा उखाडना तथा जलादिका निकालना ५५

अतस्त्रिषु-

यहांसे आगे कहे हुए णकारान्त शब्द तीनों लिंगोंमें होंगे ॥

-विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभद- न्तयोः ॥

विषाण—पशुओंके सींग तथा हाथीका दांत ॥

प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

प्रवण—नम्र, तत्पर, ढालू वा क्रमसे नीचा स्थान तथा चौराहा ॥ ५६ ॥

संकीर्णौ निचिताशुद्धा-

संकीर्ण—अशुद्ध तथा वर्णसङ्कर ॥

-वीरिणं शून्यमूषरम् ॥

ईरिण—शून्य और ऊषर ॥

॥ इति णान्ताः ॥

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ-

विवस्वत्—देव तथा सूर्य ॥

-सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

सरस्वत्—नद तथा समुद्र ॥ ५७ ॥

पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ-

गरुत्मत्—गरुड तथा पक्षी ॥

-शकुन्तौ भासपक्षिणौ ॥

शकुन्त—गृध्र और पक्षिमात्र ॥

अग्न्युत्पातौ धूमकेतू-

धूमकेतु—अग्नि और धूममयी तारा ॥

-जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥

जीमूत—मेघ और पर्वत ॥ ५८ ॥

हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे-

हस्त—हाथ तेरहवां नक्षत्र ॥

-मरुतौ पवनामरौ ॥

मरुत्—वायु तथा देवता ॥

यन्ता हस्तिपके सूते-

यन्तृ—हाथीवान् तथा सूत ॥

—भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९॥

भर्तृ—ब्रह्मा और पालन करनेवाला ॥ ५९ ॥

यानपात्रे शिशौ पोतः—

पोत—नौका तथा लडका ॥

—प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ॥

प्रेत—परेत तथा मृतक ॥

ग्रहभेदे ध्वजे केतुः—

केतु—ध्वजा तथा एकग्रहका नाम॥

—पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥

सुत—राजा तथा पुत्र ॥ ६० ॥

स्थपतिः कारुभेदेऽपि—

स्थपति—कंचुकी तथा कारुभेद, काष्ठ चीरनेवाला ॥

—भूभृद्भूमिधरे नृपे ॥

भूभृत—पर्वत और राजा ॥

मूर्धाभिषिक्तो भूपेपि—

मूर्धाभिषिक्त—राजा और मन्त्री ॥

—ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च॥६१॥

ऋतु—स्त्रीका मासिक धर्म और वसन्तादि ऋतु ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ—

अजित—अव्यक्त, विष्णु और महादेव॥

—सूतस्त्वष्टरि सारथौ ॥

सूत—सारथी तथा पाराधातु,त्वष्टा॥

व्यक्तः प्राज्ञेऽपि—

व्यक्त—पंडित तथा स्फुट ॥

—दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥

दृष्टान्त—तर्कादि शास्त्र तथा उदाहरण ॥ ६२ ॥

क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ॥

क्षत्तृ—सारथि, शूद्र और क्षत्रियासे उत्पन्न तथा द्वारपाल ॥

वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

वृत्तान्त—प्रकरण, प्रकार, सम्पूर्णता तथा वार्ता ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्विशेषयोः ॥

आनर्त—आनर्त देश, संग्राम तथा नृत्यका स्थान ॥

कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

कृतान्त—यमराज, सिद्धान्त, भाग्य, तथा पाप ॥ ६४ ॥

श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ॥ इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

धातु—वात, पित्त, कफ, पेटमें अन्न-जायकर जो रस वनता है वह और रक्त इत्यादि, पचमहाभूत(पृथ्वी जेल इत्या-दि) पांचोंमहाभूतोके गुण, (रूप रस गन्ध इत्यादि) इन्द्रिय, पत्थरका विकार, (शिलाजीत इत्यादि)वर्णात्मक शब्दों-के कारण, (भू, इत्यादि) ॥६५ ॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृप-स्यासर्वगोचरे ॥

शुद्धान्त—राजधानी तथा राजाओंका जनाना ॥

कासूसामर्थ्ययोः शक्ति—

शक्ति—बरछी तथा सामर्थ्य ॥

-मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६॥

मूर्ति—कठिनता तथा शरीर ॥ ६६ ॥

विस्तारवल्लयोर्व्रतति—

व्रतति—विस्तार तथा वल्ली ॥

—वसती रात्रिवेश्मनोः ॥

वसति—रात्रि तथा घर ॥

क्षयार्चयोरपचितिः—

अपचिति—क्षय तथा पूजा ॥

—सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

साति—दान तथा अन्त ॥ ६७ ॥

आर्तिः पीडाधनुष्कोटयो—

अर्ति—पीडा तथा धनुषकी कोटि॥

—जातिः सामान्यजन्मनोः ॥

जाति—सामान्यजाति तथा जन्म ॥

प्रचारस्यन्दयो रीति—

रीति—लोकाचार तथा पीतल और लोहेका मल ॥

—ईतिर्डिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

ईति—(ईति सात प्रकारकी होती है अतिवृष्टि, सूखापडना, खेतोंमें मूसोंका लगना, टीड्डियोंका उपद्रव, सुग्गोसे हानि, और राजाओसे वैर, इन ७ को ईति कहतेहैं,)तथा परदेशमे वास॥६८॥

उदयेऽधिगमे प्राप्ति—

प्राप्ति—लाभ तथा उत्पत्ति ॥

—त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥

त्रेता—एकयुग तथा अग्नित्रय ॥

वीणाभेदेऽपि महती—

महती—नारदकी वीणा तथा महत्त्व करके युक्त भार्यादि ॥

—भूतिर्भस्मनि संपदि ॥६९ ॥

भूति—अणिमा महिमादि आठ ऐश्वर्य, भस्म तथा सम्पत्ति ॥ ६९ ॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्य—

भोगवती—सर्पोंकी नदी तथा नगरी ॥

—थ संगरे ॥

सङ्गे सभायां समितिः—

समिति—सग तथा सभा तथा संग्राम ॥

—क्षयवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥

क्षिति—निवास, क्षय तथा पृथ्वी॥७०॥

रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ॥

हेति—सूर्यकी प्रभा तथा शस्त्र और आगकी ज्वाला ॥

जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

जगती—लोक, एकप्रकारका छन्द तथा पृथ्वी ॥ ७१ ॥

पंक्तिश्छन्दोऽपि दशमं—

पंक्ति—पाँती तथा दश अक्षरके पादका छन्द ॥

—स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ॥

आयति—आनेवाला समय प्रभाव तथा लम्बाई ॥

पत्तिर्गतौ च—

पत्ति—पैदल तथा चलना ॥

—मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥

पक्षति—प्रतिपदा तिथि तथा पखकी जड़ ॥ ७२ ॥

प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च—

प्रकृति—स्वभाव तथा योनिर्लिंग ॥

—कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ॥

वृत्ति—जीविका, सूत्रोंका अर्थ तथा कशिकी ॥

सिकताः स्युर्वालुकापि—

सिकता—वालू और सिकती ॥

—वेदे श्रवसि च श्रुतिः॥७३ ॥

श्रुति—वेद, कान तथा सुनना ॥ ७३ ॥

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ॥

वनिता—स्त्री तथा अत्यन्त प्यारी स्त्री ॥

गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि—

गुप्ति—रक्षा, भूमिका गड्ढा तथा जेलखाना ॥

धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥

धृति—धारण और धैर्य ॥ ७४ ॥

बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदो महत्यपि ॥

बृहती—क्षुद्रवार्त्ताकी, छन्दविशेष बड़ी ॥

वासिता स्त्रीकरिण्योश्च—

वासिता—स्त्री तथा हथिनी ॥

—वार्ता वृत्ता जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥

वार्ता—जीविका, समाचार ॥ ७५ ॥

वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रि—

वार्त—नीरोग, समाचार, जनश्रुति जीवनापाय तथा कुशल ॥

—ष्वप्सु च घृतामृते ॥

घृत—घी, जल ॥

अमृत—जल, मोक्ष तथा विना मांगी भीख ॥

कलधौतं रूप्यहेम्नो–
कलधौत–चांदी तथा सोना ॥
–र्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः॥७६॥
निमित्त–हेतु तथा चिह्न ॥ ७६ ॥
श्रुतं शास्त्रावधृतयो–
श्रुत–शास्त्र तथा सुनागया ॥
–र्युगपर्याप्तयोः कृतम् ॥
कृत–सत्ययुगपर्याप्ति, तथा कियाहुआ॥
अत्याहित महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥
अत्याहित–महाभय तथा साहस॥७७॥
युक्ते क्ष्मादावृतेभूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ॥
भूत–प्रेत, पृथिवी आदि पांच, देवयोनि तथा न्याययुक्त कार्य और सत्य तथा प्राणी ॥
वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥
वृत्त–पद्य, श्लोक, चरित्र, अतीत, भूतकाल, दृढ तथा गोल ॥ ७८ ॥
महद्राज्यं चा–
महत्–राज्य तथा बृहत्
–वगीतं जन्ये स्याद्गर्हितं त्रिषु ॥
अवगीत–लोकापवाद तथा जिसकी निंदा की गई ॥

श्वेतं रूप्येऽपि–
श्वेत–सफेद रंग तथा चांदी और रुपया ॥
–रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥
रजत–सोना चांदी तथा उज्ज्वल७९॥
त्रिष्वतो
यहासे लेकर तकारान्त सम्पूर्ण शब्द तीनों लिंगोमें होते हैं ॥
जगदिङ्गेऽपि–
जगत्–लोक तथा प्राणी ॥
–रक्तं नील्यादिरागि च ॥
रक्त–नीलादि रंग तथा रुधिर ॥
अवदातः सिते पीते शुद्धे–
अवदात–शुद्ध, श्वेत पदार्थ तथा पीला पदार्थ ॥
–बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥
सित बँधाहुआ तथा श्वेत ॥८०॥
युक्तेऽपिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतो–
अभिनीत–युक्त, अत्यन्त, प्रशस्त, तथा भूषित और शान्त ॥
–ऽथ संस्कृतम् ॥
कृत्रिम लक्षणोपेतेऽप्य–
संस्कृत–संस्कारयुक्त, लक्षणयुक्त तथा कृत्रिम ॥

—नन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥

अनन्त—अनवधि, (जिसकी मर्यादा न हो) विष्णु तथा शेष नाग ॥८१॥

ख्याते हृष्टे प्रतीतो—

प्रतीत—प्रसिद्ध तथा हर्षित ॥

—ऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ॥

अभिजात—कुलीन और पण्डित ॥

विविक्तौ पूताविजनौ—

विविक्त—पवित्र और विजन, वा एकान्त ॥

—मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ॥८२॥

मूर्च्छित—मोहित तथा बढा॥८२॥

द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ—

शुक्त—चुक्र तथा कठोर ॥

शिती धवलमेचकौ ॥

शिति—धवल (शुक्ल) मेचक तथा कृष्णवर्ण ॥

सत्ये साधौ विद्यमानेप्रश-स्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥

सत्—सत्य, साधु, विद्यमान, प्रशस्त तथा अभ्यर्हित ॥ ८३ ॥

पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभि-युक्तेऽग्रतः कृते ॥

पुरस्कृत—पूजित, शत्रुसे पीडित और आगे किये हुये ॥

निवातावाश्रयावातौ शस्त्रा-भेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥

निवात—निवास, वायुरहित स्थान तथा शस्त्रोंसे अभेद्य कवच ॥ ८४ ॥

जातोन्नद्धप्रवृद्धाःस्युरुच्छ्रिता—

उच्छ्रित—उत्पन्न, ऊंचा, उच्छ्रित, अहंकारयुक्त तथा अत्यन्त बडा ॥

—उत्थितास्त्वमी ॥ वृद्धिमत्प्रो-द्यतोत्पन्ना—

उत्थित—वृद्धिको प्राप्त होनेवाला, तथा उदयको प्राप्त होनेवाला और उत्पन्न होनेवाला ॥

—आदृतौ सादरार्चितौ ॥८५॥

आदृत—आदर कियाहुआ तथा पूजित ॥ ८५ ॥

इति तान्ताः ।

अर्थोभिधेयरैवस्तुप्रयोजन-निवृत्तिषु ॥

अर्थ—शब्दका अर्थ, धन, यथार्थ, निवृत्ति ॥

निपानागमयोस्तीर्थमृषि-जुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥

तीर्थ—निपान अर्थात् कूपके पासका हौद वा जलाशय, शास्त्र, ऋषिसेवित जल तथा गुरु ॥ ८६ ॥

समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संब-द्धार्थे हितेऽपि च ॥

समर्थ—समर्थ वा बलवान् तथा सम्बन्धयुक्त पदार्थ तथा हित ॥

दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ-
दशमीस्थ-रसरहित और अतिवृद्ध॥
-वीथी पङ्क्त्यपि ॥ ८७ ॥
वीथी-मार्ग तथा पंक्ति ॥ ८७ ॥
आस्थानीयत्नयोरास्था-
आस्था-सभा तथा उपाय ॥
-प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥
प्रस्थ-पर्वतकी चोटी तथा तोल-नेका सेर ॥

॥ इति थान्ताः ॥

अभिप्रायवशौ छन्दा-
छन्द-अभिप्राय तथा अधीन ॥
-वब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥
अब्द-मेघ तथा वर्ष ॥ ८८ ॥
अपवादौ तु निन्दाज्ञे-
अपवाद-निन्दा तथा आज्ञा ॥
-दायादौ सुतबान्धवौ ॥
दायाद-पुत्र तथा ज्ञाति वा बिरादरी॥
पादा रश्म्यंघ्रितुर्यांशा-
पाद-किरण, चरण तथा चौथाई॥
-श्चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः॥८९॥
तमोनुद्-चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि॥८९॥
निर्वादो जनवादेऽपि-
निर्वाद-लोकापवाद और निश्चित वाद ॥
-शादो जम्बालशष्पयोः ॥
शाद-घास और कीचड ॥
आरावे रुदिते त्रातर्य्याक्रन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥
आक्रन्द-आर्तशब्द, रोदन, रक्षक, भयंकर तथा युद्ध ॥ ९० ॥
स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि-
प्रसाद-अनुग्रह, (प्रसन्नता) और काव्यके गुण ॥
-सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ॥
सूद-व्यञ्जन और रसोईंदारका नाम ॥
गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो-
गोविन्द-कृष्ण तथा विष्णु और गोष्ठका स्वामी ॥
-हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥
आमोद-हर्ष तथा निर्हारि गन्ध॥९१॥
प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् ॥
ककुद-प्रधान, राजचिह्न तथा बैलका कन्धा ॥
स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥
संविद्-ज्ञान, सम्भाषण, कर्म, नियम, युद्ध और नाम ॥ ९२ ॥
धर्मे रहस्युपनिष-
उपनिषद्-धर्म, एकान्त और वेदान्त

-स्त्याहतौ वत्सरे शरत् ॥

शरद्—क्वारकार्त्तिकका समय और वर्ष ॥

पदं व्यवसितत्राणस्थानल-
क्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥

पद—व्यवसाय, रक्षास्थान, चिह्न, चरण तथा वस्तु ॥ ९३ ॥

गोष्पदं सेविते माने-

गोष्पद—सेवित देश तथा भूमिपर गायके खुरसे हुआ गड्ढा ॥

-प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ॥

आस्पद—प्रतिष्ठा, स्थान तथा कार्य ॥

-त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू-

स्वादु—इष्ट और मधुर ॥

-मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥

मृदु—अतीक्ष्ण तथा कोमल ॥ ९४ ॥

मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मंदाः स्यु-

मन्द—मूर्ख, आलसी अप्रवीण, अल्प तथा निर्भाग्य ॥

-र्द्वौ तु शारदौ ॥
प्रत्यग्राप्रतिभौ-

शारद—डरपोक, छितिउन (वृक्ष) जलपीपर औषधी ॥

-विद्वत्सुप्रगल्भौ विशार-
दौ ॥ ९५ ॥

विशारद—विद्वान् तथा चतुर और ढीठ पुरुष ॥ ९५ ॥

इति दान्ताः ॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधा-

न्यग्रोध—वटवृक्ष तथा अङ्कवार ॥

-वुत्सेधः काय उन्नतिः ॥

उत्सेध—देह तथा ऊँचाई ॥

पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ
वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥

विवध वीवध—पर्याहार (ध्यानादि) तथा मार्ग ॥ ९६ ॥

परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामु-
पसूर्यके ॥

परिधि—वृत्तकी परिधि वा गोलाई, सूर्य वा चन्द्रके चारों ओरका मण्डल, पलाश इत्यादि यज्ञके वृक्षोंकी शाखा ॥

बन्धकं व्यसनं चेतः पीडा-
धिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥

आधि—बन्धक, आपत्ति, मनकी पीडा तथा बैठना ॥ ९७ ॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च
समाधयः ॥

समाधि—चित्तके व्यापारका रोकना, अङ्गीकार, चुप रहना, नियम तथा ध्यान॥

दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृ-
त्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृ-
तस्यानुवर्तने ॥
अनुबन्ध–दोषका उत्पन्न करना, प्रकृति प्रत्यय आगम आदेश इत्यादिमें जिसका नाश हो गया हो वह ॥९८॥ पिता इत्यादि बडोंका अनुसरण करनेवाला बालक, प्रारम्भ किया वस्तुका परंपरासे चलना ॥

विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि–
विधु–विष्णु, चन्द्रमा, कपूर, तथा राक्षस ॥

–परिच्छेदे बिलेऽवधिः ॥९९॥
अवधि–सीमा वा हद्द, गड्ढा और काल ॥ ९९ ॥

विधिर्विधाने दैवेऽपि–
विधि–करना, भाग्य धर्मशास्त्र तथा आज्ञादेना ॥

–प्रणिधिः प्रार्थने चरे. ॥
प्रणिधि–प्रार्थन तथा चलनेवाला ॥

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि–
बुध–पण्डित तथा एक ग्रह ॥ वृद्ध–पंडित तथा वृद्धपुरुष ॥

–स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥१००॥
स्कन्ध–समुदय, समूह, काण्ड, राजा तथा कन्धा ॥ १०० ॥

देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सारिति स्त्रियाम् ॥
सिंधु–समुद्र, एक नद, सिन्धुदेश तथा नदी ॥

विधा विधौ प्रकारे च–
विधा–विधान प्रकार तथा बडाई ॥

–साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥१०१ ॥
साधु–साधु, कुलीन, सुन्दर, रोजगारी तथा सज्जन ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च–
वधू–स्त्री, (विवाहिता स्त्री) पुत्रकी बहू, सवरग ओषधी ॥

–सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ॥
सुधा–अमृत, चूना, विजुली, भोजन, अवरा, सेहुड ॥

सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा–
सन्धा–प्रतिज्ञा, अंगीकार, मर्यादा ॥

–श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥१०२॥
श्रद्धा–आदर, आकाक्षा तथा विश्वास ॥ १०२ ॥

मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रे–
मधु–मद्य, पुष्परस, शहद, चैत्र तथा महुआ ॥

–प्यन्धं तमस्यपि ॥
अन्ध–अन्धा तथा अँधियारा ॥

अतस्त्रिषु–
यहासे लेकर धांतवर्ग पर्यंत शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

-समुन्नद्धौ पण्डितंमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥

समुन्नद्ध-अपनेको पंडित माननेवाला वा गर्वयुक्त ॥ १०३ ॥

ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशे-

ब्रह्मबन्धु-अधिक्षेप, निन्दा योग्य ब्राह्मण ॥

-ऽथ विलम्बितः ॥ अविदूरोऽप्यवष्टब्धः-

अवष्टब्ध-आश्रित, पासवाला तथा बँधा हुआ ॥

-प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ॥ १०४ ॥

प्रसिद्ध-प्रसिद्ध वा ख्यात तथा भूषित ॥ १०४ ॥

॥ इति धान्ताः ॥

सूर्यवह्नी चित्रभानू-

चित्रभानु-सूर्य और अग्नि ॥

-भानू रश्मिदिवाकरौ

भानु-किरण और सूर्य ॥

भूतात्मानौ धातृदेहौ-

भूतात्मन्-ब्रह्मा तथा देह ॥

-मूर्खनीचौ पृथग्जनौ॥ १०५॥

पृथग्जन-मूर्ख और नीच ॥ १०५॥

ग्रावाणौ शैलपाषाणौ-

ग्रावन्-पर्वत तथा पत्थर ॥

-पत्त्रिणौ शरपक्षिणौ ॥

पत्त्रिन्-पक्षी, बाज पक्षी तथा बाण ॥

तरुशैलौ शिखरिणौ-

शिखरिन्-वृक्ष तथा शैल ॥

शिखिनौ वह्निबर्हिणौ॥ १०६॥

शिखिन्-अग्नि तथा मोर ॥ १०६ ॥

प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहा-

प्रतियत्न-लाभकी इच्छा तथा संस्कार ॥

-वथ सादिनौ ॥ द्वौ सारथिहयारोहौ-

सादिन्-सारथि और घोडेका सवार ॥

-वाजिनोऽश्वेषु पक्षिणः ॥१०७॥

वाजिन्-घोडा और पक्षी ॥ १०७ ॥

कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्याम-

अभिजन-कुल तथा जन्मभूमि ॥

-प्यथ हायनाः ॥ वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च-

हायन-वर्ष, आँच तथा एक तरहका धान ॥

चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः ॥१०८॥

विरोचन-चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य॥१०८॥

क्लेशेऽपि वृजिनो-

वृजिन-क्लेश, कुटिल तथा पाप ॥

-विश्वकर्मार्कसुरशिल्पिनोः ॥

विश्वकर्मन्-सूर्य तथा विश्वकर्मा ॥

आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्मवर्ष्म च ॥ १०९ ॥

आत्मन्—आत्मा, देह, स्वभाव, बुद्धि, ब्रह्म, उपाय तथा धीरता वा धैर्य॥१०९॥

शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ॥

घनाघन—बरसनेवाला मेघ, इन्द्र तथा खूनी मतवाला हाथी ॥

अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ॥ ११० ॥

अभिमान—धनादिका घमण्ड, ज्ञान, प्रणय नम्रता तथा हिंसा ॥ ११० ॥

घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ॥

घन—कठोरवस्तु, मेघ, मूर्तिका गुण मुद्गर काँसीका बनाहुआ घटा इत्यादि बाजा मध्यनृत्य गीतवाद्य ॥

इनः सूर्ये प्रभौ—

इन—सूर्य, प्रभु ॥

—राजा मृगांके क्षत्रिये नृपे१११

राजन्—चन्द्रमा, क्षत्रिय तथा नृप॥ ॥ १११ ॥

वाणिन्यौ नर्तकीदूत्यौ—

वाणिनी—नाचनेवाली स्त्री तथा दूती वा कुटनी ॥

—स्रवन्त्यामपि वाहिनी ॥

वाहिनी—सेना, नदी, वाहिनीपति, समुद्र तथा सेनापति ॥

ह्लादिन्यौ वज्रतडितौ—

ह्लादिनी—वज्र और बिजली ॥

—वन्दायामपि कामिनी ॥११२॥

कामिनी—बहुत कामवाली वा कामकी इच्छा करनेवाली स्त्री, वन्दा—एकवृक्षका रोग तथा स्त्री ॥ ११२ ॥

त्वग्देहयोरपि तनुः—

तनु—खाल, शरीर, थोडा और दुर्बल।

सूनाऽधोजिह्विकापि च ॥

सूना—जिह्वाके तलेका स्थान और मारनेका स्थान ॥

क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥ मन्दे—

वितान—क्रतु, विस्तार, तुच्छ॥११३॥ तथा मन्द ॥

—ऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ॥

केतन—ध्वजा, घर, कार्य तथा उपनिमन्त्रण ।

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥११४ ॥

ब्रह्मन्—वेद, चैतन्य, तप ब्रह्मा तथा ब्राह्मण और प्रजापति॥ ११४ ॥

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् ॥

गन्धन—सूचनकरना वा चुगलीखाना हिंसा तथा उत्साह देना वा भरोसादेना॥

आतञ्जनं प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥

आतञ्जन—वेग, तपकरना तथा दूधमें मट्ठा डालना ॥ ११५ ॥

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ॥

व्यजन—चिह्न,दाढीमूछनिष्ठान तथा अंग ॥

स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

कौलीन—लोकापवाद वा लोकनिंदा तथा पशु सर्प पक्षीका युद्ध ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ॥

उद्यान—बगीचा, निकलना तथा प्रयोजन ॥

अवकाशे स्थितौ स्थानं—

स्थान—अवकाश और स्थिति ॥

—क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७॥

देवन—क्रीडा व्यवहार तथा जीतनेकी इच्छा ॥ ११७ ॥

उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिवेशोद्गमेऽपि च ॥

उत्थान—उठना व खडा होना, उद्योग, कुटुम्बकार्य, सिद्धान्त तथा उत्तम औषध ॥

व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८॥

व्युत्थान—तिरस्कार या अनादर विरोध करना तथा स्वतन्त्रतासे काम करना ॥ ११८ ॥

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ॥ निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥११९॥

साधन—पारा इत्यादि रसायनका बनाना, चलना, पृथ्वी जल इत्यादि द्रव्य धन दौलत दिलवाना,धन इत्यादिका पैदा करना, उपाय, पीछे पीछे चलना पुरुषका मूत्रेन्द्रिय, तथा मृतक वा अग्निसंस्कार ॥ ११९ ॥

निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ॥

निर्यातन—वैरशोधन, दान तथा धरोहड देना ॥

व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥

व्यसन—विपत्ति,भ्रंश,नाश वा पतन, कामज दोष तथा कोपजदोष॥ १२० ॥

पक्ष्माक्षिलोम्नि किंजल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि ॥

पक्ष्मन्—नेत्रोंके पलक, केसर, सूतका टुकडा, अतिअल्प ॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व—

पर्वन्—अष्टमी दर्श आदि तिथि, उत्सव ॥

—वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि॥१२१॥

वर्त्मन्—मार्ग वा रास्ता तथा आँखके पलक ॥ १२१ ॥

—अकार्यगुह्ये कौपीनं—

कौपीन—अकार्य और गुह्य तथा कौपीन ॥

—मैथुनं संगतौ रते ॥

मैथुन—स्त्री पुरुषका संयोग तथा रति ॥

प्रधानं परमात्मा धीः—

प्रधान—प्रधान वा मुख्य तथा राजाका मुख्य सहाय, परमात्मा, बुद्धि ॥

—प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः॥१२२॥

प्रज्ञान—बुद्धि और चिह्न ॥ १२२॥

प्रसूनं पुष्पफलयो—

प्रसून—फूल तथा फल ॥

—र्निधनं कुलनाशयोः ॥

निधन—कुल और नाश ॥

क्रन्दने रोदनाह्वाने—

क्रन्दन—रोना, पुकारना तथा योद्धाओंका धमकीसे ललकारना ॥

वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३॥

वर्ष्मन्—शरीर वा देह तथा प्रमाण वा नाप ॥ १२३ ॥

गृहदेहत्विट्प्रभावा धामा—

धामन्—घर, देह, प्रभा वा प्रकाश तथा प्रभाव ॥

—न्यथ चतुष्पथे ॥ संनिवेशे च संस्थानं—

सस्थान—किसी वस्तुके अवयवोंका विभाग तथा चौरहा और मरना वा नाश।

लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥१२४॥

लक्ष्मन्—चिह्न तथा प्रधान वा मुख्य ॥ १२४ ॥

आच्छादने संपिधानमपवारण-मित्युभे ॥

आच्छादन—ढाकना, छिपना, वस्त्र इत्यादिसे वेष्टन, वस्त्र तथा गुप्त होना॥

आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥

आराधन—सन्तुष्ट करना, सिद्ध करना तथा लाभ ॥ १२५ ॥

अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ॥

अधिष्ठान—पहियाँ, नगर, आक्रमण वा अमलमे कर लेना ॥

रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि-

रत्न—जवाहिर तथा स्वजातिमें श्रेष्ठ वा उत्तम ॥

—वने सलिलकानने ॥ १२६॥

वन—पानी और वन ॥ १२६ ॥

तलिनं विरले स्तोके—

तलिन—विरल तथा थोडा ॥

—वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ॥

यहासे नांतवर्गकी समाप्ति पर्य्यन्त संपूर्ण शब्द वाच्यलिंग होते हैं ॥

समानाः सत्समैके स्युः—

समान—पडित, सम और एक ॥

—पिशुनौ खलसूचकौ॥१२७॥

पिशुन—सूचक वा चुगलखोर तथा खल ॥ १२७ ॥

हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ—

हीन-न्यून, थोडा त्याग किया गया तथा निन्दा करनेके योग्य और किसी वस्तुसे रहित ॥

—वेगिशूरौ तरस्विनौ ॥

तरस्विन्—वेगवाला तथा शूर ॥

अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्त-व्यापद्गतावपि ॥ १२८ ॥

अभिपन्न—अपराधी, जीता गया तथा विपत्तिको प्राप्त भया ॥ १२८ ॥

॥ इति नान्ताः ॥

कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतावपि ।

कलाप—समूह, मोरकी पूंछ, स्त्री कमरकी पचीस लडकी कोंधनी तथा गहना और तरकस ॥

परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥

परीवाप—तंबू कनात इत्यादि सामग्री तथा बीजका बोना और थाला॥१२९॥

गोधुग्गोष्ठपती गोपौ—

गोप—अहीर, गन्धरस, अनेककामोंको करनेवाला वा कामदार ॥

—हरविष्णू वृषाकपी ॥

वृषाकपि—महादेव तथा विष्णु ॥

बाष्पमूष्माश्रु—

बाष्प—भाफ अर्थात् गरम वस्तुपर पानी डालनेसे धूआंके सदृश उपर उठती हुई वस्तु, आंसू, गरमी ॥

—कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥

कशिपु—भोजन, अन्न वस्त्र तथा तकिया ॥ १३० ॥

तल्पं शय्याट्टदारेषु—

तल्प—खाट, अटारी तथा दारा ॥

—स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ॥

विटप—शाखा पत्ता इत्यादिका समूह, घास तृण इत्यादिका गुच्छा, वृक्ष वा पेड ॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुध मनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥ मेद्यलिङ्गा अमी–

प्राप्तरूप–स्वरूप, अभिरूप, पण्डित तथा सुन्दर ॥ १३१ ॥

–कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ॥

कच्छपी–कछुही और सारस्वती वीणा ॥

इति पांताः ॥

रवर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिंगकः ॥ १३२ ॥

रेफ–अधम वा नीच तथा रेफ वा हल रकार एक वर्ण ॥ १३२ ॥

इति फाताः ॥

अन्तराभावसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने ॥

गंधर्व–विश्वावसु इत्यादि स्वर्गके गवैये, घोडा, एक प्रकारका गंधयुक्त मृग, मनुष्यादि प्राणी ॥

कम्बुर्ना वलये शंखे–

कम्बु–शंख, कंकण वा कंगन ॥

–द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

द्विजिह्व–सर्प तथा चुगलखोर॥१३३॥

पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वजान् ॥

पूर्व–पहिला–ली, पूर्वपुरुष, अर्थात पुरखा, ब्रह्मा, पूर्वदिशा तथा पहिले ॥

इति वान्ताः ॥

कुम्भौ घटेभमूर्धांशौ–

कुंभ–गूगलका वृक्ष,घडा, हाथीका मस्तक, अंश, कुम्भराशि ॥

–डिम्भौ तु शिशुबालिशौ॥१३४॥

डिम्भ–बालक तथा मूर्ख ॥१३४॥

स्तम्भो स्थूणाजडीभावौ–

स्तम्भ–खम, ठगमुरी ॥

शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ॥

शंभू–ब्रह्मा और शिव ॥

कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा–

गर्भ–स्त्रीके पेटका गर्भ पेट,बालक, नाटयकी तीसरी संधि ॥

–विस्रंभः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

विस्रम्भ–शृंगारकी प्रार्थना और विश्वास ॥ १३५ ॥

स्याद्भेर्यां दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ॥

दुन्दुभि–नगाडा तथा लडकोंका एक प्रकारका खिलौना ॥

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥

कुसुम्भ–कमण्डलु, कुसुमका फूल ॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना–

नाभि—टूंडी, क्षत्रिय, मुख्यराजा, रथके चक्रका मध्यभाग और कस्तूरी ॥

—सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ॥

सुरभि—सुन्दर वा मनोहर,सुगंधयुक्त, प्रसिद्ध, चम्पा (पुष्पवृक्ष,) वसन्तऋतु, जायफल, कामधेनु, सलईवृक्ष, सुवर्ण वा सोना तथा कमल (पुष्पवृक्ष) ॥

सभा संसदि सभ्ये च-

सभा—सभा तथा घर ॥

—त्रिष्वध्यक्षेपि वल्लभः ॥ १३७ ॥

वल्लभ—प्यारा—री,स्त्रीका पति,अध्यक्ष वा मालिक तथा कुलीन घोडा॥१३७॥

इति भांताः ॥

किरणप्रग्रहौ रश्मी-

रश्मि—किरण वा प्रकाश तथा लगाम ॥

कपिभेकौ प्लवङ्गमौ ॥

प्लवंगम—वानर तथा मेडक ॥

इच्छामनोभवौ कामौ-

काम—इच्छा और काम ॥

—शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥१३८॥

पराक्रम—शूरता तथा उद्योग ॥१३८॥

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ॥

धर्म—पुण्य, यमराज,न्याय, स्वभाव, आचार तथा सोमयज्ञ करके सोमवल्लीका रस पीनेवाला ॥

उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

उपक्रम—उपायपूर्वक प्रारम्भ,प्रारंभ तथा रिसवत ॥ १३९ ॥

वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो-

निगम—व्यापार, शहर तथा वेद ॥

—नागरो वणिक् ॥ नैगमौ द्वौ-

नैगम—वेदसम्बन्धि वस्तु, नगरका रहनेवाला तथा बनियां और उपनिषद् ॥

—बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥

राम—सुंदर वा मनोहर, नीली वस्तु, श्वेत वस्तु, तथा परशुराम, रामचन्द्र, बलराम ॥ १४० ॥

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः-

ग्राम—(पु०) गांव,(इस शब्दके पूर्वमें जब"शब्द" इत्यादि शब्द रहतेहैं तब यह समूहवाची होताहै जैसा शब्दग्राम, स्वरग्राम, यह शब्द कहीं स्वरवाचीभी है) ।

—क्रान्तौ च विक्रमः ॥

विक्रम—विक्रमण तथा पराक्रम ॥

स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे-

स्तोम—समूह तथा स्तोत्र ॥

—जिह्मस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥

जिह्म—कुटिल तथा आलसी और वक्र ॥ १४१ ॥

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च—

गुल्म—पिलही रोग, विना डालीका वृक्ष तथा एक प्रकारकी सेना॥

जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ॥

जामि—बहिन, तथाकुलस्त्री ॥

क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

क्षमा—पृथ्वी तथा क्षमा वा सहना ॥ १४२॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशाः ॥

श्याम—श्यामा—हरा,कृष्ण, शतावरी और रात्रि ॥

ललामं पुच्छपुंड्राश्वभूषामा— धान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

ललाम—पूंछ, घोडा, घोडेके माथेका एकचिह्न, घोडेका गहना, प्रधान वा मुख्य,मनोहर, प्रभाव, पुरुष तथा भूषण और अन्त्रलिंगी ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्मम—

सूक्ष्म—छल तथा अध्यात्म ॥

—प्यादौ प्रधाने प्रथम—

प्रथम—पहिला-ली, तथा प्रधान वा मुख्य ॥

—स्त्रिषु ॥

यहांसे लेकर मान्तपर्यन्त सम्पूर्णशब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वा—

वाम—शोभित, उलटा तथा टेढा॥

—वधमौ न्यूनकुत्सितौ॥१४४॥

अधम—न्यून, तथा निन्दित१४४॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यात— याममिदं द्वयम् ॥

यातयाम—पुराना—नी, (बासी अन्न इत्यादि) और भोजन करके त्याग किया गया—ई ॥

॥ इति मान्ताः ॥

तुरंगगरुडौ तार्क्ष्यौ—

तार्क्ष्य—घोडा तथा गरुड ॥

—निलयापचयौ क्षयौ॥१४५॥

क्षय—नाश, प्रलय, क्षयरोग तथा घर ॥ १४५ ॥

श्वशुर्यौ देवरश्यालौ—

श्वशुर्य—देवर तथा साला ॥

भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥

भ्रातृव्य—भतीजा तथा शत्रु ॥

पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ—

पर्जन्य—शब्दित मेघ तथा इन्द्र ॥

—स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः १४६

अर्य—स्वामि तथा वैश्य ॥ १४६ ॥

तिष्यः पुष्ये कलियुगे-

तिष्य—पुष्य नक्षत्र, और कलियुग ॥

-पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥

पर्याय—अवसर तथा क्रम ॥

प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वा-सहेतुषु ॥ १४७ ॥रन्ध्रे शब्दे-

प्रत्यय—अधीन,शपथ, ज्ञान,विश्वास तथा कारण ॥१४७॥ छिद्र और शब्द॥

ऽऽथानुशयो दीर्घद्वेषानु-तापयोः ॥

अनुशय—बडा वैर तथा पश्चात्ताप॥

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजा-नां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

स्थूलोच्चय—पर्वतका बडा ढाँका असंपूर्णता, हाथियोंकी मध्यम गति अर्थात् न जल्दी न धीरे ॥ १४८ ॥

समयाः शपथाचारकाल-सिद्धान्तसंविदः ॥

समय—काल वा समय, शपथ वा किरिया, आचार वा अपने मतके सदृश व्यवहार, सिद्धान्त अर्थात् निर्णय किया हुआ पदार्थ तथा वातचीत करना ॥

व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्य-नयास्त्रयः ॥ १४९ ॥

अनय—दुर्व्यसन, जुआ इत्यादि दुष्ट भाग्य तथा विपत्ति और अनीति॥१४९॥

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रदोषे दण्डे-

अत्यय—मरना, उल्लंघन, क्लेश दोष तथा दण्ड और नाश ॥

-ऽप्ययथापदि ॥

युद्धायत्योः संपरायः-

सम्पराय—आपत्ति, युद्ध तथा उत्तर काल वा अगाडीका समय ॥

-पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥१५०॥

पूज्य—पूजा वा आदरकरनेके योग्य और ससुर ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवा-यश्च संनयौ ॥

सन्नय—अच्छा न्याय करनेवाला सेनाके पीछेकी सेना तथा समूह ॥

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः-

सस्त्याय—समूह,बैठक तथा विस्तार

प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥

विस्रम्भयाच्ञाप्रेमाणः-

प्रणय—प्रेम वा प्रीति, मांगना तथा विश्वास ॥ १५१ ॥

-विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥

समुच्छ्रय— उचाई तथा विरोध ॥

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

विषय—जानी हुई वस्तु, रूप,

रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, (ये प्रत्येक विषय कहलाते हैं) देश, स्थान और आश्रय ॥ १५२ ॥

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री—

कषाय—कसैला रङ्गवाला—ली, कसेला रङ्ग, काढा, विलेपन तथा नया अंगराग अर्थात् टटका चन्दनादिक ॥

—सभायां च प्रतिश्रयः ॥

प्रतिश्रय—सभा, आश्रय वा अवलम्बन तथा अङ्गीकार ॥

प्रायो भून्यन्वगमने—

प्राय—सन्यासपूर्वक भोजनका त्याग, मृत्यु वा मरण और तुल्य ॥

—मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि॥ १५३॥

मन्यु—क्रोध, दीनता वा गरीबी तथा चिन्ता वा शोक ॥ १५३ ॥

रहस्योपस्थयोर्गुह्यं—

गुह्य—छिपानेके योग्य तथा स्त्री वा पुरुषका मूत्रेन्द्रिय ॥

—सत्यं शपथतथ्ययोः ॥

सत्य—सच्चा—च्ची, सत्यभामा, सत्यता, कसम तथा सत्युग ॥

वीर्यं बले प्रभावे च—

वीर्य—बल और प्रभाव ॥

—द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये॥ १५४॥

द्रव्य—धन, भव्य अर्थात् सुन्दर और स्थिर ॥ १५४ ॥

धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ—

धिष्ण्य—स्थान, गृह, नक्षत्र तथा अग्नि ॥

—भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ॥

भाग्य—भाग्य वा पूर्वजन्मके कियेहुए अच्छे वा बुरे कर्म ॥

कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं—

गांगेय—गंगासम्बन्धी वस्तु, भीष्म कौरवके पितामह, सुवर्ण वा सोना, कसेरुफल वा कन्द ॥

—विशल्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥

विशल्या—गुडूची औषधी, इन्द्रपुष्पी औषधी, अग्निकी शिखा वा आगकी लपट तथा दन्तिका औषधी ॥ १५५॥

वृषाकपायी श्रीगौर्यो—

वृषाकपायी—लक्ष्मी तथा पार्वती ॥

—रभिख्या नामशोभयोः ॥

अभिख्या—नाम तथा शोभा ॥

आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ॥ १५६ ॥

उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ॥

क्रिया—क्रिया वा कर्म, आरम्भ, प्रायश्चित्त, शिक्षा, पूजन, विचार, उपाय कर्म चेष्टा तथा दवाईकरना ॥ १५६॥

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

छाया—छाया, सूर्यकी स्त्री वा शनैश्चरकी माता तथा शोभा और प्रतिबिम्ब ॥ १५७ ॥

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने ॥

कक्ष्या—राजाकी डेउढी, स्त्रियोंके कमर का गहना, हाथीके मध्य शरीरका बन्धन ॥

कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ॥ १५८ ॥

कृत्या—धन,स्त्री, भूमि इत्यादि फोडनेके योग्य शत्रुका पुरुष इत्यादि, तामसी देवता जिसको लोग शत्रुपर चलाते हैं तथा क्रिया वा कर्म ॥ १५८ ॥

जन्यं स्याज्जनवादेऽपि—

जन्य—जो पैदा होता है, निन्दित बचन घरके अर्थात् दामादके पक्षवाले मित्र इत्यादि, बाजार तथा युद्ध ॥

—जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥

जघन्य—सबसे पिछला—ली; अधम वा नीच—तथा मूत्रेन्द्रिय ॥

गर्ह्याहीनौ च वक्तव्यौ—

वक्तव्य—बोलनेके योग्य, निन्दा करनेके योग्य, हीन अर्थात् किसी वस्तुसे रहित तथा अधीन वा परतन्त्र ॥

—कल्यौ सज्जनिरामयौ॥१५९॥

कल्य—कवच धारणकरनेवाला योद्धा तथा नीरोग ॥ १५९ ॥

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ—

अर्थ्य—अर्थसे च्युत वा दूर न भया हो, बुद्धिमान्—मती, और शिलाजीत ॥

—पुण्यं तु चार्वपि ॥

पुण्य—पुण्यवान् मनोहर तथा धर्म॥

—रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि—

रूप्य—रमणीय वा सुन्दर, रुपया वा चादी छापी हुई चांदी वा सोना अर्थात् चांदी वा सोनेका रुपया ॥

—वदान्या वल्गुवागपि॥१६०॥

वदान्य—दाता वा देनेवाला—ली, मीठा बोलनेवाला—ली ॥ १६० ॥

न्याय्येऽपि मध्यं—

मध्य—बिचला—ली वा बीचवाला—ली, अधम वा नीच, न्याययुक्त वा न्यायके सदृश, कमर तथा बीच ॥

—सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ॥

सौम्य—सूधा—धी, सुन्दर, चन्द्रको निवेदन करनेके योग्य वस्तु, बुध (एकग्रह) ॥

॥ इति यान्ताः ॥

निवहावसरौ वारौ—

वार—सोम, मगल, बुध इत्यादि ७ सात वार, अवसर, समूह ॥

–संस्तरौ प्रस्तराऽध्वरौ ॥ १६१ ॥

संस्तर–कुशका बिछौना; बिछौना तथा यज्ञ ॥ १६१ ॥

गुरू गीष्पतिपित्राद्यौ–

गुरु–भारी, बृहस्पति, बडेलोग (पिता इत्यादि) ॥

–द्वापरौ युगसंशयौ ॥

द्वापर–सशय (सन्देह,) 'द्वापर' युग ॥

प्रकारौ भेदसादृश्ये–

प्रकार–भेद (तरह) तथा तुल्यता ॥

–आकाराविङ्गिताकृती ॥१६२॥

आकार–चेष्टा तथा सूरत ॥ १६२ ॥

किंशारू सस्यशूकेषु–

किंशारु–यव इत्यादिका टूंडा (सुईके तुल्य अग्रभाग) तथा बाण और कंक पक्षी ॥

–मरू धन्वधराधरौ ॥

मरु–निर्जलदेश और पर्वत ॥

अद्रयो द्रुमशैलार्काः–

अद्रि–वृक्ष, पर्वत तथा सूर्य ॥

–स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ॥१६३॥

पयोधर–स्तन और मेघ ॥१६३॥

ध्वान्तारिदानवा वृत्रा–

वृत्र–वृत्रासुर, (एक दैत्य) अन्धकार तथा शत्रु ॥

–बलिहस्तांशवः कराः ॥

कर–हाथ, हाथीकी सूड, किरण तथा महसूल वा कर ॥

प्रदरा भङ्गनारीरुग्बाणा–

प्रदर–स्त्रियोंका एकरोग (जिसके होनेसे मूत्रद्वारसे लोहू बह जाता है) भग (भग्नता) तथा बाण ॥

–अस्राः कचा अपि ॥ १६४ ॥

अस्र–केश कोना, आंसू, तथा लोहू ॥ १६४ ॥

अजातशृंगो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ ॥

तूवर–समयपर जिसके सींग न जममें हों ऐसा बैल, समय पर जिसके मूंछे न जमी हों ऐसा पुरुष ॥

स्वर्णेऽपि राः–

रै–धन तथा सुवर्ण (सोना) ॥

–परिकरः पर्यंकपरिवारयोः ॥ १६५ ॥

परिकर–पलंग और कुटुम्ब॥१६५॥

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्या–

तार–ऊंचा शब्द, नक्षत्र, आखकी पुतली, मोती, सफाई, गोल मोती, गोल और निर्मल मोतीसे बना हार, जलसे पार उतरना, एक वानरका नाम तथा चांदी धातु ॥

—च्छारो वायौ स तु त्रिषु ॥ कर्बुरे—

शार—चितकबरा—री, चौपड इत्यादिके खेलनेकी गुट्टी, तथा वायु ॥

—ऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदाप- त्सु संगरः ॥ १६६ ॥

संगर—संग्रामका युद्ध, प्रतिज्ञा, सल्लाह तथा आपत्ति वा विपत्ति ॥ १६६ ॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो—

मन्त्र—मन्त्र वा सलाह, एक वेदका भेद, तथा गुप्त वोलना ॥

—मित्रो रवावपि ॥

मित्र—सूर्य, मित्र (दोस्त) तथा अपने समीपके राजासे व्यवहित राजा ॥

मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरु—

स्वरु—इन्द्रका वज्र तथा यज्ञमें खम्भके छीलनेके समय उसमेंसे गिरा पहिला टुकडा ॥

—र्गुह्येऽप्यवस्करः ॥ १६७ ॥

अवस्कर—विष्टा तथा स्त्री वा पुरुषका मूत्रेन्द्रिय (उपस्थ) ॥ १६७ ॥

आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ॥

आडम्बर—तैयारी, वाजेका शब्द, तथा बडे हाथियोंका शब्द ॥

अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च ॥ १६८ ॥

अभिहार—चोराना, कवच इत्यादिका धारण तथा नालिश इत्यादि शत्रुके नाशका उपाय ॥ १६८ ॥

स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोषे परिच्छदे ॥

परीवार—कुटुम्ब, तरवार इत्यादिका म्यान तथा लाव लश्कर ॥

विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥

विष्टर—बैठनेका आसन, वृक्ष, दर्भमुष्टि (एक प्रकारका परिमाण) वा नाप ॥ १६९ ॥

द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ॥

प्रतीहार—प्रतीहारि—द्वार तथा द्वारपाल ॥

विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिंगले त्रिषु ॥ १७० ॥

बभ्रु—पीलेरंगवाली वस्तु, पीलारंग, बडा नौला, विष्णु तथा एक यादव ॥ १७० ॥

सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबे वरे त्रिषु ॥

सार—श्रेष्ठ वा प्रधान, बल, वस्तुका स्थिरभाग, बाहीर, मज्जा व चरबी, पानी धन तथा उचित वा न्यायके अनुसार ॥

दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ॥ १७१ ॥

दुरोदर–जुआरी,दाव(जो द्रव्य जुए-में लगाया जाता है) जुआ ॥१७१॥

महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुंनपुंसकम् ॥

कान्तार–दुर्गम वा टेढा मार्ग, वडा वन एक प्रकारका ऊख ॥

मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिपु ॥१७२ ॥

मत्सर–ईर्ष्या वा डाह करनेवाला-ली, कृपण वा सूम,तथा ईर्ष्या वा डाह १७२॥

देवाद्वृते वरः श्रेष्ठे त्रिपु क्लीबं मनाक्प्रिये ॥

वर–श्रेष्ठ वा प्रधान वा मुख्य, देवताने जो प्रसन्न होकर दिया, दूल्ह वा वर, केशर ॥

वंशांकुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना ॥१७३ ॥

करीर–वासका छकडा, करील वा टेटी वृक्ष, एक प्रकारका काटेदार वृक्ष वा कींकर तथा घटना वा मेल ॥ १७३॥

ना चमूजघने हस्ते सूत्रे प्रतिसरो स्त्रियाम् ॥

प्रतिसर–सेनाका पिछला हिस्सा, तथा मन्त्रतन्त्रका डोरा ॥

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥ १७४ ॥

शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ॥

हरि–यम, वायु, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोडा ॥ १७४ ॥ तोता, साप,वन्दर, मेढक और हरा रङ्ग तथा कपिल रङ्ग और कुछ पीली वस्तु ॥

शर्करा कर्परांशेऽपि–

शर्करा–ठिकडी,ककडी, खांड, रेता तथा वहुत किडियोंकी जमीन ॥

–यात्रा स्याद्यापने गतौ॥१७५॥

यात्रा गमन वा चलना तथा चलाना ॥ १७५ ॥

इरा भूवाक्सुराऽप्सु स्या–

इरा–मद्य, भूमि वाणी तथा जल॥

–तंद्री निद्राप्रमीलयोः ॥

तन्द्री–निद्रा तथा आलस्य ॥

धात्री स्यादुपमाताऽपि क्षितिरप्यामलक्यपि ॥ १७६ ॥

धात्री–माता, आमला, पृथ्वी तथा उपमाता अर्थात् दूध पिलानेवाली धाय ॥ १७६ ॥

क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ॥ त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्र–

क्षुद्र–क्रूर, अधम, अल्प वा थोडा-डी, सूम, मधुमाछी, भटकटैया, हीन अगवाली स्त्री, नटी, वेश्या ॥

-मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥
अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कार्त्स्न्येऽवधारणे ॥

मात्रा-परिच्छद वा सामग्री १७७॥ परिमाण, सूक्ष्म वा पतला, सम्पूर्णता, तथा अवधारण वा निश्चय ॥

आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं-

चित्र-चित्रविचित्र रंगवाला-ली, आश्चर्ययुक्त, कई एक मिश्रितरंग, एक नक्षत्र, मूसाकर्णी औषधी, एक तरहकी ककडी, अद्भुतरस, तसबीर तथा आश्चर्य ॥

-कलत्रं श्रोणिभार्ययोः॥ १७८॥

कलत्र-कमर तथा स्त्री ॥ १७८॥

योग्यभाजनयोः पात्रं-

पात्र-लायक तथा वर्तन ॥

-पत्रं वाहनपक्षयोः ॥

पत्र-सवारी और पंख ॥

निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं-

शास्त्र-आज्ञा और ग्रन्थ ॥

-शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १७९॥

शस्त्र-हथियार और लोहा॥ १७९॥

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं-

नेत्र-जटा और वस्त्र तथा नेत्र ॥

-क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ॥

क्षेत्र-स्त्री तथा शरीर, खेत ॥

मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं-

पोत्र-सूकरके मुखका अग्रभाग तथा हलका अग्रभाग ॥

-गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८०॥

गोत्र-नाम, पृथ्वी, पर्वत तथा कुल ॥ १८० ॥

सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ॥

सत्र-ढकन, यज्ञ, सदादान, (सदावर्त) धन, वन तथा धूर्तता ॥

अजिरं विषये काये-

अजिर-विषय, शरीर, वायु, तथा आँगन ॥

-ऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि॥ १८१॥

अम्बर-आकाश तथा वस्त्र॥ १८१॥

चक्रं राष्ट्रे-

चक्र-राज्य, चकवा पक्षी, समूह, रथका पहिया, कुम्हारका चाक तथा जलका भमर ॥

-ऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि-

अक्षर-मोक्ष, हरफ, ब्रह्म तथा ओंकार ॥

क्षीरमप्सु च ॥

क्षीर-दुग्ध तथा जल ॥

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ-

भूरि-तथा चन्द्र-सुवर्ण और सुंदर॥

-द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥

गोपुर—नगरका द्वार तथा द्वारमात्र ॥ १८२ ॥

गुहादम्भौ गह्वरे द्वे—

गह्वर—गुफा और पाखण्ड ॥

—रहोऽन्तिकमुपह्वरे ॥

उपह्वर—एकान्त तथा समीप ॥

पुरोऽधिकमुपर्यग्रा—

अग्र—पुर अधिक तथा ऊपर ॥

—ण्यगारे नगरे पुरम् ॥१८३॥

मन्दिरं चा—

पुर—मन्दिर—स्थान और नगर ॥१८३॥

—ऽथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ॥

राष्ट्र—देश तथा उपद्रव ॥

दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे—

दर—भय, गड्ढा तथा थोडा वा सूक्ष्म

—वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥ १८४ ॥

वज्र—इन्द्रका वज्र, सेहुंडवृक्ष तथा हीरा.॥ १८४ ॥

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ॥

तंत्र—कुटुम्बका कार्य्य, सिद्धान्त, उत्तम औषध, प्रधान वा मुख्य, जुलाहा, एकप्रकारका शास्त्र, सामग्री, एकप्रकारकी वेदकी शाखा, ऐसा हेतु जो पदार्थोंको सिद्ध करता हो ॥

औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ॥ १८५ ॥

औशीर—चँवरका दण्ड, शयन और आसन। किसीके मतमें यह शब्द पृथक् २ शयन और आसनका वाचक है ॥ १८५

पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले॥ व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः ॥ १८६ ॥

पुष्कर—तलाव, कमल, आकाश, जल, पुष्करमूल, हाथीके सूंडका अग्रभाग, बाजेका मुख ॥ १८६ ॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये ॥ छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च ॥ १८७ ॥

अन्तर—पहरनेके वस्त्रादि, आत्मसम्बन्धी वा अपनी वस्तु, बाह्य वस्तु, अदृश्य वस्तु, अवकाश, अवधि, अदृश्य होना, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, बिना अवसर, मध्य, अन्तरात्मा ॥ १८७ ॥

मुस्तेऽपि पिठरं—

पिठर—मोथा घास तथा मंथनदण्ड वा मथनिया ॥

—राजकशेरुण्यपि नागरम् ॥

नागर—चतुर, नगरवासी, सोंठ तथा नागरमोथा ॥

शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् ॥ १८८ ॥

शार्वर-मारनेवाला-ली, घन वा बडा अहङ्कार ॥ १८८ ॥

गौरोऽरुणे सिते पीते-

गौर-श्वेत वा पीत वा लालरंगवाली वस्तु, श्वेतरंग, पीला रंग, लालरंग, तथा रजोधर्मसे पहिली अवस्थावालीस्त्री॥

-व्रणकार्यप्यरुष्करः ॥

अरुष्कर-घावकरनेवाला-ली, भेलावा॥

जठरः कठिनेऽपि स्या-

जठर-कठोरवस्तु, वृद्ध वा बुड्ढा तथा पेट ॥

दधस्तादपि चाधरः ॥ १८९ ॥

अधर-नीचे, नीचेका ओष्ठ, हीन तथा नीच ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रो-

एकाग्र-एकाग्र वा तत्पर तथा स्वस्थचित्त ॥

व्यग्रो व्यासक्त आकुले ॥

व्यग्र-व्याकुल वा घबडाया-ई, दुश्चित्ता ॥

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरःस्या-

उत्तर-उत्तर देशमे उत्पन्न भया-ई, श्रेष्ठ वा मुख्य, उत्तरदिशा, विराटका पुत्र, ऊपर, विराटकी पुत्री, तथा उत्तर वा जवाब ॥

दनुत्तरः ॥ १९० ॥

एषां विपर्यये श्रेष्ठे-

अनुत्तर-श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ ॥ १९० ॥

दूरानात्मोत्तमाःपराः ॥

पर-पराया-ई (वस्तु) अन्य दूसरा-री, दूर, उत्तम वा श्रेष्ठ, शत्रु केवल तथा अनन्तर ॥

स्वादुप्रियौ तु मधुरौ-

मधुर-स्वादु और प्रिय ॥

-क्रूरौ कठिननिर्दयौ ॥१९१॥

क्रूर-कठिन और दयाहीन ॥ १९१ ॥

उदारो दातृमहतो-

उदार-दाता, बडा, सरल वा सूधा ॥

-रितरस्त्वन्यनीचयोः ॥

इतर-अन्य तथा नीच ॥

मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः-

स्वैर-मन्द वा ढीला-ली तथा स्वच्छंद अपने मनका काम करनेवाला॥

-शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः ॥ १९२ ॥

शुभ्र-श्वेतवर्णकी वस्तु, उद्दीप्त वा प्रकाशमान तथा श्वेतरंग ॥ १९२ ॥

इति रान्ताः ॥

चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ॥

मौलि-मस्तक, चोटी, मुकुट, बंधेहुए बाल ॥

द्रुमप्रभेदमातंगकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥

पीलु—वृक्षभेद, हस्ती, बाण तथा पुष्प ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः काल—

काल—यमराज, मृत्यु तथा समय ॥

—श्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ॥

कलि—चौथायुग, पुष्पकी कली, युद्ध तथा कलह ॥

स्यात्कुरंगेऽपि कमलः—

कमल—हिरन, जल, ताँबा, कमल तथा आकाश ॥

—प्रावारेऽपि च कम्बलः॥१९४ ॥

कंबल—सर्पराज, गौके गलेका सासना तथा कम्बलवस्त्र ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ॥

बलि—महसूल तथा बुढापेमें पुरुषके शरीरपै पडनेवाली सुकडन ॥

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं नाकाकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

बल—मोटाई, सामर्थ्य, सेना, काक पक्षी तथा बलदेव ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ॥

वातूल—आंधी, बावला, तथा वायुको न सहनेवाला ॥

भेद्यलिंगः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

व्याल—सर्प, दगाबाज तथा हिंसक पशु ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापविट्किट्टा—

मल—मैल, पाप तथा विष्ठा ॥

—न्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ॥

शूल—शूलरोग (जो पेटमें होताहै) तथा शूल एक शस्त्र ॥

शंकावपि द्वयोः कीलः—

कील—अग्निकी ज्वाला वा लपट तथा लोहे आदिकी कील ॥

—पालिः स्त्र्यश्र्यंकपंक्तिषु॥ १९७॥

पालि—खड्ग इत्यादिका टोंका 'कोना' धारा, चिह्न तथा पंक्ति ॥ १९७ ॥

कला शिल्पे कालभेदे—

कला—तीस काष्ठा,एकसमय, कारीगरी, मूलधन, वृद्धि, टुकडा तथा चन्द्रका सोलहवाँ भाग ॥

—ऽप्याली सख्यावली अपि ॥

आलि—सखी तथा पंक्ति ॥

अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला काल-मर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥

वेला—समुद्रका तीर,काल वा समय तथा मर्यादा वा हद ॥ १९८ ॥

बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलो-ऽग्नौऽशितौ त्रिषु ॥

बहुल—बहुत, कालेरंगवाला—ली, अग्नि वा आग, कृष्णपक्ष, कालारंग, नेवारीपुष्प, गैया, स्त्री, बडीइलायची, और आकाश।

लीला विलासक्रिययो—

लीला—विलास वा क्रीडा, क्रिया तथा खेलना ॥

—रुपला शर्करापि च ॥ १९९ ॥

उपला—पत्थर, रत्न तथा सिटकी ॥ १९९ ॥

शोणितेऽम्भसि कीलालं—

कीलाल—जल तथा रुधिर ॥

—मूलमाद्ये शिफाभयोः ॥

मूल—जड, पहिला, वृक्षकी जटा तथा आभा और आदिकारण ॥

जालं समूह आनायगवाक्षक्षारकेष्वपि ॥ २०० ॥

जाल—मत्स्यादि पकडनेका जाल, समूह झरोखा तथा न फूली हुई कली ॥ २०० ॥

शीलं स्वभावे सद्वृत्ते—

शील—शुद्धकर्म वा पवित्र काम तथा स्वभाव ॥

—सस्ये हेतुकृते फलम् ॥

फल—वृक्ष इत्यादिका फल, जायफल, ढाल, हलके नीचेका काष्ठ जिसका अग्रभाग लोहेसे बना रहता है, हेतुसिद्ध किया गया बाणका अग्रभाग, त्रिफला, परिणाम तथा लाभ वा नफा ॥

छदिर्नेत्ररुजोः क्लीबं समूहे पटलं न ना ॥ २०१ ॥

पटल—समूह, खपड़ा तथा एक नेत्ररोग ॥ २०१ ॥

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं—

तल—किसी वस्तुके नीचेका भाग तथा स्वरूप ॥

स्याच्चामिषे पलम् ॥

पल—एकदण्ड (२४ मिनट काल) का आठवां हिस्सा, ६४ मासा, मांस, तथा उचाईका नाप ॥

और्वानलेऽपि पातालं—

पाताल—पाताल तथा बडवानल ॥

—चैलं वस्त्रेऽधने त्रिषु ॥ २०२ ॥

चैल—नीच वा अधम तथा वस्त्र ॥ २०२ ॥

कुकूलं शंकुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥

कुकूल—करसीकी आग, कील वा खूटियोंसे भराहुआ गढ्ढा ॥

निर्णीते केवलमिति त्रिलिंगं त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०३ ॥

केवल—निर्णय कियागया, 'एक' संख्या तथा संपूर्ण ॥ २०३ ॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ॥

कुशल—चतुर, सामर्थ्ययुक्त,कल्याण-वाला—ली, सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य तथा कल्याण ॥

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री-

प्रवाल—मूंगा, नया पत्ता, अङ्कुर तथा वीणाका दण्ड ॥

—त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥२०४॥

स्थूल—मोटा—टी, निर्बुद्धि वा बुद्धि-रहित तथा समूह ॥ २०४ ॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे—

कराल—भयकर, ऊचे दॉतवाला-ली तथा ऊँची—चा ॥

—चारौ दक्षे च पेशलः ॥

पेशल—चतुर तथा मनोहर ॥

मूर्खेऽर्भकेऽपि वालः स्या—

वाल—लडका, केश,वाल, मूर्ख तथा नेत्रवाला औषधी ॥

—लोलश्चलसतृष्णयोः ॥ २०५ ॥

लोल—चञ्चल तथा लालची ॥२०५॥

॥ इति लान्ताः ॥

दवदावौ वनारण्यवह्नी—

दव—दाव—वन तथा वनकी आग॥

—जन्महरौ भवौ ॥

भव—संसार, जन्म, शंकर ॥

मन्त्री सहायसचिवौ—

मन्त्रिन्—राजाका मन्त्री वा राजाको सलाह देनेवाला तथा सहायक ॥

-पतिशाखिनरा धवाः ॥ २०६ ॥

धव—स्त्रीका पति एक वृक्ष तथा पुरुप॥ २०६ ॥

अवयः शैलमेषार्का—

अवि—मेंढा, पर्वत, सूर्य तथा रज-स्वला स्त्री ॥

—आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ॥

हव—पुकारना, आज्ञा वा हुक्म तथा यज्ञ वा याग ॥

भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥

भाव—अभिप्राय वा तात्पर्य, विद्वान् वा पंडित, सत्ता वा रहनेवालेका धर्म, स्वभाव, आत्मा, जन्म वा उत्पत्ति, चेष्टा तथा मनका विकार ॥ २०७ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ॥

प्रवस—जनना, उत्पत्ति, फल तथा पुष्प वा फूल ॥

अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावपि निह्नवः ॥ २०८ ॥

निह्नव—अविश्वास, झूंठ बोलना तथा धूर्त्तपन ॥ २०८ ॥

उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह उत्सवः ॥

उत्सव—उत्सव वा मङ्गलकार्य, औद्धत्य वा गर्व वा बडाई कोप, इच्छाका वेग तथा आनन्दका समय ॥

अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥

अनुभाव—प्रभाव सत्पुरुषोंकी बुद्धिका निश्चय ॥ २०९ ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ॥

प्रभव—उत्पत्तिका स्थान, कारण, पराक्रम तथा ज्ञानका प्रथमस्थान ॥

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥ २१० ॥

पारशव—शूद्रकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे हुआ पुत्र तथा शस्त्र ॥ २१० ॥

ध्रुवो भभेदे क्लीवं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ॥

ध्रुव—स्थिर, नक्षत्रविशेष, निश्चय तथा शाश्वत ॥

स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २११ ॥

स्व— जातिके पुरुष, आत्मा अपना तथा धन ॥ २११ ॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च ॥

नीवी—स्त्रीके वस्त्रका बन्धन जो नाभिके समीप बांधा जाता है तथा मूलधन ॥

शिवा गौरीफेरवयोः—

शिवा—पार्वती, सियार, शमीका वृक्ष हर्रे तथा आंवला ॥

—र्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥२१२॥

द्वन्द्व—कलह तथा स्त्री पुरुषका जोडा ॥ २१२ ॥

द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ॥

सत्त्व—द्रव्य, प्राण, अत्यन्त उद्योग, जन्तु, सत्त्वगुण तथा बल ॥

क्लीवं नपुंसके षण्ढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥ २१३ ॥

क्लीव—नपुंसकलिङ्ग, नपुसक पुरुष तथा पराक्रमहीन ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः

—द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ—

विट्—वैश्य, मनुष्य तथा प्रवेश ॥

द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ॥

स्पश—दूत तथा संग्राम ॥

द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ—

राशि—समूह तथा मेषवृषादि राशि ॥

—द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥२१४॥

वंश—कुटुम्ब तथा बांस ॥ २१४ ॥

रहःप्रकाशौ वीकाशौ-
वीकाश-एकान्त तथा प्रकाश ॥

-निर्वेशो भृतिभोगयोः ॥
निर्वेश-नौकरी, भोग तथा मूर्च्छा ॥

कृतान्ते पुंसि कीनाशः-
-क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥
कीनाश-यमराज तथा किसान२१५

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्या-
अपदेश-बहाना, निशाना वा लक्ष्य तथा निमित्त वा हेतु ॥

-त्कुशमप्सु च ॥
कुश-कुश एकतरहकी घास तथा जल ॥

दशाऽवस्थानेकविधा-
दशा-अवस्था (लडकाई जवानी इत्यादि) ॥

-प्याशा तृष्णापि चायता२१६
आशा-बडी तृष्णा तथा दिशा ॥ ॥ २१६ ॥

वशा स्त्री करिणी च स्या-
वशा-स्त्री, बांझ, गाय तथा हथिनी और बेटी ॥

-द्दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ॥
स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१७ ॥
कर्कश-कठोर, दुःस्पर्श, साहसी तथा झगडालू स्त्री और कवीला औषधि ॥ २१७ ॥

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेपि-
प्रकाश-अतिप्रसिद्ध, धूप, उजाला॥

-शिशावज्ञे च बालिशः ॥
बालिश-बालक तथा मूर्ख ॥

॥ इति शान्ताः ॥

सुरमत्स्यावनिमिषौ-
अनिमिष-देवता तथा मत्स्य वा मछली ॥

-पुरुषावात्ममानवौ ॥२१८ ॥
पुरुष-पुरुष वा नर, आत्मा, नागकेशर वृक्ष तथा मनुष्य ॥ २१८ ॥

काकमत्स्यात्खगौ ध्वांक्षौ-
ध्वाङ्क्ष-कौवा तथा मत्स्य पकडनेवाला पक्षी (बगुला) इत्यादि ॥

-कक्षौ तु तृणवीरुधौ ॥
कक्ष-काख वा बगल तथा तृण वा घासकी गजी और लता ॥

अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ-
अभीषु-किरण, डोरी तथा पगहा, लगाम इत्यादि ॥

-प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २१९ ॥
प्रैष-भेजना, मर्दनकरना तथा आज्ञा देना ॥ २१९ ॥

पक्षः सहाये-

पक्ष—पक्षियोंका पंख, वा आधा-महीना, सहाय, वैर, बल, मित्र, घर, शरीरकी अगलबगलकी पँसुली तथा बड़ा हाथी और निकट ॥

–ऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ॥

उष्णीष—पगड़ी तथा किरीट वा मुकुट ।

शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ॥ २२० ॥

वृष—मूसा, जन्तु श्रेष्ठ वा मुख्य, अडूसा एक झाड़, वृषभनामक औषध, बैल, अण्डकोष, धर्म, मेषआदि १२ राशियोंमेंसे दूसरा राशि, सिंगिया (एक विष) तथा एक सुगन्ध चूर्ण ॥ २२० ॥

कोषोऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः ॥

कोष (श)—पुष्पकी कली, तलवारका घर व म्यान, खजाना तथा शपथ (सोगन वा कसम) ॥

द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षो–

आकर्ष—जूआ, गुट्टियोंके रखनेके लिये वस्त्रादिसे बना घर तथा पासा ॥

–ऽथाक्षमिन्द्रिये ॥ २२१ ॥ ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥

अक्ष–इंद्रिय ॥ २२१ ॥ पासा, सोलह मासा, बहेड़ा, सोंचरनोन ॥

कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनि ॥ २२२ ॥

कर्षू—पासा, एकप्रकारकी तोल, पहिया, बहेड़ाफल, व्यवहार, कण्डीकी आग, जीविका तथा नदी ॥ २२२ ॥

पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं–

पौरुष—पोरसाभर गहिरा—री, पौरुष वा पुरुषका धर्म ॥

–विषमप्सु च ॥

विष—विष वा जहर तथा पानी ॥

उपादानेऽप्यामिषं स्या–

आमिष—मांस तथा दूध ॥

द्पराधेऽपि किल्बिषम् २२३॥

किल्बिष—पाप अपराध तथा प्रीति ॥ २२३ ॥

स्याद्वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ॥

वर्ष–वरस वा देवतोंका एक दिन, वृष्टि वा वर्षा, जम्बूद्वीप तथा स्नान ॥

प्रेक्षा नृत्यक्षणं प्रज्ञा–

प्रेक्षा—बुद्धि तथा देखना ॥

–भिक्षा सेवार्थना भृतिः २२४

भिक्षा—भीख, सेवा, प्रार्थना वा मजूरी ॥ २२४ ॥

त्विट् शोभापि–

त्विष्–शोभा तथा वाणी ॥

–त्रिषु परे–

न्यक्ष–अध्यक्ष और रूक्ष यह तीनों शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–न्यक्षं कात्स्न्यॆनिकृष्टयोः ॥

न्यक्ष—निकृष्ट वा नीच तथा संपूर्णता ॥

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो–

अध्यक्ष–प्रत्यक्ष तथा अधिकारी ॥

–रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे ॥२२५॥

रूक्ष–प्रेम रहित रूखा ॥ २२५ ॥

॥ इति षांताः ॥

रविश्वेतच्छदौ हंसौ–

हस–सूर्य और हंसपक्षी ॥

–सूर्यवह्नी विभावसू ॥

विभावसु–सूर्य तथा अग्नि ॥

वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ–

वत्स–बछवा, बचा वा लडका छाती तथा वर्ष वा वरिस ॥

–सारंगाश्च दिवौकसः ॥ २२६ ॥

दिवौकस्–देवता तथा पक्षी ॥२२६॥

शृंगारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ॥

रस–खट्टा मीठा इत्यादि६रस पारा धातु, गन्धरस, शृङ्गार, वीर, करुणा इत्यादि साहित्यके रस, वीर्य वा धातु, प्रीति वा प्रेम, जहर, स्वाद, पतलीवस्तु (जैसा पानी शरबत आदि)

पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ॥ २२७ ॥

अवतस–कर्णफूल वा कानका भूषण तथा शिरपेज ॥ २२७ ॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु ॥

वसु–किरण वा प्रकाश, अग्नि वा आग, कुबेर, गुम्माभाजी, पानी, धन, तथा मणि ॥

विष्णौ च वेधाः–

वेधस्–ब्रह्मा, विष्णु तथा पंडित ॥

–स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥ २२८ ॥

आशिस्–दूसरेके हितका चाहना और सर्पकी दष्ट्रा ॥ २२८ ॥

लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये–

लालसा–प्रार्थना तथा उत्कंठा वा-बडी चाह ॥

–हिंसा चौर्यादिकर्म च ॥

हिंसा–चोरीआदि बुरा कर्म तथा वध करना ॥

प्रसूरश्वापि–

प्रसू–माता तथा घोडी ॥

–भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ॥ २२९ ॥

रोदसी—द्विवचनांत, भूमि तथा आकाश ॥ २२९ ॥

ज्वालाभासौ न पुंस्यर्चि-

अर्चिस्—ज्वाला तथा प्रकाश ॥

-र्ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ॥

ज्योतिस्—ज्योतिर्विद्या, तारा, प्रकाश तथा दृष्टि ॥

पापापराधयोरागः-

आगस्—पाप तथा अपराध ॥

-खगबाल्यादिनोर्वयः ॥ २३० ॥

वयस्—पक्षी और बाल्य आदि अवस्था ॥ २३० ॥

तेजःपुरीषयोर्वर्चो-

वर्चस्—तेज या प्रकाश वा चमक तथा विष्ठा ॥

-महस्तूत्सवतेजसोः ॥

महस्—उत्सव तथा तेज ॥

रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे-

रजस्—धूली व घर, रजोगुण तथा स्त्रीका हर महीनेका रुधिर ॥

-राहौ ध्वान्ते गुणे तमः॥२३१॥

तमस्—अन्धकार, राहुग्रह, तमोगुण, अज्ञान तथा क्रोध ॥ २३१ ॥

छन्दः पद्येऽभिलाषे च-

छन्दस्—पद्य और अभिलाषा तथा वेद॥

-तपः कृच्छ्रादिकर्म च-

तपस्—कृच्छ्रादिव्रत तथा लोकांतर अर्थात् कोई लोक ॥

सहो बलं सहा मार्गो-

सहस्—अगहनमहीना तथा बल वा सामर्थ्य ॥

-नभः खं श्रावणो नभाः॥२३२॥

नभस्—श्रावणमहीना तथा आकाश ३२

ओकः सद्माश्रयश्चौकाः-

ओकस्—आश्रय वा अवलंबन तथा घर।

-पयः क्षीरं पयोऽम्बु च-

पयस्—पानी तथा दूध ॥

ओजो दीप्तौ बले-

ओजस्—बल तथा प्रकाश ॥

-स्रोत इंद्रिये निम्नगारये२३३॥

स्रोतस्—सोत वा आपसे जलका बहना इन्द्रिय तथा नदीका वेग ॥ २३३ ॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रे-

तेजस्—प्रभाव,प्रकाश,वीर्य तथा काम ॥

-प्यतस्त्रिषु ॥

यहांसे आगे सान्त वर्गकी समाप्तिपर्यंत सब शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं॥

विद्वान्विदंश्च-

विद्वान्—पंडित वा जानकार तथा पत्र॥

-वी भत्सो हिंस्रो-

बीभत्स—जिसको देखकर घिन उत्पन्न हो

घात करनेवाला, क्रूर वा कठोर तथा बीभत्स रस ॥

—ऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३४ ॥
वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्—

ज्यायस्—बहुत बुड्ढा—इद्धी तथा अत्यन्त प्रशंसा करनेके योग्य ॥ २३४ ॥

—कनीयांस्तु युवाल्पयोः ॥

कनीयस्—अत्यन्त, जवान अत्यन्त छोटा तथा छोटाभाई ॥

वरीयांस्तूरुवरयोः—

वरीयस्—अत्यन्त बडा तथा अत्यन्त श्रेष्ठ ॥

—साधीयान्साधुवाढयोः ॥ २३५ ॥

साधीयस्—अत्यन्त साधु वा भला—ली तथा अत्यन्त बहुत ॥ २३५ ॥

॥ इति सान्ताः ॥

दलेऽपि बर्ह—

बर्ह—मोरके पंख वा पूछ, पत्ता तथा करोदा वृक्ष ॥

—निर्बन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ॥

ग्रह—सूर्य इत्यादि ९ ग्रह, ग्रहण करना, यज्ञके पात्र, ग्रहण जो सूर्य चन्द्रको लगताहै तथा आग्रह वा हठ ॥

द्वार्यापीडे क्वाथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥ २३६ ॥

निर्व्यूह—खूंटी, शिरोवेष्टन (पगडी सिरपेंच इत्यादि) तथा द्वार और काढा ॥ ॥ २३६ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च ॥

प्रग्राह—प्रग्रह-कैदी जो चोर इत्यादि अपराधीका दण्ड है, पगहा वा पशुबाधने की डोरी, तराजू तथा घोडा इत्यादिकी लगाम ॥

पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ॥ २३७ ॥

परिग्रह—पत्नी वा स्त्री, परिवार, अंगीकार तथा वृक्षादिकी जड और शाप ॥ २३७ ॥

दारेषु च गृहाः—

गृह—पत्नी तथा घर ॥

—श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ॥

आरोह—चढना, श्रेष्ठ स्त्रीका कटि-भाग वा श्रेष्ठ स्त्रीकी कमर तथा वृक्ष-इत्यादिकी ऊँचाई ॥

व्यूहो वृन्दे—

व्यूह—समूह तथा एक प्रकारकी सेनाकी रचना ॥

—ऽप्यहिर्वृत्रो—

अहि—सर्प तथा वृत्रनामा दैत्य ॥

—प्यग्निन्द्वकर्करितमोऽपहाः ॥ २३८ ॥

तमोपह—चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि॥२३८॥

परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे परिबर्हो—

परिबर्ह—राजाका छत्र चमर इत्यादि चिह्न तथा सामग्री ॥

॥ इति हान्ताः ॥

—ऽव्ययाः परे ॥

अब—इसके उपरांत अव्ययोंका वर्णन करते हैं जो कि तीनोंलिंग, सातोंविभक्ति और एकवचन द्विवचन बहुवचनमें समान बने रहते हैं और उनमें कुछ विकार नहीं होता ॥

आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २३९ ॥

आङ्—ईषत्, अभिव्याप्ति, सीमार्थ और धातुके योगार्थमें होता है॥२३९॥

आ—प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्ये—

आ—स्मरण, वाक्यपूरणमें ॥

—ऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ॥

आः—कोपमे पीडामें ॥

पापकुत्सेषदर्थे कु—

कु—पाप, निन्दा तथा थोडे अर्थमे॥

धिङ् निर्भर्त्सननिन्दयोः २४०

धिक्—ग्लानि देना वा धिक्कारना तथा निन्दा ॥ २४० ॥

चान्वाचयसमाहारेतरेतर-समुच्चये ॥

च—अन्वाचय -समाहार, इतरेतर और समुच्चयमें ॥

स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ—

स्वस्ति—आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य और मगलमें ॥

—प्रकर्षे लंघनेप्यति ॥ २४१ ॥

अति—अतिशय, बडाई, प्रकर्ष और लंघन अर्थमें ॥ २४१ ॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च—

स्वित्—प्रश्न वा पूँछना तथा तर्क-करनेमें ॥

—तु स्याद्भेदेऽवधारणे ॥

तु—किन्तु, फेर, पादपूरणमें तथा अव-धारणमे ॥

सकृत्सहैकवारे चा—

सकृत्—साथ वा संग तथा एकवारमें ॥

—प्याराद्दूरसमीपयोः ॥ २४२ ॥

आरात्—दूर तथा समीपमें॥२४२॥

प्रतीच्यां चरमे पश्चा—

पश्चात्—पीछे पिछला तथा पश्चि-मदिशामे ॥

—दुताप्यर्थविकल्पयोः ॥

उत्—समुच्चय और विकल्पमें ॥

पुनः सहार्थयोः शश्व—

शश्वत्—सदा वा सर्वदा तथा निरन्तर वा हरदम और फिरमे ॥

–त्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥२४३॥
साक्षात्–प्रत्यक्ष और तुल्यमे २४३॥
खेदानुकम्पासंतोषविस्मया-
मन्त्रणे वत ॥
वत–खेद, दया, सतोप, आश्चर्य जैसी इच्छा होय वैसा करो ऐसी आज्ञा देन॥
हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यार-
म्भविषादयोः ॥ २४४ ॥
हन्त–हर्ष, दया, वाक्यारंभ तथा विषाद ॥ २४४ ॥
प्रात प्रतिनिधौ वीप्साल-
क्षणादौ प्रयोगतः ॥
प्रति–मुख्यके समान, व्याप्त करनेकी इच्छा, चिह्न तथा विपरीत ॥
इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिस-
माप्तिषु ॥ २४५ ॥
इति–हेतु, प्रकरण प्रकाशआदि तथा समाप्ति ॥ २४५ ॥
प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थे
ऽग्रत इत्यपि ॥
पुरस्तात्–पूर्वदिशा, प्रथम, पूर्वकाल तथा आगे ॥
यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मा-
नेऽवधारणे ॥ २४६ ॥
यावत्–तावत्–संपूर्ण, हद, तोल तथा निश्चय ॥ २४६ ॥

मंगलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्ये-
ष्वथो अथ ॥
अथो–अथ–मगल, अनन्तर, आरम, प्रश्न तथा संपूर्णता ॥
वृथा निरर्थकाविध्यो–
वृथा–निरर्थक, विधिहीन ॥
–र्नानानेकोभयार्थयोः ॥ २४७ ॥
नाना–अनेक, तथा उभयार्थक २४७
नु पृच्छायां विकल्पे च–
नु–प्रश्न, तथा विकल्प ॥
पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥
अनु–पीछे तथा सदृशता ॥
प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयाम-
न्त्रणे ननु ॥ २४८ ॥
ननु–प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, शान्त करना तथा सबोधन ॥ २४८ ॥
गर्हासमुच्चयप्रश्नशंकासंभावना-
स्वपि ॥
अपि–निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शंका, तथा समावना ॥
उपमायां विकल्पे वा–
वा–उपमा तथा विकल्प ॥
–सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २४९ ॥
सामि–आधा तथा निन्दित॥ २४९ ॥
अमा सह समीपे च–
अमा–साथ तथा समीप ॥

-कं वारिणि च मूर्धनि ॥
कम्-जल, तथा मस्तक ॥
इवेत्थमर्थयोरेवं-
एवम्-इवार्थक तथा प्रकारार्थक ॥
-नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ॥ २५० ॥
नूनम्-तर्कना तथा अर्थनिश्चय ॥ ॥ २५० ॥
तूष्णीमर्थे: सुखे जोषं-
जोषम्-चुप होना तथा सुख ॥
-किं पृच्छायां जुगुप्सने ॥
किम्-प्रश्न तथा निन्दा करना ॥
नाम प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥ २५१ ॥
नाम-प्रसिद्धि, संभावना, क्रोध, सुन्दर वेष धारण करना, तथा ललकारना ॥ २५१ ॥
अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ॥
अलम्-अलंकार, परिपूर्णता, सामर्थ्य तथा मना करना ॥
हुं वितर्के परिप्रश्ने-
हुम्-तर्कना करना तथा प्रश्न करना ॥
-समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५२ ॥
समया-समीप तथा मध्य ॥ २५२ ॥
पुनरप्रथमे भेदे-
पुनर्-प्रथमके अनन्तर, तथा भेद।

-निर्निश्चयनिषेधयोः ॥
निर्-निश्चय तथा निषेध ॥
स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५३ ॥
पुरा-प्रबन्ध अर्थात् निरन्तर, प्राचीन, समीप तथा होनेवाला ॥ २५३ ॥
ऊर्य्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ॥
उररी-उरी-उररी-विस्तार तथा अंगीकार करना ॥
स्वर्गे परे च लोके स्व-
स्वर्-स्वर्ग तथा परलोक ॥
-र्वार्तासंभाव्ययोः किल ॥ २५४ ॥
किल-वार्ता, तथा संभावना ॥ २५४ ॥
निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ॥
खलु-निषेध, वाक्यालंकार, जिज्ञासा तथा अनुनय ॥
समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ २५० ॥
अभितः-समीप, दोनों ओर, शीघ्र चारोंओर, तथा संमुख ॥ २५० ॥
नामप्राकाश्ययोः प्रादु-
प्रादुर्-नाम तथा प्रकट ॥
-र्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ॥
मिथस्-परस्पर तथा एकांत ॥

तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे–
तिरस्–अन्तर्धान तथा टेढा ॥
–हा विषादशुगार्तिषु ॥२५६॥
हा–विषाद, शोक तथा पीडा॥२५६॥
अहहेत्यद्भुते खेदे–
अहह–अद्भुत तथा खेद ॥
–हि हेतावयधारणे ॥
हि–हेतु तथा निश्चय ॥
इत्यनेकार्थवर्गविवरणम् ॥ ३ ॥

अथाव्ययवर्गः ४.

चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ॥
बहुत कालवाचक अव्ययशब्द ६॥ चिराय १ चिररात्राय, २ चिरस्य, ३ आदि शब्दसे चिरम्, ४ चिरेण, ५ चिरात्, चिरे ६ ॥

मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः ॥ १ ॥
वारम्वार अर्थवाचक अव्ययशब्द५॥ मुहुः १ पुनःपुनः २ शश्वत् ३ अभीक्ष्णम् ४ असकृत् ५ ॥ १ ॥

स्राग्झटित्यञ्जसाह्नाय द्राङ्मंक्षु सपदि द्रुते ॥
शीघ्रतावाचक अव्ययशब्द ८॥ स्राक् १झटिति२ अजसा ३ अह्नाय ४ द्राक् ५ मंक्षु ६ सपदि ७ द्रुतम् ८॥

बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥
अतिशयवाचक अव्ययशब्द ६ ॥ बलवत् १ सुष्ठु २ किमुत ३ सु ४ अति ५ अतीव ६ ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने ॥
वर्जन वाचक वर्जनेवाले अव्यय शब्द ६ ॥ पृथक् १ विना २ अन्तरेण ३ ऋते ४ हिरुक् ५ नाना ६ ॥

यत्तद्यतस्ततो हेतौ–
कारणवाचक अव्ययशब्द ४॥यत्१ तत् २ यतः ३ ततः ४ ॥
–वसाकल्ये तु चिच्चन ॥ ३ ॥
अपूर्णतावाचक अव्यय शब्द २ ॥ चित् १ चन २ ॥ ३ ॥

कदाचिज्जातु–
किसी कालवाचक अव्यय शब्द २ ॥ कदाचित् १ जातु २ ॥
–सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ॥
साथवाचक अव्यय शब्द५॥साकम् १सार्धम् २ सत्रा ३ समम् ४ सह ५॥

आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं–
अनुकूलतावाचक अव्यय शब्द १॥ प्राध्वम् ॥ १ ॥
–व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥४॥

व्यर्थवाचक अव्यय शब्द २ ॥ वृथा १ मुधा २ ॥ ४ ॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमूत च ॥

विकल्पार्थवाचक अव्यय शब्द ६॥ आहो १ उताहो २ किमुत ३ किम् ४ किमु ५ उत ६ ॥

तु हिं च स्म ह वै पादपूरणे-

श्लोककी पादपूर्णता बतानेवाले अव्यय शब्द ६ ॥ तु १ हि २ च ३ स्म ४ ह ५ वै ६ ॥

-पूजने स्वती ॥ ५ ॥

पूजावाचक अव्यय शब्द २॥सु १ अति २ ॥ ५ ॥

दिवाह्नी-

दिनके अर्थवाचक अव्यय शब्द १॥ दिवा १ ॥

-त्यथ-दोषा च नक्तं च रजनाविति ॥

रात्रिके अर्थवाचक अव्यय शब्द२॥ दोषा १ नक्तम् २ ॥

तिर्यगर्थे साचि तिरोऽ-

टेढे अर्थवाचक अव्यय शब्द २ ॥ साचि १ तिरस् २ ॥

-प्यथ संबोधनार्थकाः ॥ ६ ॥

स्युः प्याट् पाडङ्ग हे है भोः-

सम्बोधनार्थवाचक अव्यय शब्द॥६॥ प्याट् १ पाट् २ अंग ३ हे ४ है ५ भोः ६॥

-समया निकषा हिरुक् ॥

समीपवाचक अव्यय शब्द ३ ॥ समया १ निकषा २ हिरुक् ३ ॥

अतर्किते तु सहसा-

अकस्मात् के अर्थवाचक अव्यय शब्द १ ॥ सहसा १ ॥

-स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७॥

आगेके अर्थवाचक अव्यय शब्द ३॥ पुरः १ पुरतः २ अग्रतः ३ ॥ ७ ॥

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा ॥

देवताओंके हव्य देनेके उपयोगी वाचक अव्यय शब्द ५ ॥ स्वाहा १ श्रौषट् २ वौषट् ३ वषट् ४ स्वधा ५ पितरोंके उपयोगी प्रसिद्ध हैं ॥

किंचिदीषन्मनागल्पे-

अल्पके वाचक अव्यय शब्द ३ ॥ किंचित् १ ईषत् २ मनाक् ॥ ३ ॥

-प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥

जन्मान्तरवाचक अव्यय शब्द २ ॥ प्रेत्य १ अमुत्र २ ॥ ८ ॥

व वा यथा तथेवैवं साम्ये-

समता वाचक अव्यय शब्द६ ॥व१ वा २ यथा ३ तथा ४ इव ५ एवम् ६॥

-ऽहो ही च विस्मये ॥

विस्मयवाचक अव्ययशब्द २॥ अहो १ ही २ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां-

मौनार्थवाचक अव्ययशब्द २॥ तूष्णीम् १ तूष्णीकाम् २ ॥

-सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

तत्कालवाचक अव्ययशब्द २ ॥ सद्यस् १ सपदि २ ॥ ९ ॥

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्दे-

आनन्दवाचक अव्ययशब्द २ ॥ दिष्ट्या १ समुपजोषम् २ ॥

-ऽथान्तरेऽन्तरा ॥

अन्तरेण च मध्ये स्युः-

मध्यवाचक अव्ययशब्द ३ ॥ अन्तरे १ अन्तरा २ अन्तरेण ३ ॥

प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥

हठार्थवाचक अव्ययशब्द १॥ प्रसह्य १ ॥ १० ॥

युक्ते द्वे सांप्रतं स्थाने-

युक्तार्थवाचक अव्ययशब्द २॥ सांप्रतम् १ स्थाने २ ॥

-ऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ॥

निरंतरवाचक अव्ययशब्द २॥ अभीक्ष्णम् १ शश्वत् २ ॥

अभावे नह्य नो नापि-

अभाववाचक अव्ययशब्द ४॥ नहि १ अ २ नो ३ न ४ ॥

-मास्म मालं च वारणे ॥ ११ ॥

निषेधवाचक अव्ययशब्द ३ ॥ मास्म १ मा २ अलम् ३ ॥ ११ ॥

पक्षान्तरे चेद्यदि च-

पक्षान्तरवाचक अव्ययशब्द २ ॥ चेत् १ यदि २ ॥

-तत्त्वे त्वद्धाञ्जसा द्वयम् ॥

तत्त्वार्थवाचक अव्ययशब्द २ ॥ अद्धा १ अंजसा २ ॥

प्राकाश्ये प्रादुराविः स्या-

प्रकटवाचक अव्ययशब्द २ ॥ प्रादुस् १ आविस् २ ॥

-दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

अङ्गीकारवाचक अव्ययशब्द ३ ॥ ओम् १ एवम् २ परमम् ३॥ १२॥

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ॥

सबओरवाचक अव्ययशब्द ४ ॥ समन्ततः १ परितः २ सर्वतः ३ विष्वक् ४ ॥

अकामानुमतौ काम-

विनाइच्छाके सलाहदेनेमे १ ॥ कामम् १ ॥

—मसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३॥
ईर्षापूर्वक अङ्गीकारवाचक १ ॥ अस्तु १ ॥ १३ ॥

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ—
विरुद्धउक्तिवाचक १ ॥ ननु १ ॥

—कच्चित्कामप्रवेदने ॥
इच्छित प्रश्नवाचक १॥ कच्चित्१॥

निःषमं दुःषमं गर्ह्ये—
निन्दितवाचक २॥ निःषमम् १ दुःषमम् २ ॥

—यथास्वं तु यथायथम्॥ १४॥
यथायोग्यवाचक २ ॥ यथास्वम् १ यथायथम् २ ॥ १४ ॥

मृषा मिथ्या च वितथे—
मिथ्यावाचक २॥ मृषा १ मिथ्या २॥

—यथार्थं तु यथातथम् ॥
सत्यवाचक २ ॥ यथार्थम् १ यथातथम् २ ॥

—स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥
निश्चयवाचक ५ ॥ एवम् १ तु २ पुनर् ३ वै ४ वा ५ ॥ १५ ॥

प्रागतीतार्थकं—
भूतकालवाचक १ ॥ प्राक् १ ॥

—नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ॥
अवश्यवाचक २ ॥ नूनम् १ अवश्यम् २ ॥

संवद्वर्षे—
वर्षवाचक १ ॥ संवत् १ ॥

—ऽवरे त्ववर्ा—
प्रथमवाचक १ ॥ अर्वाक् १ ॥

—गामेवं—
निश्चित अंगीकारवाचक २॥ आम् १ एवम् २ ॥

—स्वयमात्मना ॥ १६ ॥
आत्मवाचक १ ॥ स्वयम् १॥१६॥

अल्पे नीचै—
अल्पवाचक अव्ययशब्द १॥नीचैस्१॥

—र्महत्युच्चैः—
ऊंचावाचक १ ॥ उच्चैस् १ ॥

—प्रायो भू—
बाहुल्य (अकसर) वाचक १ ॥ प्रायः १ ॥

—म्न्यद्रुते शनैः ॥
मन्दवाचक अव्ययशब्द १॥शनैस्१॥

सना नित्ये—
नित्यवाचक १ ॥ सना १ ॥

—बहिर्बाह्ये—
बाहरवाचक १ ॥ बहिस् १ ॥

—स्मातीते—
भूतकालवाचक १ ॥ स्म १ ॥

—ऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥
अदर्शनवाचक १॥ अस्तम् १॥ १७॥

अस्ति सत्त्वे-

भावार्थक अव्यय १ ॥ अस्ति १ ॥

-रुषोक्तावु-

कोपवचनवाचक १ ॥ उ १ ॥

-ऊं प्रश्ने-

प्रश्नवाचक १ ॥ ऊम् ॥ १ ॥

-अनुनये त्वयि ॥

शान्तकरनेमें १ ॥ अयि १ ॥

हुं तर्के स्या-

तर्कवाचक १ ॥ हुन् १ ॥

-दुपा रात्रेरवसाने-

प्रातः कालवाचक १ ॥ उषस् १ ॥

-नमो नतौ ॥ १८ ॥

नमस्कारवाचक अव्ययशब्द १ ॥ नमस् १ ॥ १८ ॥

पुनरर्थेऽङ्ग-

पुनर्वाचक १ ॥ अङ्ग १ ॥

-निन्दायां दुष्ठु-

निन्दावाचक १ ॥ दुष्ठु १ ॥

-सुष्ठु प्रशंसने ॥

प्रशंसावाचक १ ॥ सुष्ठु १ ॥

सायं साये-

सायकालवाचक १ ॥ सायम् १ ॥

-प्रगे प्रातः-

प्रातःकालवाचक २ ॥ प्रगे १ ॥ प्रातर् १ ॥

-प्रभातेनिकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥

समीपवाचक १ ॥ निकषा १॥१९ ॥

परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे याते ॥

गतवर्षवाचक १ ॥ परुत् १॥गतवर्षसे पहले वर्षका वाचक अव्यय १ ॥ परारि १॥वर्त्तमानवर्षवाचक अव्यय१॥ ऐषमस् १ ॥

अद्यात्रा-

इस दिनका वाचक अव्यय १ ॥ अद्य १ ॥

ह्यथ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापराद् ॥ २० ॥ तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ॥

'प्रथम दिन' इत्यादि अर्थमें पूर्वआदि शब्दसे "एद्युस्" प्रत्यय होकर पूर्व दिनका वाचक 'पूर्वेद्युः' उत्तर दिनका वाचक 'उत्तरेद्युः' परदिनका वाचक 'परेद्युः' इत्यादि शब्द बनते हैं. जैसे 'अधरेद्युः' अन्येद्युः, अन्यतरेद्युः, इतरेद्युः' ॥२०॥

उभयद्युश्चोभयेद्युः-

दोनों दिनके वाचक अव्यय २ ॥ उभयद्युः १ उभयेद्युः २ ॥

-परे त्वह्नि परेद्यवि ॥ २१ ॥

परदिनका वाचक१॥परेद्यवि १॥ २१ ॥

ह्यो गते-

व्यतीतदिनका वाचक अव्यय शब्द १ ॥ ह्यस् १ ॥

—ऽनागतेह्नि श्वः—

कलदिनका १ ॥ श्वस् १ ॥

—परश्वस्तु परेऽहनि ॥

आनेवाले परसोंदिनका वाचक १॥ परश्वः १ ॥

तदा तदानीं—

तिसकालके वाचक अव्यय २ ॥ तदा १ तदानीम् २॥

—युगपदेकदा—

एकसमयके वाचक अव्यय२॥युगपत् १ एकदा २ ॥

—सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

सदाकालवाचक अव्यय२॥सर्वदा १ सदा २ ॥ २२ ॥

एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा ॥

'इसी समय' इस अर्थके वाचक अव्यय शब्द ५ एतर्हि १ सम्प्रति २ इदानीम् ३ अधुना ४ सांप्रतम् ५ ॥

दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

पूर्वदिशा पूर्वदेश और पूर्वकालमें "प्राक्" शब्दहै। उत्तर दिशा उत्तरदेश और उत्तरकालवाचक अव्ययशब्द" 'उदक्' पश्चिमदिशा पश्चिम देश और पश्चिमकालका वाचक अव्यय शब्द 'प्रत्यक्' इत्यादि ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ५.

सलिंगशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ॥ अनुक्तैः संग्रहे लिंगसंकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

पाणिनि के कहेहुए लिङ्गानुशासनसहित(अर्थात् उनके अनुसार)सन आदि प्रत्ययोंसे उत्पन्न चिकीर्षा आदि शब्दोंसे कृदन्तसे उत्पन्न श्वपाक आदिको तद्धित प्रत्यय अण् आदिसे उत्पन्न, "समासजैः" अदन्तोत्तर पदो द्विगुःइस आदिसे और बाहुल्यसे पहिले अनुक्त शब्दोंसे संग्रह किये जाते हैं, यहां वर्गसंग्रहमें लिङ्गका ज्ञान किस प्रकार करें इस पर कहते हैं, संकीर्णवत्' यह जैसे, संकीर्णवर्गमें प्रकृति आदिसेजाने जाते हैं,इसी प्रकार यहां भी जानने, तिनमे प्रकृत्यर्थसे जैसे 'अर्द्धर्चाः पुंसि च' यहां प्रत्ययार्थसे जैसे'स्त्रियां क्तिन्' 'प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः' इस आद्यशब्दसे क्रियाविशेषणोंको नपुंसकत्व और एकवचनत्व होता है, जैसे, शोभनं पचति इत्यादि ॥ १ ॥

लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ॥

सन्नादि-- कृत्-तद्धित-समाससे उत्पन्न विषय पूर्वोक्तशब्दके लिंगसे अन्यलिंगहोना लिंगशेषहै, उसका विधिउत्सर्ग होनेसे काण्डत्रयका व्यापक है, जो पूर्वोक्त और यहाके कहे विशेषविधियोंसे बाधित न होवे, तभी व्यापक होता हैं क्योंकि अपवादविषय छोडकर उत्सर्ग सर्वत्र प्रवृत्त होता है इस कहनेसे लिंगविशेषविधिको जोउत्सर्गभूतका स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद है, तिनमें पहिलेके कहेहुए विशेषोंको फिर कहनेके दोष और विस्तारके डरसे फिर यहां विधान नहीं है, स्वर्गपर्याय यहां पुँल्लिग कहेंगे उसका "द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्" यह पूर्वोक्त अपवाद है और नीप्रभृतिकोंके तो 'कृतः कर्तरि' इत्यादिसे कहेंगे, यद्यपि पहिले लिंग कहा है, तथापि अप्राप्तके प्रापणार्थकतासे लिंगानुशासन यहांभी प्रधान ही है ॥

स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

'स्त्रियाम्' यहां अधिकार 'मसी' [श्लो० १०के]शब्दपर्यन्त जानना चाहिये 'ईदूतौ' ईकार और ऊकार 'विराम' अर्थात् अवसानस्थ है जिनके वे ईदूद्विराम हैं वे और एकाच् ये दोनों ईदूद्विरामैकाच् हैं, ईदन्त ऊदन्त वा जो एकस्वर शब्दस्वरूप हैं वे स्त्रीलिंग हैं यह अर्थ है, जैसे, धीः, श्रीः, भ्रूः, भूः, नयतीति नीः, इन आदिमें 'कृतः कर्तरि' इसके बाध होनेसे वाच्यलिंगत्व है, योनिः मगहै इसके सहित प्राणियोंके नाम 'स्त्रियाम्'स्त्रीलिंग हैं जैसे माता-दुहिता-धेनु-आदि दार शब्द आदिसे तो'दाराः पुम्भूम्नीति'यह बाधक पहिले कहचुकेहैं, कलत्रं और गृह शब्दको 'कलत्र श्रोणिभार्ययोः' यहाका क्लीब पाठ बाधक है, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचार करलेना चाहिये ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम् ॥

विद्युत् आदि ह्रीशब्द पर्यन्त ८ आठ शब्दोंके जो नाम अर्थात् संज्ञा हैं, वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे,-विद्युत्,-तडित्, निशा,-रात्रिः, रजनि, वल्ली,-व्रततिः, वीरुध्, वीणा,-विपञ्ची इत्यादि ॥

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो-

अकारान्त आदि शब्दोंसे जो एकार्थ द्विगुसमास है, वह स्त्रीलिंग है, जैसे 'पंचानां मूलानां समाहारः पंचमूली' इसी प्रकार त्रिलोकी षडध्यायी इत्यादि॥

—न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

च पुनः पात्र, युग आदि उत्तरपद अदन्तशब्दोंके साथ एकार्थ द्विगु समासको स्त्रीलिंगत्व नहीं है जैसे पंचपात्रं, चतुर्युगं, त्रिभुवनम् ॥ ३ ॥

तल् वृन्दे येनिकट्यचत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् ॥ स्त्रीभावादावनिक्तिण्वुल्णच्ण्वुच्क्यब्युजिञङ्निशाः ॥ ४ ॥ उणादिषु निरूरीश्चङ्याबङन्तं चलं स्थिरम् ॥

भाव आदि अर्थमें विहित तल् प्रत्यय स्त्रीलिंगमें होता है तथा भाव अर्थमें जैसे शुक्लता, कर्म अर्थमें ब्राह्मणता, समूह अर्थमें ग्रामता, स्वार्थमें देवता, वृन्दे समूह अर्थमें य—इनि—कटयच्—त्र—ये ४ चार प्रत्यय स्त्रीलिंगमें होते हैं. जैसे'पाशादिभ्यो यः' पाशानां समूहः पाश्या, वात्या, 'खलादिभ्यः इनिः' खलिनी, पद्मिनी, 'रथादिभ्यः कटयच्' रथकटया, इसी रीतिसे गोत्रा, वैर मैथुन आदि अर्थमें जो वुन् प्रत्यय है सो स्त्रीलिंगहै, तिनमें वैर विरोधार्थमें जैसे, अश्वमहिषिका अश्व और महिषीका यह वैर है, इस भांति काकोलूकिका, मैथुनिक अर्थमें जैसे, अत्रिभरद्वाजिका अत्रिभरद्वाजिकी, यह मैथुनिक विवाहरूपसम्बन्ध, इसी प्रकार 'कुत्सश्च कुशिकाच तयोर्मैथुनिका कुत्सकुशिकिका' वुन् ग्रहण वुञ्-वुण्-वा-वुच्-अक्-इक आदिका उपलक्षण है, जैसे काशिका गार्गिकया श्लाघते, कहीं वु भी पाठहै, आदिपदसे वीप्सा आदिमें वुन्का ग्रहणहै.

'स्त्रियां भावादिः स्त्रीभावादिस्तस्मिन्' स्त्रियाम् इसका अधिकार कर, भाव आदि अर्थमे जो विहित प्रत्यय अनि—क्तिन्—(ति) आदि हैं वे स्त्रीलिंग अर्थमें होते हैं, अनि, जैसे 'आक्रोशे नञ्यनिः' इस सूत्रमें, 'अनि' प्रत्यय होनेसे 'अकरणिः' 'अजीवनिः,' 'क्तिन्' से स्मृतिः, कृतिः, गतिः, 'ण्वुल्' से, जीविका, प्रच्छर्दिका, प्रवाहिका, आसिका, 'णच्' से व्यावक्रोशी, स्वार्थिका, द्राक्षा, 'ण्वुच्' से शायिका इक्षुभक्षिका, 'क्यप्'से ब्रह्महत्या, व्रज्या इज्या, 'स्त्री भावादौ'क्यों कहा'भृत्योयं,ब्रह्मभूय,'यहां दोष आवेगा, 'युच्'से कारणा, आसना, मंडना, 'इञ्'से 'वापिः वासिः' कांकारिमकार्षीः, 'इञ्' यह इण्इक्का उपलक्षणार्थक है जैसे, आजिः; कृषिः, 'अ' से पचा, त्रपा, भिदा 'नि'से ग्लानिः, म्लानिः, हानिः, 'श' प्रत्यय से क्रिया, इच्छा ॥ ४ ॥ उणादिकोंमें 'निः—ऊः—ईः'—ये ३ तीन प्रत्यय स्त्री

लिंगमें हैं, तिनमें 'नि' प्रत्ययान्तसे, श्रेणिः श्रोणिः, द्रोणिः, 'उणादिष्वनिः' इस पाठमें, अनिः, जैसे अवनिः, धरणिः, धमनिः, सरणिः, 'ऊदन्त' जैसे, चमूः, कर्पूः, ईदन्त जैसे, 'तन्त्रीः' तरीः, लक्ष्मीः, ङयन्तम् आबन्तम्, (ङी आप् वा आङ्) ऊङन्त और जो 'चलं' जंगम हैं, वा जो 'स्थिरं' स्थावर हैं वे स्त्रीलिंग हैं, जंगम जैसे, नारी शिवा, ब्रह्मबधूः। स्थावर जैसे, कदली, नाला, कर्कन्धूः ॥

तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवाणादिक् ॥ ५ ॥

"तत् क्रीडायां" यहांके तत् शब्दसे यहां मौष्टयादिकका निर्देश है, तिससे यह अर्थ है, वह मुष्टयादिक प्रहरण अर्थात् मारना जो क्रीडा वा खेलमें होय तोउस अर्थमें विहित 'ण' प्रत्यय स्त्रीलिंगमें है 'दिक्' इस शब्दसे उक्तोदाहरणकी अभिलाषा है, जिससे दाण्डा, मौसला, ये उदा हरणके योग्य हैं, मुष्टिसे प्रहार करना जिस क्रीडामें है उसे "मौष्टा वा माष्टया" और पल्लव हाथ वा पत्तेसे मारना जिस क्रीडामें है उसे "पाल्लवा" कहतेहैं ५॥

घञो ञः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी ॥ श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥

वह घञन्तवाच्य दण्डपात आदिके आदि क्रिया इस फाल्गुनी आदिके अर्थमें घञन्तसे विहित जो ञ प्रत्यय है सो स्त्रीलिंगहीमें है, उदाहरण 'दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां दाण्डपाता फाल्गुनी' इसीप्रकार 'श्येनपातोऽस्यां, श्येनंपाता मृगया' 'तिलपातोऽस्यां स्वधा क्रियायां तैलंपाता' इति शब्दसे 'मुसलपातोऽस्यां मौसलपाता भूमिः' ये इत्यादि सिद्ध होतेहैं दिक्शब्दसे किसी देशमें फाल्गुन महीनेकी पूर्णिमाको दण्डसे वा लाठीसे क्रीडा होती है इस लिये 'दाण्डपाता' आदि उदाहरण भी होते हैं ॥ ६ ॥

स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि ॥

यदि 'अपचये' अर्थात् अल्पत्वके कहनेकी इच्छा होय तो मृणाली, आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं जैसे 'अल्पं मृणालमृणाली' आदि शब्दसे जैसे, 'ह्रस्वो वंशो वंशी' गौरादि मानकर ङीप् प्रत्यय होता है, इसी भांति कुम्भी–प्रणाली–छत्री–पटी–मठी–आदि ये भी हैं, 'ह्रस्वार्थे कन् प्रत्ययः स्त्रियां' जैसे पेटिका, 'काचित्' यह क्यों कहा यहां दोष पडताहै जैसे, 'अल्पो वृक्षो वृक्षकः' इत्यादि स्त्रीलिंग नहीं हैं ॥

लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

अब व्यावृदन्तं इत्यादिसे कहे लिंग-वालोंमेंसे किसी शब्दके सुखसे लिंगज्ञान के हेतु; भिन्न कान्तादि क्रमसे कहते हैं १ लंका राक्षसपुरी, २ शेफालिका फूलका भेद वा वृक्षभेद-(निर्गुंडी-निरसा यह प्रसिद्ध) है ३ टीका-कठिन पदकी व्याख्या-४ धातकी-वृक्षभेद-(आंवरा यह प्रसिद्ध है,) ५ पंजिका (निःशेप पदकी व्याख्या) ६ आढकी-तुरई प्रसिद्ध है ॥ ७ ॥

सिध्रका सारिका हिक्का
प्राचिकोल्का पिपीलिका ॥
तिन्दुकी कणिका भाङ्गिः
सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

१ सिध्रका वृक्षभेद, २ सारिका पक्षीभेद-वा मयना, ३ हिक्का स्वरभेद वा हिचकी, ४ प्राचिका पाचिका भी वनकी मक्खी वा' पक्षिभेद' इति स्वामी ५ उल्का तेजका समूह, ६ पिपीलिका कीडेका भेद-(चीटी-वा चीटा भी) 'शनैर्याः-तीति पिपीलिकः' यह स्वामीके मतसे पुँल्लिंगभी है, ७ तिन्दुकी वृक्षभेद वा(तेन्दुआ यह प्रसिद्ध है),८ 'कणिका' परमाणु, ९'भंगिः' कुटिलताका, भेद वा टेढाई,१० 'सुरंगा' बिल वा 'सुरंग' यह प्रसिद्ध है, ११ सूचिः, सूई-वा व्याधनी, १२'माढिः' पत्तेकी सिरा॥८॥

पिच्छावितण्डाकाकिण्य-
श्चूर्णिः शाणीद्रुणीदरत् ॥
सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी
नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥

१ 'पिच्छा' शेमर यह प्रसिद्ध है २ 'वितण्डा' वादभेद, ३ 'काकिण्यः वा काकिणी' पणका चौथा भाग वा कौडी, ४ 'चूर्णिः वा चूर्णी, चूर्णिका, शाणी शण' पटविशेष है 'द्रूणी' कर्णजलौका वा कछही दरत् म्लेच्छजातिः॥१सातिः दान और अवसानको कहते हैं२ 'कन्था' प्रावरणान्तर-वा दुसरा बिछौना३ 'आसन्दी' आसनका भेद-वा बेंतका आसन वा कुर्सी, ४ 'नाभी वा नाभिः' शरीरिका अंगविशेष-वा टोंडी,५राजसभा, राज्ञां सभा राजोंकी सभा वा' कचहरी यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

झल्लरी चर्चरी पारी होरा
लट्वा च सिध्मला ॥ लाक्षा
लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी
चमसी मर्सी ॥ १० ॥

१ 'झल्लरी' बाजाका भेद-वा झालर यह प्रसिद्ध है २ 'चर्चरी' करशब्द-वा हाथका शब्द-वा हर्षक्रीडा, कईएक बाजे पढते हैं, 'कर्कटी' छोटा घडा, ३'पारी वा वारी' हाथीके पावकी रस्सी,

४ 'होरा' लग्नका आधा वा लग्न, ५ 'लट्वा' ग्रामचटकः, चिडा वा चिडी (वा गवैया) ६ 'सिघ्मला' मत्स्यविकार, ७ 'लाक्षा जतु'--वा लाख--लाह प्रसिद्ध है. ८ 'लिक्षा यूकांड'--अर्थात् लीख प्रसिद्ध वा परिमाणभेद, ९ 'गडूया' जल आदिसे मुखपूर्ण कुल्ला प्रसिद्ध है, १० 'गृध्रसी' वातरोग भेद, यह ऊरुकी संधिमे होता है ११ 'चमर्सा' यज्ञपात्रभेद १२ 'मर्सी' और भी पु--'मसिः' 'कज्जल'॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गसग्रहः ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ॥ स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥ ११ ॥

अब पुॅल्लिग सग्रह करते हैं, 'पुंस्त्वे' इसका [श्लोक०२१के] 'पतद्ग्रह' शब्द-पर्यन्त अधिकार है, भेदाः 'तुषितसाध्य-आदि' 'अनुचराः' सुनन्द आदि-इनके सहित सुर--असुर--देव--और दैत्यके यह पर्यायके पुॅल्लिग हैं, सुरपर्याय जैसे--अमरा निर्जरा देवा मरुतः इत्यादयः इनके भेद जैसे, 'तुषिताः--साध्याः' 'इन्द्रो मरुत्वान्मघवा--सूरः--सूर्यः--अर्य्यमा-हाहा-हूहूः तुम्बुरुः इत्यादि, 'अनुचराः' जैसे विष्णुके अनुचर, जय--विजय--प्रभृति रुद्रके अनुचर, नन्दिकेश्वर आदि, इसी प्रकार--असुरपर्याय दैत्यदानव इत्यादि-इनके भेद-बलि नमुचि आदि, असुरके अनुचर कूष्माण्ड-मुण्ड--आदि, इस भांति सब स्थानमें जानना, इनकेभी 'दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' आदि बाधकको स्मरण करावेंगे 'अत्राधिताः' इस वक्ष्यमाणसे स्वर्ग आदि १९ अपने भेद और पर्यायके सहित पुॅल्लिग हैं, १ स्वर्गपर्याय जैसे, 'स्वर्ग--नाक, त्रिदिव' इत्यादिक 'द्योदिवौ द्वे स्त्रिया, क्लीबे त्रिविष्टपम्' यह बडा बलवान् बाधक है इसके बिना पुॅल्लिग हैं, २ 'यागो यज्ञः' वा 'मखः क्रतु.' इनके भेद--अग्निष्टोम--वाजपेय आदि इनको बाधकत्व कहेंगे ३ अद्रिः गिरिः वा पर्वत, इनके भेद-जैसे मेरु सह्याद्रि-आदि इनके मध्यमें अपवाद है सो शैलवर्गमें कहचुके हैं, ४ 'मेघः' घन वा बादल ये इत्यादि पर्याय हैं, भेद आवर्त आदि--'अभ्रस्य तु अभ्रं मेघः' यह क्लीब पाठ बाधक है, ५ अब्धिः समुद्रका पर्यायभेद क्षीरोद आदि, ६ द्रुः वृक्षः शाखी आदि पर्याय और वट पीपल आदि भेद हैं, यहांभी कहीं रूपभेद आदिसे 'पाटला, शिशपा' आदिमें अपवाद कहा है ७ 'कालः दिष्टः समयः' इस प्रकार पर्याय है और मास आदि भेद है ८

असिःखड्गः—नन्दक आदि भेद,(इत्यादौ बाधः) ९ 'शरः वाणभेद नाराच आदि, —इषुधिर्द्वयोरिति विशेषो दर्शितः' १० 'अरिः'शत्रुभेद आततायी आदि ।११।

करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ॥ अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

१ 'करः' राजग्रहणके योग्य भाग, ,रश्मिः' और'पाणि.''दीधितिः'९ आदिको तो पुंस्त्व बाधित है, २ 'गण्डः' कपोल वा गाल, 'ओष्ठः' वा दंतच्छद, दशनवसन आदि तो रूपभेदसे बाधित हैं, ३ 'दोः' प्रवेष्टः 'भुजबाहोस्तु द्वयो' रिति विशेषः' दंतः दण्डः भेदः जभः, 'कंठः गळः' 'समीपगलभेदेषु कण्ठं त्रिषु त्रिदुर्बुधाः' इति शाश्वतः'केशःकचः वः बार, (बाल,)'नखः' कररुहःनखोऽस्त्री इत्यादिना बाधितं 'स्तनः' कुचःये सर्व यथा—सम्भव सभेद और पर्य्याय पुँल्लिग हैं, १'अह्नः'अहश्च ये हैं अन्तमें जिनके वे पुँल्लिग हैं, जैसे 'अह्नः' पूर्वं पूर्वाह्णः, अह्नः परं पराह्णः,द्वेअहनी समाहृते द्व्यह्नः २क्ष्वेडभेदाःविष विशेष पुंस्त्व है जैसे सौराष्ट्रिकः, यहां गरलं 'विषं,'पुंसि और क्लीबमें कांकोल हैं इत्यादिसे बाधितहै३' रात्रान्ताःयह समासान्तके एकदेशका अनुकरण है,इसी प्रकार आगेभी 'रात्र' शब्द है अन्तमें जिनके वे जो प्राक् असंख्यावाचक शब्द हों तो पुंसि है, जैसे अहश्च रात्रिश्चाहोरात्रः सर्वरात्रः पूर्वरात्रः वर्षारात्रः अपररात्रः प्राक् असंख्यका यह क्यों कहा पंचरात्रं,गणरात्रं इनमें दोष होगा, पुण्यरात्रको अर्धर्चादि पाठसे'क्लीबत्वभी है ॥ १२ ॥

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ॥ कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

१ 'श्रीवेष्ट' आदि ये निर्यास हैं अर्थात् द्रव वा गोन्द—वा सारवाचक हैं, वे पुँल्लिग हैं श्रीवेष्टः,'सरल' वा धूपकाष्ठ'श्रीपिष्टः' भी कहीं पाठ है, आद्यशब्दसे श्रीवास, वृकधूप आदि,'च शब्दसे गुग्गुल आदि, २'असन्त, अन्नन्त' पुँल्लिग हैं. असंत जैसे, अंगिराः, वेधाः—'चन्द्रमाः' अन्नन्त जैसे 'कृष्णवर्त्मा मघवा' आदि 'अबाधिता' क्यों कहा अप्सरसः,जलौकसः, सुमनसः, इमं वयः, इदं ओम, 'तुश्चरुश्च तुरू' ये दोनों विराम अर्थात् अंतमें हैं जिनके वे तुरुविरामकाःकहलाते हैं, कशेरु 'जतु—वस्तु, इनको छोडकर

'तु' शब्दान्त और 'रु' शब्दान्त पुँलिङ्ग हैं, जैसे हेतुः सेतुः—धातुः मन्तुः—तन्तुः इत्यादि—कुरुः—मेरुः-किशारुः—इत्यादि, कशेरु आदि उपलक्षण हैं, दारु, श्मश्रु प्रभृतिका तिनमें कशेरुः अस्थिविशेष वा तृणविशेष, जतु लाक्षा वा लाही ॥ १३॥

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ ॥ पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥

क—प—ण आदि६ वर्ण उपान्तेअन्त्य के समीपमें हैं जिनके वे तैसे यदि ये क आदि वर्णषट्क उपान्त अदन्त हों तो पुलिंग में होते हैं जैसे अकः, लोकः, स्फटिकः, शुल्क—वल्क आदि तो पहिले ही बाधित हैं और शेष माष प्लक्ष आदि षोपान्त हैं वर्षा आदि शब्द तो पहिले ही बाधित हैं पाषाण गुण किरण आदि णोपान्त शब्द, विषाण आदि से बाधित हैं,कौस्तुभ—दर्भ—शलभ—आदि भोपान्त हैं, कुसुम्भ आदिसे बाधित हैं होम ग्राम व्यायाम—गुल्म, आदि मोपान्त, 'पद्मादे-र्वा पुंसि' इत्यादि से बाधित हैं, झर्झर सीकर—सार—प्रभृति रोपान्त हैं अजिर आदिक बाधित हैं,रादिवर्ण षट्क उपान्त शब्द अबाधित हैं तौ पुलिंग हैं यहां 'यद्यदन्ता' इस पूर्वोक्तका सम्बन्ध नहीं है अथादित्वसे पकारोपान्त जैसे यूपः वाष्प—कलाप आदि बाधित हैं थकारो-पान्त—वेपथु-रोमन्थ—आदि नोपान्त-इन घन—भानु—आदि—वनादि तो बाधित है योपान्त आय—व्यय—जायु—तन्तुवाय आदि,मृगया आदि तौ बाधित हैं, सोपा-न्त रस—हास—आदि,बिस आदि बाधित हैं टोपान्त घट—पट—आदि, किरीट आदिको बाधितत्व कहा है, गोत्र वशमें आख्या सञ्ज्ञा हैं जिनकी वे गोत्राख्य ऋषिसञ्ज्ञक हैं गोत्रके आदि पुरुष ये ये प्रवराध्यायमें पढे हैं और ये अन्य अपत्यप्रत्ययके विना गोत्र वाचित्वसे लोकमे प्रसिद्ध हैं वे पुँलिंग हैं जैसे भर-द्वाजः गोत्रमस्माकम्, इसप्रकार कश्यप वत्स प्रभृति, चरणके और वेदशाखा की नामवाली सञ्ज्ञा पुँल्लिंग हैं, जैसे कठ, बह्वृचः इत्यादि ॥ १४ ॥

नाम्न्यकर्तरि भावे च घञजबन्ङणघाथुचः ॥ ल्युः कर्तरीमनिज्भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

नाम संज्ञामे और अकर्तरि च कारके भावमात्रमेभी विहित घञ् आदि सात प्रत्ययान्त पुँल्लिंग हैं, भावे च इस चकारसे असंख्यामेंभी घञ् गृहीत है

घञन्त जैसे, 'प्रासीदन्ति मनांस्यस्मिन् प्रासादः, प्रास्यते इति प्रासः, विदंति अनेन वेदः, प्रपतति अस्मादिति प्रपातः' भावमें जैसे, 'पाकः त्यागः' अच् जैसे 'जयः' चयः, नयः, अप् जैसे, करः, गरः, लवः, प्लवः, नङ् जैसे 'यज्ञः प्रश्नः याच्ञा' यहां पुंस्त्व बाधित है, नङ् उपलक्षण है, 'स्वपो नन्' स्वप्नः, णप्रत्यय जैसे 'न्यादः' घप्रत्यय जैसे, उरच्छदः अथुच् जैसे, 'वेपथुः' ल्युः प्रत्यय कर्तामें नंद्यादित्वसे पुंलिंगमें होताहै, जैसे नन्दनः, रमणः, मधुसूदनः, भावमें पृथु, आदिसे जो इमनिच् है, सो पुँल्लिग है, जैसे पृथोर्भावः प्रथिमा, म्रदिमा, भावे ऐसा क्यों कहा, 'वृणोतीति वरिमा पृथ्वी' यहां का भावे यह शब्द देहली दीपकन्यायसे पूर्व और परमें सम्बद्ध होता है, भावमें क प्रत्यय जैसे आखूत्थः, प्रस्थः, प्रादितः और अन्यतः, से पर जो घुसंज्ञक धातुहै उससे विहित जो किप्रत्यय है सो पुँल्लिग है 'दाप्दैपौ विना' दारूप और धारूप भी धातु घुसंज्ञक है, प्रादितः, जैसे 'प्रधिः निधिः आदि' अन्यतः, जैसे 'जलधिः' 'इषुधिस्तु द्वयोरिति बाधितत्व है'॥ १५॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते ॥ कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयःपूर्वकोपि च॥ १६॥

द्वन्द्वे-समाहारसंज्ञकसे अन्यत्र समास द्वन्द्वसंज्ञकमें, 'अश्ववडवौ' पुंसि है, आप उदाहरण देते है 'अश्वाश्च वडवाश्चअश्ववडवाः' इसी रीतिसे अश्ववडवान्, अश्ववडवैः इत्यादि प्रयोगसे, समाहारे तु 'अश्ववडवम्' यह क्लीव है; सूर्य, चन्द्रके पर्याय पूर्वक कान्तशब्द पुंसि है, जैसे 'सूर्यकान्तः अर्ककान्तः चंद्रकान्तः, इन्दुकान्तः, सोमकान्तः' अयस् वा अयोवाचक अर्थात् लोहवाचक पूर्वक भी कान्त शब्द पुंसि है, जैसे 'अयस्कान्तः लोहकान्तः' ॥ १६ ॥

वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गकः ॥ पुंखो न्यूंखः समुद्गश्च विटपट्टघटाः खटाः ॥ १७ ॥

अब पुँल्लिग विशेष पर्यन्त अनुक्तऔर अकरान्तादि क्रमसे कहा है, १ वटकः- पिष्टकभेद वा (वरा), २ अनुवाकः- वेदका अवयव वा भाग, ३ रल्लकः कम्बल वा कमरा प्रसिद्ध है, ४ कुडङ्गकः वा कुटंगकः वृक्षलताका समूह, ५ पुंखः बाणका अवयव, ६ पुंखः, न्यूखः, भी साम वेदमें धरा ओंकार, ७ समुद्गः—सम्पुट वा डिब्बा, ८ विटः धूर्त्त वा ठग, ९ पट्टः काष्ठ आदिका बना आसनविशेष वा

पाटा पीढा, १० धटः तुला वा तराजू, ११ खटः अन्धकूप आदि–वा कफ–वा तृण ॥ १७ ॥

कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ॥ गड्डः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

१ कोट्टः, दुर्ग–पुर–किला–गढ वा कोट्टारः, २ अरघट्टः,–कूपभेद–महाकूप वा उसके ऊपर बँधा जलके निकालनेका काष्ठ वा अरहट–पुरवट, तवघट्टः घाटाइ यहां प्रसिद्ध है, ३ हट्ट क्रयविक्रयका स्थान वा हंटिया बाजार यह प्रसिद्ध है, ४ पिंडः–मिट्टी आदिका समूह, ५ गोंडः नाभिः वा नीचजातिभेद, ६ पिचण्डः–वा पिचिण्डः उदर वा पेट, पिचण्ड वत् यहांके वत् शब्दसे गडवादि शब्द भी पुंल्लिग हैं यह बोधित होता है, ७ गड्डः–गलगडः, ८ कारण्डः–वास आदिका वना माण्डका भेद वा पिटारी वा पुष्पभाजन, ९ लगुडः–बांस आदिका दण्ड वा लाठी, १० वरण्डः–मुखका रोग वा वदनकी व्यथा, ११ किणः–मांसकी गाठिका भेद–वह भी जो फावडा, लाठी आदिके चलानेसे हाथ आदिमें (घट्टा) स्पष्ट है, व्रण और चिह्नको भी "किण" कहते हैं, १२ घुणः, काठका कीडा वा घुन यह प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः ॥ कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ १९॥

१ दृति, चामका दोना वा मसक (भिस्तीका), २ सीमन्त, केशवेश वा चूडा गूँथाहुआ, ३ हरित, पलाशवर्ण वा हरियर प्रसिद्ध है, ४ रोमन्थ, पशु जो जुगालीया चर्वग करते हैं (वा पागुर ,) ५ उद्गीथ, सामवेद, ६ बुद्बुद,–जलका विकार, ७ कासमर्द वा काशमर्दः गुलमभेद वा रोगभेद, ८ अर्बुद, दशकोटि, ९ कुन्द, पुष्पविशेष वा औजार रखनेका पात्र वा शिल्पभांड, १० फेन, जलविकार, ११ स्तूप, वटक आदि, ये ये और यूप वा यूपक वा " यूप " भी वरा पूआ आदिके नाम हैं ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः ॥ पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिंगुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

१आतपः,सूर्यका प्रकाश वा उजियाला,२नाभि,राजा विशेष—वा क्षत्रिये क्षत्रियवाचि नाभिशब्द पुंल्लिंग है, ३ कुणपः'उसी प्रकार कुणपः—शवमेदः त्यक्तप्राण' ४ क्षुरः—केशवपनद्रव्य—नाईका शस्त्र—(छूरा)वा पशुकी खुरी,५ केदर, व्यवहारका द्रव्य वा पदार्थ, ६ पूर, जलप्रवाह, ७क्षुरप्र, बाणका भेद—'खुरप्रः'भी, ८ चुक्र, शाकका भेद, ९ गोलः,वर्तुलपिंड वा गोल, १०हिंगुलः, रागद्रव्यका भेद वा रक्तवर्ण,११पुद्गल—वा पुद्गलः आत्मा ॥ २० ॥

वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ॥ कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

१वेतालः, भूताधिष्टितशव—२ भल्ल विशेष—३ शिवका अनुचर-४ द्वारपाल, २भल्लः,भालू, ४ पुरोडाशः वा पुरोडाः ३मल्लः,बाहुयुद्धकुशल वा माल प्रसिद्ध, (सु) हविर्भेद, ५ पट्टिशः, अस्त्रभेद,६ कुल्माषः वा कुल्मासः' अर्द्ध स्विन्न यव—वा कुत्सित माष, ७ रभसः—१हर्ष—२ वेग—३ उत्सुकता—४ वा पूर्वापर-विचार, ८ सकटाहः, कटाहके सहित कटाहशब्द भी पुँल्लिंग है, कराही यह प्रसिद्ध है, ९ पतद्ग्रहः, निष्ठीवनपात्र वा पीकदान ॥ २१ ॥

॥ इति पुंल्लिंगसंग्रहः ॥

द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम्॥ शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥

द्विहीने स्त्री और पुरुषसे हीन नपुंसकका अधिकार है बाह्लिकशब्द पर्यन्त, श्लोकद्वयसे प्रधानकरके निर्दिष्ट खादि शब्द २६-अपने पर्यायोंके सहित नपुंसक हैं, यहां अन्यत् इस बाधितसे जो भिन्न हैं वे क्लीब हैं यह सावधानका अर्थ कहा. चकारसे वस्त्र आभूषणका संग्रह है, १खम् इंद्रिय, २ व्योम वा देह—३ शून्य—४ अभ्र—विन्दु, ५ पुर,६ स्वर्ग,७सुखभी जैसे, छिद्र नभः वियत् इत्यादि. २ अरण्यं—विपिनं—काननं—इस इत्यादि, ३ पर्णं पत्रं वा पत्ता दलं इस इत्यादि, ४ श्वभ्र तु पातालं, ५ हिमं,प्रालेय, ठण्ढ,६ उदक जलं-नीरं-पानी-इस इत्यादि, ७ शीतं, शीतलं, इस इत्यादि, ८ उष्णं-तिग्मं-इस इत्यादि, ' शीतोष्णं गुणे क्लीब तद्वति त्रिषु,९ मांसं, पिशित, तरसं ये

इत्यादि, १० रुधिरं, शोणितं रक्तं, ११ मुखं, वदनं वक्त्रं, १२ अक्षि-नयनं, नेत्रं, १३ द्रविणं, धनं, इस इत्यादि, १४ बलं शक्ति सैन्यआदि, शक्तिमें जैसे बलं शुष्मा-मेत्यादि सैन्यं चक्रमित्यादि ॥ २२ ॥

फलहेमशुल्वलोहसुखदुःख-शुभाशुभम् ॥ जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ ॥ २३ ॥

१ फल फलमात्रं—कपित्थं, इस इत्यादि, 'हलं' भी, २ हेम, सुवर्णं, कनकं, इस इत्यादि, ३ शुल्वं, ताम्रं, इस इत्यादि, ४ लोहं, कालायसं, इस इत्यादि, ५ सुख शर्म, शातं, इस इत्यादि, ६ दुःखं तु कृच्छ्रं, कष्टं, ७ शुभ—कल्याणं, कुशल, इस इत्यादि, ८ अशुभं, अकल्याण, ९ जलपुष्पाणि—कुमुद—कमल—कह्लार—उत्पलानि आदि, १० लवणं, सैन्धवं, इस इत्यादि, ११ व्यञ्जनं, तेमन, निष्ठानं, इस इत्यादि, व्यञ्जनविशेषसे दधि—तक्र—आदिका ग्रहण है, १२ अनुलेपनं, कुंकुम आदि, यहां बाधितादन्यत् ऐसा क्यों कहा, आकाशो, विहायाः, द्यौः, अटवी अरण्यानि इस इत्यादि, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचारना चाहिये ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या वा लक्षा नियुतं च तत् ॥ द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

कोट्याः कोटिशब्द के विना जो शत आदि संख्या है वह क्लीवमें होतीहै. लक्षशब्द वा विकल्पसे क्लीवमें है पक्षमें स्त्रीलिंग है, तत्शब्दसे लक्षका पर्याय नियुतं यह अर्थ है, उदाहरण जैसे, 'नियुतं—शत—सहस्र-अयुतमित्यादि असन्त इसन्त—उसन्त—और अन्नन्त जो द्व्यच्क वा द्विस्वर हैं वे क्लीवमें हैं, असन्त जैसे पयः, मनः, इसन्त जैसे, सर्पिः, ज्योतिः, उसंत जैसे, वपुः, यजुः, अन्नन्त जैसे, चर्म, शर्म, साम, नाम, इत्यादि इसीसे क्लीवत्व सिद्ध था आगे जो मर्मशब्दका उपादान है सो इसके अनित्यत्व ज्ञापनके अर्थ है, तिससे, '(गुणान्धकारशोकेषु तमो राहौ पुमानयमित्यादि सिद्धम्)' अकर्तरि अर्थमे कर्त्तासे अन्यत्र जो अनात अन यह अतमें जिसके हैं वे क्लीव हैं जैसे, गमनं, मरण, दानं, करणं, वरण, अकर्तरि क्यों कहा, इध्मव्रश्चनः कुठारः नंदयतीति नंदनः ॥ २४ ॥

त्रान्तं सलोपधं शिष्टं, रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् ॥ पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥

त्रांतं क्लीवमें हैं जैसे पात्रं—वहित्र—मित्रं—वस्त्रं—गात्रं—यंत्रम् ये इत्यादि, सकार और लकार उपधा अंत्यसे पूर्ववर्ण है जिनके वे क्लीवमे हैं, सोपधं जैसे, बुसं, विसं, अंधतमसं, लोपध जैसे, कुलं, मूलं. इस इत्यादि शिष्टं यह जो प्रागुक्तसे भिन्न है वह और वह प्रागुक्तभी जो अबाधित है सो भी त्रांतादिक क्लीवमें है, शिष्टं क्यों कहा पुत्रः—वृत्रः-हंसः—कंसः—पनसः—शालः कालः—गलः—संख्यापूर्वक रात्रशब्द क्लीवहै '(रात्राह्नाहाः पुंसि)' इस-सूत्रमे पुंस्त्व प्राप्त था उसका यह अपवादहै, त्रिरात्र, पंचरात्रं, संख्यया यह क्यों कहा, अर्द्धरात्रः मध्यरात्रः पात्र आदि अदन्तशब्दोसे जो एकार्थ द्विगु समास है वह क्लीब है, पञ्चरात्र आदि पदसे चतुर्युगं, लक्ष्यानुसारतः—अर्थात् शिष्ट-प्रयोगके अनुसार, इससे पंचमूली. त्रिलोकी इत्यादि अपवाद हैं, एकार्थ क्यों कहा, पंचकपालः पुरोडाशः द्विगु यह तद्धितार्थहै ॥ २५ ॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ॥ षष्ठ्याश्छायाबहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥

१ द्वन्द्वसमासका एकत्व और अव्ययीभाव समास क्लीवमें है, द्वन्द्वैक्यं जैसे पाणिपादं, शिरोग्रीवं, मार्दङ्गिकपाणविकम्, अव्ययीभाव जैसे, अधिस्त्रि-यथाशक्ति,उपगग, सख्या और अव्ययसे परे जैसे, विपथं, कापथं, संख्या, व्ययादिति किं, धर्मपथः योगपथः यह समासांतका अनुकरण है, समासमें षष्ठी विभक्त्यन्तसे परे जो छायाशब्द है सो क्लीव है, वहभी बहुतोकी सबधिनी होय तौ जैसे, 'वीनाम्, पक्षिणां छाया विच्छायम्, इक्षूणां छाया इक्षुच्छाय,' बहूनां, ऐसा क्यों कहा कुडचस्य छाया कुडयछाया, वा स्त्रियां यह तौ कहेगे, सहतौ समूहविपयमें सभ शब्द क्लीवहैं, यहांभी षष्ठ्याः, इसका अनुवर्त्तन करते हैं, जैसे दासीनां सभा दासीसभ, नृपसभं, रक्षःसभं, स्त्रीसभमित्यादि, संहतौ ऐसा क्यों कहा, दासीनां सभा दासीसभा, दासीगृह, यह अर्थ है ॥२६ ॥

शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थादराजकात् ॥ दासी-

सभं नृपसभं रक्षःसभामिमा दिशः ॥ २७ ॥

शालार्थ अर्थात् गृहार्थ-अपिशब्दसे समुदायार्थ भी जो सभाशब्द है वो अराजकात् राजशब्दसे वर्जित और राजा मनुष्य अर्थात् राजार्थक राजपर्याय और अमनुष्यार्थक रक्षः आदि शब्दसे और षष्ठ्यन्तसे परे होय तो क्लीवमें है'(शाला-गृहमर्थोऽभिधेयो यस्याः सा शालार्था) राजपर्यायसे जैसे, इनसभ,प्रभुसभ,अमनुष्यार्थसे जैसे, रक्षःसभ, पिशाचसभ, अराजकात् क्यों कहा, राजसभा 'राजपर्यायके ग्रहणसे यहां नहीं हुआ, चन्द्रगुप्तसभा,राजविशेष यह है' षष्ठ्याः यह क्यों कहा, नृपतिविषयसभा नृपतिसभा 'नृणां पतिर्यस्या सा चासौ सभाचेति' वा नृपतिसभा, अमनुष्यार्थात् यह क्यों कहा-दासीसभा,दासीनां शाला इत्यर्थः। इमा दिशः, यह दासीसभं इस आदि क्रमसे उदाहरणहैं, तिनमे दासीसभ यह समुदाय ही अर्थमें है, शेष दो शाला और सहति अर्थमे है ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ॥ कोपज्ञकोपक्रमादि कन्योशीनरनामसु ॥ २८ ॥

१उपज्ञा और उपक्रमान्तके आदित्वके प्रकाशनमे उपज्ञान्त और उपक्रमान्त यह समास क्लीवमें होता है,'(उपज्ञायते इति उपज्ञा॥को ब्रह्मा तस्य उपज्ञा कोपज्ञं प्रजा ॥ कस्योपक्रमः कोपक्रमं लोक.)' प्रजापतिने प्रथम बनाया था इससे उसीने आदिमें प्रजाको जाना था, यह अर्थ है, उन्हीं नरोंके मध्यमें षष्ठ्यन्तसे पर कन्था क्लीबमे है,जैसे सौशमीना कन्था सौशमिकन्थम्, उशीनरदेशवाचीसे अन्यत्र दाक्षिकन्थानामसु यह क्यो कहा, वीरणकथा ॥ २८ ॥

भावे नणकचिद्धचोन्ये समूहे भावकर्मणोः ॥ अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः॥२९॥

चकार इत्संज्ञक है जिसका वह चित् है,'नश्च णश्च कश्च चिच्च नणकचितः तेभ्योऽन्ये'अर्थात् इनसे भिन्न जो'तव्य, क्त,' आदि अदन्तधातुप्रत्यय भावमे विहित हे वे क्लीबमें हैं,तिनमें धातु प्रत्यय जैसे, भवितव्य, भाव्यं, सहित, भुक्तं, नणकचित् क्यो कहा, प्रश्नः, न्यादः, आखूत्थः, वेपथुः, नणक यह घञ्का उपलक्षण है, पाकः, भावे क्यों कहा कर्ममे दोष होगा, जैसे 'कर्तव्यो धर्मसंग्रहः,' समूह अर्थमें, 'जैसे भिक्षाणां

समूहो भैक्ष, गार्भिण, औपगवं, कार्कं, भावमे अदन्त जैसे, गोर्भावः गोत्वं, शुचेर्भावः शौचं, कर्मणि जैसे; शुक्लस्य कर्म शौक्ल्यम्, राज्ञः कर्म राज्यं, चौर्य्यं, 'तल् प्रत्ययको तो स्त्रीत्व कहा है, पुण्य और सुदिनशब्दसे परः, विहितसमासान्त अहन् शब्द क्लीवमें है, अह्नाहान्त इस पुंस्त्वका अपवाद है, पुण्याहं, सुदिनाहं, सुदिन शब्द प्रशस्तार्थक है ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वे प्युक्थतोटके ॥ चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योजनम् ॥ ३० ॥

क्रिया और अव्ययोंका भेदक वा विशेषण क्लीब और एकवचनमे होते हैं, क्रियाविशेषण जैसे, मन्दं पचन्ति, सुखं तिष्ठन्ति योगिनः, सलीलं नृत्यन्ति बालाः, अव्यय विशेषण जैसे, रम्यं स्वः सुखदं प्रातः, अब कितने कंठस्वरसे कहा है, उक्थं साममेद, तोटक वृत्तभेदः, चोचं, खाये फलका शेप, वा तालफल केला आदिके फलको भी कोई कहते हैं 'मोच और खेटमी,' २ पिच्छं गुच्छा—वा मोरकी पोछ—वा चूडा—वा लांगूल वा शाल्मलीवृक्ष—वा परम्परा आदि, उक्तं उक्थं और मुक्तं, ३ गृहस्थूणं. घरका खम्भा वा थून्ही, ४ तिरीटं, वेठन वा शिरोभूषण, ५ मर्म, सन्धि स्थान वा हड्डियोंके जोडका स्थान, ६ योजनं कोशचतुष्टयं वा चार कोश ॥ ३० ॥

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ॥ माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

१ राजसूयं और २ वाजपेयं ये २ यज्ञके भेद हैं, '(राज्ञा लतात्मकः सोम सूयतेऽत्र राजसूयं वाजं पैष्टी सुर पीयते वा पेयमत्र वाजपेयम्)' ३ गद्य, ४ पद्य ये कवेः कृतौ अर्थात् कविकी निश्छन्द रचनाको गद्य, और पादसमूहकी रचनाको पद्य, कवेः कृतौ ऐसा क्यों कहा, गद्या वाक्, पद्या पद्धतिः, ५ माणिक्यं, रत्नका भेद, '(मणिके मणिपूराख्ये नगरे भवं माणिक्यं,)' ६ भाष्यं पदार्थविवृति वा विवरण, '(सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः। स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं - भाष्यविदो विदुरिति,)' ७ सिन्दूरं, रक्त वा लालचूर्ण, ८ चीरं वस्त्रभेद, ९ चीवर मुनिवासः वा वस्त्र, १० पंजरं वा पिंजरम्, पक्ष्यादि बन्धनागार वा पिंजरा ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलं स्थालबाह्लिकम् ॥

१ लोकायतं, चार्वाकशास्त्रं, २ हरिताल, धातुभेद, ३ विदलं, बांसका बना पात्रभेद, ४ स्थाल, पात्रभेद वा थार वा हाडी अन्नपात्र, पाकपात्र आदि, ५ बाह्लिकं, कुंकुम वा देशभेद उस देशका उत्पन्न कुंकुम वाह्वम् भी, 'वह्लदेशे भवं वाह्लवं'

इति नपुंसकलिंगसंग्रहः ॥

पुन्नपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

अत्र चिक्कस शब्दपर्यन्त पुंसि और क्लीवमें हैं, उक्तसे भिन्नशेष है जैसे शंख और पद्म ये २ दो निधिवाचक पुँलिंग हैं, कम्बु नलिनका वाची तौ पुन्नपुसकलिंग है तैसे अत्रत्य शब्दभी पर्याय वाधित है उसके पर्यायसे भिन्नहैं तो पुन्नपुसक लिंग होते हैं, १ अर्द्धर्चः अर्द्धर्च आधी ऋचा वेदभाग, २ पिण्याकं, तिलकी खल, कंटक रोमहर्ष वा रोमाच ॥ ३२ ॥

मोदकस्तण्डकष्टंकशाटकः कर्पटोऽर्बुदः ॥ पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

१ मोदकः, भक्ष्यभेद वा (लड्डू) २ तण्डकः उपतापविशेष वा रोगविशेष, ३ टकः वा तङ्कः, अश्मदारणः वा पत्थर गढनेकी टांकी, ४ शाटकः पटभेदःवा शाडी प्रसिद्ध है, ५ कर्वटः वा कर्प्पटः "वाजे पढते हैं खर्वटः" स्थानभेद वा वस्त्रभेद, ६ अर्बुदः, सख्यामेद वा दशकोटि, ७ पातक ब्रह्महत्यादि, ८ उद्योग उत्साह, ९ चरकः वा वरकः वैद्यशास्त्र मेद, "करकः यह भी पाठ है इसका स्यूतवस्त्र अर्थ है," १० तमालः वृक्ष मेद (तमाखू) प्रसिद्ध है ११ आमलकः वा आमालकः धात्रीफल वा आँवला प्रसिद्ध है १२ नडः भीतरी विल—वा तृणभेद ३३॥

कुष्ठं मुण्डं शीधु वुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम् ॥ संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

१ कुष्ठं—रोगभेद, २ पुष्कर वा कमल, ३ मुण्डं शिरः, ४ शीधु, मद्य, ५ वुस्त भूँजा मांस वा कटहल आदिके फलका सार भाग—'कहीं पुस्तं वा शस्त पाठ है कहीं चुस्तं वा तुस्तमी पाठ है' ६ क्ष्वेडितं, वीरकाकियासिंहनाद-क्षेमकुशल 'क्षेमोऽस्त्रीलब्धरक्षणे, मोक्षको भी,' ८ कुट्टिम गचका भेद, संगम सयोग, ९ शतमानं मानभेद, १० अर्म अक्षिरोग, ११ शम्बलं वा सम्वलं—वर्णका भेद, १२ अव्ययं—स्वरादिनिपातं वा विकाररहित, १३ ताण्डव वा ताण्डव्यं—नाचका भेद' ॥ ३४ ॥

कवियं क्रन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम् ॥ यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूषं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

१कवियं—तोवडा लगाम वा बागडोर, २कन्दं, कमलिनीकी जड वा मूल कहीं कर्म यह पाठ है, ३कार्पास,'कार्पास वा कपास वा रूई वस्त्रका कारण आदि,' ४''पारावारं,''वारं नदी आदिके दोनो पारको क्रमसे पारं और अवारं कहते हैं, ५ युगन्धर—कूबरं वा रथके जूआके काठको पुष्ट करनेवाला काष्ठ वा पर्वत भेद्आदि, ६ यूप,वा यूपं यज्ञाङ्गभेद,—अथवा यज्ञपशु बाँधनेका काष्ठभेद'७प्रग्रीवं-द्रुमशीर्षकम् वा झरोखा—मुखशाला खिडकी आदि, ८ यात्रीवं वा 'पात्रीव वा' यज्ञ पात्रका भेद,९ यूप वा जूपं—माण यह प्रसिद्धहै, '(मुद्गामलकयूषस्तु ग्राहीपित्तकफे हित इति उक्तं वैद्यके)१०चमस चिक्किसौ,ये२ दो पात्रभेद हैं ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वदिकं ध्रुवम् ॥ तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत्॥३६॥

अर्धर्चादौ इस पुन्नपुंसकाधिकारवर्गमे घृतादिकोंको पाणिनि आदिकोंने पुंस्त्व आदि कहा है,वे तो वेदमें प्रसिद्ध वैदिक हैं इस हेतु उन्हें यहां नहीं कहा और लोकमें है तौ वे शेषवत् अर्थात् उक्तसे भिन्न शेषहैं उनके समान:शिष्टप्रयोगके अनुसार ग्राह्य हैं, ॥ ३६ ॥

इति पुन्नपुंसकसंग्रहः ॥

अथ स्त्रीपुंशेषसंग्रहः ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुः षट्पदोरगाः ॥ जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः॥३७॥

अपत्यप्रत्यय अन्तमें हैं जिनके वे शब्द स्त्री और पुंलिंगमें होतेहैं जैसे 'उपगोः अपत्यं पुमान् औपगवःउपगोः अपत्यं स्त्री औपगवी, वैदेहः, वैदेही, गार्ग्यः, गार्गी,' 'द्विचतुःषट्पदोरगाः' द्विपद—चतुष्पद—और षट्पदवाची और भुजगवाची जाति भेद स्त्रीपुंस हैं,तिनमें द्विपदजातिभेद जैसे,'मानुषः पुमान् मानुषी,स्त्री गोपःपुमान् स्त्री गोपी,ब्राह्मणः ब्राह्मणी,शूद्रः,शूद्रा,अजादि मानकर टाप् हैं, ' चतुष्पदभेद' जैसे,'मृगः,मृगी,हयः हयी,' षट्पद भेद जैसे, 'भृंगः भृंगी, मक्षिका,मक्खी,शिवा,सिंआरी,लूता मकरी,पिपीलिका चिरटी,'उरग जैसे,उरगः उरगी, नागः, नागी, 'स्त्रीयोगैःसह पुमाख्याः'अर्थात् स्त्रीवाचकशब्दके योग से पुंवाचक शब्द स्त्री और पुलिंगमें होते हैं, जैसे इन्द्रः इन्द्राणी, 'मातुर्भ्राता मातुलः, तस्य स्त्री मातुली,' पुंसिमें वर्त-

मान मातुलः स्त्रीयोगसे स्त्रीत्वमे भी है, 'शूद्रस्य स्त्री शूद्री,' मल्लक, आदिमी स्त्री-पुंसमें हैं मल्लकः स्त्रीमें तो मल्लिका पुष्प-वल्लिका भेद हैं ॥ ३७ ॥

ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ॥ मूषा-सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

मुनिः यती इंगुदी—बुद्ध पियालवृक्ष-भेद, पलाश आदि ऊर्मिः तरंग, यहभी पाठ है,' २ वराटकः कौडी स्त्रीलिंगमें वराटिका, ३ स्वातिः नक्षत्र, ४वर्णकः चन्दन—विलेपन, ५ जाटलिः, 'झाटलिः वा पाटलिः' भी पाठ है, पलाशवृक्षके सदृश है, ६ मनुः स्वायमुव आदि—वा मन्त्र,७मूषा, धातु गलानेका पात्र—वा घरिया, ८ सृपाटी, परिमाण भेद, 'सृपाटः वा स्त्री,सृपाटी वा असृपटी, रुधिरकी नदी,९कर्कन्धूः, बेरवृक्ष, १० यष्टिः, लाठी, ११ शाटिः, पटभेद—वा शाडी,१२कटिः और कटः स्त्री कटिः, वा कटी, देहका अवयव वा कमर,१३ पुं० कुटिः, स्त्री कुटिः वा कुटी, गृह-विशेष वा पत्तोंका घर, यहां मूषा नकारान्त है ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंशेषसंग्रहः ॥

अथ स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्य-ञ्क्वाचिच्च वुञ् ॥ औचित्य-मौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदा-हृतः ॥ ३९ ॥

भावक्रिययोः अर्थात् भाव और कर्म अर्थमें वर्तमान ष्यञ् प्रत्यय और वुञ् कहीं स्त्री और नपुसकमें वर्त्तते हैं, तिनके मध्य ष्यञ् प्रत्ययका उदाहरण जैसे, औचित्य यह, 'उचितस्य भावः औचित्य,' और 'औचितीभी,' मित्रस्य कर्म मैत्र्यं मैत्री वा 'इसी प्रकार वार्द्धक, वार्द्धका, सामग्र्य सामग्री, आर्हत्य, आर्हन्त्ती' वुञ् प्रत्ययतो वैरमैथुनकादि-वुनइस मॉ त पहिले कहा है, जैसे मिथुनस्य भावः कर्म वा मैथुनिका मैथुनिकं भी' ॥ ३९ ॥

षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछा-याशालासुरानिशाः ॥ स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥

तत्पुरुषसमासमे षष्ठ्यन्त षष्ठी विभक्त्यन्त प्राक्पद है जिनके ऐसे षष्ठ्यन्त प्राक्पद सेना आदि शब्द स्त्री और नपुंसकमें होवे, उदाहरण जैसे, नृणां सेना नृसेनं, वेति विकल्पसे नृसेना भी, इतरे भिन्न पदभी इसीप्रकार उदाहरण, करना चाहिये, श्वनिशं, गोशाल, यवसुरं यवसुराः, कुड्यस्य छाया कुड्यच्छायं

कुष्ठच्छाया वा षष्ठीबहुवचनान्तसे पूर्व पदकी छाया हो तो क्लीवहीमें होवे ऐसा पहिले दिखाया है ॥ ४० ॥

आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ॥ त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

आबन्त उत्तरपद और अन्नन्त उत्तरपद द्विगुसमास पुल्लिंगमें नहीं हैं, किन्तु स्त्रीनपुंसकमे होते हैं, अन्नन्त उत्तरपदका जो अन्त नकार है उसका लुप् अर्थात् लोपभी होता है, (आप्—आ—अन्) आबन्तांत्यपदका उदाहरण जैसे, त्रिखट्वं यह तिस्रः खट्वाः समाहृताः त्रिखट्व त्रिखट्वी भी, अन्नन्तोत्तरपद, जैसे त्रयस्तक्षाणः समाहृतास्त्रितक्ष, त्रितक्षी च, तक्षन् शब्दका अन्त्य नकार लुप्त है ॥ ४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

अथ त्रिलिंगशेषसंग्रहः ॥

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ॥

पात्र आदि और दाडिम शब्दांत त्रिलिंग हैं, पात्रः, पात्री पात्र आदि, पुटी, पुटः पुटं, वा पटः—टी—ट, पुटः मट्टीका बना डब्बा वा औषध पकानेका पात्रभेद दूध आदिके पीनेका पात्र दोना आदि वाटी, 'वाटः-टी-ट' रास्ता-वा मार्ग, पेटः, टी वा टा-टं, पेटा—टा, पेटी—टी, यह पटारा वा पेटारीका नामहै, कुवलः-ली-लं उत्पल कमल मोती—आदि, दाडिमः—मी-मं, दाडिम्ब वृक्ष वा अनार ॥

इति त्रिलिंगशेषसंग्रहः ॥

परं लिंगं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥

द्वन्द्वैकत्वका और अव्ययीभाव समासका लिंग पहिले कह चुके हैं, स्वप्रधाने अर्थात् उभयपद प्रधानइतरेतराख्य द्वन्द्वसमासमें और तत्पुरुष समासमें भी जो (परं) परपदस्थलिंग है वही लिंग होता है, तहां द्वन्द्वसमासमें जैसे कुक्कुटमयूर्याविमे, मयूरीकुक्कुटाविमौ, तत्पुरुषसमासमें जैसे, धान्येनार्थो धान्यार्थः, सर्पाद्भीतिः सर्पभीतिः सर्पभयं, वाप्यश्वः, कुत्रविप्रः कुलीनविप्रः, पूज्यकुलं, विप्रकुल, ब्राह्मणका कुल, इत्यादि ॥ ४२ ॥

अर्थांताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ॥ तद्धितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

उक्त तत्पुरुषके लिंगका अपवाद कहा है, अर्थ इस पदसे, अर्थांताः अर्थात् अर्थशब्द है अन्तमें जिनके वे परोपगाः, परगामी वाच्यलिंग हैं, अर्थ जैसे द्विजायायं द्विजार्थः सूपः, द्विजार्था यवागूः द्विजार्थं पयः, 'ब्राह्मणार्थः—र्था र्थं, 'अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिंगताचेतिवक्तव्यम्'

यह वार्त्तिक भी है'(प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः,)' पर विशेष्यको जाते हैं यह अर्थ है,प्रादि पूर्व जैसे, अतिक्रांतो मालामतिमालो हारः,अतिक्राता मालामतिमालेयम्,अतिमालमिद, अवक्रुष्टः कोकिलया अवकोकिलः अलंपूर्वपद जैसे, अल कुमार्यै इत्यलकुमारिरय,अल कुमारिरियम् अल कुमारि इदं,अलब्धजीविकः—का-क, प्राप्तजीविको द्विजः प्राप्तजीविका स्त्री प्राप्तजीविकमिद, इसी प्रकार आपन्नजीविकः,'तद्धितार्थो द्विगुः'अर्थात् तद्धित अर्थमें द्विगुसंज्ञक समास वाच्यलिंगहै,पंचकपालः—लं-ला, पुरोडाशः सख्याशब्द सर्वनामसंज्ञक और तदन्तभी परलिंग भाजी है, सख्या जैसे, एकः पुमान्, एक कुलं,द्वौ पुमांसौ, द्वे स्त्रियौ,कुले च''त्रयः पुरुषाः तिस्रः स्त्रियः त्रीणि कुलानि,एव चत्वारः चतस्रः चत्वारि'' षट्संज्ञकोंको कहते हैं,विंशति आदिकोंका लिंग द्वितीय काण्डमें कहचुके हैं,और शत आदिकोंका तौ नपुंसकके संग्रहमे कहचुकेहैं, सर्वनाम जैसे सर्वो देशः सर्वा नदी सर्व जल इसी प्रकार परः पुमान्'संख्यान्तक जैसे ऊनत्रयः। ऊनतिस्र ऊनत्रीणि' सर्वनामान्त जैसे परमसर्वः परमसर्वा परमसर्वम्४३॥

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयंतदुदाहृतम् ॥ गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अदिङ्नाम्नाम् अर्थात् दिशावाचक शब्दसे भिन्न नामवालोंका बहुव्रीहि समासमें अन्यलिंग होताहै इसके उदाहरण आपसे आप विचारना चाहिये जैसे, 'वृद्धा भार्या यस्य स वृद्धभार्यः'बहुधनः बहुधना बहुधन अदिङ्नाम्ना ऐसा क्यों कहा,दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दक्षिणपूर्वा गुणयोगसे द्रव्ययोगसे और क्रियायोगसे जो उपाधी अर्थात् विशेषण हैं उसके धर्ममें जो प्रवृत्तशब्द है वे धर्मीके लिंगयोग होवें गुणयोगसे जैसे, शुक्लःपटः—शुक्ला—शुक्ल,गन्धवती पृथ्वी गन्धवान् अश्मा गन्धवत् कुसुमं, द्रव्यके योगसे जैसे दण्डी दण्डिनी स्त्री, दण्डि कुल, क्रियायोगसे जैसे याचकः याचिका याचकम् आदि ॥ ४४ ॥

कृतःकर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि ॥ अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

असंज्ञामें जहां कर्त्ता अर्थमें कृत्संज्ञक प्रत्यय हैं वे वाच्यलिंग हैं जैसे करोतीति कर्ता पुमान्, कर्त्री स्त्री, कर्तृ कलत्र कुर्वन्-ती—त्,असंज्ञायां क्यों कहा प्रजाहरिः, कर्तरि क्यो कहा कृतिः, कर्म अर्थमें और कर्ता अर्थमें वर्तमान कृत्य प्रत्यय परगामी होते हैं कर्ममे जैसे भव्यः (तरुः)—व्या—व्यं; गन्तव्यः (ग्रामः)—व्या—व्य; कर्त्तव्या भक्तिः, कर्त्तामे जैसे वसतीति वास्तव्योऽयं वास्तव्या सा वास्तव्यं तत्, कर्त्तरि कर्मणि क्यो कहा भाव अर्थमें तो एधितव्य त्वया तेन रक्त

इस इत्यादि अर्थमें अण् आदि तद्धितप्रत्ययान्त और नाना अर्थके कहनेवाले वा अनेकार्थके विशेषभूत विशिष्ट होनेसे वाच्यलिंग हैं जैसे कुसुम्भेन रक्ता शाटी कौसुभी कौसुम्भः पटः कौसुम्भं वासः, हैम—हैमी—मं, ऐन्द्रः—न्द्री—न्द्र 'तेन रक्त रागात्' इससे अण् होताहै और रक्ताद्यर्थ इसके आदि शब्दसे मथुराया आगतो माथुरोऽयं वा माथुरीयं आदि अणाद्यन्ता इस इत्यादि पदसे ग्रामे भवः ग्राम्यः पुमान्, ग्रामे भवा ग्राम्या स्त्री आदि, यहां यत् प्रत्यय होता है॥४९॥

षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् ॥ परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

षट्सञ्ज्ञकाः अर्थात् पान्त और नान्त संख्या, तथा कतिशब्द भी त्रिषु समा वा तीनों लिंगमे तुल्य होते हें और नित्यही बहुत्व अर्थमें वर्तमान हैं इस कारणसे बहुवचनान्त है, जैसे षडिमे, षडिमाः, षडिमानि, पञ्चभिरेताभिः, कति पुमांसः, कति स्त्रियः, कति कुलानि, युष्मद् और अस्मद् शब्द तथा तिङन्तपद और अव्ययवाचक शब्द—ये सब त्रिलिङ्ग औरसमान है, युष्मद् शब्द जैसे, त्व स्त्री त्वं पुमान् त्वं कलत्रं, अस्मद् शब्द जैसे आवां पुमांसौ—आवां स्त्रियौ, आवां कलत्रे, तिङ् जैसे, स्थाली भवति, घटो भवति, पात्र भवति इसी प्रकार दाराः भवन्तीत्यादि, अव्यय जैसे, उच्चैः दाराः उच्चैः स्त्री उच्चैः कलत्रं उच्चैः प्रासादः इत्यादिपरंविरोधे विप्रतिपधेवाविधियोंके परस्पर विरोधमें परलिंगानुशासन होताहै, जैसे मानुषशब्द क-ष-ण—भ-म—र इस प्रागुक्तविधिसे पुंस्त्व ही प्राप्त था, द्वि चतुः, षट्पद इस उत्तरोक्त स्त्रीपुसविधिका निश्चय कियाहै, जैसे मानुषोऽयं, मानुषीयं, शेष जो नहीं कहा गया नाम आदि वह शिष्ट महाकविप्रयोग और भाष्यकार आदिके प्रयोग से जानना चाहिये, यद्वा अनुक्तशब्दोंके लिंग शिष्टप्रयोगसे जानने योग्यहैं, लिंगविधायक शास्त्र न करना चाहिये क्योंकि लिंगज्ञान लोक वा ससारसे जान पडता है यह भाष्यकारका मत है ॥ ४६ ॥

इति लिंगादिसंग्रहवर्गः ॥ ६ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामालिङ्गानुशासने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इसप्रकार अमरसिंहकृत नामलिगानुशासनमे सामान्य तृतीयकाण्डसाङ्गनिरूपण करा ॥ ४७ ॥

इति श्रीमुरादाबादवास्तव्यपंडितरामस्वरूपकृतभाषाटीकासहितः नामलिगानुशासने सामान्यकाण्डस्तृतीयः समाप्तः

इत्यमरकोशः संपूर्णः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्—यन्त्रालय—बंबई.

काव्य-ग्रन्थाः।

नाम	की० रु० आ०
अमरुशतक-शृङ्गार और वेदान्तपर काव्य दो टीकासहित.	०-१०
अश्वधाटीकाव्य-भाषाटीकासमेत.	०-३
ऋतुसंहारकाव्य-कालिदासकृत और चौरकविकृत-चौरपञ्चाशिकाकाव्य। इसमें षड्ऋतुवर्णनादि राजकुमार बाबू देवनंदनसिंहकृत छन्दोबद्ध भाषाटीका है.	०-७
कामाक्षिस्तुतिशतक-मूककविविरचित	०-४
कलिविडम्बन-भाषाटीकासमेत। तथा कलिप्रभाव भाषाटीकासमेत। इसमें-कलियुगप्रभाववर्णन है	०-३
किरातार्जुनीयकाव्य-सटीक। ग्लेज कागजका दाम	१-१२
" तथा रफ कागजका.	१-८
कुमारसम्भव-महाकवि कालिदासकृत और मल्लिनाथकृत संजीवनीटीकासमेत। इसमें-पार्वतीजीकी उत्पत्ति, ब्रह्माजीकी तारकासुरसे क्लेशित देवोंको शिक्षा, मदनदहन, रतिविलाप, पार्वतीके तपका उदय, पार्वतीका शिवजीसे विवाह करनेके निमित्त हिमवान्‌के पास सप्तऋषियोंको भेजकर विवाहका निश्चय और शिव-पार्वतीजीका विवाह विधिपूर्वक वर्णित है.	१-४
कृष्णलीलामृतकाव्य.	०-५
कृष्णकर्णामृतकाव्य-(बडाही भक्तिमयहै)....	०-४
कार्ष्णिकण्ठाभरण-कार्ष्णिगोपालदास विरचित। नरोत्तमीय टीका तथा अमरेश्वरीय टिप्पणीसहित। इसमें भुजंगप्रयात रत्नदशक, तोटकरत्न दशक आदि दश दशक हैं। और	

नाम	की० रु० आ०
श्रीकृष्ण भगवान्की स्तुतिके साथ २ ऐसी उत्तम कविता है कि पंडितोंका मन मुग्ध होजाताहै।	०–५
गीतगोविंद–राधाविनोदसमेत–भाषाटीकासहित । इसमें जयदेवगोस्वामिकृत अतिलालित संस्कृतमें रागमय राधाकृष्णकी प्रेममयभक्तिके गानेकी चीजें विद्यमान हैं। गानविद्या जाननेवालोंको अवश्य संग्रह करना चाहिये। यह भगवान्को अत्यन्त प्रिय है.	१–०
गीतगोविन्द–मूलमात्र.	०–२
गुरुपीयूषलहरी–गुरुनानकसाहबका वर्णन	०–६
घटकर्परकाव्य–भाषाटीकासमेत.	०–१
दशकुमारचरित्र–(संस्कृत)	१–८
दशकुमारचरित्र–भाषाटीकासमेत छपरहाहै.	
दृष्टान्तशतक–दोहा–भा० टी० इसके श्लोक दोहोंमें यह विचित्रता है कि पूर्वार्द्धमें दृष्टान्त और उत्तरार्द्धमें दार्ष्टान्त क्रमसे कहेगयेहैं.	०–२॥
नलोदयकाव्य–सटीक–इसमें–महाराजा नल और दमयन्तीका रोचक चरित्र वर्णित है.	०–१२
पद्यमुक्तावली–इसके श्लोकोंके आदिमें क्रमसे स्वर व्यञ्जनोके अक्षर आते हैं। यद्यपि छोटा है किन्तु देखने योग्य है.	०–१॥
पञ्चतन्त्र–मूलमात्र। विष्णुशर्माकृत नीतिशास्त्र	१–८
पञ्चतन्त्र–विष्णुशर्माकृत और पं०ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत सुबोध भाषाटीकासमेत। यह मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश, अपरीक्षितकारक इन पांच तन्त्रोंमें नीतियुक्त सर्वोत्कृष्ट है.	२–०

नाम	की० रु० आ०
भर्तृहरिशतक–नीति श्रृंगार तथा वैराग्य भाषाटीकासमेत। इसके नीतिशतकमें निन्दाप्रशंसा विद्वत्प्रशंसा, मानशौर्य-प्रशंसा, दुर्जननिन्दा, सुजनप्रशंसा, धैर्यप्रशंसा, दैवप्रशंसा, कर्मप्रशंसा और श्रृंगारशतकमें–षड्ऋतुवर्णन, दुर्विरक्त-वर्णन, स्त्रीपरित्यागप्रशंसा, यौवनप्रशंसा, कामिनीग्रहण, सुविरक्त और वैराग्यशतकमें–तृष्णाधिकार, मदनविडंबन, विषयोंका रूपतिरस्कार, दुर्जनपुरुषोंकी निन्दा हास्यका वर्णन, भोगपद्धति, कामनिर्वेदताका स्वरूप इत्यादिका वर्णन देख-नेही योग्य है.	१–०
भक्तिरत्नावली–श्रीमद्भागवतोद्धृत स्तुतिसंग्रह.....	०–४
भामिनीविलास–पं० महावीरप्रसाद द्विवेदीकृत भाषाटीका-सहित। इसमें–प्रस्ताविकविलास, श्रृंगारविलास, करुणा-विलास, तथा शान्तविलासादि अत्यंत रोचकविषय हैं पण्डि-तोंके देखने योग्य है.	१–०
भोजप्रबन्ध–मूल। कविवल्लालकृत। समें भोजराजाका चरित्र राजनीतिसंबंधी भली भाँति वर्णित है.	०–७
भोजप्रबंध–पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठीकृत भाषाटीकासमेत	१–०
भोज और कालिदास–भाषाटीकासमेत। राजा भोज और कालिदासके चातुर्य्यकी उत्तमोत्तम कथाका संग्रह है.	०–१४
भंगाभंगनिषेध–भाषाटीकासमेत। इसमें भांगकी निन्दाका खण्डन भली भांति किया है	०–२
मारुतिस्तव–सटीक। जोधपुरनिवासी नित्यानन्दशास्त्रीजीने हनुमान्जीकी लोकोत्तरमहिमाको ललितपद्योंमें वर्णन किया है। कवितामें यह विचित्रता है कि, पद्योंके आदिके अक्ष-	

नाम कीं० रु० आ०

रोंमें रामरक्षा स्तोत्र सम्पूर्ण आगया है जो कि विद्वानोंके देखनेही योग्य है। साथही जोधपुर वैदिक पाठशालाके प्रधानाध्यापक पंडित भगवतीलालजीने इसकी ऐसी सरल टीका की है कि, कविता स्पष्ट समझमें आजाती है. ०-५

मूर्खशतक-भाषाटीकासमेत. ०-१

मेघदूतकाव्य-सटीक. ०-६

मेघदूतकाव्य-कालिदासकृत-सान्वय मल्लिनाथी टीका और भाषाटीकासमेत। इसमें-मेघका वर्णन अवलोकन करने योग्य है. ०-८

रघुवंशमहाकाव्य-कालिदासकृत-मल्लिनाथकृत संजीवनी टीका और टिप्पणीसमेत। इसमें राजादिलीपसे लेकर लव कुश तथा अग्निवर्णके चरित्रतक १९ सर्ग है। इसकी महिमा कौन नहीं जानता ? विद्यार्थियोंको परमोपयोगी है पक्की जिल्द १-८

"तथा सादी जिल्द १-४

रघुवंशमहाकाव्य-सटीक तथा रामकृष्णाख्यविलोम-का० -सटीक- ये दोनोंका एक गुटका है. महीन अक्षर. ०-१०

रघुवंशमहाकाव्य-विद्यावारिधि प० ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत सान्वय भाषाटीका पदयोजना तात्पर्यार्थ और सरलार्थसहित ग्लेजकागज ३-८

" तथा रफ कागज.... .... ३-०

रघुवंशमहाकाव्य-(केवल पांच सर्ग) उपरोक्त अलङ्कारोंसे युक्त भाषाटीकासमेत. १-४

रघुवंशमहाकाव्य-सटीक सर्ग १ से ५तक. ०-४

रघुवंशमहाकाव्य-सटीक सर्ग ६ से १० तक ०-४

नाम	की० रु० आ०
राक्षसकाव्य—संस्कृतटीका और भाषाटीकासहित	०—२
रामकृष्णविलोमकाव्य—संस्कृतटीकासमेत.	०—४
राधाविनोदकाव्य—भाषाटीकासमेत.	०—२
रंभाशुकसंवाद—संस्कृत मूल व प्रत्येक श्लोककी कवित्तमें टीका व भाषाटीकासमेत। अति मनोरंजक काव्य है.	०—२
ललितरामचरित्र—काव्यसटीक.	१—०
वसन्तशतक—सटीक—संस्कृत। इसमें—वसन्तऋतुका वर्णन बडाही रोचक है.....	०—३
विद्वन्मोदतरंगिणी काव्य—चिरंजीव भट्टाचार्यरचित गद्यपद्य विभूषित। इसमें—सर्वशास्त्र और सर्व संप्रदायोंका सिद्धान्त दिखायाहै. विद्वानोंको अतीवोपयोगीहै.	०—४
विद्यासुन्दर और चौरपंचाशिका—भाषाटीकासहित	०—४
शिशुपालवध—(माघकाव्य) मल्लिनाथकृत टीकासहित। इसमें—नारदजीको भगवद्दर्शन, शिशुपालवधार्थ उद्धव बलराम तथा श्रीकृष्णको निमत्रण, द्वारका समुद्रवर्णन और रैवतपर्वतवर्णनादि २० सर्गमें अपूर्व काव्यहै। विद्यार्थी लोग पढके इसके द्वारा प्रसगोपात्त उदाहरण दे सक्तेहैं.	२—८
शिशुपालवध—(माघकाव्य) पूर्वार्ध ९ सर्गमें। विद्यार्थी लोगोंके लिये योग्यहै.	१—४
श्रीरामगीतगोविन्द—सटीक। पं० जयदेवस्वामीकृज गीतगोविन्दके अनुसार इसमें भी सीतारामकी भक्तिकी गानेकी अतिललित संस्कृतमें रागमय चीजें वर्णित हैं ...	०—८
श्रृंगारतिलक—भाषाटीकासहित। इसमें—श्रृंगाररसका अपूर्व वर्णन है	०—४

चम्पू–ग्रन्थाः

संस्कृतनाटक–ग्रन्थाः।